www.rajsevak.com

शिक्षक दिवस विशेषांक

मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 62 | अंक : 03 | सितम्बर, 2021 | पृष्ठ : 132 | मूल्य : ₹20

www.rajsevak.com

शिक्षक दिवस और शिक्षा के सरोकार

सितम्बर माह 5 सितम्बर को पूर्व राष्ट्रपति एवं विख्यात मनीषी डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के जन्म दिवस के अवसर पर मनाए जाने वाले 'शिक्षक दिवस' के नाते 'शिक्षकों' एवं 'विद्यार्थियों' दोनों के लिए विशिष्ट मायने रखता है। इस बार इस महीने की शुरूआत दीर्घावधि उपरांत विद्यालयों को माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के कक्षा-शिक्षण के लिए अनुमत किए जाने के परिप्रेक्ष्य में कुछ अतिरिक्त विशिष्टता लिए हुए भी है। वैश्विक महामारी कोविड-19 की दूसरी लहर के समापन और तीसरी लहर की आशंकित आहट के मध्य गृह विभाग की स्वीकृति से राज्य सरकार ने अभिभावकों की अनुमति की शर्त पर कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों को कोविड प्रोटोकोल की सुनिश्चित पालना और तमाम सावधानियों को सम्मिलित करते हुए विभागीय स्तर पर जारी एसओपी के निर्देशाधीन विद्यालय खोलने का चुनौतीपूर्ण निर्णय लिया है, जिसके सम्बन्ध में समस्त अभिभावकों और हमारे शिक्षकों-कार्मिकों से दायित्वपूर्ण कर्तव्यनिर्वहन का पुरजोर आह्वान करता हूँ। मुझे यह मानने और कहने में तनिक भी गुरेज नहीं है कि विगत डेढ़ साल से जारी कोरोना काल की संकटकालीन विकट परिस्थितियों में हमारे शिक्षकों एवं कार्मिकों ने बेखौफ अपने पदीय दायित्वों एवं कर्त्तव्यों का निष्ठापूर्ण ढंग से निर्वहन किया है और आगामी समय में भी विद्यालय खोलने की शुरूआत और इस शुरूआत के उत्तरगामी अनुभवों और तात्कालिक परिस्थितियों के आकलन के आधार पर ही उच्च प्राथमिक और प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु कक्षा-शिक्षण अनुमत किए जाने का निर्णय लिया जाना है, लिहाजा हमारे शिक्षकों-कार्मिकों के साथ ही अभिभावकों की भूमिका एवं जिम्मेदारी भी विभाग की इस सद्भावी पहल को सफल मुकाम तक पहुँचाने हेतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं निर्णायक है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये दोनों ही पक्ष हमारे इस विश्वास पर खरे उतरने हेतु पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ अपनी भूमिका एवं कर्त्तव्य का निर्वहन करेंगे।

विगत 7 जून, 2021 से नवीन शैक्षणिक सत्र प्रारम्भ होने के उपरान्त कोविड-19 की प्रतिकूल परिस्थितियों में कक्षा-शिक्षण अनुमत नहीं होने के बावजूद भी विभाग द्वारा समस्त विद्यार्थियों को शिक्षण-अधिगम गतिविधियों से सतत् रूप से जोड़े रखने हेतु 'बैक टू स्कूल' एवं 'आओ घर में सीखे-2.0' जैसे कार्यक्रमों के द्वारा विद्यार्थियों के सीखने एवं समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए तथा लर्निंग गैप्स की पूर्ति की दिशा में सुनियोजित व क्रमिक कार्ययोजना निर्मित की जाकर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को विभिन्न उपायों-उपागमों द्वारा सुव्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया गया है। हालांकि विद्यालयों में कक्षा शिक्षण की महत्ता सहज शिक्षक-विद्यार्थी अंतःक्रिया के दृष्टिगत स्वयं सिद्ध है, परन्तु वर्तमान विकट एवं आपवादिक परिस्थितियों में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के शिक्षण-अधिगम हेतु विभाग द्वारा अपनाई जा रही वैकल्पिक शिक्षण विधियों के द्वारा विद्यार्थियों के अध्ययन-अध्यापन को निरन्तरता प्रदान करने में अध्यापक-अभिभावक सहयोग भी अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा का त्रिकोणीय स्वरूप विद्यार्थी, शिक्षक एवं अभिभावक, तीनों को मिलाने पर बनता है। यदि इनमें से एक भी भुजा कम हो जाए, तो यह त्रिभुज के स्थान पर मात्र एक कोण बनकर रह जाता है। अतः विद्यालयों को समाज से जोड़ने के लिए इन तीनों कारकों में परस्पर समन्वय एवं सम्पर्क वांछित है। यह सर्वविदित तथ्य है कि विद्यालय ज्ञान का अथाह सागर है, जिसकी अनन्त गहराइयों में अनेक बहुमूल्य रत्न 'ज्ञान रूप' में निहित है। शिक्षक-विद्यार्थी इस विद्यालय का सागर मंथन से ज्ञानरूपी अमृत को निकालकर ला सकते हैं। शिक्षार्थी को यह ज्ञान अमृत पान कराना ही शिक्षकों का सर्वोच्च दायित्व है। इस दायित्व का भली-भाँति निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सम्पूर्ण विद्यालय परिवार मिल-जुलकर विद्यालय को एक ऐसा शैक्षिक पर्यावरण प्रदान कराए, जिसमें शिक्षक-विद्यार्थी के पारस्परिक सहयोग व अंतःक्रिया द्वारा शिक्षण-अधिगम की प्रभावी संस्थितियाँ सहज रूप से निर्मित हो सके।

इसी क्रम में इस माह 8 सितम्बर के दिन 'विश्व साक्षरता दिवस' है। साक्षरता शिक्षा की आधारशिला है। शिक्षा का सरोकार महज रोजगार अथवा नौकरी से ही नहीं है। शिक्षा तो समग्र जीवन दर्शन को प्रभावित करती है। हमें जीने तथा दूसरों से व्यवहार करने का तरीका सिखाकर हमारे जीवन एवं कर्मपथ को सुगम बनाती है। इसलिए कहा गया है कि **सा विद्या या विमुक्तये**। अतएव विद्यालय विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास के माध्यम कहे जा सकते हैं। न केवल विद्यार्थी, अपितु शिक्षकों के अर्जित ज्ञान को नित्य नवीन चिन्तन द्वारा अद्यतन बनाने के लिए भी विद्यालयों में विपुल संभावनाएँ हैं। वर्तमान में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में शिक्षा दुनियावी प्रगति और विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक आयाम है।

वर्तमान में कोविडजनित विषम परिस्थितयों के फैले हुए चौतरफा तिमिर के नाशन तथा नवीन उमंगों एवं उत्साह के संचारवर्धन की आशा के साथ समस्त शिक्षक वृन्द को **शिक्षक दिवस** एवं **साक्षरता दिवस** की हार्दिक बधाई एवं कोटिशः शुभकामनाएँ! इन पंक्तियों के साथ लेखन को विराम देते हुए प्रकट करना चाहूँगा-

अंधकार ने छलना सीखा, सदा छला है, सदा छलेगा।
लेकिन दीप ने जलना सीखा, सदा जला है, सदा जलेगा।।

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

"वैश्विक महामारी कोविड-19 की दूसरी लहर के समापन और तीसरी लहर की आशंकित आहट के मध्य गृह विभाग की स्वीकृति से राज्य सरकार ने अभिभावकों की अनुमति की शर्त पर कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों को कोविड प्रोटोकोल की सुनिश्चित पालना और तमाम सावधानियों को सम्मिलित करते हुए विभागीय स्तर पर जारी एसओपी के निर्देशाधीन विद्यालय खोलने का चुनौतीपूर्ण निर्णय लिया है, जिसके सम्बन्ध में समस्त अभिभावकों और हमारे शिक्षकों-कार्मिकों से दायित्वपूर्ण कर्तव्यनिर्वहन का पुरजोर आह्वान करता हूँ।"

www.rajsevak.com

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 62 | अंक : 3 | भाद्रपद-आश्विन, २०७८ | सितम्बर, 2021

प्रधान सम्पादक
सौरभ स्वामी

वरिष्ठ सम्पादक
अरुण कुमार शर्मा

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
शिक्षा और शिक्षक सम्मान

शैक्षिक चिंतन

- आदर्श शिक्षक : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् 7 **सुभाष चन्द्र चौधरी**
- विद्यार्थियों के भविष्य के निर्माता शिक्षक 8 **भगवान सिंह मीना**
- शिक्षक : हर युग में प्रेरक 9 **राजेन्द्र कुमार पंचाल**
- बदलते परिवेश में बदले गुरुजन 10 **जीवराज सिंह**
- शिक्षा का महत्त्व और उपयोगिता 11 **अविनाश कुमार सिंह**
- एक कदम सृजन की ओर 12 **देवेन्द्र पण्ड्या**
- कोरोना और ऑनलाइन शिक्षा 13 **मोहम्मद इमरान खान**
- एकाग्रता सफलता की कुंजी है 14 **विद्या शंकर पाठक**
- शिक्षा से अर्जित संस्कारों का सशक्त सम्प्रेषण है साहित्य : **डॉ. सरोज** 15
- महान शिक्षाविद् 16 **होशियार सिंह**
- पहल छोटी बदलाव बड़ा 16 **राम स्वरूप लैकरा**
- वर्तमान संदर्भ में अपेक्षित शैक्षिक प्रबंध 17 **ओमप्रकाश सारस्वत**
- बिरवा के पात.... भाषा की बात 19 **डॉ. मूलचन्द बोहरा**
- नई शिक्षा नीति 2020 और भाषा शिक्षण 21 **हंसराज सिंह तंवर**
- विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व प्रशिक्षण 22 **कृष्ण बिहारी पाठक**
- विद्यार्थी का शैक्षणिक विकास 25 **डॉ. पी.एस. वोहरा**
- एक रिश्ता : गुरु शिष्य 26 **भंवरलाल पुरोहित**
- शिक्षा और आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना 27 **बजरंग प्रसाद मजेजी**
- गुरु की महत्ता 28 **घनश्याम लाठी**
- स्वाध्याय की महत्ता 28 **गोविन्द लाल मण्डावरिया**
- कोरोना जागरूकता सांप सीढ़ी 29 **संदीप जोशी**
- वैश्विक महामारी के दौर में शिक्षक और ऑनलाइन शिक्षा का सामंजस्य 31 **डॉ. मीनाक्षी सुथार**
- पर्यावरण सुरक्षित तो जीवन सुरक्षित 32 **शबनम भारतीय**
- ई-शिक्षा : सुखद प्रयास 33 **महेश कुमार मंगल**
- शिक्षा नीति एवं मातृभाषा 34 **डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी**

हिन्दी विविधा

- आत्मोन्नति कारक पर्व : रक्षाबन्धन 36 **सतीश चन्द्र श्रीमाली**
- नन्हा मोहनदास : **डॉ. चेतना उपाध्याय** 37
- स्वस्थ बचपन और सहजन 39 **डॉ. तमन्ना तलरेजा**
- मौन की महत्ता : **प्रियंका पांडिया** 39
- कलम की शक्ति : **सुभाष चन्द्र कस्वाँ** 40
- पेयजल का अपव्यय कैसे रोकें? 41 **मेन्दू हुसैन**
- प्राणवायु का फेर : **हिमांशु सोगानी** 42
- ओलम्पिक खेल और भारत का प्रदर्शन 43 **पूनमराम सारण**
- एडमिशन : **अरनी रॉबर्ट्स** 45
- सबक : **विपिन कुमार भट्ट** 46
- सपनों की उड़ान :**रामगोपाल राही** 47
- संस्मरण : **कमल कुमार जाँगिड़** 48
- एक मोड़ ऐसा भी... 49 **नदीम अहमद 'नदीम'**
- सिस्टम.....!!! : **विकास चन्द्र भारु** 51
- डंडों का आशीर्वाद : **सुमन सिंह** 53
- छैल-छबीले दिन बचपन के 54 **भगवती प्रसाद गौतम**

www.rajsevak.com

- अनमोल वचन : **डॉ. पूरणमल माली** 55
- बड़ी दीदी : **पुष्पलता शर्मा** 57
- दो लघुकथाएँ 59
  डॉ. बनवारी पारीक 'नवल'
- मेरी तीर्थ यात्रा : हरि हर : **कल्पना** 60
- अमर शहीद सरदार भगतसिंह 61
  जयसिंह सिकरवार

हिन्दी कविता

- मास्क लगाओ : **डॉ. सत्यनारायण 'सत्य'** 71
- प्रकृति और मानव : **सुनिता पंचारिया** 71
- मेरा राजस्थान : **धर्मेन्द्र कुमार सैनी** 72
- नारी नारायणी : **डॉ. भगवान सहाय मीना** 72
- कोरोना तेरा कहर : **आर्यन श्रीमाली** 73
- आधुनिकता : **अमित श्रीमाली** 73
- शिक्षक : **स्नेहलता शर्मा** 73
- संगत : **श्रवण लाल** 74
- मर्यादा : **हनुमानराम लोरा** 74
- इक्कीस : **श्रीपाल श्रीमाली** 74
- पेड़ : **भँवरलाल महला** 74
- गुरु : **मूलाराम लोरा** 74
- कोरोना इक महामारी : **राकेश मेघवाल** 75
- मैं रुका नहीं : **राजकुमार इन्द्रेश** 75
- गुरुओं के चरणों में नमन : **उत्सव जैन** 75
- विश्व गुरु भारत 76
  बुद्धि प्रकाश महावर 'मन'
- प्रकृति के बोल 76
  लक्ष्मी कान्त शर्मा 'कृष्ण कली'
- शिक्षक शब्द ही महान है : **मोना शुक्ला** 77
- विद्यालय : **अंकित शर्मा 'इषुप्रिय'** 77
- ग़ज़ल : **राजेन्द्र कुमार टेलर** 78
- अरदास : **ललिता छीपी** 78
- आम का पेड़ : **डॉ. दयाराम** 78
- अब आजमा के देख लिया 78
  रतन लाल जाट
- शपथ जनमानस की : **पूरणमल खटीक** 79
- अन्तिम सत्य : **पूरणमल तेली** 79
- सुहाने समय का साया : **बस्तीराम जाट** 79
- फिर से उद्धार : **आकांक्षा शर्मा** 80
- आशा की किरण : **दीपक मूंदड़ा 'मन'** 80
- बेटियों को बचालो : **गायत्री यादव** 80
- तेरे कितने रूप : **प्रदीप कुमार वर्मा** 81
- हौंसला : **सत्यनारायण नागौरी** 81
- तितली के अंग : **कुसुम अग्रवाल** 81
- कोरोना चेतना गीत : **तुलाराम निर्वाण** 81
- मन तो सभी का 82
  सम्पत लाल शर्मा 'सागर'
- प्लास्टिक थैली : **राजेश कुमार** 82
- साथ : **विजय** 82
- अजन्मी बिटिया का संदेश 82
  मनोज कुमार तँवर
- कर्म : **संजय कुमार 'शिवम'** 83
- हाँ, नववर्ष आया है : **संतोष कुमार राणा** 83
- बच्चे हैं वरदान : **नवीन कुमार बाबेल** 83
- एक शिक्षक की चाह 83
  विनोद बी. राजपुरोहित
- बेबस हथिनी : **ब्रज पाल सिंह** 84
- संख्याओं का परिवार : **बिन्दु** 84
- मैं शिक्षक हूँ : **बाबू लाल मीणा** 85
- सफर : **ब्रिजेश कुमार वैष्णव** 85
- सुबह होने को है : **भावना विशाल** 85
- पेड़ की पुकार : **हजारी लाल सैनी** 86
- हाइकू : **दीनदयाल शर्मा** 86
- मैंने एक जमाना बदलता देखा है 87
  सुखदेव चौधरी
- एक शहीद का पिता : **रितु चौधरी** 88
- वो पहले सा बचपन, अब आता कहाँ है 88
  संजय कुमार
- शिक्षा : **इन्द्रा** 89
- मुसाफिर का मन : **शालू मिश्रा** 89
- पगडंडी वाले गाँव : **दिनेश विजयवर्गीय** 89
- पहिया : **रानू सिंह** 89
- मैं कलम हूँ : **सुशीला चौधरी** 90
- बूढ़ा पीपल : **ईसरा राम पंवार 'मजल'** 90
- जीत को आदत बनाना 90
  लखन पाल सिंह शलभ

राजस्थानी विविधा

- संस्कृति समरथक : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् 91
  डॉ. बंशीधर तातेड़
- गुमेज : **विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'** 92
- म्हारौ माण म्हारी मायड़ भासा-भासा रौ आवणो 93
  अशोक कुमार व्यास
- खेजड़ली : **नगेन्द्र नारायण किराड़ू** 94
- भेराळ काळ छपनो : **दीपसिंह भाटी** 95
- बात म्हारी थे सुणज्यो रे : **पारस चन्द जैन** 96
- मा री महिमा : **संग्राम सिंह सोढ़ा** 97
- इक्कीस दिन इक्कीस दोहा 98
  मुकेश कुमार जोशी
- चॉक : **ओम प्रकाश सैनी** 98
- देस बिराना : **डॉ. मदन गोपाल लढ़ा** 99
- एकादश दूहा कोरोना रा : **नरेश व्यास** 100
- करम धरम : **डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत** 101
- बेली रौ रूप : **निशान्त** 101
- मारवी : **शंभूदान बारहठ** 102
- शिक्षा : **रामस्वरूप रैगर** 102
- बड़गड़ा! बड़गड़ा!! : **आशुतोष** 103
- नीत : **रामनारायण सैनी** 103
- जूत्याँ रो झोड़ : **महेन्द्र सैनी 'कारी'** 104
- परमवीर मेजर शैतानसिंह : **सुरेश सोनी** 105
- अनुशासन : **ओम प्रकाश कुम्हार** 105

बाल साहित्य

- कुदरत पर उपकार : **गोविन्द भारद्वाज** 106
- अनमोल का मोल : **विमला नागला** 107
- चींटी रानी : **विश्वम्भर दयाल पाण्डेय** 108
- काश अगर हम.. : **सत्य भूषण शर्मा** 108
- आओ शिक्षा से देश सजाएँ हम 109
  भँवरलाल कुमावत 'भँवर'
- हाथी और दरजी : **रेणूका गाँधी** 109

रपट

- शिक्षा विभागीय नियमावली 2021 का विमोचन 112
  ओम प्रकाश सारस्वत
- भारतीय तीरंदाजी टीम के कोच 112
  अनिल जोशी
- **राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान 2021**
  पुरस्कृत शिक्षक दीपक जोशी 113
  पुरस्कृत शिक्षक जय सिंह 114
- विशिष्ट अंक : विशिष्ट मुखावरण 115

स्तम्भ

- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र 63-70
- बाल शिविरा 110-111
- शाला प्रांगण से 124-126
- चतुर्दिक समाचार 127
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 128
  नीलम यादव
- भामाशाह 129-130

पुस्तक समीक्षा 116-123

- मेरी चिताणी, लेखक : रामबक्ष जाट
  समीक्षक : **भंवरलाल जाट**
- धाड़ै सूं धूणै तांई, लेखक : डॉ. भँवर कसाना
  समीक्षक : **सी.एल. साँखला**
- आंगळी-सीध, लेखक : डॉ. नीरज दइया
  समीक्षक : **डॉ. मदन सैनी**
- समेरा हिंदी प्रभा, लेखक : चेनाराम
  समीक्षक : **डॉ. रामरतन लटियाल**
- इबादत, लेखक : नदीम अहमद 'नदीम'
  समीक्षक : **संजय जनागल**
- कुछ बचपन ऐसे भी...
  लेखक : डॉ. विद्या पालीवाल
  समीक्षक : **रामजीलाल घोड़ेला**
- फिरचर पुराण, लेखक : शिवराज छंगाणी
  समीक्षक : **विशन मतवाला**

मुख्य आवरण : **मेघा हर्ष** (गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड धारक), मो. 9828112015 | **विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary**

www.rajsevak.com

सत्यमेव जयते

सौरभ स्वामी
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

शिक्षा और शिक्षक सम्मान

अत्यन्त प्रसन्नता का अवसर है कि महान दार्शनिक शिक्षाविद् पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के जन्म दिवस 5 सितम्बर को हम सभी **शिक्षक दिवस** के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर शिक्षकों के प्रति सम्मान ज्ञापित करना हमारे राज्य के शिक्षा विभाग की उज्ज्वल परम्परा रही है। मुझे खुशी है कि इस बार के राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कारों में हमारे राज्य के दो शिक्षकों श्री दीपक जोशी और श्री जयसिंह को यह गौरव प्राप्त हुआ है। राष्ट्रीय फलक पर राज्य का मान, यश बढ़ाने पर इन शिक्षकों का हम अभिनन्दन करते हैं और आशा करते हैं कि इनसे प्रेरणा पाकर अन्य शिक्षक भी अपनी क्षमता का शत-प्रतिशत योगदान देकर राज्य और राष्ट्र को गौरव प्रदान कराएँगे।

राज्य सरकार के गृह विभाग द्वारा दी गई अनुमति के आधार पर राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों को अभिभावकों की स्वीकृति उपरान्त स्वैच्छिक रूप से दिनांक एक सितम्बर 2021 से कक्षा शिक्षण में भाग लेने की अनुमति प्रदान की गई है। इन निर्देशों के अनुरूप राज्य के समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों (राजकीय एवं गैर राजकीय) में कक्षा शिक्षण हेतु अनुमत किए जाने के परिप्रेक्ष्य में मानक संचालन प्रक्रिया (Standard Operating Procedure) जारी की गई है।

- विद्यालयों में समस्त स्टाफ एवं विद्यार्थी अनिवार्य रूप से मास्क लगाकर ही आएँ "NO MASK NO ENTRY" की पालना सख्ती से की जाए।
- स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं संरक्षा के लिए मानक संचालन प्रक्रिया पूर्ण मुस्तैदी से अपनाई जाए।
- लक्ष्यानुरूप, लर्निंग आउटकम अर्जित करने के लिए अध्ययन-अध्यापन एवं मूल्यांकन का पुनर्निर्धारण किया गया है।
- विद्यार्थियों को राज्य सरकार के डिजिटल विषय वस्तु से यथा स्माइल-3.0, आओ घर में सीखे 2.0 तथा ई-कक्षा के कार्यक्रम निरन्तर जारी रहेंगे।

समस्त सम्बन्धित मानक संचालन प्रक्रिया में प्राप्त निर्देशों की पालना एवं क्रियान्विति सुनिश्चित करेंगे। शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य का भी पूर्ण ध्यान रखें। आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के साथ!

(सौरभ स्वामी)

“अत्यन्त प्रसन्नता का अवसर है कि महान दार्शनिक शिक्षाविद् पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के जन्म दिवस 5 सितम्बर को हम सभी शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर शिक्षकों के प्रति सम्मान ज्ञापित करना हमारे राज्य के शिक्षा विभाग की उज्ज्वल परम्परा रही है।”

www.rajsevak.com

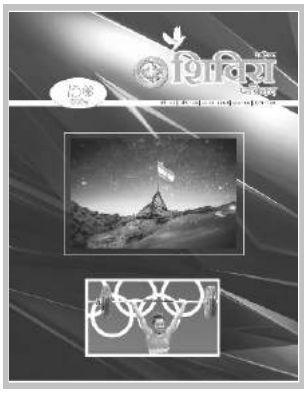

▼ चिन्तन

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।

(श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय ६/श्लोक १७)

अर्थात्- जो खाने, सोने, आमोद-प्रमोद तथा काम करने की आदतों में नियमित रहता है, वह योगाभ्यास द्वारा समस्त भौतिक क्लेशों को नष्ट कर सकता है।

पाठकों की बात

- शिविरा पत्रिका का अगस्त 2021 का अंक पढ़कर मन में खुशी हुई। उक्त अंक में विजय सिंह माली का 'महात्मा गाँधी का आर्थिक चिंतन', डालचन्द गुप्ता का 'अध्यात्म व विज्ञान', विमल चन्द्र का 'शिक्षण में नवाचार : स्माइल-3', डॉ. मांगीलाल मिस्त्री 'मनीष' का 'आश्रम से स्मार्ट क्लास तक-शिक्षक' आलेख बहुत ज्ञानवर्द्धक लगे। ओम जोशी का 'लोकगीतों की विविधता' लेख भी राजस्थान के रोचक लोकगीतों की सुन्दर झलक प्रस्तुत करता है। सम्पादक मण्डल धन्यवाद के पात्र हैं। बाल शिविरा भी बच्चों के उत्साह को बढ़ाने वाला स्तंभ है। 'अपनों से अपनी बात' में मंत्री महोदय का संदेश ज्ञानवर्द्धक एवं 'दिशाकल्प' में निदेशक महोदय ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की महिमा बताई है जो नवीन ऊर्जा का संचार करने वाली है।

दल्लाराम गढ़वाल, नागौर

- माह अगस्त की शिविरा समय पर प्रासंगिक सुन्दर आवरण के साथ मिली। मंत्री महोदय का संदेश एवं निदेशक महोदय का दिशाकल्प प्रेरणादायी रहा। डिजिटल दुनिया का संचार आईसीटी-कान्ता मीना, हमारे प्राचीन शिक्षा केन्द्र-रामावतार मित्तल, लोकगीतों की विविधता-ओम जोशी और बच्चों में जगाएँ लेखन प्रवृत्ति-दिनेश विजयवर्गीय के आलेख बहुत उपयोगी एवं सार्थक लगे। नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप-रोहिताश, आश्रम से स्मार्ट क्लास तक : शिक्षक-डॉ. मांगीलाल मिस्त्री 'मनीष' की रचनाएँ एवं एप से ऑनलाइन शिक्षा-डॉ. देवेन्द्र सिंह राणावत के आलेख समयानुकूल समस्त शिक्षकों के लिए बहूपयोगी रहेंगे, ऐसा विश्वास है। सार्थक तथा शिक्षा जगत में सकारात्मक विचारों की संवाहक ज्ञानवर्धक शिविरा के लिए सम्पादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

उमा शंकर स्वामी, बीकानेर

- शिविरा पत्रिका का अगस्त, 2021 का अंक समय पर मिला। मुख पृष्ठ देखकर मन में खुशी हुई जिसमें भारत देश की शान तिरंगा झण्डा लहरा रहा था। बाल शिविरा पृष्ठ पर बच्चों के हाथों से बनाए चित्रों को छापा गया है। नन्हें हाथों से बनी रेखाओं के चित्र आकर्षक लगे। माननीय शिक्षामंत्री महोदय श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने अपने संदेश में कोरोना महामारी में कार्य करने वाले शिक्षकों का उत्साहवर्धन किया है। दिवंगत कार्मिकों को समय पर पूर्ण व तुरन्त सहायता देने के कदमों पर चर्चा की गई है। 'दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ' में निदेशक, महोदय ने 'हमारी प्राथमिकता : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' में प्रत्येक विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलने के उपायों पर विस्तार से चर्चा की है। सम्पादक मण्डल का साधुवाद।

उमेश चन्द गुप्ता, जयपुर

- माह अगस्त 2021 का अंक देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस की उमंग अपने मुख पृष्ठ पर समेटे हुए हमारे समक्ष प्रस्तुत हुआ, शान से लहराते हुए तिरंगे ने वैश्विक महामारी के पश्चात नए युग के आगाज का संदेश लिए नई चुनौतियों के लिए खड़े होने का इशारा किया। अपने संदेश में हमारे मंत्री महोदय ने उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी के एक कथन से शिक्षकों के संवेदनशील एवं दयावान होने के मौलिक गुणों का वर्णन करते हुए गत दिनों वैश्विक महामारी के दौरान असमय कालग्रस्त हुए विभाग के योद्धाओं के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए प्रत्येक विभागीय अधिकारी व कार्मिक को उनके परिवार हेतु तत्पर रहने का आह्वान किया। NMMS छात्रवृत्ति के संबंध में रोहिताश का आलेख ज्ञानवर्द्धक रहा। डॉ. मांगीलाल मिस्त्री 'मनीष' का 'आश्रम से स्मार्ट क्लास तक-शिक्षक' आलेख शिक्षकों की बहुमुखी प्रतिभा की ओर स्पष्ट संकेत है साथ ही उनके कुछ सुझाव शिक्षकों के लिए पथ-प्रदर्शक हैं। शालिनी थ्योफ्लस का आलेख 'किताबें कुछ कहती हैं' वर्तमान संचार के युग में किताबों की सार्थकता की महत्ता का वर्णन करती है तथा उनके सुझाव बालकों को पुनः किताबों से जोड़ने के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकते हैं। अन्य लेख यथा प्राणायाम की महत्ता-देवकरण सिंह, प्रकृति प्रेमी-घनश्याम स्वामी आदि सभी भी ज्ञानवर्द्धक बन पड़े हैं। सभी स्थाई आलेख हमेशा की तरह व्यावहारिक एवं संग्रहणीय है। शानदार अंक के प्रकाशन हेतु टीम शिविरा को साधुवाद।

योगेश चन्द्र ईश्वरवाल, राजसमंद

www.rajsevak.com

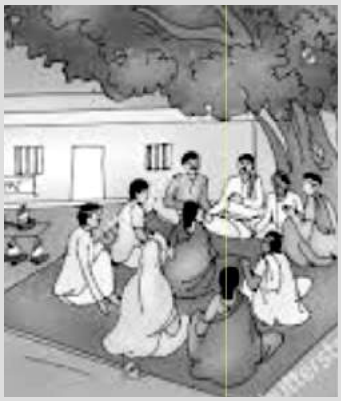

शैक्षिक चिन्तन

आदर्श शिक्षक : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

❒ सुभाष चन्द्र चौधरी

भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति एवं द्वितीय राष्ट्रपति तथा प्रथम भारत रत्न से सम्मानित डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 में मद्रास प्रेसीडेन्सी के चित्तूर जिले के तिरुत्तनी ग्राम में हुआ था।

उनके नाम में 'सर्वपल्ली' उनके पूर्वज 'सर्वेपल्ली' नामक ग्राम में रहते थे इसलिए उन्होंने अपने पूर्वजों की विरासत को अपने साथ सर्वदा जोड़ लिया। उनकी शिक्षा मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज एवं वूरहीस कॉलेज से हुई थी इसलिए धार्मिक सद्भाव में वे कभी संकीर्ण नहीं रहे। दर्शनशास्त्र में परा स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण कर वे 1918 में मैसूर महाविद्यालय में दर्शन शास्त्र के सहायक प्राध्यापक (Assistant Professor) बन गए। डॉ. राधाकृष्णन् ने अपने लेखों, व्याख्यानों के द्वारा विश्व को भारतीय दर्शन शास्त्र की सरलता एवं व्यापकता से परिचय करवाया तथा पश्चिमी क्रिश्चियन संस्थाओं में अध्ययनरत रहने के कारण उनमें मानवीय गुणों की भी प्रधानता रही तथा भारतीय संस्कृति, धर्म, ज्ञान, सत्य को अपने दर्शन द्वारा समझाया तथा मानवता का सच्चा उद्देश्य समझाया। वे कहते थे कि जीवन छोटा है मृत्यु अटल सत्य है अतः सच्चा ज्ञानी इस अटल सत्य में सुख-दुःख में समभावी रहते हुए संतोषी एवं सत्य पिपासु जीवन बिताता है। आलोचनाएँ परिशुद्धि का काम करती है इसलिए सभी धर्मों का समादर करते हुए बच्चों को उच्च संस्कार सिखाने चाहिए।

डॉ. राधाकृष्णन समूचे विश्व को एक विद्यालय मानते थे उनका मानना था कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। उन्हें 1954 में भारत रत्न दिया गया। इसके अलावा ऑर्डर ऑफ मेरिट, नाइट बैचलर और टेम्पलटन पुरस्कार से नवाजा गया था। ये सारी उपलब्धियाँ एक अच्छे और जीवन भर शिक्षक होने के नाते प्राप्त हुई। उनके जन्म दिन को साथियों, शिक्षकों एवं शिष्यों ने मनाने को कहा तो उन्होंने कहा मेरे जन्म दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाओ फिर उसी दिन से 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हैं।

डॉ. राधाकृष्णन जी के शैक्षिक विचार: –

1. शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूँसे बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करें।
2. पुस्तकों के द्वारा विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल का निर्माण कर सकते हैं।
3. अच्छा शिक्षक ताउम्र सीखता रहता है अर्थात विद्यार्थी उसके अन्दर का खत्म नहीं होना चाहिए। सीखने का कार्य छात्रों से भी मिले तो परहेज नहीं करना चाहिए।
4. शिक्षा का परिणाम एक मुक्त रचनात्मक व्यक्ति होना चाहिए, जो ऐतिहासिक परिस्थितियों और प्राकृतिक आपदाओं के खिलाफ लड़ सके।
5. कोई भी आजादी तब तक सच्ची नहीं होती जब तक उसे विचार की आजादी प्राप्त न हो, किसी भी धार्मिक विश्वास या राजनीतिक सिद्धांत को सत्य की खोज में बाधा नहीं देनी चाहिए।
6. शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। अतः विश्व को एक ही इकाई मानकर शिक्षा प्रबंधन करना चाहिए।
7. किसी विद्यालय की महानता या गरिमा का निर्धारण उसकी इमारतों या उपकरणों से नहीं होता बल्कि कार्यरत अध्यापकों की विद्वता व चरित्र निर्धारण से होता है।

व्याख्याता (राजनीति विज्ञान)
राजकीय जवाहर उच्च माध्यमिक विद्यालय
भीनासर, बीकानेर (राज.)
मो: 8114489352

www.rajsevak.com

विद्यार्थियों के भविष्य के निर्माता शिक्षक

❒ भगवान सिंह मीना

गुरु बिन विद्या नहीं, विद्या बिन मिले न ज्ञान।
ज्ञान बिना आत्मा नहीं, गा रहे वेद पुराण।।

गुरु-शिष्य परम्परा हिन्दुस्तान की संस्कृति का एक अहम और पवित्र हिस्सा रही है। जीवन में माता-पिता का स्थान कभी कोई नहीं ले सकता, क्योंकि वे ही हमें इस रंगीन खूबसूरत दुनिया में लाते हैं और उन्हीं के कारण हमें यह जीवन मिलता है। कहा जाता है कि जीवन के सबसे पहले गुरु हमारे माता-पिता ही होते हैं। भारत में प्राचीन समय से ही गुरु-शिष्य परंपरा चली आ रही है, जीने का असली सलीका हमें गुरु ही सिखाते हैं। गुरु ही हमें अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं।

सनातन धर्म शास्त्रों में रिश्तों को बड़ी अहमियत दी गई है, एक बच्चा जब जन्म लेता है तभी से उसके इस संसार में भौतिक रिश्ते जुड़ जाते हैं। इन सभी रिश्तों में जो रिश्ता उसका सबसे नजदीक और अपना होता है वह माँ-बाप का होता है। माता-पिता उसके पहले गुरु होते हैं जिनके द्वारा ऐसी शिक्षा दी जाती है जिससे आगे जाकर वह बालक-बालिका तेजस्वी, ओजस्वी और प्रतिभाशाली बन सकें। अगर माँ-बाप की शिक्षा में जरा सी कमी जैसे अविद्या, अज्ञान और कोई भी कुसंस्कार आ जाए तो ये बालक के जीवन के लिए बहुत विनाशकारी हो सकते हैं। धर्मशास्त्रों में विद्या के महत्त्व पर जोर देते हुए कहा गया है कि-

माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये, हंसमध्ये बको यथा।।

वह माता-पिता शत्रु के समान है, जो अपनी संतान को विद्या अध्ययन नहीं कराते। क्योंकि जो बालक-बालिका विद्या प्राप्त नहीं किए होते वे विद्वानों की सभा में उसी तरह अज्ञानी बन कर रहते हैं जैसे हंसों के मध्य बगुला।

आज का यह युग विज्ञान और तकनीक का युग है और ऐसे में यदि हम अपने बच्चों को सही शिक्षा नहीं दे पाएंगे तो वह समाज में कहीं भी प्रतिस्पर्धा करने योग्य नहीं रहेगा।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस के अवसर पर शिक्षकों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए भारतभर में शिक्षक दिवस 5 सितंबर को मनाया जाता है। 'गुरु' का हर किसी के जीवन में बहुत महत्त्व होता है। समाज में भी उनका अपना एक विशिष्ट स्थान होता है। सर्वपल्ली राधाकृष्णन शिक्षा में बहुत विश्वास रखते थे। वे एक महान दार्शनिक और शिक्षक थे। उन्हें अध्यापन से गहरा प्रेम था। एक आदर्श शिक्षक के सभी गुण उनमें विद्यमान थे। इस दिन भारत सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षकों को पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है। यह दिन शिक्षकों के लिए विशेष होता है। स्कूलों में उत्सव, धन्यवाद और स्मरण की गतिविधियाँ होती है। बच्चे व शिक्षक दोनों ही सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। स्कूल-कॉलेज सहित अलग-अलग संस्थाओं में शिक्षक दिवस पर विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। छात्र विभिन्न तरह से अपने गुरुओं का सम्मान करते हैं, तो वहीं शिक्षक गुरु-शिष्य परंपरा को कायम रखने का संकल्प लेते हैं। स्कूल और कॉलेज में पूरे दिन उत्सव-सा माहौल रहता है। दिनभर रंगारंग कार्यक्रम और सम्मान का दौर चलता है। इस दिन को डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को उनकी जयंती पर याद कर मनाया जाता है।

गुरु-शिष्य का संबंध-गुरु-शिष्य परंपरा भारत की संस्कृति का एक अहम और पवित्र हिस्सा है जिसके कई स्वर्णिम उदाहरण इतिहास में दर्ज हैं। शिक्षक उस माली के समान है, जो एक बगीचे को अलग-अलग रूप-रंग के फूलों से सजाता है। जो छात्रों को काँटों पर भी मुस्कुराकर चलने के लिए प्रेरित करता है। आज शिक्षा को हर घर तक पहुँचाने के लिए तमाम सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं। शिक्षकों को भी वह सम्मान मिलना चाहिए जिसके वे हकदार हैं। एक गुरु ही शिष्य में बदलाव व संस्कार का काम करते हैं। अच्छे शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों एवं विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों के साथ दुर्व्यवहार की खबरें सुनने को नहीं मिलनी चाहिए। इसका प्रण लें ताकि हमारी संस्कृति की इस अमूल्य गुरु-शिष्य परंपरा पर प्रश्नचिह्न नजर न आने लगे। विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों का ही दायित्व है कि वे इस महान परंपरा को बेहतर ढंग से समझें और एक अच्छे समाज के निर्माण में अपना सहयोग प्रदान करें।

नैतिक शिक्षा का महत्त्व- विद्या का महत्त्व आज इसलिए भी अधिक बढ़ गया है कि वर्तमान समाज में बेरोजगारी, जनसंख्या, अनाचार, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, अराजकता आदि बुराइयाँ व्याप्त है, यदि बच्चों को व्यवहारिक और सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ नैतिकता की शिक्षा भी दी जाए तो समाज से इन बुराइयों को दूर किया जा सकता है। अब बात नैतिक शिक्षा की होती है तो बच्चों को शास्त्रीय नैतिक शिक्षा जरूर देनी चाहिए, ध्यान रहे कि आपकी शिक्षा में उदाहरण जरूर हो क्योंकि बालक का मन उदाहरणों से जल्दी सीखता है। इसमें गुरु का बहुत बड़ा योगदान है। नैतिकता का असली जनक माता-पिता के अलावा शिक्षक ही है।

गुरु का महत्त्व- विद्या का अर्थ केवल किसी विषय के ज्ञान तक सीमित न रहे बल्कि उसमें आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा का भी स्थान होना चाहिए, ताकि हम अपने बच्चों को एक अच्छा इंसान बनाकर इस समाज को दे सके। आज के परिवेश में यह उक्ति केवल माँ-बाप तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें गुरु का भी महत्त्व बढ़ जाता है, यदि माँ-बाप अपने बच्चे को विद्यालय भेज रहे हैं और उन्हें अध्यापन कराने वाले गुरु से सही विषय ज्ञान नहीं मिल पा रहा है तो वह गुरु भी उस विद्यार्थी के लिए शत्रु की भाँति है। प्राण त्यागते समय बालि ने अपने पुत्र अंगद को ये शिक्षाएँ दी, जो बड़े काम की हैं-उचित शिक्षा, बेहतर भविष्य। अतः समस्त गुरुजनों को भी चाहिए कि वे अपने विद्यार्थियों को विद्यार्जन करने में सम्पूर्ण सहयोग प्रदान करें और अपने विद्यार्थी को इस समाज के लिए एक आदर्श के रूप में स्थापित करे। अंत में माँ-बाप और गुरुजनों से निवेदन है कि हमारे बच्चे हमारे साथ-साथ इस समाज के भी है अतः अपने निजी और समाज के प्रति कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए अपने बच्चों को उचित विद्या प्राप्त करने का अवसर प्रदान करें ताकि वे बच्चे समाज पर बोझ न बने बल्कि उस समाज का नवनिर्माण कर उसे और अधिक विकसित और समृद्ध बना सकें।

व्याख्याता (भूगोल)
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
धौलपुर (राज.)-328001 **मो: 7891330439**

www.rajsevak.com

शिक्षक : हर युग में प्रेरक

❒ राजेन्द्र कुमार पंचाल

अध्यापन कार्य को सबसे बड़ा यज्ञ माना गया है। सीखना-सिखाना भारतवर्ष में एक आदर्श व सम्मानजनक कर्त्तव्य कर्म रहा है। भारत भूमि हजारों वर्षों से ज्ञान पिपासुओं की रही है। सारे विश्व में ज्ञान का अभ्युदय भारत भूमि से ही हुआ था। वर्षों पूर्व जिन्हें गुरु की संज्ञा से नवाजा गया आज समय के साथ वह शिक्षक बनकर ज्ञान का संवाहक और प्रचार-प्रसार करता है। वह हमेशा मानव के जीवन वर्णनातीत योगदान प्रदान करता रहा है और आज भी समाज में ऐसे गुरुजनों व शिक्षकों का महत्त्व बना हुआ है।

वैदिककाल में सौलह कला का ज्ञान गुरुजनों के माध्यम से शिष्यों को प्रदान किया जाता था। उस समय प्रवेश परीक्षा के माध्यम से बालक को गुरुकुल में प्रवेश दिया जाता था। गुरुकुल चलाने वाले गुरु आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ वेदांग, आयुर्वेद, योग, धनुर्विद्या, राजनीति, अर्थशास्त्र, सैन्य प्रबंधन, पशु चिकित्सा आदि का ज्ञान रखते थे। जो गुरुकुल में बालकों को प्रदान किया जाता था। उस समय के ऋषि-मुनि भौतिकवादी जीवन से दूर रहकर प्रकृति से जुड़े रहते थे तथा पर्यावरण से एकाकार होकर जीवन यापन करते थे। उनका योगदान समाज में ज्ञान का प्रकाश फैलाना व समरसता का वातावरण पैदा करना होता था। ऋषियों के माध्यम से यज्ञ व लोक कल्याण के कार्य किए जाते थे जो समाज में अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, मैत्री, करुणा व आत्मीयता के भाव पैदा करते थे। यह ऋषि संस्कृति हमारे देश में शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार करने वाली रही। इनका प्रयास सदैव मानव को सुसंस्कृत करना था। इसलिए भारतीयों को आर्य कहा जाता था। आर्य का अर्थ-सुसंस्कृत जाति। तत्कालीन समय में शिक्षा का प्रचार केवल भारत में ही था इसलिए भारत को विश्वगुरु कहा जाता था।

कालान्तर में शिक्षा के स्वरूप में बड़ा परिवर्तन आया, गुरुकुल बड़े स्तर पर देश के प्रत्येक भाग में फैलते गए। इन्हें आचार्यकुलम, गुरुगृह आदि नामों से जाना जाता था। गुरुकुल में अब शिक्षा के संवाहक आचार्य थे। पाँच वर्ष के बालक को प्रवेश दिया जाता था शिक्षा प्राप्त करने की योग्यता उपनयन संस्कार से होती थी। विदेशी छात्रों को भी भारत से शिक्षा प्राप्त होने लगी थी। सुदूर प्रदेश के जिज्ञासु विद्यार्थी आर्यावर्त की शिक्षा से प्रभावित हुए। इतिहास में विदेशियों द्वारा भारत में शिक्षा प्राप्ति के कई उदाहरण मिलते हैं। इस प्रकार भारत में शिक्षा व ज्ञान का तीव्र गति से विकास हुआ। इस काल में आचार्य का स्थान बड़ा गौरवमय था। आचार्य पारंगत, विद्वान, सदाचारी, क्रियावान, निस्पृह, निरभिमान होते थे। विद्यार्थियों के कल्याण के लिए सदा कटिबद्ध रहते थे। काशी, तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी, ओदंतपुरी, मिथिला, प्रयाग, अयोध्या, मैनाल, जगद्दल, नादिया, तिरुवोरियर, मलकपुरम, सर्वज्ञपुरम आदि स्थान शिक्षा के बड़े केन्द्र थे।

इस प्रकार वैदिक काल से मध्यकाल व अंग्रेजों के समय तक भारत में शिक्षा पद्धति गुरुओं के माध्यम से अनवरत चलती रही भले ही उसके स्वरूप में बड़ा बदलाव देखा गया। भारत में मुस्लिम राज्य स्थापित होने के कारण हिन्दी, अरबी व फारसी पढ़ाई जाने लगी। गुरुकुल व्यवस्था के स्थान पर अब मदरसे, पुस्तकालय, मकतब में शिक्षा दी जाने लगी। तब भी शासन के माध्यम से शिक्षकों को नियुक्त किया जाता था। इस समय भी शिक्षकों का बड़ा सम्मान था। दिल्ली, आगरा, बीदर, जौनपुर, मालवा आदि मुस्लिम शिक्षा के बड़े केन्द्र थे। उस दौरान कई महापुरुष ऐसे भी हुए जिनके द्वारा समाज व लोगों में शिक्षा को नई दिशा दी, जनजागृति पैदा की। रूढ़िवाद, अंधविश्वास, छुआछूत, भेदभाव, पाखण्ड का विरोध कर लोगों को वास्तविकता का ज्ञान कराया ये भी किसी गुरु से कम नहीं थे जिनमें मुख्य रूप से कबीर, नानक, रहीमदास, सूरदास, मीरा, तुलसी, रामानन्द, रैदास, तुकाराम, ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, जाम्भौजी, संत मावजी महाराज, गोविन्द गुरु आदि की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

देश की आजादी में भी कई देशभक्त शिक्षकों का योगदान रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के इस कालखण्ड के दौरान लोगों में जागृति व क्रांति लाने में भी शिक्षकों का योगदान अविस्मरणीय रहा है। शिक्षक समाज के वे शिल्पकार होते हैं जो बिना किसी स्वार्थ के समाज को तराशते हैं। राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मानसिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का कार्य भी देश के लिए महत्त्वपूर्ण था तब शिक्षा पद्धति में बड़ा परिवर्तन लाया गया। उस चुनौती को स्वीकार कर तत्कालीन समाज में शिक्षकों ने देश के लिए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। जिनको महात्मा, गुरु अथवा शिक्षक कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा। जिनमें स्वामी विवेकानंद, रविन्द्रनाथ टैगोर, आचार्य विनोबा भावे, महान दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन, गोपालकृष्ण गोखले, राजाराम मोहन राय, ज्योतिबा फूले, बाल गंगाधर तिलक, दयानंद सरस्वती, एनी बेसेंट, पं. मदनमोहन मालवीया, महाराज सयाजीराव गायकवाड़, स्वामी श्रद्धानंद, महर्षि महेश योगी, श्री राम शर्मा आचार्य, डॉ. जाकिर हुसैन जैसे अनगिनत महापुरुषों ने अपना योगदान देश की आजादी के आंदोलन के साथ-साथ शिक्षा प्रसार में एक शिक्षक के रूप में देकर दोहरी भूमिका निभाई। महात्मा गाँधी का तो पूरा शिक्षा दर्शन अलग था जो हमेशा लोगों में शिक्षा के प्रचार की अलख जगाते रहे जो आज भी उतना ही सार्थक है।

वर्तमान में शिक्षा की महत्ता बढ़ी है उतना ही महत्त्व शिक्षक का भी बढ़ा है। आज समाज शिक्षक से बहुत अधिक अपेक्षा रखता है। समाज को शिक्षित करने के साथ-साथ आज की शिक्षा में प्रेम, सत्य, सेवा और राष्ट्रप्रेम की भावना को जगाना होगा। हम जानते हैं कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की अहम भूमिका होती है जो अपने आने वाले इतिहास को बदलने का सामर्थ्य रखती है। शिक्षक विकार से विचार की यात्रा करवा कर सत्य से साक्षात्कार करवाने की ताकत पैदा करवा सकता है, उस जज्बे को वापस जगाना होगा। हमारा कर्त्तव्य है कि हम मूल्यों व आदर्शों का पूर्व की भाँति संरक्षण, संवाहक और संवर्द्धन में सक्रिय व सतर्क रहते हुए नव निर्माण व सृजन में अपना योगदान देकर भारत को पुनः विश्व गुरु बना सकते है।

प्राध्यापक (भूगोल)
मुकाम पोस्ट सामलिया, वाया सरोदा,
तह. सांगवाड़ा, डूँगरपुर (राज.)-314032
मो: 8239869911

www.rajsevak.com

बदलते परिवेश में बदले गुरुजन

❒ जीवराज सिंह

परिवर्तन सृष्टि का अटल और अनोखा नियम है। परिवेश भी निरन्तर परिवर्तनशील है। इस संदर्भ में शिक्षकों में भी आवश्यकतानुसार अपेक्षित परिवर्तन होना जरूरी है। इसलिए विद्यालयों एवं शिक्षकों को विविध क्षेत्रों में परिवर्तन करने होंगे।

पाठ्य सामग्री का प्रभावी सम्प्रेषण– एनसीईआरटी पाठ्यक्रम पूरे राज्य के सभी विद्यालयों में लागू हो गया है जो बेहद ही वैज्ञानिक मनोवृत्ति, अनुभवी शिक्षकों की टीम के बेहतर मार्गदर्शन में लिखी पुस्तकें हैं। जिस उद्देश्य व लक्ष्य को ध्यान में रखकर पुस्तकों का लेखन हुआ है वह पूरा होना आवश्यक है। इसमें बड़ी भूमिका विद्यालय तंत्र की है जिसमें शिक्षक की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण व निर्णायक है। हर पुस्तक के प्रारम्भ में भूमिका, प्राक्कथन और जिस उद्देश्य से पुस्तक लिखी गई है वह लिखा होता है तो हम शिक्षक समुदाय को बहुत गंभीरता से उस दिशा में काम करना चाहिए और मेरा सुझाव यह भी है कि एनसीईआरटी की पुस्तकें जिन उद्देश्यों को लेकर लिखी गई वह शिक्षकों के माध्यम से कितने उद्देश्य पूरे हो रहे हैं इसका भी आकलन होना चाहिए क्योंकि पुस्तकें केवल विद्यार्थियों का कॅरियर या नौकरी हेतु युवा तैयार करने के लिए नहीं बनी है, बल्कि विद्यालयों को भावी जीवन के लिए विद्यार्थियों को बेहतरीन ढंग से तैयार करना चाहिए।

विद्यालय परिवेश– शिक्षण और अधिगम में विद्यार्थी किस स्तर पर कितना गहरा अधिगम करते हैं वह विद्यालय के परिवेश पर निर्भर करता है। इस संदर्भ में विद्यालय के स्टाफ के बीच सामंजस्य होना, उनके बीच एक 'सैनर्जी' होना बेहद महत्त्वपूर्ण है। वह सहयोगी के रूप में काम करें। विद्यालय अपने स्तर पर लक्ष्य बनाए और उस लक्ष्य को पूरा करने की जिम्मेदारी सारे विद्यालय स्टाफ की हो। कहने का मतलब है कि एक परिवार के रूप में विद्यालय स्टाफ चले और विद्यालय कार्य करे। इससे विद्यार्थियों को बेहतर ढंग से शिक्षा दी जा सकती है।

भावनात्मक बुद्धि का विकास– विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धि का विकास होना भी बेहद महत्त्वपूर्ण है क्योंकि सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थी अध्ययन करने के लिए आते हैं, वह समाज की विभिन्न पृष्ठभूमि, विभिन्न जातियों, विभिन्न आर्थिक स्तर एवं विभिन्न धर्मों से होते हैं, तो हर विद्यार्थी के साथ एक संतुलित व्यवहार शिक्षक करें। उसके लिए शिक्षक में भावनात्मक बुद्धि का विकास होना बेहद आवश्यक है।

शाला दर्पण पारंगतता– बात यदि शिक्षकों के द्वारा शाला दर्पण के उपयोग की हो तो निश्चित रूप से विराट संभावनाएं हैं। शिक्षक शाला दर्पण का सटीक उपयोग करना सीखे; क्योंकि विद्यालय की हर छोटी और बड़ी गतिविधि, अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ शाला दर्पण पर अंकित या फीड करना होता है तो निश्चित रूप से शिक्षकों को भी यह सब सीखना चाहिए। विद्यालय के शाला दर्पण पोर्टल को केवल एक शिक्षक ही न संभाले, बल्कि बाकी शिक्षकों को भी उसका अधिक ज्ञान होना चाहिए।

समग्र बालक का निर्माण– सही अर्थों में विद्यालय ऐसे बालकों का निर्माण करे जिनके चेहरे पर आभा हो, बुद्धि में पांडित्य हो जिन्हें देखकर महान पूर्वजों की यादें तरोताजा हो जाए। इस संदर्भ में सब शिक्षकों को मिलकर प्रयास करना चाहिए। हमें अपना आत्म विवेचन भी करना चाहिए कि हम और क्या बेहतर कर सकते हैं क्योंकि कहा गया है कि प्रलय और सृष्टि दोनों शिक्षक की गोद में पलते हैं। शिक्षकों की एक महान परंपरा रही है। महान शिक्षकों ने महान शिष्यों का सृजन किया है। शिक्षकों ने विश्व को बेहतर बनाने में अमूल्य योगदान दिया है। निश्चित रूप से शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है।

वैज्ञानिक मनोवृत्ति का विकास– विद्यार्थियों में वैज्ञानिक मनोवृत्ति का विकास होना चाहिए। अपने सामाजिक परिवेश के प्रति उनमें जागरूकता हो। विद्यार्थियों में मानवतावादी दृष्टिकोण विकसित हो। 'वसुधैव कुटुम्बकम' का भारत की समृद्ध परंपरा में विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करें और वह पूरी मानव सभ्यता के लिए कुछ बेहतर कर पाए इसके लिए विद्यालयों का पूरा परिवेश बने और इस दिशा में काम करें जिससे श्रेयस्कर परिणाम परिलक्षित होंगे।

भारतीय संविधान का आठवां मूल कर्त्तव्य कहता है कि वैज्ञानिक मनोवृत्ति का विकास हो। विद्यालयों में आयोजित विज्ञान मेलों से निश्चित रूप से विद्यार्थियों में सृजनात्मकता और रचनात्मकता का गुण विकसित होता है उसे परिष्कृत करने के लिए विद्यार्थी अपनी मेहनत से अपनी रचनात्मक सोच विकसित कर मॉडल बनाते हैं। अच्छे मॉडलों को हमें प्रचारित-प्रसारित करना चाहिए ताकि आगे चलकर सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाला कोई विद्यार्थी अब्दुल कलाम जैसा वैज्ञानिक बन सके। हमें विद्यार्थियों की रचनात्मकता और सृजनात्मकता दोनों को निरन्तर प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें शब्दों से प्रेरित करना एवं पुरस्कार या अन्य तरीकों से निरंतर प्रोत्साहित करते रहना चाहिए।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार आने वाले समय में हर विद्यालय में डिजिटल पुस्तकालय, वर्चुअल लैब, ऑनलाइन शिक्षण मंच और टूल्स के विकास को सुविधाजनक बनाने पर जोर दिया जाएगा। इसके लिए गुरुजनों को समय पर सतर्क हो जाना चाहिए। क्योंकि आने वाला समय विद्यालयों में कक्षा का प्रबंधन और शिक्षण का मिश्रित मॉडल के साथ ही सफर होगा।

ई-शिक्षा– कोविड-19 मानव सभ्यता के सामने कई परेशानियाँ लेकर आई। राजस्थान शिक्षा विभाग ने कोविड-19 की अवधि में स्कूली बच्चों का अध्यापन कार्य सुचारू रूप से चलाने के लिए कुछ नवाचार किए हैं जो निश्चित रूप से मील का पत्थर तो है ही अन्य राज्यों के लिए अनुकरणीय भी है। ई-कक्षा प्रोजेक्ट का प्रारंभ करने वाला राजस्थान पहला राज्य बना। शिक्षावाणी व शिक्षा दर्शन के माध्यम से अध्ययन सामग्री विद्यार्थी तक पहुँच सके इसके लिए भी बहुत ही सशक्त और वैज्ञानिक ढंग से राजस्थान शिक्षा विभाग निरन्तर कार्य कर रहा है। डिजिटल बोर्ड या विद्यालयों में प्रोजेक्टर लगाने की दिशा में भी शिक्षा विभाग व राजस्थान सरकार बेहद गंभीर है। कोविड-19 में

www.rajsevak.com

विद्यार्थी को विद्यालय से दूर रखा लेकिन शिक्षा विभाग की सजगता और दृढ़ निश्चय से ई-कक्षा की परिकल्पना की गई और इस दिशा में प्रभावी कार्य किए गए जैसे ऑनलाइन शिक्षण सामग्री के वीडियो भेजना, गृहकार्य देना व संकलन करना, सप्ताह में दो दिन घर-घर संपर्क करना। यह सभी गतिविधियाँ सुचारू रूप से निरन्तर चले ताकि विद्यार्थियों की पढ़ाई बाधित न हो।

सोशल मीडिया से उपलब्धियों का प्रसार- सरकारी स्कूलों के शिक्षक सोशल मीडिया का उपयोग सरकारी विद्यालयों की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए करें। यह आदेश दबावपूर्ण परिस्थितियों से न हो बल्कि हमारे शिक्षकों में इस प्रकार की समझ विकसित करें, उन्हें प्रेरित करें कि वे सरकारी विद्यालयों की उपलब्धियों को अपने फेसबुक, वाट्सएप के स्टेटस, डीपी पर लगाए और जब आपकी उपलब्धियाँ जन-जन तक पहुँचेगी तो निश्चित रूप से सरकारी विद्यालयों के प्रति रूझान बदलेगा और सकारात्मक सोच विकसित होगी। सोशल मीडिया का उपयोग सरकारी अध्ययन सामग्री को विद्यार्थियों तक पहुँचाने के साथ-साथ प्रचार के लिए भी कर सकते हैं। राजस्थान सरकार की जो प्रतिबद्धता शिक्षा को लेकर दृष्टिगोचर होती है, वह जन-जन तक पहुँचनी चाहिए।

सोशल मीडिया भटकाव रोकने हेतु उपाय- जब सोशल मीडिया के सदुपयोग की बात होती है तो उसके समानांतर सोशल मीडिया विद्यार्थियों के भटकाव का भी एक बड़ा कारण बन रहा है छोटे उपाय कारगर हो सकते हैं-

i. घर में बच्चा जब स्मार्टफोन का उपयोग करे तो वह अपने अभिभावकों की उपस्थिति में करे इससे अभिभावकों की नजर रहेगी कि बच्चा कौनसी सामग्री देख रहा है।
ii. यदि आपके घर में टी.वी. है तो वह कमरे की बजाय चौक में लगाए ताकि नजर रहे कि बच्चा क्या देख रहा है।
iii. बालक भी सजग रहेगा कि वह अनावश्यक सामग्री, भटकाने वाली अश्लील सामग्री, हिंसक सामग्री देखने से बचेगा।

उपाय छोटे हैं लेकिन संभव है कारगर साबित हो।

अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय देवाणी, चूरू (राज.)
मो: 9784108304

शिक्षा का महत्त्व और उपयोगिता

❒ **अविनाश कुमार सिंह**

शिक्षा हमारे जीवन का आधार स्तंभ है। हमें अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए शिक्षित होना इसलिए बेहद जरूरी है क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक इंसान का व्यवस्थित जीवन जीना बेहद मुश्किल हो जाता है। आज के परिप्रेक्ष्य में यदि कोई इंसान शिक्षित नहीं है तो कदम-कदम पर उसे शिक्षित व्यक्तियों का सहयोग लिए जाने के लिए मजबूर होना पड़ता है। कई बार अशिक्षित होने के कारण व्यक्ति को कई तरह की धोखाधड़ी का शिकार भी होना पड़ता है। संतोषजनक स्थिति यह है कि आज के दौर में शिक्षा के क्षेत्र में लोगों में विशेष जागृति आई है और विशेष रूप से राजस्थान वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा के क्षेत्र में काफी आगे भी है। एक समय ऐसा भी था जब अधिकांश लोग शिक्षित नहीं हुआ करते थे। उस समय अशिक्षित व्यक्ति के पारिवारिक सदस्य या फिर संपर्क में रहने वाले शिक्षित व्यक्ति उनके अनपढ़ होने का फायदा उठाकर कई बार उनकी संपत्ति को दस्तावेजों पर अंगूठा लगवा कर अपने नाम करा लेते थे। शिक्षा के अभाव में इस तरह की धोखाधड़ियाँ होना अशिक्षित व्यक्ति के जीवन की एक भयंकर त्रासदी हुआ करती थी। ऐसी दुखद घटनाओं से सबक लेकर लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा हुई। शिक्षा के महत्त्व को समझते हुए उन्होंने ठान लिया कि हम शिक्षित नहीं हो पाए तो कोई बात नहीं लेकिन हम अपनी संतान और परिजनों को शिक्षित बनाए जाने का प्रयास अवश्य करेंगे। ऐसे लोगों की सकारात्मक सोच और सरकार के बुनियादी शिक्षा संस्थानों के संयुक्त प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि राजस्थान शिक्षा के क्षेत्र में काफी आगे निकल गया।

आज के समय में शिक्षा का हमारे जीवन में कितना महत्त्व है तथा किस रूप में इसकी कितनी उपयोगिता है लगभग हम सभी इस बात को बहुत अच्छी तरह से समझते हैं। यहाँ यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं कि शिक्षा हमें हमारे जीवन को व्यवस्थित तरीके से जीने का अंदाज सिखाती है। शिक्षा के अभाव में एक अशिक्षित व्यक्ति का आज के समय में जीवन जीना बेहद दूभर है। आधुनिक दौर में जीवन यापन करने के तौर तरीके भी बिल्कुल बदल गए हैं। पूर्वजों के समय जब हमारे समाज में शिक्षा का नितांत अभाव था तब लोगों की जीवन शैली एकदम अलग थी। उस समय लोग सादा जीवन जिया करते थे। तकनीकी तौर पर भी विकास का अभाव था परन्तु जैसे-जैसे समाज में शिक्षा का प्रचार-प्रसार बढ़ा, तकनीकें विकसित हुई, लोगों की जीवन शैली में बदलाव आता चला गया। समझदार लोग इस बात को बहुत अच्छी तरह से समझते हैं कि आज के समय में जीवन शैली में हुआ ये जबर्दस्त बदलाव शिक्षा के प्रचार-प्रसार की ही देन है। शैक्षिक स्तर में सुधार आने के परिणामस्वरूप अत्याधुनिक तकनीकों का विकसित होना हमारे जीवन जीने के तरीकों को बदल रहा है। आधुनिक संसाधनों से युक्त जीवन शैली ने हमें बड़ी सहजता और सरलता से अपने कार्यों को अंजाम देने की कला सिखाई है। अभी हमें शिक्षा के स्तर को और मजबूत बनाते हुए तकनीक के माध्यम से हुए विकास को कायम रखना है तथा नई पीढ़ी को शिक्षित बनाकर नई-नई तकनीकें विकसित करते हुए विकास के नए आयाम स्थापित करने होंगे। वैसे शैक्षिक स्तर को और अधिक सुधारने और मजबूत करने की पुनीत सोच के तहत कई तरह की योजनाएँ समग्र शिक्षा के माध्यम से राजस्थान सरकार द्वारा चलाई जा रही हैं अतः हम सबका नैतिक दायित्व बनता है कि हम राजस्थान सरकार की उन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाते हुए प्रदेश के शैक्षिक ढाँचे को और मजबूत बनाए जाने में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें ताकि अपना प्रदेश (राजस्थान) तकनीकी स्तर पर और मजबूत होकर विकास की नई-नई गाथाएँ लिख सके।

आओ हम सब आज के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के महत्त्व और हमारे जीवन में उसकी उपयोगिता को देखते हुए आज से प्रण करें कि हम 'जहाँ भी संभव हो जब भी संभव हो' राजस्थान के शैक्षिक ढाँचे को और अधिक मजबूत बनाए जाने में यदि कोई भूमिका निभाए जाने की स्थिति में होंगे तो जरूर निभाएंगे।

वरिष्ठ सहायक
कार्यालय मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर (राज.)-322202
मो: 9413052045

www.rajsevak.com

एक कदम सृजन की ओर

❐ देवेन्द्र पण्ड्या

यह ध्यातव्य है कि सृजन एवं अभिव्यंजना प्राणिमात्र का नैसर्गिक गुण है। शब्द व्युत्पत्ति के आधार पर सृष्टि शब्द का निर्माण सृज धातु से हुआ है जो कि कर्म की ही प्रतीकात्मक विवेचना है। इसलिए सृष्टि का अर्थ भी कर्म से संयुक्त ही है। अतः जब सृष्टि ही कर्म मय है तो बालक का सृजन की दिशा में पहल करना कोई अचरज की बात नहीं है। दूसरी ओर पूरी प्रकृति भी भावाभिव्यंजक है और मनुष्य तो पूर्णतया भावों से भीगा हुआ ही है। अतः मनुष्य द्वारा उसकी अभिव्यंजना करना स्वाभाविक है। सृजनशीलता के प्रस्फूरण की स्थितियाँ तभी बनती है जब बालक में वांछित भाव बनते हैं। उन्हीं भावों का विद्यालय पत्रिका के माध्यम से मार्गान्तीकरण करना है। बालक में अकूत क्षमताएँ भरी हुई होती है। अध्यापक का काम है बालक में अंतर्निहित सृजन के गुणों का क्षेत्रवार पहचानकर उन्हें सृजनशील बनाने की दिशा में प्रेरित करना जिससे उसके व्यक्तित्व का समुचित विकास हो सके एवं वह सामाजिक गुणों तथा राष्ट्रीयता के भावों से ओतप्रोत एक उत्तरदायी नागरिक बने। अतः आवश्यकता है विद्यालय में अन्य सहशैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ विद्यालय पत्रिका को भी स्थान देना। विद्यालय पत्रिका बालकों की अभिव्यक्ति की क्षमताओं को मुखरित करने के अवसर प्रदान करने का अच्छा माध्यम है। इन्हीं अवसरों में वह कुछ नया करने का प्रयास करता है तथा शिक्षक को भी उसमें हो रहे अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन देखने को मिल जाते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य है बालक का सर्वांगीण विकास करना तथा उसमें छिपी हुई प्रतिभा को बाहर निकालना है। शिक्षक का यह उद्देश्य बालक की सृजनधर्मिता की चेतना जगाने, उन्हें सकारात्मक सोच के साथ अपनी अभिव्यक्ति को मूर्तरूप देने के लिए तैयार करना है। यही तो है सृजनशीलता की महत्ता। सृजन चाहे किसी भी प्रकार का हो वह बालक को सक्रिय, स्फूर्तिमान, गतिशील व स्वानुशासित बनाता है। यही विचार विद्यालय की पत्रिका की आवश्यकता एवं उपादेयता पर प्रकाश डालते हैं। यद्यपि पत्रिका प्रकाशित करवाना विद्यालय का अनिवार्य कार्य नहीं हैं परन्तु फिर भी यह अपने आप में एक ऐसा कर्त्तव्य कर्म हैं जो हमें विद्यालय में कार्यरत मानव संसाधन को स्वबोध व स्वप्रेरणा से आगे बढ़ने की दिशा में जागरूक रहने का आभास कराता है। अतः हमारे लिए यह आवश्यक हो जाता है कि विद्यालय पत्रिका के कुशल सम्पादन करने एवं उसकी महत्ता को दर्शाने वाली निम्न बातों को जाने एवं उन्हें व्यवहृत करने का प्रयास भी करें।

1. विद्यालय की शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों को प्रोत्साहित एवं प्रचारित करने में विद्यालय पत्रिका की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
2. विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों में रचना धर्मिता के लक्षणों को पहचानकर उनमें रचनात्मक लेखन की छिपी हुई प्रतिभा को पहचानने, उसे परिमार्जित करने तथा उसे आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम बन सकती है।
3. इसके द्वारा विद्यालय का परिचयात्मक विवरण तथा स्कूल में क्या हो रहा है की जानकारी मिलती है। साथ ही साथ विद्यालय में भौतिक एवं अकादमिक संसाधनों की आवश्यकता का भी पता चलता है।
4. यह एक ओर विद्यालय की प्रगति का प्रतिबिम्ब है वहीं बाल हृदयों की गहराइयों में प्रस्फुटित होती भावनाओं का प्रत्यक्षीकरण भी है।

विद्यालय पत्रिका निर्माण की प्रक्रिया चरणबद्ध होती है। इसे निम्न प्रकार नियोजित किया जा सकता है।

1. सर्वप्रथम जुलाई के अंतिम सप्ताह में भाषा विषयक एवं अन्य विषयाध्यापकों तथा प्रतिभाशाली तत्पर विद्यार्थियों की समिति गठित कर उसकी एक बैठक बुलाकर उसमें प्रस्तावित विद्यालय पत्रिका का परिचय देते हुए विभागवार प्रभारी नियुक्त करना। साथ ही बालकों एवं शिक्षकों को रचनाएँ आमंत्रित करने की सूचना देना।
2. अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में रचनाओं के संग्रहण एवं प्रगति की जानकारी लेना।
3. दिसम्बर में बैठक का आयोजन कर प्राप्त रचनाओं की छंटनी की जाए तथा उनके परिमार्जन का कार्य सुनिश्चित किया जाए।
4. मई माह के दूसरे सप्ताह में पत्रिका के प्रकाशन सम्बन्धी सभी औपचारिकताएं पूरी कर उन्हें अंतिम रूप देना तथा प्रकाशनार्थ कार्यवाही करना।

विद्यालय पत्रिका की इस चरणबद्ध प्रक्रिया के साथ-साथ हमें इस बात पर भी विचार करना होगा कि इस कार्य के साथ कुछ नवाचारिक प्रयासों को भी स्थान मिले यथा भित्तिपत्रिका निकालना जिसमें बालकों की भागीदारी सुनिश्चित हो। भित्तिपत्रिका में उपयोग लाई गई सामग्री विद्यालय पत्रिका में भी उपयोग में लाई जा सकती है। वैसे देखा जाए तो भित्तिपत्रिका निकालना एक लम्बे समय से चला आ रहा नवाचारिक प्रयास है। इसका प्रमाण है आज से 70 वर्ष पूर्व एक विद्यालय द्वारा प्रकाशित विद्यालय पत्रिका में सम्पादकीय कॉलम में भित्तिपत्रिका के बारे में किया गया सुन्दर वर्णन। उस समय इसे 'वाल डेकोरेशन' नाम दिया गया था। यहाँ पर इस बात की जानकारी देना मैं अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ कि सन 1950 में एक मिडिल स्कूल हाई स्कूल में क्रमोन्नत हुई तथा इसी विद्यालय द्वारा 50-51 में आर्थिक व मानव संसाधनों के अभाव में और इतना ही नहीं जिले में प्रकाशन की सुविधाएँ नहीं होने से अजमेर से जो कि 450 कि.मी. दूरी पर तथा आज की तरह ऑफसेट प्रिंटिंग की सुविधाएं नहीं थी फिर भी ट्रेडल मशीन से यह प्रकाशन सम्पादित करवाया गया। निःसंदेह विद्यालय का यह प्रयास स्तुत्य, प्रेरणादायी एवं अनुपम प्रयास कहा जा सकता है। मेरा आभार एवं बधाइयाँ उस राजकीय हाईस्कूल गढ़ी की पत्रिका के सम्पादक मण्डल के लिए सदैव सुरक्षित रहेगी। अतः आवश्यकता है भित्तिपत्रिका के शीर्षक से ही इस गतिविधि को निरन्तरता प्रदान की जाए एवं इसे एक नए रूप में, नए ढंग से गुणवत्ता प्रदान करते हुए सघन एवं समृद्ध प्रयास किए जाए ताकि इसका आकर्षण भी बना रहे एवं प्रवृत्ति (भित्तिपत्रिका) भी बनी रहे।

अस्तु, बीज से वृक्ष बनने की संकल्पना पूरी हो सकती है। इस संकल्पना को हमारे दृढ़ संकल्प से ही पूरा किया जा सकता है। संकल्प, इच्छाशक्ति के साथ कुछ करने का, कुछ नया करने का और सभी कुछ अपने परिवार, विद्यालय, समाज व राष्ट्र सेवा को समर्पित करने की भावना से पूरा करने का ताकि हम सभी अपने प्रयासों से अपेक्षित सफलता प्राप्त करने का गौरव अनुभव कर सकें।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
सिविल लाइंस गढ़ी, बाँसवाड़ा (राज.)
मो: 9413015905

www.rajsevak.com

कोरोना और ऑनलाइन शिक्षा

❒ मोहम्मद इमरान खान

कोरोना महामारी के कारण पूरा विश्व थम सा गया है। लोगों की प्राथमिकताएँ बदल गई है। कार्य करने के तरीके बदल गए हैं और सोचने का नजरिया भी बदल गया है। समाज के ताने-बाने में रिश्तों में बदलाव दिखाई देने लगा है दैनिक जीवन का हर एक क्षेत्र बदला सा नजर आ रहा है। चाहे वह चिकित्सा हो, व्यापार हो, उत्पादन करने वाले कारखाने हो या फिर शिक्षा हो।

एकाएक आई इस महामारी ने लोगों को सोचने का मौका ही कहाँ दिया बस जो भी संसाधन मिल पड़ा उसके माध्यम से इसके नुकसान को कम से कम करने की कवायद शुरू कर दी गई जो शिक्षक ब्लैकबोर्ड और चॉक से कभी बाहर नहीं गए थे वे भी ई-कंटेन्ट की बात करने लगे, ई-कंटेंट क्रिएशन करने लगे और नवीन विधाओं को सीखने लगे। कभी मल्टी नेशनल कंपनियों की मीटिंग को ऑर्गेनाइजेशन करने वाले वेब कॉन्फ्रेंसिंग टूल्स अचानक शिक्षकों के लिए आम बात हो गई।

दरअसल यह पहली बार नहीं हो रहा हर किसी समस्या के साथ कुछ अवसर भी मौजूद होते हैं कुछ रास्ते भी नजर आने लगते हैं। कोरोना के साथ वैसा ही हुआ और उन्होंने दुनिया में एक सुनामी की तरह प्रवेश किया जिसका किसी को अंदाजा नहीं था। हो सकता है जल्दी ही सभी को वैक्सीन लगा दी जाए और यह महामारी भी एक अतीत बन जाए। पर इतना सुनिश्चित है जब भी कोई तूफान आता है कोई सुनामी आती है तो वह जाने पर कुछ चीजें छोड़ भी जाती हैं। कोरोना के साथ भी कुछ वैसा ही होने वाला है। इस दौरान किए गए कुछ नवाचार कोरोना के बाद भी अपनी सार्थकता साबित करेंगे और जारी भी रहेंगे। इनमें से ही एक है-ई-लर्निंग।

यह शब्द कोई नया नहीं है अपितु जैसे-जैसे सूचना तकनीक ने पैर पसारे हैं ई-लर्निंग ने भी अपना मुकाम बनाया है। इतना जरूर है कि कोरोना ने इसके महत्त्व को अच्छे से रेखांकित कर दिया। भले ही यह संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में सहायता करने वाले टूल की तरह यह शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन लाने वाला है। जिसकी कल्पना संभवतः पहले कभी नहीं की गई। ई-लर्निंग की खूबी और खामी मूलतः एक बिंदु पर ही केन्द्रित है- वह है शिक्षक और विद्यार्थी के बीच की दूरी।

अगर हम खामी की बात करें तो कह सकते हैं ई-लर्निंग में शिक्षक और विद्यार्थी संबंध पारंपरिक शिक्षण जैसा नहीं हो पाता और अगर खूबी की बात करें तो ई-लर्निंग एक शिक्षक को यह अवसर देती है कि वह अपनी कक्षा से बाहर निकल कर हजारों लाखों तक अपने ज्ञान को प्रसारित कर सकें। उसका विद्यालय किसी गाँव या कस्बे में मौजूद बच्चों से बढ़कर वैश्विक स्तर तक पहुँच जाए। जिसमें एक साथ लाखों बच्चे पढ़ सकें। साथ ही एक विद्यार्थी को अवसर देता है कि वह जब चाहे, जहाँ चाहे, जितना चाहे और जिस शिक्षक से चाहे उससे ज्ञानार्जन कर सकें। मुझे लगता है ई-लर्निंग के महत्त्व के लिए यह काफी है पर इसके बावजूद यह समझना बहुत जरूरी है ई-लर्निंग पारंपरिक शिक्षण में तकनीक का प्रयोग कर इसे बेहतर बनाने वाला है ना कि इसे खत्म करने वाला है।

मैं गाँव के लोगों से गरीब और मध्यम परिवारों से और समावेशी शिक्षा के पैरोकारों से अपील करना चाहूँगा कि कोरोना के बहाने ही सही इस अवसर को हाथ से ना जाने दें। आज के विद्यार्थियों को ई-लर्निंग स्टूडेंट्स में बदलें। उन्हें ऑनलाइन लर्निंग रिसोर्सेज को प्रयोग लेना सिखाएं। अपने बच्चों और जरूरतमंद परिवार के बच्चों को लर्निंग का फायदा उठाने के लिए आवश्यक संसाधन जैसे टेबलेट, लैपटॉप, इंटरनेट जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ। जिस प्रकार हर घर में बिजली, पानी और गैस की सुविधाएँ हमारी प्राथमिकता में हैं। इंटरनेट और वाई-फाई को भी प्राथमिकता दें क्योंकि इसके जरिए आने वाली पीढ़ी ना केवल वैश्विक स्तर के ज्ञान को हासिल कर सकेगी अपितु अपने ज्ञान को भी वैश्विक पटल तक पहुँचा सकेगी।

मैं टेलीकॉम कंपनियों से भी आग्रह करना चाहूँगा कि जिस प्रकार शहरों में फ्री वाई-फाई जोन विकसित किए गए हैं ऐसे ही फ्री एजुकेशनल वाई-फाई जोन ग्रामीण क्षेत्र में भी लगाए जाने चाहिए। जब रोड लाइट की रोशनी में पढ़कर आईएएस, डॉक्टर या इंजीनियर बनने वालों की दास्तान लाखों बच्चों को प्रेरित करती है तो आप सुनिश्चित मान लीजिए कि ऐसे फ्री एजुकेशनल वाई-फाई जोन लाखों बच्चों को अपने सपनों की उड़ान दे सकेंगे।

- भले ही पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था में आजादी के 70 साल बाद भी सभी बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए आज भी संघर्षरत है। भले ही अमीर परिवार और गरीब परिवार के बच्चों के लिए शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच में बड़ा अंतर मौजूद हो पर सूचना तकनीक का सुनियोजित प्रयोग और सुदृढ़ नेटवर्क के माध्यम से इस अंतर को आसानी से दूर किया जा सकता है।
- समावेशी शिक्षा के एक बेहतरीन उदाहरण सुपर थर्टी के आनंद कुमार कहते हैं कि अब राजा का बेटा राजा नहीं बनेगा बल्कि वह बनेगा जो सक्षम होगा। ई-लर्निंग ने भी हमें ऐसा ही अवसर दिया है अब सक्षम परिवारों के बच्चे ही हार्वर्ड, कैम्ब्रिज या स्टेनफोर्ड से डिग्री नहीं लेंगे बल्कि सुदूर गाँव में बैठा मेधावी छात्र भी वही डिग्री ले सकेगा और वह भी अपने खेतों में काम करने के साथ-साथ ई-लर्निंग के माध्यम से अब उसके परिवार को डिग्री के लिए जमीन नहीं बेचनी होगी। ऐसा ही कुछ उन बच्चों के लिए होगा जो आईआईटी में जाना चाहते हैं पर महंगी कोचिंग की वजह से उनका स्थान कोई और ले लेता है।
- ई-लर्निंग हेतु आवश्यक आधारभूत संरचना को तेजी से खड़ा किया जा सकता है बल्कि मैं तो यह कहूँगा डिजिटल इंडिया अभियान के माध्यम से पहले ही ज्यादातर काम हो चुका है।
- मुझे लगता है कि शिक्षा का व्यावसायीकरण संयुक्त राष्ट्र के सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल को हासिल करने में सबसे बड़ी बाधा की तरह है। यदि समय रहते ई-लर्निंग को सही दिशा नहीं दी गई तो डिजिटल डिवाइड समावेशी शिक्षा के सपने को चकनाचूर कर रख देगा।

इसलिए ई-लर्निंग का एक भारतीय मॉडल विकसित करने की महती आवश्यकता है। यह नामुमकिन बिल्कुल नहीं है। हम सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में पहले से ही अग्रणी है। इंटरनेट के उपयोग के लिए वैश्विक स्तर पर दूसरे स्थान पर हैं। बस हमें ऐसा लर्निंग एजुकेशन मॉडल विकसित करना है जो राइट टू एजुकेशन को उसकी मूल भावना के अनुरूप लागू कर पाए। दूसरी ओर इंक्लूसिव एजुकेशन को सुनिश्चित कर पाए।

नेशनल अवार्डी अध्यापक
A-355, लक्ष्मी नगर, अलवर (राज.)-301001
मो: 9785984283

www.rajsevak.com

एकाग्रता सफलता की कुंजी है

❒ विद्या शंकर पाठक

अध्ययन अध्यापन एक सतत प्रक्रिया है, सुनिश्चित लक्ष्य संधारित कर नियमित विषय वार संतुलित अध्ययन करने से सफलता मिलती है, बस जरूरत है परीक्षा के प्रति जुनून और जज्बे की। मन के जीते जीत है, मन के हारे हार। किसी भी काम को लगन, निष्ठा, तत्परता, रुचि व मनोयोग पूर्वक करने से ही मंजिल प्राप्त होती है। लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती। संकल्प से ही कामना की सिद्धि होती है। दृढ़ निश्चय, पक्का इरादा सफलता के मार्ग को प्रशस्त करता है। एकाग्रता सफलता की कुंजी है। इसी के सहारे उत्कृष्ट सफलता की ओर बढ़ा जा सकता है। **'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'** विद्यार्थियों को सहज, सुगम व सरलता से पूर्ण आत्मविश्वास के साथ परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए। परीक्षा में तनाव कम रखते हुए अपने अभीष्ट की ओर बढ़े। अभिभावक उत्प्रेरक के रूप में अपनी महत्ती भूमिका का निर्वहन करते हुए समय-समय पर सीमित मात्रा में पाथेय प्रदान करते रहे जिससे वह दबाव, तनाव रहित परीक्षा के प्रति सजग रहेगा।

परीक्षा में तनाव को कम करने के व श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम अर्जित करने के कतिपय महत्त्वपूर्ण बिन्दु व सोपान- आत्मविश्वास से परीक्षा दे प्रश्न पत्र हल करने से पहले प्रतिफल को मन से हटा दें, केवल प्रश्न पत्र ही हल करना अपना लक्ष्य रखें ताकि स्मरण शक्ति दिग्भ्रमित नहीं होगी। प्रत्यास्मरण पर अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। कक्षा कक्ष में पठित अंश की जुगाली अर्थात पुनराभ्यास करें। पूरे कोर्स की पुनरावृत्ति कर, अनुवर्तन कार्य पर विशेष बल देते रहे। परीक्षा के दिनों में अपनी पाठ्यपुस्तक व विशेष विषय

वस्तु अपने पास ही रखें। स्व मूल्याकंन करते हुए अपने स्तर का आकलन कर लक्ष्य सुनिश्चित करें। निश्चित विजय श्री आपके चरण चूमेगी।

समय प्रबंधन करें- विद्यालय समय के अलावा घर पर शिक्षण के लिए विषय वार समय तालिका अपने अध्ययन कक्ष में सुनिश्चित रूप लगाएं, जिससे सभी विषयों का अध्ययन कर सकेंगे।

प्रत्येक विद्यार्थी प्रतिभाशाली होता है, अद्भुत कौशल और टेलेंसी सब में होती है। असफलता ईर्ष्या को जन्म देती है। यह मानवीय स्वभाव होता है। असफल होने पर अपनी तुलना सफल हुए अभ्यर्थियों से नहीं करनी चाहिए, ऐसा करने पर डिप्रेशन होता है। आत्मविश्वास कम होता है, निराशा उत्पन्न होती है। सफलता कौसों दूर भागती है। सफलता श्रम साध्य होती है-बिना परिश्रम व मेहनत के सफलता अर्जित नहीं की जा सकती। अतः अविरल रीड एंड रिटर्न की प्रक्रिया को जारी रखना समुचित रहेगा। अच्छे परिणाम के लिए मेहनत सफलता की प्रथम सीढ़ी है। बिना मेहनत और संघर्ष के अच्छे परिणाम की उत्कंठा रखना, तनाव का कारण होता है। अतः तनाव, डिप्रेशन से बचने के लिए हमें निरंतर भागीरथी प्रयत्न करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए, निश्चित ही श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम रहेगा।

स्वयं प्रश्न पत्र तैयार करो एवं उस प्रश्न पत्र को हल करते हुए स्व मूल्यांकन करना अच्छा रहेगा, ऐसा करना एक अच्छे विद्यार्थी को श्रेष्ठ दिशा और दशा का ज्ञान करवाएगा। तनाव मुक्त परीक्षा श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम में सहायक है, अतः चिड़िया की आंख पर अपनी निशानी का संधान कर श्रेष्ठ शत-प्रतिशत गुणात्मक परीक्षा परिणाम अर्जित किया जा सकता है। अतः शिक्षक शिक्षार्थी एवं अभिभावकों तीनों को समन्वय सामंजस्य बनाते हुए छात्र व परीक्षार्थियों को सही समय पर सही दिशा का ज्ञान कराते हुए, होमवर्क पर विशेष बल देते हुए, सकारात्मकता के भाव से निरंतर मंजिल को प्राप्त किया जा सकता है। अति सर्वत्र वर्जयेत, स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए प्रत्येक परीक्षार्थी को मनोयोग पूर्वक तैयारी करते हुए पूर्ण आत्मविश्वास के साथ परीक्षा देने से श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम हासिल कर पाएंगे।

कामना का दामन छोटा मत करो, लक्ष्य हमेशा बड़ा रखो एवं उसके अनुरूप प्रयास, प्रयत्न एवं पुरुषार्थ करते रहो, निश्चित ही परीक्षा में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त होगी। पंच ज्ञानेन्द्रियां, पंच कर्मेन्द्रियों का सरदार मन है, अतः मन को नियंत्रित कर स्थितप्रज्ञ होकर परीक्षा में बड़ी तल्लीनता, तत्परता से प्रश्न पत्र हल कर सफलता आसानी से प्राप्त की जा सकती है। **करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान, रसरि आवत जात के सिल पर परत निशान।। चरैवेति चरैवेति।।**

प्राध्यापक (सेवानिवृत्त)
सरोदा, डूँगरपुर (राज.)
मो. 9660937790

'शिक्षक वह नहीं जो विद्यार्थी के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूँसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करें।'

'किसी विद्यालय की महानता या गरिमा का निर्धारण उसकी इमारतों या उपकरणों से नहीं होता बल्कि कार्यरत अध्यापकों की विद्वता व चरित्र निर्धारण से होता है।'

-डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

www.rajsevak.com

शिक्षा से अर्जित संस्कारों का सशक्त सम्प्रेषण है साहित्य

❒ डॉ. सरोज

ईश्वर ने मानव को सम्प्रेषण की शक्ति दी है। अपने उद्‌गारों को, भावनाओं को, क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं एवं विचारों को अभिव्यक्त कर स्वयं के अस्तित्व को ईश्वर के साथ संबद्ध कर लेता है। मानव की ज्ञानेन्द्रियाँ उसे सहज प्रतिक्रियावादी बना कर सृजनशील बना देती है। यह प्रतिक्रिया उसमें उद्‌गारों को प्रस्फुटित करती है वहीं कला के लिए उर्वरक का कार्य करती है। जीवन को जीवंत बनाने की कला, रस एवं आनन्द ही लक्षित होते हैं, दृष्टिकोण की सकारात्मकता मनुज को इस पथ पर ले जा सकता है वहीं नकारात्मकता दुःख, विषाद और निराशा को दिशा देती है। हमारी भीतरी मनोवृत्ति जो प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखलाया करती है और जो बाह्य प्रपंचात्मक संसार का एक बड़ा आइना है, जिसमें जैसी चाहो सूरत देख लो कुछ दुर्लभ बात नहीं और एक ऐसा स्थान है जिसमें हर किस्म के बेल बूंटे खिले हुए हैं। इस बहलाव में संजोए गए, सहेजे गए अनुभव जब अभिव्यक्ति पाते हैं तो सोलह कलाओं में से शृंगार रूपी काव्य का जन्म होता है। न केवल, आनन्द की अनुभूतियाँ ही सहेजी जा सकने वाली संवेदनाएँ हैं वरन क्रोध, विषाद, विरह आदि सभी रसों को अभिव्यक्त कर परिष्कृत रूप रचना को जन्म देता है।

संस्कारों का उद्‌भव मानव में जन्म के साथ ही उत्पन्न हो जाता है तथापि इन्हें काल एवं परिवेश के अनुरूप परिष्कृत करने के लिए परिवार, समाज एवं शिक्षा की उत्तरदायी भूमिका होती है। मानव की ज्ञानेन्द्रियों एवं मन में अंकित संवेदनाओं का विश्लेषण करने, उन्हें तारतम्यता देने तदुपरांत उन्हें सही अभिव्यक्ति देने योग्य बनाती है शिक्षा। अतः साहित्य सृजन हेतु शिक्षा की अनिवार्यता है। रचना के संसार का एक अंतहीन आकाश है, जिसमें आनन्द आकांक्षाएँ कल्पना का पंख लिए स्वच्छंद विचरण करती है; साहित्य और साहित्य के इस स्तंभ के प्रकाशमान सितारों में काव्य एवं कहानी का अपना महत्त्व है। जहाँ कविता में अभिव्यक्ति की लावण्यता है वहीं कथा में घटना के साथ शब्दों एवं विचारों के पुष्पों से गुंथी माला की महक है।

काव्य में शब्द की अनूठी अभिलक्षणा, अभिव्यक्ति को सशक्तता देती है। काव्य की इस धारा को छायावाद, प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद की नई कविता ने नए क्षितिज की ओर अग्रेषित किया है। यद्यपि सामान्य लोगों द्वारा आधुनिक कविता की आलोचना की गई किन्तु मनुष्य के जीवन की निरर्थकता, सामाजिक रूढ़ियों की हास्यास्पदता, मानवीय संबंधों की निस्सारता और यांत्रिक सभ्यता विकृति तथा खोखलेपन को नई कविता का मुख्य विषय रहे हैं। इसमें परम्परा की कवितामयी ताने-बाने की अनिवार्यता को छिन्न-भिन्न कर दिया गया। राजेन्द्र किशोर अपनी एक कविता में कहते हैं-

अंतरंग की इन छड़ियों पर छांया डाल दूँ।
अपने व्यक्तित्व को एक निश्चित सांचे में ढाल दूँ।
निजी जो कुछ है अस्वीकृत कर दूँ।
सम्बोधनों के सर्ग को उपसंहृत कर दूँ।
आत्मा को न मानू।
तुम्हें न पहचानूँ।
तुम्हारी त्वदीयता को स्थिर शून्य में उछाल दूँ।

इसी प्रकार मुद्रारक्षक की ये पंक्तियाँ प्रेम के प्रति विद्रोही स्वर देती है-

मुहब्बत एक गिरे हुए गर्भ के बच्चे सी होती है।
चाहत वह मजबूरी हो सकती है,
जिसे मरीज खांस कर थूक न सके।

विवशता के उद्‌गार तब और अधिक सटीक लगते हैं। जब उनमें व्यंग्य का नूकीलापन आ जाता है। अज्ञेय की इन पंक्तियों ने सभ्यता का चोला पहने मानव बस्तियों का आईना दिखाते हुए कहा है-

साँप, तुम सभ्य तो नहीं हुए होंगे,
नगर में बसना तुम्हें नहीं आया
फिर किससे सीखा डसना,
विष कहाँ से पाया?

नए कवियों ने शैली एवं भाषा के भी क्षेत्र में अनेक नवीनताओं का परिचय दिया। 'प्यार का बल्ब फ्यूज हो गया' नया प्रतीक है और बिजली की स्टोव-सी एकदम सूर्ख हो जाती है। नए उपमान है। ऐसा भी नहीं है कि वर्तमान में कविता में मात्र विद्रोह के स्वर ही प्रधान रहे हैं अथवा अभिव्यक्ति में संभ्रान्तता को ही महत्त्व दिया गया है। कविताओं में माधुर्य का मीठा रस, प्रेम की पीड़ा, विरह का वेराग तथा शृंगार के स्वप्न अब भी उसे सरसतता देते आ रहे हैं।

इन पंक्तियों में प्रेम की व्याकुलता की नवीन अभिव्यक्ति है-

सांझ प्यासी पाश प्यासा राग प्यासे
रूप के संसार में, मैं भी प्यासी।।

प्रेम की पीड़ा को भी आधुनिक कविता में मानवतावादी दृष्टिकोण दिया है-

मेरी पीड़ा की गहराई मत पूछो तुम,
इसमें दुनिया भर के सागर भर जाएंगे।।

नवीन काव्य में प्रकट प्रयोगधर्मिता एवं विविधता के दर्शन, साहित्य की अन्य विधाओं में भी होने लगे हैं। अब कहानियाँ सीधी एवं घटनाओं की शृंखला अथवा कल्पना का उड़ान मात्र नहीं रही है वरन् कहानी में भी प्रत्येक कथ्य समाज की व्यवस्था एवं मानव के बदलते स्वभाव एवं चरित्र को अभिव्यक्त करता है। चाहे प्रेमंचद की कहानियों में समाज की प्रतिध्वनि की झकझोर हो अथवा सहादत हसन अली मन्टो का मानव के भीतर का सत्य का सन्नाटा, दोनों ही पाठक को कथा का आनन्द नहीं देते वरन् उसे स्वयं में झाँकने, धिक्कारने, सत्य को स्वीकारने के लिए उद्वेलित करता है। कहानी की प्रत्येक पंक्ति न केवल घटना को गति देती है वरन प्रत्येक पंक्ति का कथ्य एक विशिष्ट अर्थ भी सम्प्रेषित करता है।

कहानी को अपनी गति से बढ़ने देते हुए कथाकार अनायास ही कुछ ऐसा भी अपने कथ्य में सम्मिलित कर जाता है जो न केवल कथा अधिक सम्प्रेषणीय बनाता है, साथ ही परिदृश्य के पीछे के सच की ओर भी संकेत कर जाता है। इस प्रकार यह कहना साहित्य में संस्कारों की अभिव्यक्ति होती है तथा संस्कारों को परिमार्जन शिक्षा द्वारा होता है। यद्यपि शिक्षा में औपचारिकता के अहसास को आवश्यक नहीं तथापि औपचारिक शिक्षा क्रमबद्धता एवं सततता के कारण लक्ष्य की ओर सुगमता से बढ़ती है।

इस प्रकार अपने वार्ता को विराम देने से पहले आदमी में आदमियत की तलाश करने के लिए गाँव से शहर की यात्रा को व्यक्त करती अपनी पंक्तियाँ पढ़ती हूँ, क्योंकि गाँव में संस्कार है शहर में शिक्षा परन्तु दौड़-धूप में सच की तलाश, जिन्दा तो पाईन्दा-

गाँव से शहर तक का सफर
शाम से सहर तक का सफर
जिस्म से जेहन तक का सफर
जिन्दा तो पाईन्दा वरन बेअसर।।

अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी-प्रथम
झोटवाड़ा सिटी, जयपुर (राज.)

www.rajsevak.com

महान शिक्षाविद्

❒ होशियार सिंह

जब 'शिक्षा' शब्द आता है, तो सर्वप्रथम 'शिक्षक' एवं 'शिक्षार्थी' के नाम आते हैं। शिक्षक दिवस के आधार स्तंभ डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का नाम सर्वोत्तम कोटि में आता है- इनका जीवनकाल 5 सितम्बर 1885-17 अप्रैल 1975 ई. हैं।

सर्वपल्ली से आशय : 'सर्वपल्ली' आंध्रप्रदेश के नेल्लोर जिले का एक गाँव है। इनके पूर्वज वहीं से थे। दक्षिण भारत में अपने पुस्तैनी गाँव से जुड़ाव दिखाने के लिए नाम के पहले गाँव का नाम लिखने का रिवाज है उसी परम्परा के अनुसार नाम से पहले 'सर्वपल्ली' लिखते हैं। इनके पिताजी एवं पुत्र भी 'सर्वपल्ली' लगाते हैं।

डॉ. राधाकृष्णन की जन्मभूमि : तिरुतनी, तमिलनाडु हैं, जहाँ इनके पूर्वज आकर बस गए थे।

विद्या-अध्ययन के बाद लगभग 40 वर्षों तक इन्होंने शिक्षक के रूप में कार्य किया। इसके बाद 1947-49 तक संविधान निर्मात्री सभा या समिति में सदस्य के रूप में कार्य किया। इनके सत्यनिष्ठा, ईमानदारी एवं कठिन परिश्रम से प्रभावित होकर भारत सरकार ने 1954 ई. में भारत रत्न से सम्मानित किया। जो भारत का सर्वोत्तम पुरस्कार है।

डॉ. राधाकृष्णन के अनमोल विचार : गुरु शिष्य परंपरा भारत की संस्कृति का एक अहम और पवित्र हिस्सा है। जिसके कई स्वर्णिम उदाहरण इतिहास में दर्ज है-'शिक्षक उस माली के समान है जो एक बगीचे को अलग-अलग रूप रंग के फूलों से सजाता है। 'शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करें।' 'शांति, राजनीतिक या आर्थिक बदलाव से नहीं बल्कि मानवीय स्वभाव में बदलाव से आ सकती है।'

राजनीतिक जीवन : 1952 ई.-1962 ई. तक प्रथम उपराष्ट्रपति एवं 1962 ई. से 1967 ई. तक द्वितीय राष्ट्रपति पद पर रहे। इस समय भारत कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा था, परन्तु शांतिपूर्वक समस्या का हल निकालने को सर्वोत्तम प्राथमिकता दी तथा उज्ज्वल भारत के लिए अपने जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। सर्वप्रथम 5 सितम्बर 1962 से शिक्षक दिवस मनाना आरंभ किया।

वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय वार्ड नं. 2
पिलानी, झुंझुनूं (राज.) **मो: 7877026940**

पहल छोटी बदलाव बड़ा

❒ राम स्वरूप लैकरा

पृथ्वी पर वैश्विक रूप से उपस्थित जीवों में मानव जीवन सर्वश्रेष्ठ बुद्धिजीवी माना जाता है। ज्यादा पीछे नहीं परंतु हम डेढ़ साल पीछे से आज तक की वैश्विक विनाश लीला का आंकलन करें तो हम देखेंगे कि विश्व में इस अवधि में एशिया से लेकर यूरोप एवं अमेरिका महाद्वीप तक कुदरत का कहर या कुदरत में मानवीय हस्तक्षेप या मानवकृत जैविक हथियार या प्राकृतिक संसाधनों में मानवीय छेड़छाड़ का नतीजा समझें। यह मानवीय बुद्धि पर निर्भर करता है। कोरोना महामारी की विनाश लीला हमने अभी-अभी भारत सहित वैश्विक स्तर पर देखी है। उसके आघात को सहन किया है। इस वैश्विक महामारी के संक्रमण को रोकने के लिए झुंझुनूं जिले के चिड़ावा उपखंड के छोटे से गाँव क्यामसर के पवन कुमार आलड़िया ने अपने गाँव के लोगों को जागरूक करने का निश्चय किया। कोरोना महामारी ने जब गाँवों में पैर पसारने शुरू किया तो पवन कुमार आलड़िया जो राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय छोटी नांगल, राजगढ़, चूरू में व्याख्याता (भूगोल) पद पर कार्यरत हैं, ने अपने गाँव क्यामसर (झुंझुनूं) को कोरोना महामारी के संक्रमण से बचाने के लिए 'नो मास्क नो एंट्री' के पोस्टर गाँव के घरों के सामने लगाने शुरू किए, प्रारंभ में तो ग्रामीण समझ नहीं पाए कि यह क्या कर रहे हैं। परंतु जब शनै-शनै लोगों को समझ आने लगा तो बच्चे युवा, महिलाएँ और युवतियाँ भी उनके साथ कंधे से कंधा लगाकर इस मुहिम को गति प्रदान करने लगी। इस अभियान ने गाँव क्यामसर (झुंझुनूं) की तस्वीर बदल दी। क्यामसर गाँव ने केवल झुंझुनूं जिले में ही नहीं अपितु पूरे राजस्थान में एक मिसाल पेश की। गाँव में चाहे सोडियम हाइपर क्लोराइड का छिड़काव हो या घरों के आगे पोस्टर लगाना हो जबकि सभी प्रिंटिंग प्रेस की दुकानें लॉकडाउन के कारण बंद थी, घर पर ही हाथ से बच्चों की सहायता से तैयार किए गए या निःशुल्क मास्क वितरण, आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाने का कार्य, सभी ग्रामीणजन का सकारात्मक सहयोग मिला। सभी ने मास्क लगाना और दो गज की दूरी को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया। गाँव में जागरूकता अभियान में एक तरफ युवाओं की टीम ने युवाओं को साथ लेकर तथा महिलाओं की टीम ने महिलाओं में जागृति लाने का सराहनीय कार्य किया। पवन कुमार आलड़िया, व्याख्याता का कहना कि पड़ोसी गाँव पदमपुरा तथा किशोरपुरा में भी युवा इस अभियान को बढ़ा रहे हैं, जिससे अपने गाँवों को कोरोना महामारी से बचा सके। इस कार्य में उनके साथ गाँव के ही युवा डॉक्टर, जो बाहर ड्यूटी कर रहे हैं, उन्होंने कहा कि जब भी उनकी जरूरत पड़े, किसी भी प्रकार के परामर्श की आवश्यकता पड़े तो कोई भी फोन पर परामर्श कर सकता है। आज भी गाँव के लोग सरकार की गाइडलाइन का पालन करते हैं, इस अभियान का ही प्रभाव है कि संपूर्ण गाँव कोरोना से सुरक्षित रहा। आलड़िया का कहना है कि हर काम हम केवल सरकार और प्रशासन के ऊपर नहीं छोड़े, हम नागरिकों की भी जिम्मेदारी है कि इस वैश्विक महामारी में अपने स्तर पर जो भी हमसे हो सकता है, करना चाहिए। शिक्षक पवन कुमार एफर्ट्स संस्था के माध्यम से झुंझुनूं जिले में वंचित बच्चों के सहायता हेतु कार्य कर रहे हैं। अब तक यह संस्था 46 बच्चों को 441122 (चार लाख इकतालीस हजार एक सौ बाईस रुपये) रुपये की आर्थिक सहायता कर चुकी है। परीक्षा की तैयारी करने वाले बच्चों को आवश्यकतानुसार निःशुल्क पुस्तकें उपलब्ध कराते हैं, शहीद, वीरांगनाओं को सम्मानित करना, गंभीर बीमारी से पीड़ितों को आर्थिक मदद दिलाने, पर्यावरण जागृति अभियान तथा समाज हित के कार्य में अपनी भूमिका निभाते हैं। अभी हाल ही में बेटियों को जागरूक करने के लिए हमारी जागरूक बेटियाँ अभियान का आगाज किया है। झुंझुनूं जिले में झुग्गी झोपड़ी में रहने वाली महिलाओं और कचरा बीनने वाली महिलाओं के लिए पहलः एक प्रयास नाम से संगठन बनाया है, जिसमें ऐसी महिलाओं को सिलाई और अन्य कार्य निःशुल्क सिखाए जाएंगे।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
मु. पो. कांकरिया, झुंझुनूं (राज.)
मो: 9530023938

www.rajsevak.com

वर्तमान संदर्भ में अपेक्षित शैक्षिक प्रबंध

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

प्रबंध का सीधा-सीधा आशय किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था के पास उपलब्ध संसाधनों का बुद्धिमत्ता एवं दक्षता के साथ उपयोग करने की व्यवस्था सुनिश्चित करना है। ये समस्त कार्य स्पष्ट कार्य योजना के साथ प्रभावी ढंग से सम्पन्न किए जाते हैं ताकि संबंधित संगठन के पास उपलब्ध मानव व मशीन संसाधनों में समुचित सहयोग एवं समन्वय के द्वारा निहित उद्देश्यों के अनुरूप निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति यथा समय हो जाए। प्रबंध का यह व्यापक संदर्भ है जो हर छोटे-बड़े संगठन पर समान रूप से लागू होता है। प्रबंध का यह संदर्भ व्यक्ति एवं परिवार पर भी लागू होता है। इस प्रकार प्रबंध हर व्यक्ति एवं हर संस्था की सफलता एवं कुशलता के लिए आवश्यक है। यह प्रबंधकीय कौशल का ही कमाल होता है कि सीमित संसाधनों के बावजूद किसी को यश (Credit) एवं उत्तम परिणाम मिल जाते हैं और इसके विपरीत बहुतेरे संसाधनों के बावजूद कईयों को परिणाम के रूप में असफलता एवं निराशा ही हाथ लगती है।

यह तो रही प्रबंध की बात। अब शैक्षिक प्रबंध पर विचार करते हैं। इसके लिए पहले शैक्षिक टर्म को समझना जरूरी है। शैक्षिक का आशय शिक्षा से सम्बन्धित (Concerned to Education) होना है। इस प्रकार शिक्षा के समग्र संदर्भों से सम्बन्धित आवश्यक व्यवस्थाएँ करना शैक्षिक प्रबंध है। संक्षेप में कहें तो किसी शैक्षिक संस्था के संचालन अथवा शैक्षिक कार्यक्रम की क्रियान्विति के निहित उद्देश्य को ध्यान में रखकर आवश्यक नियोजन (Planning), निर्देशन (Direction), प्रबोधन (Monitoring) तथा नियंत्रण (Control) की समुचित व्यवस्था करना शैक्षिक प्रबंधन (Educational Management) कहलाता है।

प्रबंध के सार्वभौमिक संदर्भ के साथ शैक्षिक प्रबंध की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है-

1. प्रबंध प्रक्रिया निर्बाध सतत चलने वाली एक प्रक्रिया है। इस आधार पर शैक्षिक प्रबंध शिक्षा क्षेत्र में आवश्यक कार्य सम्पादन, समस्याओं के निवारण तथा कार्य प्रणाली में सुधार (Reform) का कार्य करता है।
2. शैक्षिक प्रबंध मानवीय व्यवहार एवं Man to Man सिद्धांत पर आधारित है। इसमें वास्ता मशीन से नहीं बल्कि मानव से पड़ता है। शिशु कक्षा में पढ़ने वाले अबोध बालक से लेकर शिक्षक, संस्थाप्रधान, अभिभावक, समाज सबके सब मानव होते हैं। अतः शैक्षिक प्रबंध में संवेदनशीलता एवं अन्य मानवीय गुणों का बोलबाला रहता है।
3. प्रबंध के सिद्धांत सार्वभौमिक (Universal) होते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार शैक्षिक प्रबंध की भावभूमि तथा कार्यप्रणाली सामान्य कमोबेश के साथ सम्पूर्ण विश्व में एक जैसी होती है।
4. प्रबंध प्रक्रिया में संलग्न सभी व्यक्तियों का अपने-अपने स्थान तथा अपनी-अपनी भूमिका में महत्त्व होता है। एक सहायक कर्मचारी की भूमिका भी अपने स्थान पर अपरिहार्य एवं महत्त्वपूर्ण होती है। इस प्रकार प्रबंध एकांगी नहीं होता बल्कि परस्परावलम्बी होता है। शैक्षिक प्रबंध में इसे कदम-कदम पर देखा जा सकता है।

प्रबंध में कला एवं विज्ञान दोनों के लक्षण दिखाई देते हैं। प्रबंध जगत के विख्यात चिंतक डॉ. एफ. डब्ल्यू टेलर कहते हैं कि प्रबंध यह जानने की कला है कि आप व्यक्तियों से क्या करवाना चाहते हैं। इसके पश्चात यह देखा जाता है कि इसे प्रचलित सिस्टम से बेहतर (Better) कैसे किया जा सकता है। प्रबंध अच्छे से शुरू होकर बेहतर मार्ग से गुजरते हुए श्रेष्ठ तक पहुँचने की क्रिया है।

Good ⟶ Better ⟶ Best

यहाँ प्रमुख बात यह है कि श्रेष्ठ (Best) का कोई सांचा नहीं है। आज जो श्रेष्ठ लग रहा है, उससे श्रेष्ठतर एवं श्रेष्ठतम तो सदैव चिंतन में रहने वाले हैं। शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम प्राप्त करना यदि श्रेष्ठ है तो इसे प्राप्त कर लेने के पश्चात गुणात्मक (Qualitative) टारगेट प्राप्त करने का लक्ष्य शैक्षिक प्रबंधकों का बन जाता है। इस प्रकार अच्छा, बेहतर एवं श्रेष्ठ की दौड़ शैक्षिक प्रबंधन में सतत चलती रहती है। आदर्श प्रबंध व्यवस्था वह होती है जिसमें कार्य को उत्तम एवं मितव्ययतापूर्ण ढंग से करने करने का प्रयास किया जाता है। प्रबंध प्रक्रिया में करणीय कार्यों को सुविचारित ढंग से पहले निर्धारित कर किया जाता है। कार्य सुरुचिपूर्ण एवं सुन्दर ढंग से सम्पादित किए जाते हैं। प्रबंध सुव्यवस्थित ढंग से क्रमबद्ध किया जाने वाला महत्त्वपूर्ण कार्य है। अतः यह कला के साथ विज्ञान भी है।

शैक्षिक प्रबंध के व्यावसायिक रूप पर चर्चा करने से पूर्व उपयुक्त रहेगा कि हम प्रबंध (Management) एवं प्रशासन (Administration) में आवश्यक अन्तर को समझ लें। सामान्यतः इन दोनों को एक ही समझा जाता है जबकि वस्तुतः प्रशासन द्वारा नीति निर्माण का कार्य किया जाता है। जबकि प्रबंध उस नीति की क्रियान्विति का कार्य करता है। इस प्रकार प्रशासन एक उच्च स्तरीय गतिविधि है जबकि प्रबंध प्रशासन द्वारा निर्मित नीति को अमलीजामा पहनने से सम्बन्धित है। प्रबंध कार्य को वास्तविक रूप से होते हुए देखता है जबकि प्रशासन विभिन्न चरणों (Steps) से प्राप्त फीडबैक, विभिन्न अध्ययनों के परिणाम, सर्वेक्षण आदि का विश्लेषण कर आगे की नीति एवं रणनीति तैयार करता है।

शैक्षिक प्रबंध में विद्यालयों से लेकर कार्यालयों एवं शीर्ष सचिवालय, निदेशालय/आयुक्तालय तक के कार्यों से सम्बन्धित प्रबंध करना आता है। विद्यालय में प्रबंध का मुख्य जिम्मा संस्थाप्रधान (प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य) का होता है। विद्यालय को यदि सत्र में बांट कर प्रबंध योजना बनाएं तो कक्षावार पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षण कार्य करवाना प्रमुख होता है। इसके प्रबंध के अन्तर्गत वह सम्बन्धित शिक्षकों से अपने विषय के शिक्षण की वार्षिक/मासिक/दैनिक पाठ योजनाएँ बनवाता है। एक प्रबंधक के रूप में संस्थाप्रधान को यह मॉनिटर एवं कंट्रोल करना होता है कि विषयाध्यापक अपने विषय का निर्धारित पाठ योजना के अनुसार शिक्षण करवा रहे हैं। इससे पूर्व उसे यह भी सुनिश्चित करना होता है कि शिक्षक ने अपनी पाठ योजनाएँ अपेक्षित गहराई एवं विस्तार के साथ बनाई है। इस हेतु पाठ

www.rajsevak.com

योजना पुस्तिका विद्यालय प्रशासन द्वारा शिक्षकों को बिना किसी मूल्य (Free of Cost) के उपलब्ध करवाई जाती है। निजी विद्यालयों में शिक्षक इन योजनाओं को विद्यालय प्रबंध की भावना एवं निर्देशों के अनुरूप बना लेते है लेकिन राजकीय विद्यालयों में प्रायः इस ओर उदासीनता देखी जाती है। अतः प्रथम नियंत्रण अधिकारी के रूप में संस्थाप्रधान को यह कार्य दृढ़तापूर्वक नियमानुसार करवाना चाहिए। निरीक्षण अधिकारियों यथा पदेन पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी (PEEO), मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (CBEO), मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (CDEO) आदि को निरीक्षण के दौरान इसकी उचित क्रियान्विति की मॉनिटरिंग करनी चाहिए। यह शैक्षिक प्रबंधन का ही हिस्सा है।

प्राइमरी स्कूल के संस्थाप्रधान (प्रधानाध्यापक) से शुरू हुई विद्यालय प्रबंधक व्यवस्था सीनियर माध्यमिक विद्यालय के संस्थाप्रधान, प्रधानाचार्य तक चलती है। इस प्रकार विद्यालयों के संदर्भ में प्रधानाचार्य उच्चतम पद है। प्रधानाचार्य की पदोन्नति जिला शिक्षा अधिकारी के पद पर होती है। अब वह एक विद्यालय प्रबंधक के स्थान पर जिला शिक्षा प्रबंधक बन जाता है। प्रधानाचार्य पद के समकक्ष अधिकारी ही जिला स्तरीय शिक्षा कार्यालय में अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी होते हैं। जिला शिक्षा अधिकारी की गैर-मौजूदगी में उन्हें जिला शिक्षा अधिकारी के कर्त्तव्यों का पालन करना होता है। ऐसे में एक कुशल प्रबन्धकर्त्ता एवं प्रभावी नेतृत्व क्षमता (Leader) के रूप में उसको प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है। राजस्थान में लीडरशिप एकेडमी की स्थापना राज्य शैक्षिक प्रबंध प्रशासन एवं प्रशिक्षण संस्थान (State Institute of Educational Management and Training/SIEMAT), गोनेर (जयपुर) में की गई है तथा प्रधानाचार्यों के लिए लीडरशिप प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण से प्रधानाचार्यों में कार्य कुशलता/प्रबंध क्षमता का उल्लेखनीय विकास हुआ है। विद्यालयों का परिवेश, अध्ययन-अध्यापन का लेवल तथा विभिन्न क्षेत्रों के परिणाम सुधरे हैं। वर्तमान संदर्भ में आया यह परिवर्तन बहुत सकारात्मक है। ऐसे लीडरशिप प्रशिक्षण और प्रभावी बनाए जाने चाहिए।

जिला स्तर पर जिला शिक्षा अधिकारी बनने पर एकाएक कार्य की प्रकृति एवं संस्कृति में सब बदला-बदला लगता है। एक स्कूल का प्रबंध व प्रशासन देखने वाले व्यक्ति को सैंकड़ों विद्यालयों से रूबरू होना होता है। इतना ही नहीं, जिला प्रशासन तथा विभाग के उच्च अधिकारियों यथा- उप निदेशक, संयुक्त निदेशक, शिक्षा निदेशक/आयुक्त, शिक्षा सचिव आदि से वास्ता पड़ता है। न्यायालय प्रकरण तथा विभिन्न वैधानिक संस्थाओं यथा सूचना आयोग, महिला आयोग, मानवाधिकार आयोग आदि में उपस्थित होना होता है। यह समस्त प्रबंध यथा समय नहीं होने पर अन्यथा स्थिति का सामना करना पड़ता है। अतः जिला शिक्षा अधिकारी स्तर के अधिकारीगण को प्रबंध व अनुशासन कौशल का प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है। राजस्थान में पिछले 5-7 वर्षों (2015-2020) में इस दृष्टि से बहुत सराहनीय प्रयास हुए हैं। जिला शिक्षा अधिकारी बनने वाले (Would be DEOs) अधिकारियों का अग्रिम प्रशिक्षण तथा वास्तव में पदोन्नति होने के पश्चात अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के तत्वावधान में बैंगलोर में सघन प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे उनकी कार्यक्षमता, दक्षता में सकारात्मक वृद्धि रिकॉर्ड की गई है। प्रबंध के लिए ऐसे उपाय किए जाते रहने आवश्यक है।

राज्य मुख्यालय निदेशालय तथा सचिवालय स्तर पर कार्य करने वाले अधिकारियों तथा अन्य अधीनस्थ कार्मिकों के प्रबंध कौशल को बढ़ाया जाना आवश्यक है। अब वे पुरानी मान्यताएँ विदा हो चुकी है जब यह कहा जाता था कि सब अपने आप By the mercy of God होता है अथवा थोड़ा ठहरो, सब ठीक हो जाएगा। अब आप वैसा चाहते हैं, वैसा हो सकता है।

विद्यालयों में शिक्षा विभाग का वास्तविक काम होता है। वहाँ बालक के समग्र विकास के लिए शिक्षकों के साथ अभिभावकों की भी अहम भूमिका होती है। अतः विद्यालय प्रबंध में अभिभावकों का प्रतिनिधित्व रखा जाना चाहिए। इस हेतु शाला प्रबंधन समितियों (SMCs) को और अधिक मजबूत बनाया जाना चाहिए। अभिभावकों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जानी बहुत आवश्यक है।

वर्तमान समय सूचना, संचार एवं प्रौद्योगिकी (ICT) का अद्भुत समय है। सब कुछ जैसे ऑनलाइन होने लगा है। इसका उपयोग शैक्षिक प्रबंध में किया जाना चाहिए। आपके हाथ में रहा एक मोबाइल सूचनाओं का भण्डार है। अधिकांश प्रधानाचार्य लेपटॉप रखते हैं। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संवाद/बैठकें आयोजित हो रही है। इनका उपयोग शैक्षिक प्रबंध में आवश्यक रूप से किया जाना चाहिए। इसी प्रकार विद्यार्थियों को अभिभावकों को उनके बारे में विभिन्न प्रकार की प्रगति सम्बन्धी सूचनाएँ ऑनलाइन भिजवाई जानी चाहिए। कई प्राइवेट स्कूलों द्वारा अपने विद्यार्थियों की दैनिक हाजरी तथा उनके आने-जाने की जानकारी भी मोबाइल पर प्रेषित की जाती है। इससे शैक्षिक प्रबंध सरल, सहज एवं प्रभावी हुआ है। प्रायः सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आईसीटी लैब स्थापित है जिनके माध्यम से समस्त प्रकार की सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जा सकता है।

वर्ष 2020 के प्रारंभ से ही वैश्विक महामारी कोविड-19 के प्रकोप से सारा संसार विचलित रहा है। कोरोना वाइरस के संक्रमण की भयानकता से सब वाकिफ हो गए हैं। मास्क लगाना, बार-बार साबुन से हाथ धोना, दूरी बनाए रखना, भीड़ से बचना, सेनेटाइजर जैसे उपाय आम आदमी भी जानने लगा है। विद्यालयों से लेकर शीर्ष व्यवस्था तक प्रबंध में संलग्न अधिकारियों/कर्मचारियों को बीमारी से बचाव के लिए शासन द्वारा बताई एडवाइजरी का पालन करने/करवाने हेतु कार्य करना चाहिए। ऐसे सामयिक एवं जनहितैषी कार्यों के लिए अनुकूल वातावरण बनाने का कार्य भी शैक्षिक प्रबंधन को करना चाहिए। शैक्षिक प्रबंधनों को सदैव यह याद रखना चाहिए कि जितना बड़ा नेटवर्क उनके पास है, उतना अन्य किसी के पास नहीं है तथा शिक्षकवृन्द में विश्वास एवं श्रद्धा आम व्यक्ति की होती है। अतः वे शीघ्र उपयुक्त वातावरण बना सकते हैं। शैक्षिक प्रबंध/प्रशासन को एकांगी न रहकर समाज के साथ आना चाहिए। इसका बहुत ही सकारात्मक एवं अनुकूल प्रभाव व्यवहार में दिखाई देगा, यह निश्चित है।

पूर्व शिक्षा संयुक्त निदेशक
ए- विनायक लोक, बाबा रामदेव रोड, गंगाशहर,
बीकानेर (राज.)-334401
मो: 9414060038

www.rajsevak.com

बिरवा के पात.... भाषा की बात

❒ डॉ. मूलचन्द बोहरा

भाषा शिक्षक और अन्य विषय शिक्षक में फर्क शिक्षण-प्रक्रिया, आकलन, मूल्यांकन आदि सभी स्तरों पर रहता है, परंतु व्यवहार में भाषा व समाज विज्ञानी शिक्षक के पठन-पाठन में कोई भेद नहीं रह गया है। मसलन महात्मा गाँधी के जीवन चरित्र पर पाठ्यक्रम में एक पाठ है, तो भाषा शिक्षक पाठ की विषयवस्तु की समझ बनाने के लिए बच्चों से अमूमन ये सवाल पूछता है-

महात्मा गाँधी का पूरा नाम क्या है?, महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका कब गए?, उनकी आजादी के दो मंत्र क्या थे? आदि-आदि।

अब मान लीजिए यही पाठ सामाजिक अध्ययन में हो, तो उस विषय को पढ़ाने वाला शिक्षक भी कमोबेश ऐसे ही सवाल पूछेगा। फिर इन दोनों विषयों के अध्ययन-अध्यापन में फर्क क्या रहा? दरअसल दोनों विषयों की प्रकृति में मूलभूत अंतर है। कक्षा आठवीं तक सामाजिक अध्ययन में भूगोल, इतिहाव व अर्थशास्त्र की सामान्य जानकारी के पाठ होते हैं। भाषेतर विषय में शिक्षक का कार्य इनकी विषयवस्तु का बच्चों को बोध करवाना होता है जबकि भाषा शिक्षक का कार्य इससे इतर होता है। भाषा शिक्षक निर्धारित पाठ्यवस्तु को आधार बनाकर संदर्भित भाषा की बारीकियाँ समझाता है। उसके प्रश्न भी अलग होंगे। आकलन-मूल्यांकन की प्रक्रिया भी अलग होगी। भाषा शिक्षक के ये प्रश्न हो सकते हैं-

महात्मा का समास विग्रह क्या होगा?, अहिंसा में उपसर्ग क्या है?, गाँधी जी की मातृभाषा कौनसी थी?, यह पाठ कौनसी शैली में लिखा गया है? आदि आदि।

अगर पाठ में कोई मुहावरा-लोकोक्ति आए हो तो उससे जुड़े प्रश्न हो सकते हैं। जैसे गाँधीजी ने संगठन पर बल दिया था। उसके लिए 'बंदी बुहारी लाख की और खुली बुहारी खाक की' लोकोक्ति के जरिए सवाल-जवाब किए जा सकते हैं। भाषा शिक्षक के पास औजार है, लोकोक्ति, मुहावरा, अलंकार, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि। इन्हीं के सहारे वे पाठ की भाषा की बारीकियों को खोलते हैं। बच्चों को उसके

सौंदर्य से परिचित करवाते हैं।

हमने देखा है कि आठवीं कक्षा की किताब में विशेषकर हिंदी में कविता, कहानी, एकांकी, संस्मरण, निबंध आदि का संकलन रहता है, परंतु यह विधाएँ एक जगह नहीं रखी होकर अलग-अलग रखी रहती है जैसे पहला पाठ कविता का, दूसरा निबंध, फिर पांचवा-छठा कविता का। इस तरह तितर-बितर संयोजन रहता है। दूसरी तरफ नौवीं-दसवीं कक्षा में आते-आते कविता के पाठ एक जगह, गद्य के पाठ एक जगह रखे होते हैं। ऐसा क्यों? विचार कीजिए। यहाँ गौर करने की बात यह है कि भाषा में व्याकरण, साहित्य, भाषा-विज्ञान आदि का समाहार रहता है। अतः उच्च प्राथमिक स्तर तक शिक्षक का काम व्यावहारिक व्याकरण एवं भाषिक सौंदर्य की मूल अवधारणा से अवगत करवाना होता है परंतु जैसे-जैसे बच्चों का बौद्धिक स्तर बढ़ता है शिक्षक बच्चों को साहित्य की ओर उन्मुख कराता है। फिर वहाँ गद्य-पद्य की समझ, कविता-कहानी की समझ आदि को विकसित किया जाता है। माध्यमिक स्तर की कक्षा में पाठ्यक्रम का संयोजन भाषा-ज्ञान के साथ-साथ साहित्य की समझ विकसित करने की ओर रहता है।

भाषा शिक्षक का काम बच्चे को पढ़ना-लिखना सिखाना होता है। शिक्षक को सदैव बच्चों को परिवेश की शब्दावली से पढ़ाना-लिखाना प्रारंभ करना चाहिए। उदाहरण के लिए खेतीहर बच्चों के लिए हल, ट्रैक्टर, खेत, बाजरा, कटाई जैसे शब्द सहज बोधगम्य होंगे, वहीं शहरी बच्चों के लिए सड़क, पिज्जा, मोबाइल, कार, बिस्किट जैसे शब्द सहज बोधगम्य होंगे। कहने का अभिप्राय यह है कि भाषा शिक्षक को सदैव उन शब्दों के आधार पर आगे बढ़ना चाहिए जो शब्द बच्चों के अनुभव जगत से जुड़े हो।

पढ़ना-लिखना शुरूआत में बच्चों के लिए कोई रोजमर्रा का यांत्रिक कार्य नहीं बनना चाहिए। कारण, यह तो एक रचनात्मक प्रक्रिया है जैसे भूख लगने पर बच्चे को 'दुदू' बोलना मात्र दूध मात्र नहीं है बल्कि पूरा वाक्य या कथाक्रम है, मुझे भूख लगी है मुझे दूध पीना है आदि आदि। इसी तरह दो तीन शब्दों को जोड़कर एक वाक्य दो वाक्य बनाना बच्चों के लिए एक सर्जनात्मक प्रक्रिया है। इस दौरान नव रचनाकार की तरह उसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उसे डाँटना व पीटना बिल्कुल नहीं चाहिए। अगर कहीं बच्चा वर्तनीगत गलती कर भी रहा है तो वह आगे जाकर ठीक करवाई जा सकती है। अभी तो उसे मानस में अंकित कथा (वाक्य विन्यास) को कागज पर निर्बाध उतारने का मौका मिलना चाहिए। इससे बच्चा निडर होकर पूरे मन से इस काम को करेगा और सचमुच बड़ों से अधिक तीव्र सर्जन सुख का आस्वादन करेगा। उसे लगेगा कि उसने कुछ नया किया है जो पहले किसी ने ना किया हो। शुरूआत में भाषा शिक्षक इस ओर सजग रहेगा तो संभव है बच्चे में निहित सर्जन क्षमता भी और अधिक निखार कर सामने आएगी। यहाँ सिल्विया एस्टन वारनर की टिप्पणी गौर करने लायक है। वे अपने रचनात्मक लेखन के बारे में लिखती हैं-

'और फिर किसी स्मृति को कोई कैसे छोड़ सकता है? काल के उस क्षण की महकता को कैसे कोई बदल सकता है और अतीत की अन्यत्र उमंग को फिर से कौन जिलाना चाहेगा? भला उन्हें याद कर लेना भर ही काफी है। एक जीवंत शिक्षक तो बस पढ़ाता है और तब आगे बढ़ जाता है ना।'

बच्चा अनुकरण से सीखता है। यह

www.rajsevak.com

सिद्धांत सर्वथा सिद्ध है, अतः अध्यापक का कार्य और व्यवहार ऐसा होना चाहिए जो भाषा के मानक स्वरूप को बनाए रखे। शुरुआती चरण में बच्चा शब्दों का उच्चारण शिक्षक की तरह हुबहू करने की कोशिश करता है। यदि शिक्षक का उच्चारण स्पष्ट, आरोह-अवरोह, लय, तान, लघु-गुरु की सटीक समझ से युक्त होगा तो बच्चे का उच्चारण भी वैसा ही स्पष्ट और ठीक होगा परंतु शिक्षक इस उच्चारण की तरफ बेपरवाह होगा तो परिणाम बच्चों को भी भुगतना पड़ेगा। तदनंतर उनके उच्चारण को सुधारने में वर्षों लग जाएंगे और भद्र समाज में बच्चा उपहास का पात्र भी बनेगा। कुछ छोटे-छोटे नुस्खे हैं जिसके सहारे शिक्षक स्वयं भी अपना उच्चारण सुधार सकते हैं, अगर ठीक नहीं है तो। और बच्चों का उच्चारण भी सुधार सकते हैं। आगे इन्हीं नुस्खों का जिक्र है।

स्वर रहित व्यंजन से पूर्ण वर्ण पर बल लगाने पर उस शब्द का उच्चारण सही होगा जैसे तत्व में 'त' पर बल लगेगा अगर इसका 'त' पर बल नहीं लगाएंगे तो 'ततव' बोला जाएगा। अज्ञानतावश कुछ शिक्षक और विद्यार्थी दोनों यह गलती अक्सर करते हैं जिसमें सुधार किया जाना जरूरी है।

उष्म व्यंजन 'श' (तालव्य), 'ष' (मूर्धन्य) तथा स (दंत्य) से बने शब्दों का अभ्यास किया जाना चाहिए। साथ ही संयुक्ताक्षर क्ष, त्र, ज्ञ, श्र का अभ्यास किया जाना चाहिए। ड़ और ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन है। इसका उच्चारण करते समय आखिर में 'ह' जैसी ध्वनि होती है और बालाघात होता है। इसे विभिन्न उदाहरणों से समझा जाना चाहिए। ये दोनों किसी शब्द के शुरूआती वर्ण नहीं होते। ह्रस्व और दीर्घ स्वर में उदाहरण रखकर अभ्यास किया जाना चाहिए जैसे नीति, रीति, तिथि, मिति, कुमार, शुमार, सूत्र, धूर्त आदि। विशेषकर उकारांत और इकारांत स्वरों के उच्चारण में अमानकता देखी गई है, इसलिए ऐसे शब्दों का अभ्यास बराबर करवाया जाना चाहिए। 'ह' से पहले अनुस्वार युक्त व्यंजन का प्रयोग होने पर 'ह' का उच्चारण 'घ' की तरह हो जाता है। जैसे संहार का उच्चारण संघार की तरह होता है वैसे ही संहिता, सिंह इसी तरह के उदाहरण है।

'र' के प्रयोग की सही जानकारी जरूरी है। कार्य, राष्ट्र, प्रीति, रूप, शृंगार, ऋतु जैसे उदाहरण प्रयोग से उच्चारण संबंधी दोष से बचा जा सकता है। एक उल्लेख्य बात है कि लिपि की समरूपता के कारण स्र तो 'सूत्र' स्राव को स्त्राव, स्रोत को स्त्रोत, सहस्र को सहस्त्र लिखा जाने लगा है। अतः इसका भी कक्षा-कक्ष में अभ्यास करवाना चाहिए। इसके अलावा मानक हिंदी में अनुस्वार तथा पंचम वर्ण को एक जैसा ही लिखा जाता है-जैसे पहले डण्डा, पम्प दन्त लिखा जाता था अब इनके स्थान पर डंडा, पंप, दंत लिखा जाता है। इस ओर भी शिक्षक-बच्चों को ध्यान देना जरूरी है।

चिंताजनक स्थिति यह है कि अधिकांश माता-पिता जगह-जगह खुले हुए प्ले स्कूल्स में बच्चों को भरती करवा देते हैं और उचित आयु से पूर्व ही हाथ में लेखन सामग्री पकड़ा देते हैं। दरअसल वो नाम के ही प्ले स्कूल होते हैं वहाँ भी शिक्षक अभिभावकों के दबाव में बच्चों को लिखना सिखाने के लिए तत्पर रहते हैं। दरअसल पाँच वर्ष की आयु का बच्चा शारीरिक और मानसिक रूप से लिखना सिखाने के योग्य बन पाता है इससे पूर्व नहीं। अतः इस आयु से पूर्व लेखन सिखाने का प्रयास उचित नहीं है। ज्यादा जोर पड़ने पर यांत्रिक रूप में लेखन तो शुरू किया जा सकता है परंतु इससे उसकी सर्जन शक्ति बुरी तरह प्रभावित हो सकती है। लेखन के प्रति मन में उच्चाटन का भाव आ सकता है। यहाँ भाषा शिक्षक का मूल प्रयोजन बच्चों में निहित मौलिक लेखन की क्षमता का उभारना होता है। बच्चों के द्वारा अक्षरों की आकृति बनाना पर्याप्त नहीं है वह अपने मन की, परिवेश की, अनुभव की, परिवार की बातें अपनी समझ से लिखना प्रारंभ करें। चाहे वे टूटी-फूटी भाषा में लिखें, परंतु लिखना जरूरी है। इससे बच्चे शुरूआत से ही लेखन में अपनापन, नयापन या निरालेपन का भाव उत्पन्न कर सकेंगे। उनको लेखन एक यांत्रिक कार्य नहीं बल्कि सर्जनात्मक कार्य लगेगा।

शुरुआती दौर में भाषा की त्रुटि/अशुद्धि रूपों के मूल्यांकन से बचा जाए, कारण यह रोक-टोक उसके लेखन के प्रवाह को बाधित कर सकती है। एक बार नदी के पानी को बहने दो उस पर नहर या बाँध बनाने की कोशिश ना की जाए। वह कार्य बाद में किया जा सकता हैं ऐसा देखा भी गया है, बड़े-बड़े लेखक भी बड़ी उम्र में जाकर ही वर्तनी के सही-गलत की सटीक जानकारी सीख पाए हैं। मुद्दा बात कहना-सलीके का होना चाहिए या बात क्या कही गई है इस ओर ध्यान देना चाहिए न कि उसने मात्राओं/वर्णों का कितना उलटफेर किया है, उसका ध्यान रखा जाए।

भाषा शिक्षक की दोहरी भूमिका होती है, एक तो उसे अपने विषय की समझ बच्चों तक पहुँचानी होती है दूसरा उसे अन्य विषयों (गणित, पर्यावरण आदि) की समझ बनाने के लिए बच्चा कैसे भाषा को टूल के तौर पर इस्तेमाल कर सके, इसकी समझ बच्चों को देनी होती है। अक्सर देखा गया है कि भाषा और साहित्य को एक मानकर पढ़ाया जाता है जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। यह जरूरी नहीं है कि अंग्रेजी भाषा का जानकार शेक्सपियर या कीट्स की कविताओं की समझ भी रखता हो। भाषा पर बल देने का तात्पर्य है, भाषायी सामग्री ज्ञान तथा भाषायी व्यवहार पर बल। भाषायी सामग्री हैं- ध्वनियाँ, लिपि, वर्तनी, उच्चारण, शब्द भंडार, शब्द रचना, वाक्य संरचना, अर्थ तथा प्रयोग आदि। भाषायी व्यवहार कौशल है- सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना।

किसी भी भाषा के पाँच आयाम होते हैं- संदर्भ, विषय, विषयवस्तु, भाषा-शैली और विधा। अर्थग्रहण तथा अभिव्यक्ति की क्षमता भी इन्हें आयामों से जुड़ी होती है। सौ बरस पहले के संदर्भ और आज के संदर्भ में अंतर होगा। घर, दफ्तर, अस्पताल आदि के संदर्भ अलग-अलग होंगे। इस प्रकार के विभिन्न संदर्भों में विषय, विषयवस्तु, भाषा-शैली तथा विधा सभी की दृष्टि से अभिव्यक्ति बदल जाती है और इसलिए अर्थग्रहण की प्रकृति भी बदली जानी चाहिए। कहने का तात्पर्य है कि भाषा शिक्षक में इन पाँच आयामों की समझ होना जरूरी है ताकि वह बच्चों में ऐसी क्षमताएँ विकसित कर सके जिससे वे इन पाँच आयामों को अलग-अलग और एक एकीकृत रूप से समझने, सराहने तथा प्रयुक्त करने के योग्य बन सके।

रीडर
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
बीकानेर (राज.)-334004
मो: 9414031502

www.rajsevak.com

नई शिक्षा नीति 2020 और भाषा शिक्षण

❒ हंसराज सिंह तंवर

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की घोषणा 21वीं सदी की ज्ञान संबंधी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, भारत को एक सशक्त ज्ञान आधारित राष्ट्र बनाने तथा इसे वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक एवं क्रांतिकारी कदम है। वास्तव में भारत में ऐसी शिक्षा नीति की आवश्यकता थी।

जिस शिक्षा को ग्रहण करने के बाद शारीरिक मानसिक बौद्धिक एवं सांस्कृतिक रूप से विकसित ऐसे कौशलयुक्त युवाओं का सर्जन हो सके। जिनमें गौरवशाली भारतीय संस्कृति की जीवंतता,भारतीय भाषाओं में प्रवीणता तथा भारतीय दृष्टि के अनुरूप ज्ञान विज्ञान में दक्षता, स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो। शिक्षा नीति में भाषा के सामर्थ्य को स्पष्ट रूप से इंगित करते हुए कम से कम कक्षा 5 तक मातृभाषा स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर विशेष बल दिया गया है। इसे आगे कक्षा आठ और उसके आगे भी भारतीय भाषाओं में अध्ययन का प्रावधान किया गया है। इसके साथ ही विद्यालयी, उच्च शिक्षा में भी त्रिभाषा फार्मूले के अंतर्गत देव भाषा संस्कृत तथा भारत की अन्य पारंपरिक भाषाओं में से विकल्प चुनने का प्रावधान है। बाल्यावस्था में मानसिक विकास की गति तीव्र होती है तथा इस अवस्था में मातृभाषा में अध्ययन से बच्चे के अंदर चिंतन, स्मरण, निर्णय लेने की क्षमता जैसी वृर्तियों का सहज विकास होता है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है तथा संस्कृति की वाहिका है। मातृभाषा में अध्ययन से अपनी भाषा के प्रति ममत्व और आत्मीयता का भाव तो जागेगा ही साथ ही साथ छात्र आगे चलकर विद्धता भाव के साथ अपनी मातृभाषा में पारंगत होंगे तथा भारतीय संस्कृति के सशक्त वाहक होंगे। मौलिक चिंतन किसी और भाषा में नहीं बल्कि अपनी मातृभाषा या स्थानीय भाषा में ही संभव है। मातृभाषा में लिया हुआ ज्ञान संपूर्णता के साथ छात्र के मस्तिष्क में शत-प्रतिशत स्वीकार्य होता है। इस ज्ञान की छाप अमिट होती है। अपनी भाषा ही सारी उन्नतियों का मूलाधार है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कहा था- निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति का मूल। भाषा के माध्यम से हम दूसरों की संस्कृति से परिचित हो सकते हैं। किसी संस्कृति के लोगों का दूसरों के साथ बात करना, अपरिचितों से बात करना, बातचीत के तौर तरीकों को भी प्रभावित करती है। एक ही संस्कृति के लोगों में अपनापन, अनुभवों की समझ, उनका लहजा यह सभी संस्कृति के प्रतिबिम्ब और दस्तावेज है। संस्कृति हमारी भाषाओं में समाहित है। भाषा की विभिन्न विधाओं नाटक, संगीत, साहित्य फिल्म आदि की सराहना बिना भाषा के करना कतई संभव नहीं है। इसलिए हमें उस संस्कृति की भाषाओं का संरक्षण व संवर्धन करना होगा। दुर्भाग्य से भारतीय भाषाओं का समुचित ध्यान और देखभाल नहीं हो पाई। जिसके तहत देश में विगत 50 वर्षों में ही 220 भाषाओं को खो दिया। यूनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को लुप्त प्राय घोषित किया है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं को सही अर्थों में प्रतिस्थापित करने की दिशा में विद्यालयों व उच्च शिक्षा में बहुभाषावाद को बढ़ावा देगी। इसमें विद्यालयों में मातृभाषा/ स्थानीय भाषा में पठन-पाठन सुनिश्चित हो सकेगा।

त्रिभाषा फार्मूले के अंतर्गत निश्चित रूप से केंद्र और राज्य सरकारों की पहली जिम्मेदारी होगी कि वह गुणवत्तायुक्त भाषायी शिक्षकों को तैयार करें। गुरुकुल के समय शिक्षा का माध्यम संस्कृत एवं भारतीय भाषाएं थी। शिक्षा व्यवस्था भारतीय भाषाओं के बल पर सुदृढ़ थी।महान व प्राचीन विश्वविद्यालय तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला भारत में थे। जहाँ ज्ञान, विज्ञान, कला, दर्शन, धर्म आदि की शिक्षा संस्कृत व अन्य भारतीय भाषाओं में दी जाती थी। संस्कृत भाषा के सामर्थ्य और इसकी वैज्ञानिकता को देखते हुए बाबा साहब अंबेडकर इसे राष्ट्रभाषा बनाने के पक्षधर थे। त्रिभाषा फार्मूले के अंतर्गत विद्यालय के छात्र भारतीय भाषाओं एवं संस्कृत भाषा में प्रवीणता सुनिश्चित कर सकेंगे। विकसित देशों में भी जैसे अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, जापान, इजरायल, फ्रांस आदि में अपनी एक भाषा है जो उनकी बोलचाल तथा गणित, विज्ञान सहित व्यवसाय की भाषा भी है। इन देशों में अपनी भाषा में पठन-पाठन की अनिवार्यता कर रखी है। युवा निश्चित रूप से ज्ञान की विविध विधाओं का अध्ययन अपनी भाषा में करते हैं तो शिक्षा में उत्कृष्टता आएगी। भारतीय मूल्यों, परंपराओं के प्रति समर्पित युवा तैयार होंगे, समर्थ युवाओं के निर्माण से निश्चित ही सशक्त और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण होगा। विकासशील से विकसित देश बनने में महती भूमिका निभाएगा।

इस नीति को लागू करने के संबंध में मेरे कुछ सुझाव है। नीति लागू करने से पहले सभी चुनौतियों को पूरा करना चाहिए।पूरी तैयारी होने के बाद ही इसे लागू किया जाए। पहली चुनौती भाषा शिक्षक तैयार करें। पाठ्य पुस्तकें तैयार करें। भाषा संस्थान प्रत्येक राज्य में स्थापित हो। भाषायी प्रशिक्षण देने हेतु मास्टर ट्रेनर तैयार हो। वर्किंग पुस्तकालय सभी विद्यालयों में हो।

भाषायी प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों को नियुक्ति दी जाए। आँगनबाड़ी /बालवाड़ी आदि को भी संवारने की जरूरत है। ड्रॉपआउट कम करने, नामांकन वृद्धि, नियमितता, ठहराव बढ़ाने, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए राज्यों का सहयोग आवश्यक है। वित्तीय संसाधन जरूरी है इसके लिए जीडीपी का 6 प्रतिशत खर्च करने का इरादा पक्का हो। इसके लिए पक्का विश्वास दिखाना होगा।

इसके साथ ही मेरे कुछ अनुभव है- मैं 30 साल से प्रारंभिक शिक्षा में बच्चों के साथ काम कर रहा हूँ। इसलिए मेरा एक निश्चित मानना है कि जिस तरह एक बच्चा अपने घर में 5 साल तक रहकर बिना स्कूल के भाषा सीख रहा होता है। उसी तरीके से विद्यालय में भी उसको भाषा ज्ञान करवाया जाना चाहिए। इस नीति में भी इस बात पर बड़ा फोकस किया गया है कि बच्चों को प्री प्राइमरी लेवल तक आते आते ही उनका पढ़ना लिखना अच्छा हो जाए, भाषा पर उनकी पकड़ मजबूत हो, अपने मन के विचार, वह लिख सके, मौखिक रूप से प्रस्तुत कर सकें। गणित की बुनियादी बातें जोड़ बाकी गुणा भाग अंक पहचान पर उनकी मजबूत पकड़ बन जाए। यह सब हो जाने से उनका फाउंडेशन मजबूत होगा तो निश्चित रूप से आगे की शिक्षा में वह रुचि भी लेगा व जरूर सफल भी होंगे। इस नीति

www.rajsevak.com

में इस बात पर बड़ा जोर दिया गया कि शिक्षा को 4 चरणों में बांटा गया है।3वर्ष से लेकर 18वर्ष तक के बच्चों को जोड़ा गया है।

मैं भी इस तरह से काम करता हूँ उसका बच्चों को फायदा भी हुआ है। मेरे को भी अच्छा रिजल्ट मिला है। भाषा शिक्षण में संदर्भ पद्धति, वाक्य पद्धति, वाक्य से शब्द पर, शब्द से वर्ण पर आता हूँ। इस तरह पहले वर्ण पहचान न करवा कर क्रम को बदलकर बच्चों के साथ काम करेंगे तो उनको वर्ण की पहचान करने मे उनके दिमाग को ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ेगी। बड़ी सरलता से उनके बात समझ में आ जाती है। क्योंकि भाषा कभी टुकड़ों में नही सीखी जाती है। संदर्भ में, वाक्य में, पूरी बात को बच्चा समझता है। भाषा की यह विशेषता होती है इसलिए हमें भाषा की विशेषता/प्रकृति को ध्यान में रखते हुए भाषा को संपूर्णता में सिखाना होगा। इसी तरह हम गणित की जो भी संख्याएं हैं उनको व्यवहार में बच्चा किस तरह उपयोग ले रहा है। व्यवहार में वह जोड़ बाकी गुणा भाग की सहायता से अपने घर के दूध का हिसाब, अपनी कॉपी किताब पेंसिल खरीदने का, रोजमर्रा का, दैनिक जीवन का सामान लाने का इन सबका हिसाब वह गणित में अच्छी तरह कर रहा है या नहीं यह देखना पड़ेगा। इस नीति में दक्षता आधारित अधिगम की बात कही गई है।

उसके साथ ही बच्चों के बस्ते का बोझ भी कम किया गया है। हर शनिवार का दिन सप्ताह में जिसको हम लोग 'No Bag Day' कह रहे हैं। इस नीति में भी इसका उल्लेख किया गया है। क्योंकि शिक्षा के साथ-साथ सहशैक्षणिक गतिविधियाँ भी बच्चों का संपूर्ण विकास करने के लिए अत्यावश्यक है। इस दिन बच्चों को पढ़ाई के अतिरिक्त वे सब काम विद्यालयों मे करवाए जाएंगे जो उनको अच्छे लगते हो जैसे कहानी लिखना, सुनना, संगीत, चित्र बनाना, कागज के खिलौने बनाना, नाटक करना और भी कई तरह के खेल खेलना। इन सब के लिए उन बच्चों को खूब सारे अवसर दिए जाएंगे। यह सब काम अगर शिक्षक उत्साह और जोश के साथ करेगा तो निश्चित रूप से यह नीति हमारे देश के लिए एक क्रांतिकारी कदम होगी।

अध्यापक
ग्राम पोस्ट-बनेठा, तह. उनियारा, टोंक (राज.)
मो: 9829434517

विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व प्रशिक्षण

❒ कृष्ण बिहारी पाठक

शिक्षा के अनेक-अनेक उद्देश्यों में से एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि वह उपलब्ध मानवीय-भौतिक संसाधनों के अधिकतम रचनात्मक दोहन के साथ भविष्य के मानव को एक सर्वांगपूर्ण मानवीय संसाधन के रूप में इस प्रकार विनिर्मित और विकसित करें कि वह मानव न केवल स्वयं को अपितु अपने साथ साथ परिवार, समाज और देश को सुख, सुविधा, साधन और शांति संपन्न जीवन संस्थितियों के बीच रख सके।

विद्यालय स्तर पर बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए, विद्यालय के आंतरिक एवं बाहरी परिवेश में उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों का अधिकतम सकारात्मक आयोजन ही विद्यालय प्रबंधन कहलाता है और इस प्रबंधन का दायित्व विद्यालय के संस्थाप्रधान अथवा नेतृत्व पर होता है। इस प्रकार प्रबंधन और नेतृत्व दो संपूरक विमाएं हैं।

उत्तम प्रबंधन के लिए उत्तम नेतृत्व का होना नितांत आवश्यक है तभी निर्धारित लक्ष्य एवं उद्देश्यों की अधिकतम उपलब्धि संभव है। यद्यपि नेतृत्व एक नैसर्गिक विशेषक है फिर भी प्रशिक्षण के माध्यम से नेतृत्व की क्षमता में संवर्द्धन किया जा सकता है। नेतृत्व की क्षमता में संवर्द्धन करने के लिए दिया गया प्रशिक्षण ही नेतृत्व प्रशिक्षण कहलाता है।

भारत जैसे बड़े देश में, जहाँ प्रायः जनसंख्या के अनुपात में संसाधनों का अभाव बना रहता है वहाँ अभाव में प्रभाव के विवेक के साथ उपलब्ध संसाधनों के अधिकतम उपयोग हेतु ऐसे प्रशिक्षण आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हो जाते हैं।

योजना और प्रबंधन के अभाव में यादृच्छिक वितरित ऊर्जा और सुप्रबंधन द्वारा सुनियोजित, सुव्यवस्थित ऊर्जा के अंतर को लोहे तथा चुंबक के अंतर से समझा जा सकता है। एक समान रंग, एक समान भार और एक ही रंग के दो टुकडों में से एक लोहा इसलिए है कि उसके आंतरिक परमाणु बेतरतीब हैं, अव्यवस्थित हैं, स्वच्छंद हैं। दूसरा चुंबक इसलिए है कि उसके परमाणु एक निश्चित दिशा

में, निश्चित नियम में और अनुशासन में व्यवस्थित हैं, अनुशासित हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि दोनों में से अधिक मूल्यवान कौनसा टुकड़ा है।

प्रशिक्षण के माध्यम से नेतृत्व क्षमताओं में संवर्द्धन होता है जिसके चलते समय, श्रम और धन की छीजत को बचाया जा सकता है, संसाधनों का सदुपयोग किया जा सकता है और बालक के व्यक्तित्व निर्माण की अधिकतम संभावनाओं का स्पर्श किया जा सकता है। अतः विद्यालय प्रबंधन में नेतृत्व प्रशिक्षण की भूमिका निस्संदेह उल्लेखनीय है। इस दृष्टि से नेतृत्व प्रशिक्षण के महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों, आयामों का विवेचन एक लाभप्रद अनुभव सिद्ध होगा।

I. पीटर सेंगे के पाँच सिद्धांत- प्रणाली वैज्ञानिक एवं प्रबंधन विद्वान पीटर सेंगे ने नेतृत्व क्षमता संवर्द्धन के माध्यम से प्रबंधन संबंधी विविध समस्याओं के समाधान के लिए अपनी पुस्तक 'द फिफ्थ डिस्प्लिन : द आर्ट एंड प्रैक्टिस ऑफ द लर्निंग ओर्गेनाइजेशन' में नेतृत्व क्षमता संवर्द्धन के पाँच प्रमुख सिद्धांत प्रतिपादित किये जिनके माध्यम से एक नेतृत्वकर्ता विद्यालय में वांछित दिशा में परिवर्तन ला सकता है। ये पाँच सिद्धांत हैं-

1. प्रणाली चिंतन- यह सिद्धांत किसी संस्था और उससे जुड़े सभी भौतिक, मानवीय अवयवों को एक समग्र प्रणाली के रूप में देखने की सिफारिश करता है। ऐसी प्रणाली जिसमें प्रत्येक अवयव आपस में अदृश्य अंतर्संबंधी क्रियाओं से जुड़े रहते हैं तथा एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह सिद्धांत प्रत्येक अवयव के बारे में पृथक समझ विकसित करने की बात कहता है ताकि प्रणाली के अंगों की पृथक-

www.rajsevak.com

पृथक कमियों को दूर किया जा सके तथा अच्छाइयों का सदुपयोग किया जा सके।

इस सिद्धांत के अनुसार पूरे सिस्टम या प्रणाली को एक साथ बदलना कठिन है जबकि उसके अवयवों को अलग अलग बदलकर समग्र रूप में एक बड़ा बदलाव संभव है। अतः नेतृत्वकर्ता को संस्था के सभी अंगों को एकक मानते हुए कार्य करना चाहिए ताकि सभी एककों का समग्र प्रभाव बड़ा परिवर्तन करने में सक्षम हो सके।

2. व्यक्तिगत दक्षता– पीटर सेंगे ने 'Mastery' शब्द को अधिकार की बजाय दक्षता से जोड़ा है और इसे शैक्षिक निकायों में एक महत्त्वपूर्ण तत्व माना है। पीटर सेंगे कहते हैं– Personal mastery is the discipline of continually clarifying and deepening our personal vision, of focusing our energies, of developing patience, and of seeing reality objectively.

पीटर सेंगे ने इस पद को विस्तार के साथ प्रस्तुत किया है जिसमें यथार्थ को वस्तुनिष्ठ रूप से देखना, धैर्य तथा संयम से कार्य करना, अपनी ऊर्जा या शक्तियों का केंद्रीयकरण तथा चिंतन को सतत स्पष्ट और समृद्ध करना शामिल है।

यह एक जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। इसके मूल में यह सिद्धांत कार्य करता है कि व्यक्ति अपनी कमियों को सबसे बेहतर खुद जानता है इसलिए वह अपनी कमियों को दूर करते हुए क्षमताओं को विकसित कर सकता है। आत्मविवेचना आसान नहीं होकर भी व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष रूप से एक निश्चित रणनीति की अनुपालना द्वारा व्यक्ति की क्षमताओं में संवर्द्धन करना ही इसका उद्देश्य है। एक कुशल नेतृत्वकर्ता को चाहिए कि वह संस्था से जुड़े व्यक्तियों की निजी क्षमताओं के संवर्धन की अधिक से अधिक सुगम स्थितियाँ निर्मित करे, अपने सहकर्मियों के अधिगम के लिए योजना बनाए।

एक सफल शिक्षा संस्थान के लिए आवश्यक है कि उसका प्रत्येक सदस्य स्वयं सीखे क्योंकि जिस अनुपात में सदस्यों का व्यक्तिगत विकास होगा उसी अनुपात में संस्थागत विकास में भी गुणात्मक वृद्धि होगी।

सेंगे का यह सिद्धांत व्यक्तिगत अधिगम तथा संस्थागत अधिगम को एक दूसरे से संबद्ध करके देखता है।

3. मानसिक प्रतिरूप– किसी व्यक्ति का अन्य व्यक्तियों, वस्तुओं और विषयों को देखने समझने का अपना नजरिया जिसके आधार पर वह उन व्यक्ति, वस्तुओं और विषयों के संदर्भ में अपनी प्रतिक्रिया दर्ज करता है, उस व्यक्ति विशेष का मानसिक प्रतिरूप कहलाता है।

पीटर सेंगे का मतानुसार व्यक्ति स्वयं के तथा अन्य लोगों के मानसिक प्रतिरूपों को पहचानकर, उनके प्रति जागरूक रहकर नेतृत्व क्षमता विकसित कर सकता है।

4. साझा दृष्टिकोण का निर्माण– नेतृत्वकर्ता और उसके सहयोगी किसी संगठन के अंग के रूप में उस संगठन के हित में जब रचनात्मक कार्य मिलकर करते हैं तो यह दृष्टिकोण साझा दृष्टिकोण कहलाता है। इसके लिए संभागियों को विविधताओं के बावजूद भी व्यापक स्वीकार्यता के साथ संगठन या संस्था से आत्मीयतापूर्ण जुड़ाव हेतु प्रेरित किया जाता है।

5. समूह अधिगम– पीटर सेंगे ने खेल जगत, कला जगत, विज्ञान तथा व्यवसाय क्षेत्रों के विविध उदाहरणों से यह निष्कर्ष निकाला कि व्यक्तिगत बुद्धिमत्ता और कौशल की तुलना में सामूहिक बुद्धिमत्ता और कौशल से अधिक अच्छे परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। समूह की समन्वयपूर्ण गतिविधियों से उस समूह के सदस्यों की क्षमताओं में असाधारण रूप से विकास देखा गया। समूह अधिगम के लाभ बताते हुए सेंगे ने लिखा है –

When teams are truly learning, not only are they producing extraordinary results , but the individual members are growing more rapidly than could have otherwise.

सेंगे ने इस सिद्धांत में पारस्परिक संवाद तथा समूह चिंतन की भूमिका को रेखांकित किया है तथा संवाद को सामान्य चर्चा से हटकर अधिक उपयोगी और रचनात्मक माना है। उन्होंने समूह चिंतन को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्थाओं की आधारभूत अधिगम इकाई कहा है। जब तक टीम नहीं सीखती संस्थान भी नहीं सीख सकता।

II. आईजेनहावर का सिद्धांत– अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति एवं सैन्य अधिकारी आईजेनहावर ने संस्था अथवा व्यक्ति के विभिन्न कार्यों को वरीयता के अनुसार चार भागों में विभाजित करने का सूत्र दिया जिसे ग्रिड सिद्धांत भी कहा जाता है। संस्थाप्रधान यदि विद्यालय के कार्यों का संवितरण इस ग्रिड के अनुसार करतें हैं तो वे एक सुनियोजित ढंग से उपलब्ध संसाधनों के बल पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार करणीय–अकरणीय कार्यों को निम्न चार श्रेणियों में बाँट लेना चाहिए।

1. महत्त्वपूर्ण एवं तात्कालिक कार्य – इस श्रेणी में वे कार्य रखे जाते हैं जिन्हें सर्वोपरि प्राथमिकता के साथ यथाशीघ्र पूरा करना आवश्यक होता है। प्रायः यह कार्य खुद ही किए जाने चाहिए।

2. महत्त्वपूर्ण किंतु तात्कालिक नहीं– वे कार्य जो महत्त्वपूर्ण तो होतें हैं किंतु वे दीर्घकालिक लक्ष्यों और उद्देश्यों से जुड़े रहते हैं अतः उन्हें तुरंत या तत्काल किया जाना आवश्यक नहीं होता यद्यपि वे चरणबद्ध रूप से नियत अवधि और योजना से किए जाने चाहिए। इन कार्यों को संस्थाप्रधान अपने साथियों की मदद से करवा सकते हैं।

3. गैर महत्त्वपूर्ण किंतु तात्कालिक – ऐसे कार्य जो महत्त्वपूर्ण नहीं होकर भी नियत समय पर पूर्ण किए जाने की मांग रखते हैं, इस वर्ग में आते हैं। ऐसे कार्य भी हस्तांतरण द्वारा अन्य लोगों से कराए जा सकते हैं।

इस सिद्धांत के दो बड़े लाभ हैं। प्रथम तो यह कि सभी कार्यों का भार अकेले एक व्यक्ति पर नहीं पड़ता, दूसरा यह कि समय अनुसार कार्य अधिक महत्त्वपूर्ण से कम महत्त्वपूर्ण के क्रम में संपादित होते रहते हैं।

4. न महत्त्वपूर्ण न तात्कालिक–इस श्रेणी में वे कार्य आते हैं जिन्हें टाला जा सके। जिन्हें करना आवश्यक नहीं हो। इस सिद्धांत में इन चारों वर्गों के कार्यों को एक ग्रिड के माध्यम से समझा जा सकता है। इस ग्रिड की विशेषता यह होती है कि यदि किसी एक वर्ग के कार्यों को निर्धारित समय पर नहीं किया जाता है तो वे अपने से एक वरीयता ऊपर वाले कार्यों के समान प्राथमिकता पर आ जाते हैं। उदाहरणार्थ यदि 'महत्त्वपूर्ण किंतु गैर तात्कालिक' कार्यों को अधिक समय तक लंबित कर दिया जाए तो एक निश्चित समय बाद ये ही कार्य 'महत्त्वपूर्ण एवं

www.rajsevak.com

तात्कालिक' बन जाते हैं। यही क्रम सभी वर्गों पर लागू होता है, अतः कार्य हस्तांतरण के साथ-साथ पर्यवेक्षण भी होना चाहिए। एक नेतृत्व गुण संपन्न संस्थाप्रधान का प्रयास यह रहता है कि वह प्रथम वरीयता अर्थात 'महत्त्वपूर्ण एवं तात्कालिक' के कार्यों की सूची नगण्य करता चले। इस योजना से वह न केवल प्राथमिकता अनुसार कार्यों को संपादित करता है अपितु समय, श्रम, धन और संसाधनों की बचत भी करता है। कार्यों के विभाजन एवं वितरण से न केवल संस्थाप्रधान का कार्यभार कम होता है बल्कि जिन कार्मिकों को कार्य आवंटित किया जाता है उनके कौशल का भी विकास होता है।

III. टकमैन का प्रारूप- दल अथवा समूह की समझ एक नेतृत्वकर्ता का आवश्यक गुण होता है। सदस्यों को समूह में रूपांतरित करने के उद्देश्य से एवं इस समूह से अधिकतम सकारात्मक परिणाम के दृष्टि से टकमैन ने 1965 ई. में 'FSNP Model' का सिद्धांत प्रस्तुत किया।[3]

1. Forming (गठन)- सर्वप्रथम संस्था के सदस्यों को आपसी अंतर्क्रिया अर्थात संवाद एवं संप्रेषण के अवसर तथा वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए ताकि वे एक दूसरे की सीमाओं और संभावनाओं से अवगत हो सकें। इस प्रकिया से सदस्यों में भय तथा संकोच दूर होता है तथा उत्साह का संचरण होता है।

2. Storming (उद्वेलन)- इस अवस्था में समूह के सदस्य अपने व्यक्तिगत अहम को भुलाकर टीम भावना विकसित करने लगते हैं।

3. Norming (सामान्यीकरण)- इस अवस्था में सभी की वैचारिकता को एक सामान्यीकृत धरातल मिल जाता है और सदस्य एक टीम के रूप में कार्य करना शुरू कर देते हैं।

4. Performing (प्रदर्शन)-यह आत्मविश्वास एवं उत्कर्ष की अवस्था है जिसमें सदस्य एक दूसरे की क्षमताओं और अनुभवों का लाभ उठाते हुए व्यक्तिगत कौशल में वृद्धि करते हैं, परिणाम स्वरूप समूह उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है और संस्था लाभान्वित होती है। आगे चलकर टकमैन ने इस सिद्धान्त को विस्तार दिया और इसमें पाँचवा पद जोड़ा-

5. Adjourning (स्थगन)- इसमें एक लक्ष्य की पूर्ति करने के बाद समूह को दूसरे लक्ष्यों की ओर मोड़ा जाता है। इस प्रकार ये पाँचों अवस्थाएं चक्रीय क्रम में चलती रहती है। इस प्रारूप की सहायता से एक समूह के रूप में संस्था प्रधान उत्तम गुणवत्ता के साथ नियत समय पर शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकता है। अतः दल की समझ नेतृत्व क्षमता संवर्द्धन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है।

IV. जो-हैरी गवाक्ष सिद्धांत- अमेरिकी मनोवैज्ञानिक जोसेफ लुफ्ट एवं हैरी इंगम ने व्यक्ति में स्वयं की तथा समूह की क्षमताओं को पहचानने, उभारने की दृष्टि से यह सिद्धांत विकसित किया। जिस प्रकार खिड़की या गवाक्ष से आर-पार देखा जा सकता है उसी प्रकार यह सिद्धांत व्यक्ति में अंतर्निहित क्षमताओं के कौशल को देखने समझने में मददगार है। इस प्रकार खिड़की से पार देखने के विशेषक एवं दोनों विद्वानों के नामों के प्रथम अक्षर से ही इस सिद्धांत का नामकरण किया गया- 'जो हैरी विन्डो'

व्यक्ति विशेष की अंतर्निहित शक्तियों के संदर्भ में उसकी स्वयं की तथा अन्य लोगों की समझ तथा जानकारी पर यह सिद्धांत आधारित है। इसके चार आयाम हैं।

1. Open (खुला/पारदर्शी)-व्यक्ति के ऐसे विशेषक जिन्हें वह खुद भी जानता है और दूसरे भी जानते हैं। जैसे खुली खिड़की के आर पार सब कुछ देखा जा सकता है उसी प्रकार व्यक्तित्व की ये विशेषताएँ सबके सामने होती हैं। यह आयाम जितना अधिक होता है उतना ही व्यक्ति तथा समूह के लिए लाभदायक होता है।

2. Blind (अंध)-व्यक्ति के ऐसे विशेषक जिन्हें वह खुद नहीं जानता परंतु अन्य लोगों को दिखाई देते हैं। एक अच्छा नेतृत्वकर्ता व्यक्ति को उसके ऐसे विशेषकों का संज्ञान करवाता है और उसके Open क्षेत्र को बढ़ाने में सहायता करता है। रामायण में नल और नील का जल में पत्थर तैराने का कौशल समुद्र द्वारा बताया जाना इसका एक अच्छा उदाहरण है। लगान फिल्म में उड़ते कबूतरों को पकड़ने वाले व्यक्ति के इस कौशल को क्रिकेट में काम लेना भी इसी श्रेणी का अनुप्रयोग है।

3. Hidden (छिपा हुआ)- ऐसे विशेषक जिन्हें व्यक्ति स्वयं तो जानता है परंतु अन्य व्यक्ति नहीं जानते। ये विशेषताएं छिपी रहती हैं, अवसर आने पर प्रकट होती हैं। नेतृत्वकर्ता को अपने समूह के सदस्यों की ऐसी विशेषताओं को उभारने के अवसर देने चाहिए।

4. Unknown (अज्ञात)- ऐसे विशेषक जिनकी जानकारी किसी को नहीं होती। प्रायः विपत्ति के समय ऐसे विशेषक अचानक प्रकट हो जाते हैं। नेतृत्वकर्ता का कार्य है व्यक्तित्व के Open पक्ष को विस्तार देना। यह क्षेत्र जितना बढ़ता जाएगा। शेष तीनों काम होते जाएंगे। यह प्रक्रिया जितनी अधिक होगी संस्था तथा व्यक्ति उतने ही अधिक अच्छे परिणाम दे सकते हैं।

5. हिंसा मुक्त संप्रेषण/N.V.C. (Non Violent Communication) - अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित यह विचारधारा सतर्क संवाद एवं सकारात्मक संचरण पर बल देती है। संवाद कौशल के अभाव में अकारण होने वाले वाद विवाद न केवल समय और संबंधों को नष्ट करते हैं अपितु व्यक्ति और संस्था की रचनात्मकता पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। हिंसा मुक्त संप्रेषण से नेतृत्वकर्ता समूह सदस्यों की ऊर्जा को सही दशा एवं दिशा प्रदान कर सकता है। दूसरे की भावनाओं को समझना और उनका सम्मान करना इसका महत्त्वपूर्ण पक्ष है।

उक्त सिद्धांतों एवं प्रतिमानों के साथ-साथ नेतृत्व संबंधी अन्य धारणाएं भी एक संस्थाप्रधान को विद्यालय प्रबंधन में लाभदायक सिद्ध हो सकती है। यदि वह स्थिति और संदर्भ के साथ इनको अपनी योजनाओं में शामिल करके चले। सदस्यों की क्षमताओं को पहचानना, अंतर्निहित शक्तियों के विकास के अवसर देना, उनकी कमियों और गलतियों के प्रति सुधारात्मक धारणा रखना, आत्मीयता पूर्ण व्यवहार करना और समूह भावना का विकास करना एक नेतृत्वकर्ता के लिए आवश्यक व्यावहारिक उपागम है जो उसे अधिकाधिक सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। अतः मानवीय भौतिक संसाधनों के उचित प्रबंधन एवं दोहन के लिए तथा शैक्षिक उद्देश्यों की अधिकतम गुणवत्ता के साथ प्राप्ति के लिए विद्यालय प्रबंधन में नेतृत्व प्रशिक्षण आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

व्याख्याता (हिंदी)
तिरूपति नगर, हिंडौन सिटी, करौली-322230
मो: 9887202097

www.rajsevak.com

विद्यार्थी का शैक्षणिक विकास

❒ डॉ. पी.एस. वोहरा

पिछले कुछ समय से शिक्षा की महता का बहुत विस्तार हुआ है। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्र के लिए यह बहुत सुखदायक प्रतीत होता है। शोधार्थियों के द्वारा समय-समय पर किए गए विश्लेषणात्मक अनुसंधान भी इस बात को स्पष्ट करते हैं कि माता-पिता इस बात से पूर्ण अवगत है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से ही बच्चों का आर्थिक भविष्य सुरक्षित किया जा सकता है। इस संबंध में हमारी सरकारों के निरंतर प्रयास भी सराहनीय हैं। नई शिक्षा नीति भी इस हेतु काफी दूरदर्शिता को समेटे हुए प्रतीत होती है। इस संदर्भ में एक बात सामाजिक सोच बन चुकी है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा इसलिए जरूरी है कि यह किसी विद्यार्थी का बेहतरीन शैक्षणिक विकास करती है। इसी सोच के साथ माता-पिता अच्छे शैक्षणिक संस्थानों की खोज करते हैं तथा उपलब्ध शैक्षणिक संस्थानों से उनकी यह आशा होती है कि उनके बच्चे का संपूर्ण अकादमिक विकास किया जाए।

शैक्षणिक संस्थान भी विभिन्न प्रयासों के माध्यम से इसी बिंदु की तरफ काम करते प्रतीत होते हैं। आज शैक्षणिक संस्थानों की गुणवत्ता का मूल्यांकन का मुख्य आधार भी इसी परिप्रेक्ष्य के द्वारा होता है। जो-जो शैक्षणिक संस्थान इन मापदंडों पर खरे उतरते हैं, वे सब धीरे-धीरे एक ब्रांड की छवि विकसित कर रहे हैं। पर इन सब का अंतिम परिणाम यह हो रहा है कि इन संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अत्यंत महंगी होती जा रही है तथा एक आम व्यक्ति की पहुँच से दूर होती जा रही है।

इसी पक्ष पर एक कड़वी सच्चाई यह है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का वास्तविक संबंध विद्यार्थी के उस विकास से होना चाहिए जो उसके मानसिक स्तर को बढ़ाता हो तथा उसे इस बात की आत्मिक संतुष्टि देता हो कि वह अकादमिक व अन्य क्षेत्रों में अपनी पसंद को ना केवल सीख रहा है अपितु उसे आगे बढ़ने के लिए लगातार प्रोत्साहित भी किया जा रहा है। विद्यार्थी में इस बात का उत्साह होना अति आवश्यक है कि स्कूली शिक्षा वो गंतव्य है जो

उसे उसके पसंद के अकादमिक विकास तथा अन्य रुचियों के प्रति विकसित करता है। अब हमारी शिक्षा में इससे संबंधित दो मुख्य समस्याएं हैं। प्रथम- शिक्षक अपनी भूमिका से मुख्यत: अवगत नहीं है। अभी तक वह अपनी जिम्मेदारी केवल विद्यार्थी के अकादमिक विकास को बेहतर बनाने में ही समझता है। वह यह कभी भी जानने की कोशिश नहीं कर रहा है कि विद्यार्थी की अकादमिक विकास में किस विषय में रुचि अधिक है तथा किसमें नहीं। इसके अलावा यह एक कठोर सत्य है कि शिक्षक विद्यार्थी को सदैव अकादमिक विकास के लिए ही प्रोत्साहित करता है जबकि हो सकता है कि कोई विद्यार्थी अकादमिक शिक्षा के अलावा कई अन्य क्षेत्रों में अपनी रुचि अधिक रखता हो जिनमें खेल, चित्रकारी, संगीत व नृत्य आदि भी सम्मिलित है।

हमारी सामाजिक सोच भी इस तरह से स्थापित हो चुकी है कि विद्यार्थी की सफलता की पहचान उसके अकादमिक सफलता को लेकर ही की जाती है। इस संदर्भ में यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि माता-पिता व अभिभावक भी लगातार अपने बच्चे को इस बात के लिए ही प्रोत्साहित करते हैं कि उसे हर विषय में सर्वश्रेष्ठ रहना है। वे इस बात से सदैव चिंतित देखे जाते हैं कि उनका बच्चा किसी एक विषय में या कुछ विषयों में तुलनात्मक रूप से कमजोर क्यों है? जबकि होना यह चाहिए कि हमारी शिक्षा के अंतर्गत एक ऐसी व्यवस्था हो जिसमें शिक्षक व माता-पिता विद्यार्थी को उसकी इच्छा के अनुसार ही प्रोत्साहित करें जिससे उस विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो। ऐसे विद्यार्थी को अपने भविष्य में कभी भी आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़ेगा और वो सामाजिक विकास में भी अपना समग्र योगदान देगा।

अब अगला परिप्रेक्ष्य यह है कि अगर शिक्षक इस संदर्भ में अपनी भूमिका में परिवर्तन भी कर ले तथा माता-पिता भी इस बात पर सहमत हो कि बच्चे का शैक्षणिक विकास उसकी इच्छाओं के अनुसार ही होना चाहिए तो इस संदर्भ में मुख्य बाधा यह है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था में बच्चों के फीडबैक की कोई जगह ही नहीं है। कहने का आशय यह है कि ऐसा कोई औपचारिक माहौल स्कूली शिक्षा प्रणाली में है ही नहीं जिसके तहत बच्चे अपनी रुचि को स्पष्ट कर सकें। वे इस बात में घबराहट महसूस करते हैं कि कैसे बताया जाए कि उन्हें किस विषय में रुचि नहीं है या कौन सा विषय उन्हें बहुत अच्छा लगता है। इस बात को भी दुर्भाग्य के रूप में लिया जा सकता है कि विद्यार्थी से इस बात को कभी नहीं जाना जाता है कि उसे शिक्षक के द्वारा जो पढ़ाया जा रहा है, वो समझ आ रहा है या नहीं। उसकी रुचि जानना तो बहुत ही दूर की बात है। इसी तरह लगभग सभी स्कूलों में खेलों की व्यवस्था है पर ये अमूमन देखा गया है कि विद्यार्थी को इस संदर्भ में भी अपनी पसंद के खेल का चुनाव का मौका तब तक नहीं मिलता जब तक कि वो कुछ हद तक अपने आप को स्थापित न कर ले।

इसमें मुख्य भूमिका माता-पिता निभाते हैं। यह देखा गया है कि वे स्कूली शिक्षा के बाद अतिरिक्त समय में अपने बच्चों को उनकी पसंद के खेलों में डालकर कुछ हद तक स्थापित होने में सहायता करने का प्रयास करते हैं। उसके बाद स्कूल में विद्यार्थी को उसकी पसंद के उन खेलों में आगे बढ़ने का मौका मिलता है। यह पूर्णतया गलत अभ्यास है। बच्चों को उनकी पसंद के खेल का चुनाव करने का अधिकार शुरू से ही होना चाहिए तथा शिक्षक को तो यह लगातार मूल्यांकन करते रहना चाहिए कि कौन विद्यार्थी किस खेल में अच्छी तरह से आगे बढ़ रहा है।

अगर शिक्षक अपने विद्यार्थी में संतोषजनक प्रगति को नहीं पाता है तो उस

www.rajsevak.com

विद्यार्थी के माता-पिता के साथ एक व्यक्तिगत चर्चा के माध्यम से इस बात का संदेश विद्यार्थी तक पहुँचाना आवश्यक है कि उसे अपने खेल को बदलना चाहिए। यह संदर्भ खेलों के अलावा विद्यार्थी की अन्य रुचियाँ जैसे कि चित्रकारी, संगीत व नृत्य आदि पर भी लागू होती है।

एक और समस्या जो हमारी शैक्षणिक संस्थानों में बहुत तेजी से आगे आ रही है वह बच्चे पर अंग्रेजी भाषा के विकास का दबाब को लेकर देखी जा रही है। इसे अनावश्यक तो नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह आज वैश्विक मांग है। इस हेतु घर तथा स्कूली शिक्षा दोनों में एक परिवर्तन जरूरी है। विद्यार्थी भाषा में तभी विकसित हो सकता है जब उस संदर्भ में उसका पारिवारिक वातावरण भी भागीदार रहे। विदित रहे कि आज भी भारत में काफी हद तक मूलभूत सुविधाओं की कमी हैं।

इस संदर्भ में ऐसा समझना कि आज के बच्चों के अभिभावकों की पीढ़ी अपने समय में पूर्णतः शैक्षणिक रूप से विकसित थी, यह गलत सोच है। यह देखा गया है कि विद्यार्थी अगर अंग्रेजी भाषा में बोलने में हिचकिचाहट महसूस करता है तो उसका आत्मबल टूट जाता है तथा वह स्कूली शिक्षा में ऐसे कई अवसरों को जानबूझकर छोड़ देता है जिससे कि उसकी यह कमी या हीन भावना अन्य के समक्ष उजागर ना हो। इस संदर्भ में शिक्षा के अंतर्गत एक क्रांतिकारी परिवर्तन की जरूरत है। यह समझना होगा कि विद्यार्थी के विचारों को समझना अति आवश्यक है, ना कि शुरुआत से ही उसमें एक अच्छे वक्ता के गुणों को ना देखकर उसके विचारों को उपेक्षित किया जाए।

माता-पिता भी इस बात को समझें कि अगर उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि बहुत विकसित नहीं है परंतु उन्हें अपने बच्चे के लिए एक अच्छा शैक्षणिक विकास मिल रहा है तो वह इस बात का दोषारोपण स्कूली शिक्षा पर ना करें कि उनका बच्चा भाषा में उतनी पकड़ नहीं बना पा रहा है। अभिभावकों को यह बात समझनी होगी कि बच्चा जब भविष्य में अपने आर्थिक विकास के लिए बाजार में कूदेगा तो कुछ ताकतें उसे अपने आप इस विषय पर पारंगत कर देगी।

भारत एक युवा राष्ट्र है तथा पिछले कुछ वर्षों से विश्व की अग्रणी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है परंतु भारत के लिए सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह आज भी आत्मनिर्भर नहीं बना है। हमारी संस्कृति व गौरवशाली इतिहास में कई ऐसी बातें छुपी हुई है जो आज भी हमें गर्व का अहसास कराती हैं। अगर उस सभ्यता को साथ लेकर चला जाए तथा शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन करके इस संदर्भ को मुख्य आधार बनाया जाए कि शिक्षा ही आर्थिक विकास का आधार है तो इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत ना केवल आत्मनिर्भर बनेगा अपितु वैश्विक नेतृत्व करने की क्षमता भी रखेगा। हमारे नीति निर्धारकों, शैक्षणिक संस्थानों व अभिभावकों से इस बात की आशा की जाती है कि वे दूरदर्शी बने तथा आपस में एक सामंजस्य स्थापित करके शैक्षणिक विकास को आर्थिक विकास का आधार बनाएं।

C-65, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर
(राज.)-334004
मो: 7230099500

एक रिश्ता : गुरु शिष्य

❒ भंवरलाल पुरोहित

गुरु पूर्णिमा का दिन वैसा ही दिन मगर फिर भी इस दिन की महत्ता क्यों? सोचते हुए भारतीय मुनियों, ऋषियों की वैज्ञानिकता पर बात ठहर गई। 'रात में दही खाना, गाँव तोड़ना।' वैज्ञानिक महत्ता को धार्मिक पुट दिया गया, जिससे एक चेतावनी की लोग सहजता से पालना कर सकें।

वैसे दिन तो वही है लेकिन गुरु पूर्णिमा नाम देकर वैज्ञानिक आधार पर आत्मीक शुद्धिकरण किया जावे, चिंतन मनन द्वारा मन के भय को शुद्ध आशीर्वाद द्वारा समाप्त किया जा सके। न्यूटन के आण्विक नियम द्वारा गुरु चरण स्पर्श द्वारा नव ऊर्जा को प्राप्त कर वर्षपर्यन्त तक इस ऊर्जा से सराबोर रहा जा सके।

गुरु जिसका अर्थ बड़ा जिसमें बड़प्पन ही नहीं संस्कारित ऊर्जा भी संचारित होती है। आप इस बात को अध्यापन कार्य, जब आप पूर्ण मनोयोग से करवा रहे होते हैं तब अनुभव करें कि आप अध्यात्म चातुर्य एवं सशक्तता की ऊर्जा से सराबोर रहते हुए उस समय जो विद्यार्थी मनोयोग से आप द्वारा दिए गए शिक्षण को आत्मसात कर लेता है तो उसकी प्रतिभा में निखार आ जाता है।

घटना 1981 की जब मैं द्वितीय वर्ष का छात्र था। भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर कक्षा-कक्ष में बड़ी तल्लीनता के साथ अध्यापन करवा रहे थे। मैं उनके आते-जाते पसीने को देख रहा था। तत्काल उन्होंने पूछा कि समझ में आया मैंने ना में मुंडी हिला दी। उन्होंने चार बार समझाने का प्रयास किया किन्तु चारों बार की स्थिति वैसी की वैसी की बनी रही क्योंकि मैं चिंतन-मनन केवल प्रोफेसर के पसीने से तरबतर शरीर से जुड़ा हुआ था। उनमें गुरुत्तर दायित्व था मुझे स्टाफ रूम में लेकर गए और आण्विक ऊर्जा का वही पाठ पढ़ाया। जहाँ मेरे मन की श्रद्धा उनसे जुड़ी वही गुरु पूर्णिमा पर्व बनकर आज दिन तक वह अध्याय मेरी जिंदगी का अध्याय बन गया। हमारे मनीषियों-ऋषियों ने इस दिन गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु शिष्य के आत्मिक संबंधों को मजबूती प्रदान करने के लिए एक मिलन दिन के रूप में जिसमें चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण ओज और कलाओं के साथ गुरु शिष्य सम्बन्धों को आलोकित करता है। इन कलाओं के द्वारा गुरु का आशीर्वाद फलीभूत ही नहीं अपितु शिष्य की मानसिक शारीरिक एवं भौतिक उत्थान में न्यूटन की आण्विक ऊर्जा सिद्धांत द्वारा प्रस्फुटित होता है। शिष्य सभी आत्मसात कर लेता है। हमारे संस्कारों में धार्मिकता के साथ वैज्ञानिकता भी छिपी है। 'आओ सब मिलकर कोविड-19 बीमारी का भी गुरु शिष्य परम्परा से हल निकालने हेतु पूर्ण मनोयोग से जुटकर समाधान करें।

सीबीईओ पिण्डवाड़ा
नई धनारी, रेल्वे स्टेशन, सरूपगंज, सिरोही (राज.)

www.rajsevak.com

शिक्षा और आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना

❒ बजरंग प्रसाद मजेजी

आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना– भारत सरकार की आत्मनिर्भरता की संकल्पना का उद्देश्य भारत राष्ट्र और उसके प्रत्येक नागरिक को सभी प्रकार से सबल, सक्षम एवं कुशल नागरिक का निर्माण करना है। किसी भी राष्ट्र की आत्मनिर्भरता उसकी उन्नति, समृद्धि, सफलता एवं सक्षमता से प्रकट होती है। अपने देश के प्रति स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता भारत की बुनियाद है। हम आर्थिक रूप से या बौद्धिक रूप से दूसरे देशों की सहायता पर निर्भर रहेंगे तो हम कभी आत्मनिर्भर नहीं हो सकते।

आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल आर्थिक गतिविधियों तक सीमित कर देना यह संकीर्ण अर्थ की ओर ले जाने वाला होगा। भारत का इसे पाने का लक्ष्य जितना प्रबल है उसे पाने के क्रम में उतना ही प्रबल अपनी शिक्षा, संस्कृति, विरासत से जुड़ाव और प्राचीन मूल्यों का समावेश भी होना चाहिए। इस प्रकार से प्राप्त सामाजिक बदलाव भारतीय सभ्यता और संस्कृति को एक नई दिशा देने का कार्य भी करेगा। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम के शब्दों में–

'भारत आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए विश्व का अनुसरण करने के लिए बाध्य नहीं है। भारत की आत्मनिर्भरता उसके विकास, समृद्धि, क्षमता और सुरक्षा से जुड़ी भावना है'।

पं. दीनदयाल उपाध्याय का इस संदर्भ में यह कहना कि–'देश के लिए अपेक्षित अर्थ चिन्तन, भारत की संस्कृति से जुड़े। उन्होंने आयातीत विदेशी राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक तक आंशिक विचारों के स्थान पर 'एकात्म मानववाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं भारतीयकरण को बल दिया। उनके अनुसार एकात्म मानववाद दर्शन के अंतर्गत संपोषणीय विकास की अवधारणा को अपनाना होगा एवं उनके द्वारा दिए गए अन्त्योदय विचार को समझ कर लागू करना होगा। तभी हम भारत को स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर भारत बना सकते हैं।' हम कह सकते हैं कि आत्मनिर्भरता वह कुंजी है जो मनुष्य के लिए सफलता के द्वार खोलती है। जीवन में उत्साह, उमंग का संचार होने लगता है तथा वह ओर अधिक इच्छा शक्ति से कार्य करने लगता है।

अतीत से वर्तमान की ओर– सम्पूर्ण विश्व में भारत एक उद्यमी, विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में स्थापित था। भारत को विश्वगुरु कहा जाता था। देश की आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु का यहाँ निर्माण होता था। विश्व की सर्वश्रेष्ठ उन्नत तकनीक भारत में उपलब्ध थी। वेद–उपनिषदों के सूत्रों में वैज्ञानिक तथ्यों के रहस्य छिपे हुए थे, जिनसे ऋषि महर्षियों ने आराधना और तप के द्वारा मंत्रों को साधकर चमत्कार के रूप में (आविष्कार) प्रयोग किए थे। भूमण्डल, ग्रह नक्षत्र, अंतरिक्ष कालगणना, आयुर्वेदिक औषधियों के ज्ञाता थे। भारत वास्तविक अर्थों में आत्मनिर्भर था। कालान्तर में परावलंबन हमें समुचित विकास के मार्ग से भटका देता है और हमें अविकसित देश की श्रेणी में पहुँचा देता है। मुगलकाल और ब्रिटिश काल ने भारत के विकास को अवरुद्ध कर दिया था तथा देश की आर्थिक स्थिति कमजोर कर दी।

भारत ने स्वतंत्रता के बाद करवट ली। महात्मा गांधी ने अपने चिंतन, व्यवहार, स्वावलंबन के माध्यम से आत्मनिर्भर होने का संदेश दिया। यह उनके जीवन के मूल मंत्र थे, इसी आधार पर उन्होंने स्वराज्य की संकल्पना का संदेश दिया। परिणाम यह हुआ कि भारत की अर्थव्यवस्था, भौतिक एवं तकनीकी विकास के साथ–साथ शिक्षा तथा ज्ञानार्जन की समुचित प्रक्रिया का विकास प्रारंभ हुआ। देश में चिकित्सा पद्धति का विकास, कृषि संयंत्रों का युगानुकूल निर्माण, जैव प्रौद्योगिक आधारित औषधियाँ, औद्योगिक क्रांति के दौर में बेट्री चालित वाहनों का निर्माण प्रारंभ किया जाने लगा है। कम्प्यूटर, हार्डवेयर, ऑपरेटिव सिस्टम, डाटा विश्लेषण, सॉफ्टवेयर प्रोडक्ट्स, आवश्यक रसायन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का देश की फैक्ट्रियों में उत्पादन प्रारंभ हो चुका है। रक्षा क्षेत्र में लड़ाकू विमान, आणविक शक्ति सम्पन्न लोकतांत्रिक गणतंत्र होने के साथ ही अंतरिक्ष विज्ञान तथा मिसाइल विकास क्षेत्र में विश्व में अग्रणी देश माना जाने लगा है।

आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में शिक्षा का महत्त्व–आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने हेतु मौलिक अधिकारों के साथ–साथ कर्त्तव्यों के प्रति नागरिकों को जाग्रत करना होगा। यह शिक्षा द्वारा ही संभव है। संवैधानिक मूल्यों से जनता को परिचित कराना आज की महत्ती आवश्यकता है। भारत को उन्नत बनाना है, समृद्ध बनाना है, सबल बनाना है और इस सबके योग से भारत को आत्मनिर्भर बनाना है तो हमें शिक्षा के द्वारा संकल्पना को साकार करना होगा। नवयुवकों को रोजगारोन्मुखी शिक्षा दी जानी चाहिए।

आज शिक्षा का अर्थ केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित हो गया है। इसमें कौशल एवं श्रम का अभाव है। देश को आगे बढ़ाने का मार्ग शिक्षा से ही निकल सकता है। हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो बालक को केवल साक्षर न बनाए, अपितु बालक में तर्क संगत सोच के साथ ज्ञान का विकास कर श्रम के प्रति निष्ठा उत्पन्न करें। बालक में समग्रता के साथ–साथ सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर, आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना साकार कर सकते हैं।

भारत में प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल की शिक्षा व्यवस्था ने सैद्धांतिक शिक्षा के साथ श्रम आधारित शिक्षा, रोजगारोन्मुखी शिक्षा देने पर भारत में समय–समय पर गठित शिक्षा आयोगों ने सुझाव दिए। तदनुसार शिक्षा में परिवर्तन–परिवर्द्धन किया जाता रहा है। बानगी के रूप में मुदालियर आयोग (1958) ने देश में व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया जिसके अनुसार विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार पाठ्यक्रम को चुनते हैं। कोठारी आयोग (1964) ने कार्यानुभव शिक्षा तथा विविधता वाले कई पाठ्यक्रम प्रारंभ कर हस्तशिल्प, गृह विज्ञान और प्रायोगिक शिक्षा पर जोर दिया। शिक्षा नीति (1986) ने भी व्यावसायिक शिक्षा, रोजगार परक शिक्षा पर जोर दिया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा ने शिक्षा क्षेत्र में

www.rajsevak.com

कई बदलाव कर व्यावसायिक शिक्षा संस्थान की स्थापना कर, कौशल विकास शिक्षा प्रारंभ कर, आत्मनिर्भर भारत बनाने की दिशा में कदम उठाया है, देश में शिक्षा के क्षेत्र में 754 से अधिक विश्वविद्यालय, 5000 से अधिक रिसर्च एंड डवलपमेंट संस्थाएं, नवोदय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, मेडिकल कॉलेज, उच्च शिक्षा में IIT, NIT, IIM तथा CBSC, CISCF, NCERT तथा राज्यों के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, आँगनबाड़ियाँ, प्रत्येक पंचायत स्तर पर उच्च माध्यमिक विद्यालय शिक्षा की प्रगति में योगदान दे रहे हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 की विशेषता– आत्मनिर्भरता के प्रमुख घटकों में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। देश और उसके नागरिकों, विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को पूरा करने का माध्यम शिक्षा व्यवस्था और शिक्षा नीति होती है। इस दृष्टि से शिक्षा नीति 2020 में प्रत्येक छात्र को आगे बढ़ने, सशक्त होने, स्वावलंबी बनने का मार्ग दिखाया है। नई शिक्षा नीति में सैद्धांतिक शिक्षा के साथ-साथ लोक व्यवहार का ज्ञान, व्यवसायिक शिक्षा, कौशल विकास की शिक्षा को समाहित किया गया है।

नई शिक्षा नीति में शिक्षा का विकेन्द्रीकरण करते हुए व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास शिक्षा, हस्तकला आदि पाठ्यक्रम में स्थान दिया है तथा विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण, उनके व्यक्तित्व के समग्र एवं संतुलित विकास को सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा है। राष्ट्रीय शिक्षा व्यवसायिक शिक्षा के व्यवसायीकरण के प्रति भी सचेत है। नई शिक्षा नीति 2020 कौशल विकास एवं व्यावसायिक शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। इसमें भारतीयकरण पर जोर दिया है। हमारी परंपरा, संस्कृति, सामाजिक समरसता के साथ स्वदेशी तथा स्वावलंबन के उद्देश्य को लेकर भारत श्रेष्ठ, सशक्त, विश्व पथ प्रदर्शक, जनकल्याणकारी भारत बनाने का संकल्प संजोया है।

नई शिक्षा नीति विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में श्रेष्ठता में विशिष्टता प्राप्त कर समृद्धशाली एवं आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करने में सहायक सिद्ध होगी।

प्रधानाध्यापक (सेवानिवृत्त)
सांपला, अजमेर (राज.)
मो: 9460894708

गुरु की महत्ता

❐ घनश्याम लाठी

**गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।**

भारतीय संस्कृति में गुरु (शिक्षक) का स्थान सर्वोपरि होता है। माता-पिता संतति को जन्म देते हैं। लेकिन गुरु संतति को ज्ञान रूपी रत्न देकर उसका जीवन ज्योतिमय बना देता है। गुरु के लिए शिष्य का महत्त्व इतना बढ़ जाता है कि उसका शिष्य पढ़-लिखकर आदर्श नागरिक बने व स्वयं के साथ गुरु का भी नाम रोशन करे। शिष्य जब कुछ अच्छा कर गुजरता है तो गुरु का सीना आत्मसम्मान से फूल जाता है। गुरु को शिष्य बहुत प्रिय होता है, जैसे आँखों का तारा हो। शिष्य गुरु की ममतामयी वात्सल्यमयी छाँव तले बैठकर सीखता है। गुरु की स्मृति शिष्य के मानस पटल पर आजीवन अंकित रहती है जो सदैव प्रेरणादायी बनी रहती है। गुरु का स्नेहाशीष रूपी वरदहस्त ही शिष्य की ज्ञान पिपासा को शान्त कर जीवन जीने की कला सिखाता है। गुरु की सदैव यही मन की इच्छा रहती है कि उसका शिष्य कभी असफल न हो। गुरु शिष्य को सुसंस्कारों से अभिसिंचित कर अपने सान्निध्य में मार्गदर्शन देकर हर क्षेत्र में महारत हासिल करने की प्रेरणा देता है। गुरु बिना शिष्य का जीवन शून्य है। गुरु शिष्य को अंगुली पकड़ कर चलना सिखाता है तथा भावी जीवन में आने वाली कठिनाइयों को निडरता से मुकाबला करने हेतु मनोबल बढ़ाता है। अंधेरे में दीप जलाकर दैदीप्यमान संसार के दर्शन कराता है। गुरु शिष्य में सकारात्मक सोच विकसित कर आत्मविश्वास से भरपूर जीवन जीने की कला सिखाता है। गुरु के शुभ आशीर्वाद से ही शिष्य सफलता के अनगिनत सोपानों को पार कर अपने जीवन को सुखमय बनाता है, गुरु अपने शिष्यों को सदैव यही चुनौतीपूर्ण आशीष देता है 'पढ़ लिख कर जग में नाम कमाओ जैसे तारे छाए नील गगन में तुम धरती पर छा जाओ।'

**गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है घड़ घड़ काढ़े खोट,
अन्दर हाथ सहार दे बाहर मारे चोट।**

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अलोद
बूँदी (राज.) **मो: 9828531700**

स्वाध्याय की महत्ता

❐ गोविन्द लाल मण्डावरिया

स्वाध्याय मन की मलिनता को साफ करके आत्मा को परमात्मा के निकट बिठाने का सर्वोत्तम मार्ग है। अतः प्रत्येक विचारवान व्यक्ति को प्रतिदिन संकल्पपूर्वक सद्ग्रंथों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। जो हमेशा स्वाध्याय करता है, उसका मन हमेशा प्रसन्न और शान्त रहता है। स्वाध्याय से ज्ञानवर्धन होता है, जिससे धर्म और संस्कृति की सेवा होती है। स्वाध्याय से अज्ञान और अविद्या का आवरण हटने लगता है और वेदादि शास्त्रों के दिव्य ज्ञान का प्राकट्य होता है। प्रतिदिन स्वाध्याय करने से बुद्धि अत्यंत तीव्र हो जाती है तथा कठिन से कठिन विषय को तुरंत समझ लेती है। जो साधक प्रतिदिन स्वाध्याय करते हैं, उसकी बुद्धि इतनी तीक्ष्ण हो जाती है कि वह प्रकृति के रहस्यों को भी स्वतः जानने लगता है। जो प्रतिदिन साधना करता है, वही उच्च स्तरीय साधनाओं का अधिकारी हो सकता है। जिन्हें ईश्वर में श्रद्धा और विश्वास नहीं होता, उन्हें चाहिए कि प्रतिदिन स्वाध्याय करें तथा प्रतिदिन ईश्वर के दिए हर उपहार के लिए ईश्वर को धन्यवाद दें।

योग दर्शन में पाँच नियम आते हैं- शोच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान। ये पाँच नियम जीवन को व्यवस्थित और अनुशासित करने के लिए है। इन पाँच नियमों में एक है- स्वाध्याय अर्थात स्वयं का अध्ययन। स्वयं को जानना स्वाध्याय कहलाता है। स्वाध्याय के नाम पर बहुत से लोग कह देते हैं कि आध्यात्मिक ग्रंथ पढ़ने चाहिए, इस तरह स्वाध्याय का मतलब बाह्य अध्ययन से लगाया जाता है। शास्त्र अध्ययन को ही स्वाध्याय कहा जाए, यह इसका केवल एक पक्ष हुआ। लेकिन अगर शब्दों को ठीक से समझा जाए तो स्वयं का अध्ययन स्वाध्याय कहलाता है। तब आत्मपरीक्षण, आत्म-निरीक्षण, आत्म-चिंतन और आत्म-शोधन स्वाध्याय के अंग बनते हैं। सामान्य रूप से लोग स्वाध्याय को ज्ञान अर्जित करने का साधन मानते हैं। अपनी इच्छाओं, कमजोरियों, सामर्थ्यों, प्रतिभाओं और महत्त्वाकांक्षाओं को जानना, समझना और उन्हें व्यवस्थित करना यही असली स्वाध्याय है।

व्याख्याता (भूगोल)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भाँवता,
नागौर (राज.), **मो: 9602972809**

www.rajsevak.com

कोरोना जागरूकता सांप सीढ़ी

❒ संदीप जोशी

कोरोना का इतना लंबा काल अत्यंत भयावह एवं चिंता कारक रहा है। जीवन के सभी क्षेत्र इससे बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। लगातर दो वर्षों से जारी इस संकट में कोरोना की संभावित तीसरी लहर के संबंध में लगातार समाचार माध्यमों पर अंदेशा जताया जा रहा है। बार बार एक आशंका यह भी जताई जा रही है कि अगली संभावित लहर बच्चों को ज्यादा प्रभावित करेगी।

ऐसे में बच्चों में कोरोना के संबंध में जागरूकता बढ़े, उन्हें क्या क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए, क्या-क्या काम नहीं करना चाहिए, इनको जोड़ कर मैंने एक खेल का निर्माण किया है और इस खेल के माध्यम से बच्चों में कोरोना प्रोटोकॉल के बारे में जागरूकता का प्रयास किया गया है। खेल हम सबका सुपरिचित साँप सीढ़ी का खेल है। इस प्रयोग में इस खेल को कोरोना जागरूकता के साथ जोड़ दिया है। इसमे सीढ़ी और सांप का प्रभाव कोरोना प्रोटोकॉल का पालन से जुड़ा हुआ है। कोरोना से बचाव का उपाय अपनाने पर ही सीढ़ी का उपयोग किया जा सकता है जैसे मास्क लगाने पर सीढ़ी, बार बार हाथ धोने पर सीढ़ी, योग प्राणायाम करने पर सीढ़ी, दो गज की दूरी का पालन करने पर सीढ़ी, बिना काम बाहर नही घूमने पर सीढ़ी, हाथ जोड़कर अभिवादन करने पर सीढ़ी इत्यादि।

कोरोना के नियमो का पालन नहीं करने पर खेल में सांप काटेगा जैसे मास्क नही लगाया तो सांप, हाथ मिलाकर अभिवादन करने पर सांप, दो गज दूरी नही रखने पर सांप, बार बार हाथ नही धोने पर सांप आदि।

बच्चों के लिए बनाए गए इस विशेष सांप सीढ़ी के खेल में बच्चों को नियमित योग, प्राणायाम और खेल के लिए प्रेरित करने के लिए सबसे बड़ी सीढ़ी नित्य योग प्राणायाम की बनाई गई है। वहीं सबसे बड़ा खतरा अर्थात सबसे बड़ा सांप परिवार में बड़े लोगों का टीकाकरण नहीं होना बताया गया है। इस प्रकार खेल-खेल में नियमित योग प्राणायाम और परिवार के टीकाकरण के लिए प्रेरणा दी जा रही है।

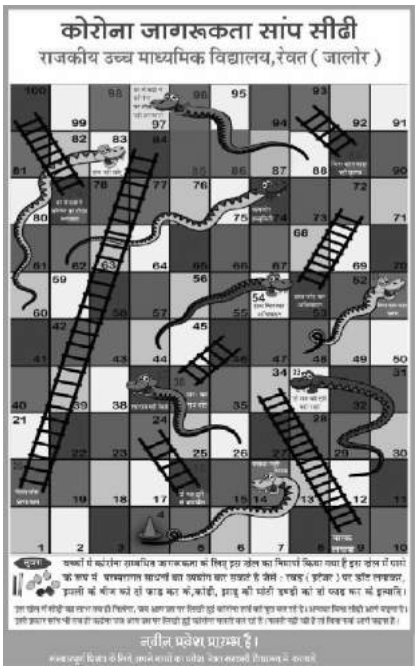

इस कोरोना जागरूकता सांप सीढ़ी को एक फीट-डेड फीट के पर्याप्त बड़े आकार पर सुंदर बहुरंगी मोटे आर्ट पेपर पर छपवाया है। शिक्षकों के माध्यम से बच्चों को घर पर ही वितरित किया जा रहा है। इन दिनों राज्य सरकार के निर्देशानुसार शिक्षकों को बच्चों से घर-घर जाकर संपर्क करना होता है, उनकी पढ़ाई के संबंध में पूछताछ एवं मार्गदर्शन देना होता है ऐसे में हम अपने साथ यह सांप सीढ़ी ले जाकर बच्चों को दे रहे हैं और बच्चे भी इस मजेदार खेल का बहुत आनंद ले रहे हैं। इस पहल को बच्चों के साथ अभिभावकों और शिक्षकों ने भी बहुत सराहा है।

इस सांप सीढ़ी के पीछे की तरफ एक पत्र के रूप में विद्यार्थियों द्वारा घर पर रहकर करने योग्य विभिन्न क्रियाकलाप सुझाए गए हैं। इनके माध्यम से वे इस खाली समय का बेहतरीन उपयोग कर सकते हैं। उसका नाम दिया है- भलोमण..... भलोमण यानी नसीहत... अपणायत से भरे दिशा निर्देश.....

इस पत्र के माध्यम से बच्चो तक कुछ उपयोगी बातें और करणीय काम पहुँचाने का प्रयास किया है। विद्यालय बंद है, ऐसे में घर को ही विद्यालय मानकर, घर पर रहकर कोरोना से बचाव के लिए, अध्ययन विकास के लिए, इम्युनिटी विकास के लिए, व्यक्तित्व विकास के लिए, परिवार प्रबोधन, स्वावलंबन के लिए क्या क्या किया जा सकता है, इसका विस्तार से इस पत्र में उल्लेख है। कोरोना काल मे क्या क्या नही करना करना चाहिए, इसकी भी विस्तृत चर्चा इस गुरुजी के पत्र में की है।

इस प्रकार कोरोना जागरूकता के लिए सांप सीढ़ी के साथ गुरुजी का पत्र बच्चो को जीवन निर्माण की सीख भी दे रहा है। कोरोना महामारी के इस काल में पिछले 2 वर्षों में पढ़ाई का अत्यंत नुकसान हुआ है। मनोवैज्ञानिक इस लंबी अवधि को बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए गम्भीर नुकसानदेह बता रहे हैं वही दूसरी तरफ संभावित तीसरी लहर की आशंका में विद्यालय प्रारम्भ करने को लेकर भी असमंजस बना हुआ है।

ऐसे में बच्चो के नाम लिखे इस पत्र में बच्चों को समय का सदुपयोग करने के कुछ उपयोगी टिप्स (गुरुमंत्र) दिए हैं। जिसमें उन्हें अपनी पढ़ाई जारी रखने के साथ स्वावलंबन, स्वास्थ्य और सदाचार की शिक्षा दी गई है। खास

www.rajsevak.com

बात यह भी है कि इस पत्र के दूसरी तरफ कोरोना जागरूकता से जुड़ा सांप सीढ़ी का रोचक खेल होने से बच्चों का ध्यान इस पत्र पर भी जाता रहता है।

प्रारंभ में मैंने यह प्रयोग अपने विद्यार्थियों और परिवार के बच्चों के लिए ही किया था। कुछ शिक्षक मित्रों के साथ सामान्य चर्चा में उन्होंने अपने-अपने विद्यालय के लिए भी इसकी आवश्यकता और उपयोगिता जताई। शिक्षक मित्रों की मांग बढ़ने पर जन सहयोग से बड़ी संख्या में इसका प्रकाशन करवाकर अपने विद्यार्थियों के साथ साथ अपने शिक्षक मित्रों को भी ये पत्र उपलब्ध करवाए हैं। इनके माध्यम से उनके विद्यार्थी तक यह खेल और गुरु जी की भलोमण पहुँच रही है।

पिछले लगभग दो वर्षों से विद्यालयों से दूर घर मे ही रह कर शिक्षा संकट का सामना कर रहे विद्यार्थियों के लिए समय का सदुपयोग करने के सूत्र इस पत्र में है, पत्र में दी गई बातें विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है। पत्र के मुख्य बिंदु इस प्रकार है-

1. कोरोना से बचाव- स्वयं को बचाना, नियमित मास्क लगाना। कोरोना के नियमों का पालन करना, बार-बार साबुन से हाथ धोना, गिलोय और काढ़े का आवश्यतानुसार प्रयोग अवश्य करें।

2. स्वस्थ्य रक्षा (फिटनेस डवलपमेंट)- उठने एवं सोने का समय निश्चित करना। प्रतिदिन सुबह-शाम व्यायाम-प्राणायाम करना। सूर्य नमस्कार का अच्छा अभ्यास करना, मालिश करना सीखना, हास्य योग करना।

3. अध्ययन (एजुकेशनल डवलपमेंट)- रोज नियमित पढ़ाई का क्रम जारी रखना, उसका समय सुनिश्चित करना। शिक्षा एवं पढ़ाई की दृष्टि से विगत दो वर्ष की पुस्तकों का क्रमबद्ध अध्ययन करना जो कठिन लगता है, समझ में नहीं आता उसके नोट्स तैयार करके उन विषयों के शिक्षकों से फोन से बात करके सीखने का प्रयास। विज्ञान के कुछ प्रयोगों का प्रैक्टिकल करना। जो विषय कमजोर (वीक) है उसका अधिक अध्ययन करना। ऑनलाइन क्लास में जो पढ़ाई होती है, उस पाठ को पुन: पढ़ना और जो बातें समझ में नहीं आती हैं उस पर अपने शिक्षक से बात करना। प्रतिदिन कम से कम दो पृष्ठ सुलेख लिखना, गणित का अभ्यास करना, 40 तक पहाड़े याद करना।

4. भविष्य की दृष्टि- भविष्य की प्रतियोगी परीक्षा की पूर्व तैयारी करना, भाषण, साक्षात्कार (इंटरव्यू) हेतु पूर्व तैयारी करना। कांच के आगे खड़े होकर भाषण का प्रयास करना।

5. परिवार प्रबोधन/ सोशल डेवलपमेंट- विद्यालय में जो प्रार्थना करते थे उनको घर में भी करना। संभव हो तो परिवार को भी सम्मिलित करें। परिवार के साथ बैठ कर भोजन करना। परिवार के प्रत्येक सदस्य की अच्छी आदत एक डायरी में लिखना। प्रतिदिन दो मित्रों एवं दो परिवार के सदस्य को फोन करना। फोन पर अच्छी, सकारात्मक बातें करना। अपने परिवार का वटवृक्ष बनाना।

6. स्वावलंबन (सेल्फ डेवलपमेंट)- अपना स्वयं का कार्य स्वयं ही करना। भोजन के बाद अपने बर्तन, स्नान के बाद अपने कपड़े धोना आदि। कपड़े को प्रेस करना, चाय व भोजन बनाना सीखना।

7. व्यक्तित्व विकास (पर्सनल्टी डेवलपमेंट)- प्रतिदिन डायरी लिखना जिसमें दिन में जो भी कार्य किए हैं एवं कुछ अच्छे, नए विचार आते हैं उनको लिखना। पत्र लिखना सीखना। सप्ताह में एक श्लोक/मंत्र याद करना।

दिन में कुछ समय मौन रखना, रोज रात्रि सोने से पूर्व किसी एक पुस्तक का अध्ययन करना जिसमें महापुरुषों का जीवन-चरित्र जैसे स्वामी विवेकानन्द, सुभाषचन्द्र बोस, डॉ. अब्दुल कलाम आदि। कम से कम 20 मिनट अध्ययन करना।

8. अभिरुचि विकास (हॉबी डवलपमेंट)- अपनी रुचि (इन्टरेस्ट) के विषय का अधिक अभ्यास करना। उदाहरण के लिए संगीत, योग आदि। कोई नई बात सीखना प्रारंभ करना। घर के किसी सदस्य से भी सीख सकते हैं।

कम्प्यूटर में अपनी मातृभाषा में टाइपिंग, वेबिनार के पोस्टर बनाना सीखना। कोई एक नई भाषा सीखना। अंग्रेजी एवं संस्कृत के नए-नए शब्द सीखना व याद करना। वैदिक गणित सीखना। कोई एक वाद्ययंत्र बजाना सीखना। गीत-संगीत, चित्र कला जैसी कोई भी एक नई कला सीखना।

गुरुजी के इस पत्र में मैंने बच्चों को कुछ बातों से बचने के लिए भी कहा है। जैसे- अनावश्यक घर से बाहर नहीं जाना, रात्रि सोने से आधा घण्टा पूर्व टी. वी. एवं मोबाइल नहीं देखना, रात्रि देर तक जागना और देर से सोना न करें। जंक-फूड, कोल्ड-ड्रिंक, फ्रिज का पानी आदि का सेवन न करें। सोशल मीडिया पर नकारात्मक (निगेटिव) बातें नही डालना, लम्बे समय तक कम्प्यूटर, लैपटॉप या मोबाइल का सतत प्रयोग नहीं करना। गुस्सा नहीं करना, ऊंची आवाज में नहीं बोलना। नशीले, मादक एवं उत्तेजक पदार्थों का सेवन न करें।

सेवा कार्य की प्रेरणा भी- बच्चों के नाम लिखे इस पत्र में बच्चो को कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करने के साथ साथ कुछ सेवा कार्य करने का भी आग्रह किया है। जैसे- अपने कपड़े, जूते-चप्पल आदि वस्तुओं की गिनती करना एवं जो अधिक है उनको जरूरतमंद को देना गत वर्ष की पुस्तकें किसी जरूरतमंद छात्र को देना, अपनी पॉकेट मनी का दान हेतु प्रयोग करना। अपने आस-पास गरीब या कोरोना पीड़ितों को भोजन या दवाई देने की व्यवस्था करना। कोरोना योद्धा-स्वास्थ्य कर्मचारी, शिक्षक, बी.एल.ओ. सफाई कर्मचारी, पुलिस आदि हेतु चाय, भोजन आदि की आवश्यकता में सहयोग करना। किसी सामाजिक संस्था, संगठन से जुड़कर कार्य करना इत्यादि।

अब तक इसकी 8000 प्रतियाँ छपवाई गई है। विभिन्न शिक्षक मित्रों के माध्यम से बच्चों को घर पर ही वितरित किया जा रहा है। हमारे जिले के साथ साथ कुछ अन्य जिलों तक भी यह कोरोना जागरूकता सांप सीढ़ी पहुँची है। जहाँ शिक्षक बच्चों से घर-घर जाकर संपर्क करने, उनकी पढ़ाई के संबंध में पूछताछ एवं मार्गदर्शन देने के साथ साथ यह कोरोना जागरूकता सांप सीढ़ी भी साथ ले जाकर बच्चों को दे रहे हैं और बच्चे भी इस मजेदार खेल का बहुत आनंद ले रहे है।

आशा है यह प्रयास बच्चों में कोरोना महामारी के सम्बंध में उचित जागरूकता का निर्माण करेगा और साथ ही गुरुजी का पत्र भी उन्हें जीवन निर्माण की दिशा देगा।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
रेवत, जालोर (राज.) **मो: 9414544197**

www.rajsevak.com

वैश्विक महामारी के दौर में शिक्षक और ऑनलाइन शिक्षा का सामंजस्य

❒ डॉ. मीनाक्षी सुथार

भूमिका– कोरोना वायरस की महामारी ने हमारे घर की और बाहर की दुनिया को सुनसान कर जंगल में तब्दील कर दिया था। विद्यालय खेल स्टेडियम, बाजार, होटल, सिनेमाघर, मॉल जैसे हर स्थान सीमित हो गए है। अब विश्वभर में कोविड-19 के कारण मची उथल-पुथल ने हमारी जिन्दगियों को अलग-अलग पड़े बेडरूम में परिवर्तित कर दिया। ऐसे में शिक्षा बच्चों तक कैसे पहुँचाई जाए, यह सबसे बड़ी चुनौती है।

शिक्षक और छात्र– वर्तमान समय में शिक्षक बहुत हद तक छात्रों से दूर हो चुके हैं। पारंपरिक शिक्षा पद्धति को क्रमबद्ध रूप से नहीं चला पा रहे हैं। आज के दौर में शैक्षणिक संस्थानों के आगे जो चुनौती है, उसमें ऑनलाइन एक स्वाभाविक विकल्प है ऐसे समय में विद्यार्थियों से जुड़ना समय की जरूरत है, लेकिन इस व्यवस्था में कक्षाओं में आमने-सामने दी जाने वाली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विकल्प बताना भारत के भविष्य के लिए अन्यायपूर्ण है। शिक्षा अपने मूल में समाजीकरण की एक प्रक्रिया है। जब-जब समाज का स्वरूप बदला शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन की बात हुई। शिक्षा के क्षेत्र में कोविड-19 से एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया। जिसे हम ऑनलाइन शिक्षा के नाम से जानते हैं। इस आपदा ने न सिर्फ तकनीक के महत्त्व को बढ़ाया है बल्कि इसके माध्यम से लाखों बच्चे लाभान्वित भी हुए। ई-लर्निंग के जरिए शिक्षा के स्वरूप में बदलाव का प्रस्ताव नीति-निर्धारकों के द्वारा पुरजोर तरीके से रखा जा रहा है।

क्या है ऑनलाइन शिक्षा?– ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसी शैक्षिक व्यवस्था है जो तकनीक पर आधारित है। घर बैठे-बैठे इंटरनेट व अन्य संचार उपकरणों के माध्यम से ली जाने वाली शिक्षा को ऑनलाइन शिक्षा कहा जाता है। ऑनलाइन शिक्षा हमारी पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था से थोड़ी-सी भिन्न है। पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था में बच्चे विद्यालय के कक्षा-कक्ष में बैठकर अपने शिक्षक से प्रत्यक्ष रूप से जुड़कर पुस्तकों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते हैं जबकि ऑनलाइन शिक्षा में कम्प्यूटर और इंटरनेट कनेक्शन के द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों से जुड़कर शिक्षा देते हैं। ई-लर्निंग शिक्षा के लिए छात्रों के पास एक कम्प्यूटर या मोबाइल फोन होना आवश्यक है। इसकी मदद से विद्यार्थी किसी एप के जरिये अपने शिक्षक से जुड़कर शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

अभिभावकों की चिंता, छात्रों का भविष्य और शिक्षक का कर्त्तव्य– कोविड-19 के दौरान हर माता-पिता, छात्र और शिक्षकों के लिए चिंतित करने वाली बात थी कि छात्र अपना अध्ययन कैसे करेंगे? वही शिक्षक वर्ग के लिए समस्या थी कि छात्रों को कैसे पढ़ाई से टूटने नहीं दिया जाए? जैसे कई सवाल हमारे सामने थे। ऐसे मुश्किल समय में ऑनलाइन शिक्षा या ई-लर्निंग हमारे बीच मददगार बनकर उभरी है, जिसने अध्ययन-अध्यापन को आसान बना दिया है। हालांकि कोरोना महामारी के कारण पाठ्यक्रम को कम कर दिया गया है और अध्ययन सामग्री पीडीएफ और डॉक्स के रूप में साझा की जाती है। ऑनलाइन शिक्षा के शुरूआत में अभिभावक के लिए ई-असाइनमेंट के साथ मिलना, किताबों के बिना कोर्स पर नजर रखना, मोबाइल और कम्प्यूटर में अत्यधिक समय के नष्ट होने का डर था। बाद में तकनीक के साथ अभ्यस्त होने में समय लगा, लेकिन परिणाम बेहतर और प्रशंसनीय निकले। यह शिक्षा केवल शाब्दिक ज्ञान तक सीमित नहीं है यह शिक्षार्थी के कौशल, ज्ञान, व्यवहार और रणनीतिक उद्देश्यों के साथ बंधी हुई है। प्रदेश में हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अभी-भी तकनीकी शिक्षा से परिचित होने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वे खराब नेटवर्क, इंटरनेट तक सीमित पहुँचा और घर पर कोई भी एंड्रायड फोन न होने के परिणामस्वरूप सीखने की प्रक्रिया में रूकावट महसूस कर रहे हैं। ऐसे में ऑनलाइन शिक्षा के दौरान शिक्षक वर्ग सामाजिक दूरी का ध्यान रखते हुए घर-घर जाकर भी छात्रों को शिक्षा से जोड़े रखने में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। इतना ही नहीं शिक्षक वर्ग की पहल ने उन अभिभावकों के लिए आर्थिक सहायता भी की जो इस खर्च को वहन नहीं कर सकते ताकि उनके बच्चे की पढ़ाई न रुके।

ऑनलाइन शिक्षा के लाभ– कोरोना आपदा ने हमें एक नई शिक्षा प्रणाली को अपनाने का मौका दिया। शुरूआती दिनों में यह बहुत कठिन रहा लेकिन धीरे-धीरे सभी शिक्षण संस्थानों ने अपने पास उपलब्ध सीमित साधनों से अपने आपको ऑनलाइन एजुकेशन के अनुरूप बनाया और छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा देना प्रारंभ की/ ऑनलाइन शिक्षा के अनेक लाभ है-

1. ऑनलाइन शिक्षा में समय व जगह की अनिवार्यता नहीं है। छात्र किसी भी स्थान से और किसी भी समय पढ़ाई कर सकते हैं।
2. शिक्षक द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषय का वीडियो बनाकर भी रखा जा सकता है। अगर किसी छात्र को कहीं पर किसी तथ्य को समझने में कोई दिक्कत हो तो, वह वीडियो को बार-बार देखकर उसे समझ सकता है।
3. ऐसे ग्रामीण क्षेत्र या दूरदराज के क्षेत्र जहाँ स्कूल कॉलेज बहुत दूर है और आसानी से यातायात के साधन भी उपलब्ध नहीं होते हैं। ऐसी जगहों में ऑनलाइन शिक्षा छात्रों के लिए बहुत उपयोगी हो सकती है।
4. ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में कुछ बड़े बैनर्स मुफ्त में क्लासेज या वीडियो उपलब्ध कराते हैं जिनका फायदा आर्थिक रूप से कमजोर या कोई भी छात्र ले सकता है।
5. अच्छे अनुशासन और समय का बेहतर उपयोग कर ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र ज्यादा प्रदर्शन कर सकते हैं।

यह सर्वविदित है कि जिस चीज के फायदे होते हैं उसके नुकसान भी होते हैं उसी प्रकार ऑनलाइन शिक्षा इस दौर में जहाँ एक ओर मददगार है वहीं इसकी हानियाँ भी है तथा छात्रों को माहौल नहीं मिल पाता और प्रतिस्पर्धा के अभाव के कारण बच्चे आगे बढ़ने का प्रयास नहीं कर पाते हैं। कई बार बच्चे क्लास के बहाने मोबाइल पर गेम खेलने या अन्य ऑनलाइन गतिविधियों में लग जाते हैं। ऑनलाइन में बालक अपना आत्म मूल्यांकन नहीं कर पाता। आँखों व स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव, छात्रों को विषय वस्तु समझने में समस्या, अनुशासन की कमी, पढ़ाई के प्रति जिज्ञासा में कमी तथा एकाग्रता की कमी आदि।

अध्यापिका (हिन्दी)
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पाखरोण,
झौथरी, डूँगरपुर (राज.)
मो: 9166616754

www.rajsevak.com

पर्यावरण सुरक्षित तो जीवन सुरक्षित

❒ शबनम भारतीय

जब भी पर्यावरण की बात चलती है तो हमें यही बताया जाता है कि पर्यावरण वह है जो हमें चारों तरफ से घेरता है। हम बचपन से भी यही पढ़ते आ रहे हैं कि जो हमें आवृत्त करता है वह पर्यावरण है। इस परिभाषा में 'हमें' शब्द पर गौर किया जाना आवश्यक है क्योंकि परिभाषा से साधारण रूप से यही समझ आता है कि जो हमें घेरता है या जो हमारे चारों तरफ है, वह पर्यावरण है। इसका आशय यह निकलता है कि हम पर्यावरण का हिस्सा नहीं है अर्थात इसका सीधा सा संदेश यही जाता है कि हम पर्यावरण के घटक नहीं है इसलिए आज सबसे पहले इस परिभाषा में किंचित परिवर्तन करने की आवश्यकता अनुभव होती है क्योंकि पर्यावरण सभी भौतिक, रासायनिक, जैविक कारणों की समष्टिगत इकाई है। पृथ्वी पर पाए जाने वाले भूमि, जल, वायु, पर्वत, पहाड़, नदी-नाले, समुद्र, पेड़-पौधे का समूह जिसमें मनुष्य सहित सूक्ष्म से सूक्ष्म से जीव से लेकर बड़े से बड़े जीव शामिल है, पर्यावरण कहलाता है क्योंकि समस्त प्रकृति एक इकाई है और मनुष्य भी उसका ही एक अभिन्न हिस्सा है और किसी भी दृष्टि से उससे अलग नहीं हो सकता है।

प्राचीन समय में मनुष्य प्रकृति प्रेमी था लेकिन आज विकास के इस मशीनी युग में विज्ञान के रथ पर सवार हो आज वो स्वयं को प्रकृति से अलग मानने लगा है और स्वार्थ के चलते अंधाधुंध प्रकृति दोहन में लगा है। यही कारण है कि आज पर्यावरण प्रदूषण व जलवायु परिवर्तन की समस्याएँ विकराल रूप धारण कर उसके अस्तित्व को निगलने को तत्पर दिखाई दे रही हैं। यही कारण है कि प्रकृति अपना गुस्सा कभी आँधी, तूफान, भूकम्प, जलजले तो कभी महामारी जैसी प्राकृतिक आपदाओं से दिखाती रहती है। इन सब के चलते मनुष्य आज इस विषय पर फिर से सोचने को मजबूर हुआ है कि आखिर चूक कहाँ हुई? अगर हम मानवीय प्राकृतिक हस्तक्षेप की नजर से विचार करें तो हम पर्यावरण के दो विभाजन कर सकते हैं- प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और दूसरा मनुष्य निर्मित पर्यावरण। लेकिन वास्तविकता यह है कि ना तो कुछ भी पूर्णतया प्राकृतिक है ना पूर्णतया मानव निर्मित बल्कि दोनों एक दूसरे पर अन्यान्य नजर से निर्भर हैं।

आज विज्ञान के बल पर मनुष्य पर्यावरण पर विजय प्राप्त कर लेना चाहता है यही कारण है कि आज पृथ्वी का संतुलन बिगड़ रहा है। पर्यावरण सम्बन्धी बहुत सारी समस्याएँ हमारे सामने मुँह बाए खड़ी है। वैज्ञानिक उपलब्धियों के नशे में चूर मनुष्य असंतुलन की इस भयावह समस्या पर गंभीरता से गौर नहीं कर रहा है। स्वार्थ के वशीभूत हो अपनी आराम के लिए कुछ भी कर गुजरने को तत्पर हैं। आज प्रदूषण की समस्या इतना विकराल रूप धारण कर चुकी है कि लगता है कि पर्यावरण का यह संकट अगर इसी तरीके से उतरोत्तर बढ़ता रहा तो निकट भविष्य में मानव सभ्यता पर संकट के बादल मंडराने लगेंगे। पर्यावरण प्रदूषण के प्रभाव आगामी समय में बहुत घातक और जानलेवा हो सकते हैं। जल, वायु, ध्वनि प्रदूषण हमारे आने वाली पीढ़ी के भविष्य के जीवन को नष्ट कर रहे हैं। यही कारण है कि ऋतु चक्र परिवर्तन, हिम खंडों का पिघलना, सुनामी, बाढ़, सूखा, भूकंप, महामारी, जैव विविधता का समाप्त होना, अनावृष्टि, अतिवृष्टि जैसे जीवन नाशक परिणाम हमारे सामने आ रहे हैं। प्रकृति के बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। सुबह उठने से लेकर रात तक सोने और जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य प्रकृति पर ही निर्भर है। हम जो पानी पीते हैं, जो भोजन खाते हैं, जो फल-सब्जी खाते हैं, बीमार होने पर जो औषधियाँ लेते हैं, जो डेयरी पदार्थ काम में लेते हैं और सबसे बड़ी बात कि वायु जिसमें हम सांस लेते हैं सब प्रकृति की ही देन हैं।

हम अपने जीवन के लिए पूर्णतया प्रकृति पर निर्भर हैं। पर्यावरण हमारे स्वास्थ्य पर ही नहीं मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डालता है। यह हमारे चिंतन, विचारधारा, धर्म-संस्कृति तथा व्यवहार को भी प्रभावित करता है। एक बात और जो याद रखना परम आवश्यक है वो ये कि पर्यावरण संरक्षण सिर्फ सरकार की नहीं बल्कि हर व्यक्ति की और यहाँ तक कि पूरे समाज की जिम्मेदारी हैं। इको फ्रेंडली सामग्री का उपयोग करके भी हम पर्यावरण संरक्षण में अपना अहम योगदान दे सकते हैं। जरूरी है कि पर्यावरण सुरक्षा, संरक्षण पर विचार किया जाए, आवश्यक कदम उठाए जाए।

एक बहुत बड़ा सच यह भी है कि पर्यावरण सुरक्षा संबंधी ज्ञान की हमारे पास कमी नहीं है। परिभाषा व सिद्धांत रूप में किताबों में भरा पड़ा है। जरूरत इस बात की है कि इस ज्ञान को व्यवहार में उतारा जाए। व्यावहारिक बनाया जाए अर्थात सैद्धांतिक नहीं व्यवहारिक ज्ञान पर बल दिया जाए। पर्यावरण संरक्षण की सोच को दिलो-दिमाग में उतारा जाए। चेतना जागरूकता फैलाई जाए, कर्त्तव्य बोध को जगाया जाए और उसे नित्य प्रति जीवन का हिस्सा बनाया जाए ताकि मनुष्य कोई भी कदम उठाने, कार्य करने, निर्माण करने, कारखाने, उद्योग-धंधे स्थापित करने, वस्तु उत्पादन से पहले पर्यावरण संरक्षण के बारे में सोचे कि हमारे कार्य से प्रकृति पर पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

धरती से मिट्टी, नदी से पानी, सूरज से अग्नि, पहाड़ों में स्थिरता और हवा से प्राणवायु लेकर ईश्वर ने इंसान बनाया। हमारी जिंदगी पर्यावरण के सांचे में ढल कर संवरी है। पर्यावरण है तो हम हैं, इसे बचाना खुद को बचाना है। अपने पर्यावरण की पहली कड़ी हम स्वयं हैं अतः इसे सुरक्षित रखने का पहला प्रयास भी हमारे हाथ में ही है। जीवन शैली में छः बड़े बदलाव कर हम पर्यावरण को बचा सकते हैं।

1. भोजन की बर्बादी रोकेंगे तो 70 लाख तक उत्सर्जन कम होगा। बचे हुए भोजन को जरूरतमंद को दिया जा सकता है। ऐसा ना हो सके तो कंपोस्ट खाद भी बना सकते हैं। अगर हम भोजन को बर्बाद करना बंद कर दें तो 8 प्रतिशत ग्रीन हाऊस गैसों की उत्पत्ति कम कर सकते हैं।
2. पेपर मग का उपयोग बंद कर 65 लाख पेड़ बचा सकते हैं। कार्यस्थल पर अपने लिए स्टील या कांच के मग रखकर हम यह बर्बादी को रोक सकते हैं। ऐसा करके 65 लाख पेड़ काटने से बचाए जा सकते हैं।?

www.rajsevak.com

3. लैपटॉप, वाईफाई बंद रखेंगे तो उत्सर्जन सौलह परसेंट घट सकता है। कभी भी टीवी, पंखा, वाईफाई, कम्प्यूटर, लैपटॉप, प्रिंटर को स्विच ऑफ करना ना भूलना चाहिए। चालीस परसेंट कार्बन उत्सर्जन बिजली बनाने से हो रहा है। उत्सर्जन में बिजली दुरुपयोग का हिस्सा सौलह पर्सेंट है।
4. कार की स्पीड सत्तर से कम रखेंगे तो प्रदूषण आठ पर्सेंट कम कर सकते हैं। अपने वाहन उचित स्पीड पर चला कर हम ग्रीन हाऊस गैस उत्सर्जन आधा कर सकते हैं। 28 प्रतिशत अधिक ईंधन जलता है अगर कार 100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से अधिक पर चलाई जाए।
5. एक पेड़ लगाकर हम एक टन CO_2 कम कर सकते हैं। हर व्यक्ति हर साल कम से कम एक पेड़ लगाकर पर्यावरण को समृद्ध बना सकता है। उन घरों की कीमत पन्द्रह प्रतिशत अधिक होती है जिनके आँगन या आसपास में पेड़ होते हैं।
6. घर में वाटर रिचार्जिंग की व्यवस्था कर प्राकृतिक आपदाएँ रोकी जा सकती है। घर की छतों पर वाटर रिचार्जिंग लगाकर हम पानी सीधे जमीन में संरक्षित कर सकते हैं। 200 वर्ग मीटर का एक घर दो लाख लीटर वाटर रिचार्ज का जमीन में पहुँचा सकता है।

स्पष्ट है कि अगर हमें स्वस्थ रहना है, सुरक्षित धरती पर रहना है तो कुदरत के साथ हमें तालमेल बिठा कर चलना होगा। भारत के सामने पाँच चुनौतियाँ है। ग्लेशियर दो गुना तेजी से पिघल रहे हैं। महासागरों का तापमान बढ़ने से तूफान ज्यादा आ रहे हैं। वर्षा चक्र के बिगड़ने से अनाज के उत्पादन पर गलत प्रभाव पड़ रहा है। ग्रीन हाऊस गैस बढ़ने से गर्मी बहुत बढ़ेगी। वायु प्रदूषण बढ़ने से सांसों के लिए स्वच्छ हवा का संकट बढ़ रहा है। इसलिए अति आवश्यक है कि हम पर्यावरण के प्रति सचेत बने, सजग बने और अपने आप को पर्यावरण के अनुकूल बनाने का प्रयास करे क्योंकि पर्यावरण से हम है हमसे पर्यावरण नहीं और पर्यावरण सुरक्षित है तो जीवन सुरक्षित है।

अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय नं. 9, फतेहपुर,
सीकर (राज.), **मो: 9887483059**

ई-शिक्षा : सुखद प्रयास

❐ **महेश कुमार मंगल**

वर्तमान में कोविड-19 के दृष्टिगत एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के दौर में हमारी शिक्षा व्यवस्था में डिजिटल इण्डिया अधिगम प्रक्रिया का 'आवश्यक एवं निरन्तर' अंग बन गया है। पढ़ेगा राजस्थान, बढ़ेगा राजस्थान की थीम पर आधारित विभाग द्वारा चलाए गए कार्यक्रम आओ घर से सीखें 2.0, स्माइल 3.0, व्हाट्सअप आधारित शनिवारीय क्विज, टीचर कॉलिंग, प्रत्येक विद्यार्थी हेतु वर्कशीट आवंटन एवं पोर्ट फोलियो निर्माण, शिक्षा वाणी, शिक्षा दर्शन, हवा महल, मिशन समर्थ, ई-कक्षा आदि नियमित कक्षा शिक्षण के स्थान पर वरदान साबित हो रहे हैं।

'आओ घर से सीखें 2.0' के अन्तर्गत रेडियो एवं दूरदर्शन से क्रमशः शिक्षा वाणी तथा शिक्षा दर्शन, शनिवारीय व्हाट्सएप आधारित क्विज, स्माइल 3.0 के अन्तर्गत प्रत्येक कक्षा का व्हाट्सएप ग्रुप जिस पर प्रतिदिन प्रातः 8 बजे शिक्षण सामग्री का सम्प्रेषण, ग्रुपों पर होम वर्क सीट का आवंटन, गतिविधि आधारित कार्य पुस्तिकाएँ, सभी विषध्याध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह अपने विद्यार्थियों से मोबाइल कॉलिंग एवं सम्पर्क किया जाता है, जिन विद्यार्थियों के पास डिजिटल पहुँच/स्मार्ट फोन उपलब्ध हैं उन्हे प्रतिदिन वीडियो एवं अन्य शिक्षण सामग्री पोस्ट की जाती है, जिसका जाँच कार्य अध्यापकों द्वारा विद्यालयों में प्रिंट निकालकर जाँच कर छात्रों को व्हाट्सएप ग्रुपों पर वापस करते हुए रिकॉर्ड को पोर्टफोलियो में संलग्न किया जाता है तथा जिन विद्यार्थियों के पास डिजिटल पहुँच नहीं है, उनको शिक्षकों द्वारा घर पर सम्पर्क करते हुए गृहकार्य वर्कशीट का प्रिंट, प्रति सप्ताह क्विज का प्रिंट देकर उसे हल करवाते हुए जाँच कार्य किया जाकर पोर्टफोलियो में संलग्न किया जाता है। सीडब्ल्यूएसएन विद्यार्थियों के लिए 'मिशन समर्थ' उनके लिए अलग से ई-कंटेंट, वीडियो, शिक्षण सामग्री भिजवाई जाती है, इस हेतु प्रत्येक पंचायत पर पीईईओ द्वारा एक व्हाट्सएप ग्रुप बना हुआ है। समय-समय पर लगातार उच्चाधिकारियों द्वारा वर्चुअल मीटिंग Zoom/ webex meet वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा मोटीवेशन दिया जा रहा है।

डिजिटल इंडिया के अन्तर्गत विद्यार्थियों के चिन्तन कौशल को विकसित करने और पठन पाठन में रुचि जाग्रत करने के उद्देश्य से RSCERT उदयपुर द्वारा एक विशेष कार्यक्रम प्रति सप्ताह हवामहल जिसमें मजेदार कहानियाँ, गतिविधि आधारित सामग्री व्हाट्सएप ग्रुपों पर उपलब्ध कराई जा रही है।

फील्ड विजिट के दौरान देखा गया है कि कक्षावार व्हाट्सएप ग्रुपों से औसतन 30 प्रतिशत तक विद्यार्थी ही जुड़े हैं, उनमें भी कुछ अभिभावकों के व्हाट्सएप नंबर हैं। अधिकांश छात्रों के ग्रामीण क्षेत्रों में होने के कारण उनके अभिभावकों को रोजगार/काम करने अन्यत्र जाना पड़ता है जो बार-बार ग्रुपों से लेफ्ट भी हो जाते हैं, जिससे डिजिटल कार्यक्रम प्रभावित होता है। बहुसंख्यक परिवारों में रेडियो नहीं है, इन परिस्थितियों में बच्चों को उनके अभिभावकों से मिलकर स्मार्ट फोन क्रय करने, व्हाट्सएप ग्रुपों से जोड़ने हेतु प्रेरित करने तथा प्ले स्टोर से News on air App Download कर सम्पर्क के दौरान सोशल डिस्टेंस का ध्यान रखते हुए छात्रों को लाभान्वित किया जा रहा है, जिन घरों में टेलीविजन उपलब्ध हैं, वहाँ प्रोग्राम से अवगत कराकर विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जा रहा है। ई-कक्षा के अन्तर्गत मिशन ज्ञान एप डाउनलोड कर अतिरिक्त विषयवस्तु दी जा रही है। फिर भी लगभग 70 प्रतिशत विद्यार्थी ऑफलाइन मोड से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से जुड़े हैं। वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में शत प्रतिशत छात्रों को डिजिटल इण्डिया से शिक्षण कार्य कठिन प्रतीत हो रहा है। धीरे-धीरे अभी और प्रयासों की आवश्यकता है। डिजिटल इंडिया की इस सुखद पहल में हमारे शिक्षक साथियों को सकारात्मक सोच के साथ विद्यार्थियों को ऑनलाइन प्रक्रिया में शत-प्रतिशत जुड़ाव करते हुए शिक्षा को निरंतर ऊँचाइयों की ओर ले जाना हैं। जैसा कि 'वर्षा की बूँदें भले ही छोटी हो, लेकिन उनका लगातार बरसना बड़ी नदियों में बहाव बन जाता है।' उसी प्रकार हमारे छोटे-छोटे लगातार प्रयास डिजिटल इण्डिया से अधिगम प्रक्रिया में क्रान्ति साबित होंगे।

अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वितीय
कार्यालय मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी,
ब्लॉक-बाड़ी, धौलपुर (राज.)
मो: 9460455085

www.rajsevak.com

शिक्षा नीति एवं मातृभाषा

❐ डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी

भारत सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 नवीन शताब्दी की ज्ञान संबंधी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए भारत को एक सशक्त ज्ञान आधारित राष्ट्र बनाने तथा इसे वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक एवं क्रांतिकारी कदम है। वास्तव में, भारत में ऐसी चिर प्रतीक्षित शिक्षा नीति की आवश्यकता थी, जिस शिक्षा को ग्रहण करने के बाद शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक रूप से विकसित ऐसे कौशलयुक्त युवाओं का सृजन हो सके, जिनमें गौरवशाली भारतीय संस्कृति की जीवंतता, भारतीय भाषाओं में प्रवीणता तथा भारतीय दृष्टि के अनुरूप ज्ञान विज्ञान में दक्षता स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो।

इससे पूर्व राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 की भूमिका में शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए लिखा गया था कि शिक्षा मानव इतिहास के आदिकाल से ही उद्विकसित होती रही है तथा विविध भाँति विकसित होकर अपनी पहुँच तथा आवरण बढ़ाती रही है। प्रत्येक देश अपनी विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान को प्रकट करने, बढ़ावा देने के लिए और चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी शिक्षा प्रणाली विकसित करता है। इस दृष्टिकोण से समग्र भारतीय अवधारणा को केन्द्र में रखकर शिक्षा नीति लागू हुई। इसकी परिकल्पना में संविधान के सिद्धांत, सामाजिक परिदृश्य, वैज्ञानिक दृष्टि और भविष्य की चुनौतियों का सामना करना मुख्य अभिप्रेत है। शिक्षा वर्तमान तथा भविष्य के निर्माण का अनुपम साधन है। यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधारभूत सिद्धांत भी है।

इस शिक्षा नीति में भाषा के सामर्थ्य को स्पष्ट रूप से इंगित करते हुए कम से कम कक्षा पाँच तक मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर विशेष बल दिया गया है तथा कक्षा आठ और उसके आगे भी भारतीय भाषाओं में अध्ययन का प्रावधान किया गया है। प्राथमिक शिक्षा ऐसा आधार है, जिस पर देश तथा इसके प्रत्येक नागरिक का विकास निर्भर करता है।

भारत में संसद द्वारा सन् 2009 ई. में 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम' पारित किया गया। इसके प्रावधान के अनुसार 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों के लिए शिक्षा का मौलिक अधिकार प्रदान किया गया है। जन्म लेने के बाद मानव जो प्रथम भाषा सीखता है, उसे उसकी मातृभाषा कहते हैं। मातृभाषा, किसी भी व्यक्ति की सामाजिक एवं भाषायी पहचान भी होती है। विश्व में विगत 70 वर्षों में लगभग 150 अध्ययनों का निष्कर्ष यह है कि प्रारंभिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। भारत में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में भी इसी बात पर बल दिया गया। इस दृष्टि से इस बात पर विचार होना आवश्यक है कि हमारे देश में प्रारंभिक शिक्षा का माध्यम क्या है? और मातृभाषा को माध्यम क्यों बनाया जाना चाहिए?

प्रारंभिक शिक्षा की प्रथम आवश्यकता है-शिक्षण की सहजता। आशय यह है कि बच्चे तक जो कुछ भी पहुँचे, वह बहुत इत्मीनान और सहजता से पहुँचे। शुरू से ही उसे सिखाने के लिए बाल-केन्द्रित और क्रियात्मक प्रक्रियाओं को सहारा लिया जाना चाहिए। इस हेतु सर्वप्रथम विद्यार्थी के भाषायी कौशलों को विकसित किए जाने पर बल दिया गया। वस्तुतः मनुष्य के ज्ञानात्मक, मानसिक, भावात्मक एवं सामाजिक विकास का सशक्त माध्यम भाषा है। उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी तीन भाषाओं का अध्ययन करता है। प्रथम भाषा में उच्च प्राथमिक स्तर पर सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना आदि कौशलों को सीखने के साथ ही विद्यार्थी उस भाषा के साहित्य से परिचित होता है। द्वितीय एवं तृतीय भाषा के अंतर्गत शिक्षार्थियों में भाषायी कौशलों को सामान्य विकास, अर्थग्रहण एवं विचाराभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करना है, साथ ही तार्किक क्षमता, संवेदनात्मकता आस्वादन, सृजनात्मक अभिव्यक्ति तथा भाषागत मानवीय व्यवहार की गरिमा का विकास करना है। स्पष्ट है कि प्रथम भाषा, जिसे मातृभाषा कहा जाता है, उसे शिक्षण में प्राथमिकता का उद्देश्य निहित रहा।

यह सर्वविदित है कि मातृभाषा के बिना किसी भी देश की संस्कृति की कल्पना बेमानी है। मातृभाषा हमें राष्ट्रीयता से जोड़ती है और देश-प्रेम की भावना उत्प्रेरित करती है। मातृभाषा आत्मा की आवाज है। माँ के आँचल में पल्लवित हुई भाषा बालक के मानसिक विकास को शब्द व प्रथम संप्रेषण देती है। इसके माध्यम से ही मनुष्य सोचता-समझता और व्यवहार करता है। इसीलिए मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा बालक का प्राकृतिक अधिकार भी है। बच्चे का शैशव जहाँ व्यतीत है, जिस परिवेश में यह गढ़ा जा रहा है, जिस भाषा के माध्यम से वह अन्य भाषाएँ सीख रहा है, जहाँ विकसित हो रहा है, उस महत्त्वपूर्ण पहलू की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

शिक्षा का अधिकार बालक का संवैधानिक अधिकार है, ऐसी स्थिति में यह अधिकार स्वतः ही मातृभाषा से जुड़ जाता है। अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त करना बच्चे का अधिकार है, उस पर दूसरी भाषा को जबरन थोप देना, उसके स्वाभाविक विकास को रोकना, उसके अधिकारों का हनन है। मातृभाषा सीखने, समझने एवं ज्ञान की प्राप्ति में सरल है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम ने स्वयं के अनुभव के आधार पर कहा कि मैं अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बना, क्योंकि मैंने गणित और विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर का कथन है-'यदि विज्ञान को जन-सुलभ बनाना है तो मातृभाषा के माध्यम से विज्ञान की शिक्षा दी जानी चाहिए।' इसी प्रकार महात्मा गांधी का मत है-'विदेशी माध्यम ने बच्चो की तंत्रिकाओं पर भार डाला है, उन्हें रट्टू बनाया है, वह सृजन के लायक नहीं रहे... विदेशी भाषा ने देशी भाषाओं के विकास को बाधित किया है।'

www.rajsevak.com

संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट में कहा गया कि अधिकांश बच्चे स्कूल जाने से इसलिए कतराते हैं कि शिक्षा का माध्यम वह नहीं है, जो भाषा घर में बोली जाती है। भाषा भावनाओं और संवेदनाओं को मूर्तरूप दिए जाने का माध्यम है न कि प्रतिष्ठा का प्रतीक। विश्व के अन्य देशों में मातृभाषा की क्या स्थिति है, इसका वैचारिक एवं व्यावहारिक विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि विविध राष्ट्रों की समृद्धि और स्वाभिमान से जुड़े मातृभाषा से सिंचित हो रही है। मातृभाषा ही राष्ट्र की क्षमता और राष्ट्र के वैभव की समृद्धि करती है। संस्कार, साहित्य, संस्कृति, सोच, समन्वय, शिक्षा, सभ्यता का निर्माण, विकास एवं वैशिष्ट्य मातृभाषा में ही संभव है।

प्रो. रामदेव भारद्वाज ने मातृभाषा को राष्ट्रीय स्वाभिमान से जोड़ते हुए लिखा– 'मातृभाषा मात्र संवाद ही नहीं, अपितु संस्कृति और संस्कारों की संवाहिका है। भाषा और संस्कृति केवल भावनात्मक विषय नहीं, अपितु देश की शिक्षा, ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी विकास से जुड़ा है। मातृभाषा के द्वारा ही मनुष्य ज्ञान को आत्मसात करता है, नवीन सृष्टि का सृजन करता है तथा मेधा, पौरुष और ऋतंभरा प्रज्ञा का विकास करता है। किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और उसकी संस्कृति से होती है। यह मानवीय सभ्यता की धरोहरों की तरह ही एक धरोहर है।'

श्री अतुल कोठारी का अभिमत है–'यह तर्क आधारहीन है कि अंग्रेजी के बिना व्यक्ति और देश का विकास संभव नहीं है। विश्व के आर्थिक और बौद्धिक दृष्टि से संपन्न देशों– अमेरिका, रूस, चीन, जापान, कोरिया, इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, इजराइल में गणित और विज्ञान की पढ़ाई, शिक्षा एवं शासन–प्रशासन की भाषा उनकी मातृभाषा ही है।' सन् 1949 ई. तक भूखमरी की प्रताड़ना भोग रहा चीन आज प्रभावशाली ढंग से विश्व में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहा है। जिस तीव्रगति से चीन ने विकास किया, उसका प्रमुख कारण मातृभाषा में शिक्षण ही है। यह भी एक प्रमाणित तथ्य है कि विश्व जी.डी.पी. का प्रथम पंक्ति में जो 20 राष्ट्र हैं, उनके समग्र कार्य उस देश की मातृभाषा में ही संपादित होते हैं तथा साथ ही जो सबसे पिछड़े 20 देश हैं, उनमें अध्ययन–अध्यापन एवं शोध कार्य विदेशी आयातीत भाषा में होते हैं। इससे मातृभाषा का महत्त्व स्वयमेव उजागर हो जाता है।

वर्तमान भारतीय शैक्षिक परिदृश्य का अवलोकन करें तो जो तथ्य उभरकर आते हैं, वे दुर्भाग्यपूर्ण और चिंताजनक हैं। प्राथमिक स्तर पर ही बच्चों को मातृभाषा से विमुख कर अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित करने की होड़ प्रारंभ हो गई है। गली–गली में कुकुरमुत्ते की तरह अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय उग आए हैं, इससे यही संकेत मिलता है। परिणाम जो उभर कर आ रहे हैं, वे और भी घातक है। अब शिक्षार्थी न तो अंग्रेजी भाषा जान पा रहा है और न ही मातृभाषा। लोक भाषाओं और राष्ट्रीय भाषाओं को स्रोत सूखते जा रहे हैं और भाषा संस्कार से हमारी आने वाली पीढ़ी विमुख भी होती जा रही है। भौतिकता और अंग्रेजी मानसिकता की अंधी दौड़ में बच्चों के बचपन का सर्वाधिक क्षरण हुआ है।

अबोध बालक अपने शैक्षणिक जीवन के प्रथम कदम पर एक ओर विद्यालय में अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा का श्रवण करता है तो परिवार व समाज में मातृभाषा में संवाद करता है। अपनी स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिए उसका मानसिक संघर्ष केवल भाषायी अनुवाद में उलझकर रह जाता है। एक तरह से वह अपने आपको कृत्रिम वातावरण में महत्त्वपूर्ण क्षणों को खो देता है। यह स्थिति विद्यार्थी के लिए और भावी नागरिक निर्माण की दृष्टि से कितनी भयावह है? इसकी कल्पना की जा सकती है। यही विभ्रम बालक के व्यक्तित्व उन्नयन और राष्ट्रीय विकास में बाधा बनकर उपस्थित हुआ है। इसी भ्रम में वैश्वीकरण की दौड़ में मातृभाषा का तिरस्कार करने एवं भाषायी विभ्रम को सच मानकर प्रतिष्ठा का सूचक विदेशी भाषा को मान लिया है। यह मिथ्या प्रचार राष्ट्रीय संस्कृति के पतन की शुरूआत तो है ही साथ ही वैज्ञानिक चिन्तन का स्थान भी अंधानुकरण ने ले लिया, हमारी भाषा के प्रति हीनता बोध ने भाषायी उपनिवेशवाद को जन्म दे दिया है। अन्ततः हमें यह स्वीकार करना होगा कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति और विकास का स्रोत मात्र पूंजी और तकनीक नहीं, अपितु उस राष्ट्र की संकल्प–शक्ति होती है और इसका जन्म मातृभाषा से होता है।

भारतवर्ष, जिसकी आबादी 125 करोड़ से अधिक है। यह देश अभूतपूर्व साहित्य, वैज्ञानिक चिन्तन, समृद्ध प्राकृतिक धरोहर और विराट चिन्तन आधारित सांस्कृतिक दृष्टि से संपन्न है, परन्तु मातृभाषा में अध्ययन और शोध की दृष्टि से सर्वाधिक पिछड़ा है। यहाँ तक तो ठीक है लेकिन भारतीय भाषाओं के वनिस्पत विदेशी भाषा अंग्रेजी के प्रति अत्यधिक व्यामोह चिंताजनक है। भारत एक बहुभाषी देश है। सभी भारतीय भाषाएँ समान रूप से हमारी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक अस्मिता की अभिव्यक्ति करती हैं यद्यपि बहुभाषी होना एक गुण है, किन्तु मातृभाषा में शिक्षण वैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्तित्व विकास के लिए परम आवश्यक है। प्रारंभिक शिक्षण किसी विदेशी भाषा में करने पर जहाँ व्यक्ति अपने परिवेश, परम्परा, संस्कृति व जीवन मूल्यों से दूर होता है, वहीं पूर्वजों से प्राप्त होने वाले ज्ञान, शास्त्र, साहित्य आदि से अनभिज्ञ रहकर अपनी पहचान खो देता है।

महामना मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, डॉ. राधाकृष्णन् जैसे मूर्धन्य चिन्तकों से लेकर चन्द्रशेखर वेंकटरमन, प्रफुल्ल चन्द्र रॉय, जगदीश चन्द्र बसु जैसे वैज्ञानिकों, प्रमुख शिक्षाविदों तथा मनोवैज्ञानिकों ने मातृभाषा में शिक्षण को ही नैसर्गिक व वैज्ञानिक बताया है। राधाकृष्णन आयोग और कोठारी आयोग की अनुशंषाएँ भी मातृभाषा के पक्ष में रही हैं। अतः भारत के समुचित विकास, राष्ट्रीय एकात्मकता एवं गौरव को बढ़ाने हेतु शिक्षण एवं लोक व्यवहार में प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में दिया जाना परम आवश्यक है। इस दृष्टि से केन्द्र व राज्य सरकारों को नवीन शिक्षा नीति के प्रावधानों के अनुरूप प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा अथवा संविधान स्वीकृत प्रादेशिक भाषा में देने की व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए।

सहायक आचार्य (हिन्दी)
डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)
मो: 9828608270

www.rajsevak.com

हिन्दी विविधा

आत्मोन्नति कारक पर्व : रक्षाबन्धन

❒ सतीश चन्द्र श्रीमाली

हमारे राष्ट्र में मनाए जाने वाले पर्वों का यदि हम गहनता से विश्लेषण चिन्तन करें तो ज्ञात होता है कि वे हमें मन को मलिन करने वाले विकारों से दूर रहने का सन्देश देने वाले हैं। यदि हम उन्हें आत्मोन्नति के कारक कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। चूंकि ये भौतिकता अर्थात् केवल शारीरिक सुख के नहीं अपितु आत्मिक आनन्द के साथ-साथ हमारे चरित्र की श्रेष्ठता के भी द्योतक है। इन्हें मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो स्पष्ट होता है कि मानव मन को कलुषित करने वाले विकारों को रोकने में सहायक हैं तथा उन श्रेष्ठ भावों का प्रवाह मन में करते हैं जो जीवन को श्रेष्ठ बनाने में सहायक होते हैं अर्थात् ये हमें सामाजिक बुराइयों-अपराध से दूर रखते हैं।

यदि हम पर्वों के सन्दर्भ में यहाँ पर 'रक्षाबन्धन' पर्व के महत्त्व के बारे में विश्लेषण-चिन्तन करें तो जो तथ्य दृष्टिगोचर होते हैं वे भी पूर्णतः आत्मोन्नति के कारक के रूप में ही हैं।

हम सभी को विदित है कि प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को शुभ बेला में हमारे सभी विघ्नों को शान्त करने के लिए 'रक्षा बन्धन' का पर्व मनाते हैं। इसमें दाए हाथ की कलाई पर रक्षार्थ 'सूत्र' बंधवाते हैं। यह सूत्र हम उनसे बंधवाते हैं, जो सदैव हमारी शुभता चाहते हैं। प्रायः ये रक्षा सूत्र गुरुजनों से अथवा बहनों से बंधवाने की परम्परा हमारे राष्ट्र में पुरातनकाल से चली आ रही है। इसमें गुरु अपने शिष्य को रक्षासूत्र बांधते समय जिस मन्त्र का उच्चारण करते हैं, वह है-

येन बद्धो बली राजा दानवेंद्रो महाबलः।
तेन त्वामनु बध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

एवं शिष्य को तिलक लगाते हुए मन्त्रोचार करते हुए कहते हैं कि-

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु।।

उक्त मन्त्रों के भावों को यदि व्यक्ति आत्मसात करता है तो उसके जीवन की सदैव श्रेष्ठता बनी रहेगी। उसके कर्म, कर्तव्यनिष्ठ होंगे तथा जीवन में अन्याय से उपार्जित धन से सदैव वह दूर रहेगा अर्थात् ''न्यायोपार्जित वित्तेन कर्तव्यं जीव रक्षणम्'' की पालना होगी। उसके मन में भौतिक सुख की लालसा के स्थान पर आध्यात्मिक पक्ष की बढ़ोतरी होगी तथा जीवन श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होगा। इस पर्व पर सद्गुरुओं की सदैव यही कामना अपने शिष्यों के प्रति रहती है।

'रक्षा सूत्र' बहनों से भी बंधवाते हैं चाहे वे आयु में अपने भाई से बड़ी हो अथवा छोटी। चूंकि वे भी सदैव अपने भाईयों के जीवन में श्रेष्ठता-शुभता की मनोकामना करती हैं। अतः वे भाई की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधते समय उनसे कहती है कि- आप/तुम सदैव कलुषित विचारों-व्यवहारों यथा काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, द्वैष, ईर्ष्या आदि से दूर रहें। चूंकि ये विकार ही आपके/तुम्हारे जीवन में श्रम-तय से उपार्जित तथा अर्जित किए यश को नष्ट करने वाले हैं। वे कहती है कि भैय्या आपके यश का नष्ट होना केवल आपको पीड़ा देने वाला नहीं होगा, उससे मुझे भी समाज में लज्जित होना पड़ेगा। अतः इनसे विलग रहने का मुझे वचन दें। यही मैं 'रक्षा सूत्र' बांधने के प्रतिफल के रूप में मांग कर रही हूँ। वस्तुतः यह वचन भाई के कल्याण हेतु ही है।

वे कहती है कि यह 'सूत्र' आप/तुम्हारे को इन वचनों को निभाने की पूरे वर्ष प्रेरणा देता रहेगा। अतः भाई प्रतिवर्ष उक्त विघ्नों से स्वयं को बचाने के लिए अपनी बहिन से 'रक्षा सूत्र' बंधवाता है, एक नियंता के रूप में।

आत्मोन्नति की यह व्यवस्था पर्व दिवस के रूप में हमारी संस्कृति में स्थापित है, इसका हमें निर्वहन करना चाहिए और सदैव हमारी संस्कृति, संस्कारों पर गर्व भी, जिनके कारण हमारे सामाजिक जीवन में पवित्रता का प्रवाह अनवरत रूप से प्रवाहित हो रहा है।

जस्सुसर गेट रोड, धर्म कांटे के पास,
बीकानेर (राज.)
मो. 9414144456

www.rajsevak.com

नन्हा मोहनदास

❒ डॉ. चेतना उपाध्याय

एक छोटे कद का कमज़ोर कद-काठी वाला बालक विद्यालय में अक्सर अनुपस्थित रहा करता था। विद्यालय आता तो भी छुट्टी होते ही तेजी से घर की ओर भाग जाता। शिक्षक बड़े परेशान होते। बाद में आस पड़ोस से जानकारी लेने पर पता चला कि उसके पिताजी का स्वास्थ्य खराब होने के कारण वह बालक उनकी सेवा चाकरी में रहता है। अतः नियमित रूप से विद्यालय में अनुपस्थित होने पर भी उसे शिक्षक कुछ कहते नहीं थे, जबकि माता-पिता के प्रति सेवा भावना के कारण वह दण्ड से भी बच जाता था।

एक बार कम उपस्थिति के कारण उसे एक ही कक्षा में दुबारा दूसरे वर्ष भी बैठना पड़ा था। पर अपने अनुशासित व्यवहार व आज्ञाकारी विद्यार्थी होने के कारण वह शिक्षकों का कृपा पात्र बना रहा।

एक बार की बात है कि उसके विद्यालय में शिक्षा विभाग के बड़े अधिकारी निरीक्षण पर आए थे, उन्होंने छात्रों से अंग्रेजी के पाँच शब्द लिखवाए उनमें एक शब्द 'कैटल' था। बालक ने उसके हिज्जे गलत लिख दिए। गलत शब्द पर शिक्षक की नजर पड़ते ही उन्होंने उसे बूट की नोक मार कर सावधान किया। उन्होंने इशारे में उसे कहा कि यह शब्द गलत है, पास वाले बच्चे की पट्टी (स्लेट) में देखकर सुधार कर लो। अन्य बच्चे तो समझ गए उन्होंने एक दूसरे का देखकर अपनी गलती सुधार ली। पर इस बच्चे को लगा कि शिक्षक यह कह रहे हैं कि दूसरे का मत देखो अपना-अपना लिखो.... इसने अपनी समझ के आधार पर शिक्षक के इशारे को समझा और बगैर इधर-उधर देखे अपना काम करता रहा। अधिकारी द्वारा जाँचने पर पाया सभी बच्चों ने सही शब्द लिखे हैं। इस अकेले बच्चे का गलत था। उसे गलती पर अच्छी खासी डांट लगाई। उनके जाते ही कक्षा के शिक्षक बोले कितने बेवकूफ हो तुम। तुम्हें इशारा करके समझाने के बाद भी तुमने दूसरे बच्चे का देख अपनी गलती में सुधार नहीं किया.... निरे बेवकूफ हो तुम.....

वह बालक बोला माफ कीजिएगा महोदय मुझे इस शब्द की जानकारी नहीं थी इसलिए गलती हो गयी। दूसरे का देखकर लिखने की वह गलती मैं कैसे कर सकता हूँ। दूसरे की नकल करना तो बुरी बात होती है फिर मुझे आपका इशारा भी यही लगा कि दूसरे का मत देखो, अपना लिखो.....जानते हो बच्चों माता-पिता के प्रति सेवा भाव शिक्षकों के प्रति सम्मान भाव के साथ मर्यादित आचरण वाला यह बालक मोहनदास करमचंद गांधी के रूप में विख्यात हुआ। जिसे राष्ट्रपिता के रूप में सम्पूर्ण राष्ट्र द्वारा स्वीकारा गया।

ब्रिटिश हुकूमत में पोरबन्दर और राजकोट के दीवान करमचन्द गांधी व श्रीमती पुतलीबाई के परिवार में 02 अक्टूबर, 1869 ई. को आपका जन्म हुआ। यह अपने तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। विलक्षण प्रतिभा के धनी बालक मोहनदास पर धार्मिक प्रवृत्ति की माता का अधिक प्रभाव था। आपका सम्पूर्ण जीवन माँ व मातृभूमि के प्रति समर्पित रहा। आप बाल्यकाल से ही शांति, सत्य और अहिंसा के पुजारी रहे। ब्रिटिश हुकूमत के काल में स्वदेश प्रेम-ज्योति बचपन से ही आपके भीतर प्रज्वलित हो गयी थी। वे अपना प्रत्येक कार्य अपने हाथों से करना जरूरी समझते थे। यहाँ तक कि वे अपने पहनने वाले वस्त्र भी स्वयं चरखे पर कातकर बुनकर ही पहनते थे।

मात्र 13 वर्ष की अल्पायु में ही आपका विवाह कस्तूर बाई माखंजी कपाड़िया से हो गया था, जिन्हें कस्तूरबा गाँधी के रूप में आदर व सम्मान के साथ याद किया जाता है। कारण उन्होंने मोहनदास के देश प्रेम समर्पण में पूरा सहयोग दिया। विवाह के समय कस्तूरबा को चरखे पर सूत कातकर कपड़ा बुनना नहीं आता था, जबकि मोहनदास अपने हाथों तैयार वस्त्र ही धारण करते थे। वे दृढ़ प्रतिज्ञ थे इस बात के प्रति अपनी अर्द्धांगिनी से भी उन्हें यही अपेक्षा थी। प्रारम्भिक दौर में उन्होंने दो जोड़ी वस्त्र स्वयं बुनकर उन्हें पहनने को दिए। फिर उसके बाद उन्हें चरखे पर सूत कातकर वस्त्र तैयार करना सिखाया व आगे से स्वयं करने को प्रेरित किया एवं आगे से अपने हाथों से बुना वस्त्र ही पहनने को पाबंद किया।

बच्चों वह 13 वर्ष का नन्हा बालक मोहनदास स्वदेश प्रेम के प्रति कितना सजग व अनुशासित था कि प्रेरणा पुंज के रूप में सदैव सम्मानजनक रूप में याद किया जाता रहेगा। हमें भी प्रेरणा लेनी चाहिए कि हमें भी बाल्यकाल से ही अनुशासित व्यवहार अपनाना चाहिए तभी बड़े होकर हम कुछ अच्छा कर गुजरने की स्थिति में आ पाते हैं।

नवम्बर सन 1887 ई. में आपने अपनी मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर आगे की पढ़ाई हेतु जनवरी सन् 1888 ई. में भावनगर के सामलदास कॉलेज में प्रवेश लिया। यहाँ से डिग्री प्राप्त कर लंदन गए और वहाँ से बैरिस्टर बनकर लौटे।

इसके पश्चात किसी कानूनी विवाद के संबंध में आप सन 1894 ई. में दक्षिण अफ्रीका गए। वहाँ होने वाले अन्याय के खिलाफ आपने सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया। इसके पूर्ण होने के पश्चात भारत लौटे। सन् 1916 ई. के उस दौर में आपने देश की आजादी के लिए अपने कदम उठाना शुरू कर दिए। 1920 ई. में कांग्रेस नेता बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु के बाद आप ही कांग्रेस के प्रमुख मार्गदर्शक के रूप में उभरे।

सन् 1914 से 1915 ई. के बीच प्रथम विश्व युद्ध हुआ था; उसमें आपने ब्रिटिश सरकार को इस शर्त पर पूर्ण सहयोग दिया कि वे इसके बाद भारत को आजाद कर देंगे परन्तु जब अंग्रेजों ने ऐसा नहीं किया तो फिर गांधीजी ने देश को आजादी दिलाने के लिए बहुत से आंदोलन चलाए। उनमें से सन् 1920 ई. में असहयोग आंदोलन, सन् 1918 ई. में चंपारन और खेड़ा सत्याग्रह, सन् 1919 ई. में खिलाफत आंदोलन, सन् 1930 ई. में सविनय अवज्ञा आंदोलन, नमक सत्याग्रह आंदोलन, दांडी यात्रा, इसके पश्चात सन् 1942 ई. में भारत छोड़ो आंदोलन आदि राष्ट्रव्यापी आंदोलन के रूप में तब्दील हुए। इस बीच आपके जीवन में अनेक बार उतार-चढ़ाव भी आए। इनमें सन् 1920 ई. के चौरा-चोरी काण्ड को भारतीय इतिहास की प्रमुख घटना के रूप में याद किया जाता है।

गांधीजी अपने समस्त आंदोलन अहिंसात्मक तरीके से चलाते थे, पर इस दौरान जब उत्तर प्रदेश के राज्य चौरा-चौरी नामक स्थान पर शांतिपूर्वक रैली निकाली जा रही थी, तब अंग्रेजी सैनिकों ने उन पर गोलियाँ चला दी।

www.rajsevak.com

जिससे कुछ लोगों की मौत हो गई। तब गुस्से से भरी भीड़ ने पुलिस स्टेशन में आग लगा दी। वहाँ उपस्थित 22 सैनिकों की हत्या भी कर दी। तब गांधीजी का कहना था कि हमें सम्पूर्ण आंदोलन के दौरान किसी भी हिंसात्मक गतिविधि को नहीं करना था। शायद हम अभी आजादी पाने लायक नहीं हुए हैं और हिंसात्मक गतिविधि के कारण आपने अपना आंदोलन वापस ले लिया क्योंकि आप अपने समस्त आंदोलन सत्य और अहिंसा की दिशा पर किए जाना पसंद करते थे।

आपका यह मानना था कि पृथ्वी व प्रकृति के पास हमारी समस्त आपूर्तियों हेतु पर्याप्त संसाधन उपलब्ध है, मगर हमारे उपयोग की हवस को शांत करने के लिए वह पर्याप्त नहीं है। अतः हमें अपने उपभोग पर नियंत्रण रखना चाहिए। प्राकृतिक उत्पादों को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। आगे चलकर आपकी यह अभिलाषा पर्यावरणीय चेतना के लिए महत्त्वपूर्ण प्रेरणा बनी। जो कि अब वर्तमान की प्रमुख आवश्यकता हो गई है।

गांधीजी बेहद सहज व सरल व्यक्तित्व के धनी थे। एक बार उनसे सुब्बाराव जी ने पूछा कि आप देश के नौजवानों को क्या संदेश देना चाहेंगे तो वे बोले- अरे भाई जो मैंने किया या जो मैं करता हूँ वह तो कोई भी साधारण व्यक्ति कर सकता है। यह जीवनयापन प्रारूप ही मेरा संदेश है। यही सच्चाई है। गांधीजी ने अंग्रेजी साम्राज्य को समाप्त करने हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों, अन्याय, शोषण से लड़े मगर सीधे अंग्रेजों से नहीं लड़े। तभी अंग्रेजों ने संसद के सामने गांधीजी की प्रतिमा खड़ी की है।

वास्तव में महात्मा गांधी भारत की उन चंद हस्तियों में सबसे आगे हैं, जिनकी शिक्षा व विचार उनकी मृत्यु के इतने वर्षों पश्चात भी आज मान्य है। आपका जीवन हमारे लिए प्रेरणादायक है क्योंकि आपने अपने जीवन में कभी-भी अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं किया। आपके विचार व जीवनशैली ने ही आपको एक आम आदमी से महात्मा बना दिया था। वे सर्वधर्म समभाव, जातिगत समानता के साथ ही स्त्री-पुरुष के प्रति भी समभाव रखते थे और समाज को भी समभाव के प्रति प्रेरित करते थे। गांधीजी जीवन भर अनवरत प्रयोग करते रहे और जीवन के भिन्न-भिन्न पड़ावों पर उन्होंने अपने लिए कुछ विशेष लक्ष्य भी रखे जिनका पालन भी आपने पूर्ण संजीदगी के साथ किया। आपने सदैव एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए पदयात्रा को ही अहमियत प्रदान की। आप देश के देहातों में स्वराज्य को प्रकाशित होता देखते थे। जहाँ प्रजा अपने आसपास के जल-जंगल-जमीन के स्वभाव के अनुकूल जीवनयापन करती है, उन्हें वकील नहीं चाहिए क्योंकि वह तो आपसी संवाद से हल खोज लेने की कला का विकास करके अदालतों से दूर ही बनी रहेगी। गांवों में प्रकृति के सान्निध्य में जीवन यापन करने वालों को चिकित्सकों की भी जरूरत नहीं रहेगी, क्योंकि प्रकृति ही उन्हें स्वास्थ्य प्रदान करती रहेगी। वहाँ बच्चों की शिक्षा श्रम में डूबे उस पारंपरिक ज्ञान से होगी, जो बड़े बुजुर्गों से उत्तराधिकार में मिलता रहता है। इसलिए आप चाहते थे कि मानव प्रकृति के पास, उसके साथ बना रहकर जीवन अपना आनंदित बनाए। कृत्रिमता का लबादा ओढ़ने से उसकी समस्याएँ दुगुनी हो जाती है। बालकों की प्रारम्भिक शिक्षा हेतु आपने आँगनबाड़ी को प्राथमिकता दी। जहाँ बालक प्रकृति के साथ खेलते-कूदते हुए जीवन कौशल की शिक्षा प्राप्त करे। जिससे वे आत्मनिर्भर हो जीवन कुशलतापूर्वक निर्वाह करने की क्षमता प्राप्त कर सके। वर्तमान समय में जो गतिविधि आधारित शिक्षण प्रक्रिया अपनाई गई है। वह आपकी ही देन है। दूसरा मातृभाषा में शिक्षण की बुनियाद भी आपका ही प्रयास था। सच है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से ही मातृभाषा में शिक्षा की उपलब्धता को लागू कर दिया होता तो आज बहुत हद तक भाषा का दलिद्दर दूर हो गया होता। आज जिस अतिवादी भाषा नीति का विरोध किया जा रहा है उसके मूल में गांधीजी के भाषा संबंधी विचारों को गंभीरता से अमल में लाने की प्रवृत्ति ही रही क्योंकि मातृभाषा ही हमारे विकास की धुरी है। भाषा के साथ भाषायी संस्कृति भी जुड़ी होने से वह भी अक्षुण्ण बनी रहती है।

गांधीजी अमीर व गरीब के बीच संघर्ष के बजाए सामाजिक न्याय और बंधुत्व पर बल देते थे। वे अपने आंदोलनों के दौरान और उनके मध्य के खाली समय में रचनात्मक कार्यों पर जोर देते थे ताकि उस आंदोलन में किसी भी हाल में मनुष्यता का बोध खंडित ना हो। मनुष्यता बनी रहे। आप यांत्रिक सभ्यता के प्रबल विरोधी थे। आप संसार के सबसे असाधारण मुक्ति आंदोलन के कोमल स्वभाव के मसीहा थे। आज हमें उनकी मौलिकता व प्रयोग धर्मिता को आत्मसात करने की आवश्यकता है ताकि हम विकास पथ पर निर्बाध गति से आगे बढ़ सके।

नरसी मेहता द्वारा रचित-

वैष्णव जन तो तेने कहिए,
जे पीड़ परायी जानी रे,
पर दुःखे उपकार करे तोये,
मन अभिमान न आणे रे।।

आपका प्रिय भजन है। आपने समाज में सात क्रियाओं को पाप बताया है। हमें उनसे बचना ही चाहिए... वे पाप निम्न हैं-

1. सिद्धांत विहीन राजनीति।
2. श्रम विहीन सम्पत्ति।
3. विवेक विहीन भोग विलास।
4. चरित्र विहीन शिक्षा।
5. नैतिकता विहीन व्यापार।
6. मानवीयता विहीन विज्ञान।
7. त्याग विहीन पूजा।

02 अक्टूबर, सन् 2019 ई. को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का 150 वाँ जन्म दिवस देश भर में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर देशभर के विद्यालयों, दफ्तरों में तरह-तरह के कार्यक्रम आयोजित किए गए। आपके विचारों और संदेशों को कई स्तर से याद किया गया। गांधीजी का जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जाना भारत वर्ष में विशिष्ट अनुभूति रही है।

हमने देखा कि उस नन्हें से बालक मोहनदास की जीवन यात्रा सादगी भरी व अनेक संघर्षों से युक्त रही। उस महान व्यक्तित्व ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के रूप में 30 जनवरी, सन् 1948 ई. को इस धरती से विदाई प्राप्त की। आपने बहुत सुंदर जीवन जिया। आपके माध्यम से जो जीवंत चेतना धरती पर आई थी, वह व्यापक और ताकतवर थी। 'हे राम' आपके अंतिम वाक्य रहे।

हमें भी गांधीजी द्वारा बताए मार्ग पर चलना चाहिए। गांधी तत्त्व को आत्मसात करना चाहिए। हममें से कोई भी गांधी नहीं हो सकता, किन्तु गांधी तत्त्व की प्रतीति हमें बेहतर मनुष्य होने में सहायता कर सकती है।

वरिष्ठ व्याख्याता (डाइट)
जिला शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान, मसूदा,
अजमेर (राज.)
मो: 8094554488

www.rajsevak.com

स्वस्थ बचपन और सहजन

❒ डॉ. तमन्ना तलरेजा

सहजन (वानस्पतिक नाम : मोरिन्गा ओलीफेरा सामान्य नाम: सहजना, सुजना, सेंजन और मुनगा, स्वादंरा या सिंगिया) एक सुगमता से पाया जाने वाला वृक्ष है। इस वृक्ष के सभी भाग जैसे फूल, फलियां, पत्तियां आदि अत्याधिक पौष्टिक होने के साथ-साथ औषधीय गुणों से भरपूर भी हैं। आयुर्वेद में इस वृक्ष का वर्णन लधुपत्रा, तीक्ष्णगंधा के नाम से मिलता है। सहजन की पत्तियों में कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन, ऑयरन, कैल्शियम, पोटेशियम, मैंग्नीशियम, विटीमिन ए, सी और बी काम्प्लेक्स प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो खून की कमी एवं कुपोषण दूर करने में सहायक है। इसके अलावा सहजन के बीज के पाउडर को आटे में मिलाकर रोटी बनाने अथवा सब्जी में निश्चित अनुपात में मिलाकर देना, बच्चों में कुपोषण दूर करने के लिए भी प्रयोग में लाया जा सकता है। शोध बताते है कि क्लोरोफिल हीमोग्लोबिल बनाने वाला स्रोत (अग्रदूत-Precursor) है। अत: इस वृक्ष की पत्तियों का पाउडर बना ले और उसे रोजमर्रा के खाने में 1-2 चम्मच डाल दिया जाए या पत्तियों की चटनी के प्रयोग से प्रोटीन की कमी तथा एनीमिया को बहुत हद तक सुधारा जा सकता है। इस वृक्ष की फलियां भी विटामिन सी का उत्तम स्रोत है अत: इस वृक्ष की कच्ची फलियों से बनने वाले अचार तथा सब्जी से शरीर की विटामिन सी की जरूरत को पूरा किया जा सकता है। जिससे विटामिन सी की कमी से होने वाले रोग स्कर्वी से बचाव किया जा सकता है। सहजन के फूलों में लेवोनोइड तत्व अत्यधिक मात्रा में मिलते हैं, जो बेहतरीन प्रतिजैविक कारक होते हैं। अत: सहजन के फूलों से बनने वाली सब्जी तथा चटनी के प्रयोग से शरीर की रोग- प्रतिरोधकता बढ़ाई जा सकती है। साथ ही साथ शोध में यह भी ज्ञात हुआ है कि सहजन के फूलों में ग्राम धनात्मक जीवाणुओं के प्रति मारक क्षमता भी है। जिससे इन जीवाणुओं से स्वास्थ्य पर होने वाले नकारात्मक प्रभावों से बचा जा सकता है।

हमारे यहाँ विद्यालयों में मिड डे मील में सहजन का प्रयोग, स्वस्थ बचपन निर्माण की दिशा में एक वरदान की तरह साबित हो सकता है क्योंकि विद्यार्थी के आहार में मात्र 1 चम्मच प्रति विद्यार्थी पत्ती पाउडर डालकर रोटी बनाने से, पत्तियों की चटनी के प्रयोग से, फूलों से बनने वाली सब्जी या चटनी अथवा कच्ची फलियों से बनने वाले अचार या सब्जी के प्रयोग को विद्यालयों के मिड डे मील में शामिल करना विद्यार्थियों के लिये एक अच्छा हेल्थ सप्लीमेण्ट रहेगा। विशेष तौर पर बढ़ते बच्चे (जिनकी प्रोटीन आवश्यकता सामान्य लोगों से अधिक हैं) जो केवल विशेष सब्जियाँ ही खाते हैं, इसके प्रयोग से शरीर में होने वाली प्रोटीन और आयरन की कमी और कुपोषण से बच सकते हैं। इस तरह सहजन वृक्ष के कुछ महत्त्वपूर्ण उपयोगों की ओर ध्यान दिलवाने का प्रयास किया गया है ताकि आम आदमी इनके प्रयोग से निरोगी व प्रसन्न रह सके। इसके लिए जरूरत है इस 'अमृत वृक्ष' के विविध उपयोगों को जीवन में अपनाने की ताकि इसके गुणों का अधिकतम उपयोग मानव कल्याण के लिए किया जा सके।

अनुसंधान अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 8094370519

मौन की महत्ता

❒ प्रियंका पांडिया

मौन की महत्ता से कौन परिचित नहीं है लेकिन बदलती जीवन शैली एवं बढ़ते तकनीकी प्रयोगों ने हमारे जीवन से जैसे इसकी महत्ता को खत्म सा ही कर दिया है। मौन जहाँ स्वयं के अंदर झांकने का प्रवेश द्वार है, वहीं मौन शान्ति का आगार (खजाना) है। मौन रचनात्मकता के लिए अजस्र भण्डार है, अतः साधनात्मक जीवन में कुछ समय मौन रहने पर बल दिया जाता है। लगातार व अधिक बोलने से मनुष्य की शक्ति का क्षय होने लगता है, साथ ही अधिक बोलने से व्यक्ति अधिक सोच नहीं पाता है और वो बोलने में त्रुटि करने लगता है, उसकी अभिव्यक्ति कई बार दूसरे को आहत करती है। बहिर्मुखी प्रवृत्ति ज्यादा हावी होने पर मन की शांति एवं एकाग्रता में कमी आने लगती है।

विद्यार्थी जीवन में स्वाध्याय पर अत्यधिक बल दिया है और इस हेतु मौन का अपना महत्त्व है। छात्र जीवन में व्यवहार कुशलता तथा रचनात्मकता के लिए मौन का पालन आवश्यक है। मौन व्यक्ति को अंतर्मुखी बनाकर स्वयं के अंदर प्रवेश करने में मदद करता है। यही मौन हमारे चित्त की स्थिरता, एकाग्रता तथा मन की शांति को बढ़ाता है। मौन को अपना कर ही हम अपने कार्यों की रचनात्मकता तथा उत्कृष्टता को बढ़ा सकते हैं। जिस प्रकार सूर्य की प्रकाश किरणों को नीचे उत्तल लैंस रखने पर ये किरणें एक स्थान पर केन्द्रित होकर अपने नीचे रखे पदार्थ को जला देती है। उसी प्रकार शांत एवं एकांत परिवेश में मौन की ऊर्जा संगृहीत होकर किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। हम आध्यात्म के क्षेत्र में भी मौन का महत्त्व देखते हैं, क्योंकि वर्षों से हमारे यहाँ ऋषि-मुनि मौन रह कर ही तप एवं साधना करते आए हैं। गीता के 17वें अध्याय में भी भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को मौन की महत्ता बताई तथा ये भी स्पष्ट किया कि यह मन का तप है। हमें इसमें मन को संयमित रखते हुए अपने भावों को भी शुद्ध रखना चाहिए। कुछ साधक नवरात्रि के नौ दिन तक मौन साधना का पालन करते हैं और निश्चित ही इसके लाभ भी प्राप्त करते हैं। कुछ साधक मौन व्रत में इशारों का प्रयोग करते हैं लेकिन इसमें मन तथा भावों का संयम टूटता है। अतः पूर्णतया शुद्ध भाव से ही मौन व्रत करना चाहिए। महात्मा बुद्ध ने विपासना साधना के द्वारा ही बोधित्व को प्राप्त किया था। अतः आज भी सभी विपासना साधना केन्द्र पर साधक मौन रहकर ही अपनी मेडिटेशन की साधना को पूर्ण करते हैं। मौन द्वारा शरीर की विभिन्न शक्तियों का क्षरण रुकता है तथा आत्मबल में वृद्धि होती है। जीवन में दिव्य तत्वों की वृद्धि होती है, शांति का प्रादुर्भाव होता है। जब हमारी बहिर्मुखी प्रवृत्तियाँ अन्तर्मुखी होने लगती है तो हमारी आत्मा की उन्नति का मार्ग प्रशस्त होने लगता है। मौन के फायदों को देखते हुए हर आयु तथा वर्ग के व्यक्तियों को सप्ताह में कुछ समय मौन साधना में बिताना चाहिए। मौन काल को हमें अध्ययन, लेखन एवं रचनात्मक कार्यों में बिताना चाहिए, ताकि मौन के बेशुमार व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक लाभों को हम प्राप्त कर सके। साथ ही अपने जीवन को इसके द्वारा सुखी, समृद्ध एवं सार्थक बना सकें। 'स्पीच इज सिल्वर साइलेन्स इज गोल्ड' उपर्युक्त वाक्य मौन की सार्थकता को पूर्णतया स्पष्ट करता है।

वरिष्ठ अध्यापिका (विज्ञान)
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय तलवंडी,
कोटा (राज.)-324005 **मो: 8890811004**

www.rajsevak.com

कलम की शक्ति

❒ सुभाष चन्द्र कस्वाँ

प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका को देखते हुए पचास व साठ के दशक का वाद-विवाद का प्रमुख विषय विद्यालय तथा महाविद्यालय स्तर पर तलवार बड़ी या कलम तथा अक्ल बड़ी या भैंस हुआ करता था। इस विषय की प्रमुखता इसलिए थी क्योंकि विश्व के लोगों को अणुबम के भयंकर विनाश से यह जागरूकता फैलाने की आवश्यकता अधिक महसूस हुई कि हम ऐसे नागरिक तैयार करें जो अपनी रचनाओं व विचारों से तलवार के महत्त्व को नकार कलम की ताकत को स्थापित करें जिससे फिर बुरे हालात का सामना भविष्य में न कर सके। कलम ने अपनी शक्ति का जलवा दिखाया जिसने आणविक शक्ति वाले देशों को जता दिया कि पिशाच व विनाश वाली संस्कृति से मस्तिष्क से पनपी कृति की ख्याति ही संसार को अमन-चैन की राह दिखा सकती है। जिसका प्रभाव आज भी स्पष्ट रूप से नजर आ रहा है कि तृतीय महायुद्ध के काले बादल आसमान में छाए ही नहीं। कलम के कमाल की वास्तविकता ताकत कलमकार होता है। कलम से रचनाकार का चमत्कार सबको चमत्कृत कर देता है इसीलिए कहा गया है कि 'The Pen Is Mighter Than The Sword. ' अर्थात तलवार से कलम अधिक शक्तिशाली है। कलम की शक्ति का लोहा मानते हुए अब्दुल खाँ उजबेग ने कहा है, ''मैं अकबर की तलवार से उतना नहीं डरता हूँ जितना अबुल फजल की कलम से।'

कलम के धनी रचनाकारों ने अपनी पुस्तक एवं रचनाओं के माध्यम से दुनिया का चेहरा व सोचने का नजरिया बदला है। इतिहास में ऐसी बहुत सी नजीरें है। विश्व विजयी सिकन्दर को एक व्यक्ति ने अमूल्य रत्नों से जुड़ी एक पेटी भेंट की और कहा, 'यह इरान के राजमहल से लाई गई है, आप इसमें अपनी सबसे प्रिय वस्तु रखें जिससे उसकी याद हमेशा बनी रहे।' वहाँ पर उपस्थित सिकन्दर के एक मित्र ने सुझाव दिया कि 'आप इसमें अपनी स्वर्णमंडित वह तलवार रखे जिसके बल पर आपने विश्व विजय प्राप्त की है।' सिकन्दर ने भारी मन से कहा, 'मैंने इस तलवार से असंख्य निर्दोष लोगों का खून बहाया है। मैं इसे गौरव वस्तु के रूप में अपने लिए क्यों देखूँ?'' दूसरे मित्र ने प्रस्ताव रखा-'आप इसमें अपने खजाने की चाबियाँ रखें।' सिकन्दर ने इस प्रस्ताव को नकारते हुए कहा, 'मेरे खजाने में तलवार के बल पर लूटपाट से मिली सम्पदा का बाहुल्य है। ऐसी सम्पदा पर मैं गर्व किस प्रकार कर सकता हूँ।' कुछ क्षण सोचने के पश्चात सिकन्दर ने कहा, 'सद्विचारों की प्रेरणा मुझे महाकवि होमर लिखित महाकाव्य 'इलियट' से प्राप्त हुई है। इस पुस्तक ने मुझे मेरे पापों का ज्ञान करवाया है और उसके लिए प्रायश्चित करने के लिए बाध्य किया है। अब मैं इस बहुमूल्य पेटी में इस अमूल्य ग्रंथ को अन्दर रख इसे सुशोभित करूँगा।' सही मायने में देखा जाए तो सिकंदर के अहंकार व अंधकार को कलमीय शक्ति ने ही मिटाकर मानवीय संवेदना व करुणा के करीब लाकर खड़ा किया। सतही तौर पर देखा जाए तो विचार ही दुनिया को बदल सकते हैं चाहे वे लिखित हो या मुँह से बोले जाएँ। सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध में जितनी लाशें बिछायी उसे देखकर बौद्ध भिक्षु उपगुप्त ने अशोक से सवाल किया, राजन! इतनी लाशें युद्ध में बिछाकर आपको आखिर क्या मिला? बुद्ध को तो शांति प्रयासों से टाला जा सकता था। अशोक के पास इन प्रश्नों का कोई सही उत्तर नहीं था। चुप रहे लेकिन उसी वक्त उनका हृदय परिवर्तन हो गया। भविष्य में युद्ध न करने की कसम खाई। शांति के संदेश के लिए बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करने में लग गए। यदि अशोक आखिर तक तलवार के बल पर ही चलते रहते तो अशोक ही कहलाते 'महान सम्राट अशोक' नहीं कहलाते। प्रायश्चित का सुनहरा अवसर विचारों से मिला व अंत तक करुणामयी बने रहे। हमारा धार्मिक ग्रंथ यदि 'गीता' नहीं होती तब महात्मा गांधी महज गांधी के नाम से ही जाने जाते। महात्मा बनाने में गांधीजी को गीता का बड़ा हाथ था। जब वे कभी निराश व दुःखी अपने आपको महसूस करते तब गीता में शरण में चले जाते। उन्हें ऐसा लगता कि मेरी माँ मुझे दुलार रही है व आगे बढ़ने की प्रेरणा भी दे रही है। उनके लिए सिर्फ दो ही माँऐं थी। पहली जन्म देने वाली व दूसरी निराशा व दुःखों से उबारने वाली माँ 'गीता'। लकड़हारे का बेटा अब्राहम लिंकन यदि जॉर्ज वाशिंगटन की जीवन पुस्तक के जरिए नहीं पढ़ते तो अमेरिका के राष्ट्रपति पद पर पहुँचने से महरुम हो जाते। उनकी जीवनी को शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया जिसमें लिंकन इतने खो गए कि उन्हें लगने लगा यह पुस्तक मेरे लिए ही लिखी गई है। आज के प्रसिद्ध गीतकार गुलजार लफ्जों की महक से जितने महके हैं उसका पूरा श्रेय रवीन्द्रनाथ टैगोर प्रणीत 'गीतांजलि' को ही जाता है। गीतांजलि पढ़कर वे इतने प्रभावित हुए कि मन ही मन कवि बनने की ठान ली। आज उनकी कलम से उकेरे शब्द हर किसी को अपनी ओर बरबस ही खींच लेते हैं।

हिटलर व पोलपॉट जैसे व्यक्ति मानवता के तगड़े दुश्मन हुए। आज उनके नाम से मन व शरीर में अजीब से सिहरन उनके तलवार के बल पर किए गए कृत्यों से दौड़ जाती है। जिस देश में हिटलर पैदा हुए उसी देश में गुटूर ग्रास, मार्टामूलर, जिनपोल व हेनरिच जैसे साहित्यकार हुए जिन्होंने अपनी लेखन क्षमता से मानव हितार्थ कार्य किए। लोग उनकी रचनाओं को चाव से पढ़ते व प्रशंसा करते है। वहीं पर हिटलर जैसे तानाशाह को आत्महत्या के लिए विवश हो, दुनिया को अलविदा कहना पड़ा। आतंकी ओसामा बिन लादेन का जिस प्रकार अंत हुआ वह उसके स्वभाव व कार्य के अनुरूप ही था। आज के इस प्रगतिशील दौर में कोई इनसे सीख नहीं लेता है तब उसका हश्र भी उनकी बुआई के अनुरूप ही होता है। पाकिस्तान जो आतंकियों को पालता-पोसता है, दुनिया में सबसे अधिक पिछड़कर अकेला पड़ गया है। उसकी अर्थ व्यवस्था व पहचान वेन्टीलेटर पर सांसें ले रही है। यदि पाकिस्तान में हालात आगे भी ऐसे बने रहे तो 'डायनासोर' की भाँति विश्व पटल से हमेशा के लिए विलुप्त हो जाएगा। महात्मा गांधी ने इस संदर्भ में सही ही कहा है, 'संसार में जितने तानाशाह व हत्यारे हुए हैं, वे कुछ समय के लिए अजेय लग सकते हैं, लेकिन अंत में उनका पतन बहुत ही दुःखदायीपूर्ण तरीके से हुआ है।' कहने का सरल सा अर्थ यह है कि जो शस्त्र उठाता है उसका अंत भी शस्त्र द्वारा ही होता है। 1

www.rajsevak.com

अक्टूबर 2019 ई. को चीन ने 'पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना' के सतरवीं वर्षगांठ पर बीजिंग में परमाणु मिसाइलों का प्रदर्शन विश्व में प्रभाव दिखाने के लिए उसने यही तरीका उचित समझा। चीन को जानना चाहिए कि यह शक्ति प्रदर्शन उसके लिए भी उतना ही घातक है जितना दूसरे देशों के लिए क्योंकि आणविक मिसाइल तकनीक में अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, रूस व भारत उससे कमतर किसी भी हालत में नहीं है। अच्छा होता अपनी समझ व संवेदना से हांगकांग का मसला शांति से सुलझाने में अपनी शक्ति का प्रयोग कर हांगकांग के लोगों को शांति से जीने का अधिकार प्रदान कर पाता। वहां स्वतंत्र लेखक व विचारकों को अभिव्यक्ति की आजादी दे इस विवाद को आसानी से हल कर मानवता रक्षक का सेहरना बांधने में कामयाब हो जाता। पाशविक शक्ति से नैतिक बहादुरी हमेशा श्रेष्ठ व ऊँची होती है।

कलम की शक्ति की कोई सीमा नहीं होती है। इसलिए यह लोकोक्ति आज भी अस्तित्व में है कि 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।' इसकी शक्ति को आँखों से देखा नहीं जाता। इसे तो महसूस किया जाता है। कलम से गढ़ी श्रेष्ठ रचनाए महज मन बहलाव के लिए नहीं होती है। वे जीवित होकर मनुष्य को एहसास करवाती हैं। जहाँ एहसास होता है उसके पास ही परिवर्तन की राह चाह लिए खड़ी नजर आती है। जिसने ताकत व तलवार के बल पर खाने का प्रयास किया उसका दुःखद अंत भी उस मौनी बगुला जैसा होता है जो तीर्थों के जल में रहने वाली तिमी मछली को खा जाता है, वनान्त में रहने वाला व्याघ्र आकर उस बगुले का शिकार कर लेता है। कलम की ताकत अजेय है। यदि कलम द्वारा शास्त्री को बढ़ावा देना है तो शस्त्ररहित राष्ट्र का होना पहली शर्त है। कलम व तलवार की शक्ति में अन्तर करते हुए ई. थॉर्नडाइक ने अपने शब्दों के जादू को बिखेरते हुए कहा है- 'Colours fade, temples crumble, empires fall but the best pen writings always endure' अर्थात रंग झड़ जाते हैं, मंदिर ढह जाते हैं, सल्तनें बिखर जाती हैं पर उत्कृष्ट कलम रचनाएँ हमेशा जीवित रहती हैं।

पूर्व प्राध्यापक
हेतमसर, झुंझुनूं (राज.)-333041
मो: 9460841575

पेयजल का अपव्यय कैसे रोकें?

❒ मेन्दू हुसैन

विद्यालय में छात्रों के पानी पीने हेतु टंकी या हौज की सुविधा होती है। उस हौज के चार-पाँच नल लगे हुए होते हैं। इन नलों को लगाए हुए काफी समय बीत गया होता है तो इन नलों से पानी टपकता हुआ नजर आता है। यह तो सभी को पता है कि 'बूँद-बूँद से सरोवर भरता है।' तो कभी हमने यह नहीं सोचा कि बूँद-बूँद से कितना पानी व्यर्थ जाता है। इस बात का कोई ध्यान नहीं देता और न इस व्यर्थ बहने वाले पानी की मात्रा का कोई आंकलन करता है। मैं आपका ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूँ। इसके लिए एक सरल गतिविधि नवाचार के रूप में करनी होगी। इसमें किसी न किसी प्रकार का खर्च और न ही अधिक परिश्रम की जरूरत है। यह गतिविधि नवाचार के रूप में जो इस प्रकार है-

पानी के हौज पर जो नल लगे हुए है और जिनसे पानी टपक रहा है, उनके पास एक टेबल रखे तथा टेबल के ऊपर एक चालु दीवार घड़ी रखे। जो जल ज्यादा टपक रहा है उसके नीचे एक जग रखे। जग रखते ही घड़ी में समय देखकर समय अंकित कर देवे। नल के सामने चार-पाँच छात्राओं को भी खड़ा कर देवे और इस गतिविधि को देखते रहने का कहे। लगभग 15 मिनट या 30 मिनट बाद घड़ी में समय देखे और जग में भरे पानी की मात्रा देखे। पानी को एक लीटर वाली बोतल में डालकर पता करे यदि 15 मिनट तक नल टपकने से बोतल का चौथाई हिस्सा भरा है तो हम यह मानेंगे कि एक घंटे में एक बोतल अर्थात 1 लीटर पानी टपका है। अब छात्रों से कहे तो छात्र सरल गणित विधि से पता लगा सकेंगे वो इस प्रकार-

1 नल से एक घंटे में 1 लीटर
5 नल से एक घंटे में 5 लीटर
5 नल से 24 घण्टे में 5×24= 120 लीटर (प्रतिदिन)

किसी भी विद्यालय में हौज एवं शौचालय में कुल मिलकर 5 नल तो लगभग होंगे ही इस प्रकार जिन छात्रों एवं स्टाफ ने इस गतिविधि को देखा वो यह तो समझ ही गए कि हमारे विद्यालय में प्रतिदिन 120 लीटर पेयजल

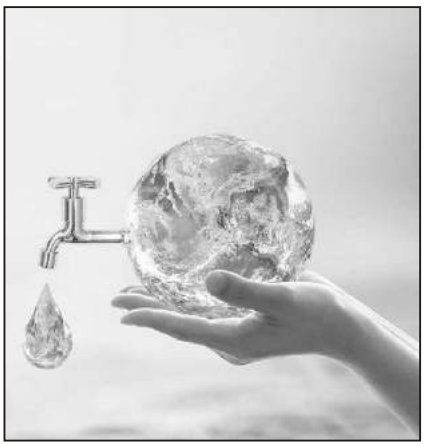

व्यर्थ में बहकर चला जाता है। इस गतिविधि को देखकर छात्रों को ध्यान अपने घर की तरफ भी अवश्य जाएगा कि उनके घरों में दो-चार नल तो अवश्य होंगे ही वहाँ भी पानी व्यर्थ बहता होगा।

इस गतिविधि को देख कर छात्र एवं विद्यालय प्रशासन भी जागरूक होगा और इस प्रकार से प्रतिदिन अपव्यय होने वाले पेयजल का तुरन्त उपाय करेंगे। इसका सरल उपाय यह है कि जल अगर सस्ते और साधारण है तो उन्हें खोलकर नए बदलने होंगे एवं यदि नल महंगे और अच्छी किस्म के लगे हुए है तो उनका वासर बदलना होगा उनको खोलकर उनमें लगा रबर का वासर बदलकर पुनः रिपयेर हो जाएगा। रबर का वासर बिल्कुल सस्ता मिलता है।

दूसरा तरीका यह है कि यदि नल किसी एक ही पाइप से जुड़े हुए है तो मेन सप्लाई लाइन पर एक वाल्व लगा दिया जाए, जिसे विद्यालय की छुट्टी होने पर केवल उस वाल्व को बन्द कर दिया जिससे छुट्टी होने के बाद से अगले दिन विद्यालय खुलने तक पानी जब तक वॉल्व को पुनः चालू नहीं करेंगे, तब तक पानी का अपव्यय बन्द हो जाएगा। यदि हो सके तो वाल्व को भी लॉक किया जाए जिससे विद्यालय समय के पश्चात या छुट्टी के दिन भी इसका दुरुपयोग खेलने वाले बच्चे या आस-पास के पड़ौसी नहीं कर सके।

व्याख्याता (सेवानिवृत्त)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिबलस,
जालौर (राज.)

www.rajsevak.com

प्राणवायु का फेर

❐ हिमांशु सोगानी

जीवन का दूसरा नाम है प्राणवायु-ऑक्सीजन। इसमें कौन परिचित नहीं है। हर कोई जानता है कि श्वास आ रहा है यानी शरीर को ऑक्सीजन मिल रही है लेकिन जितनी सहजता से जीवन के प्रादुर्भाव से प्राणी को ऑक्सीजन सुलभ हो रही है। हमने प्राणवायु के उत्पादक वृक्षों को ज्यादा अहमियत नहीं दी। व्यक्ति ने अपने साजो सामान, सजावट, निर्माण के लिए प्राणवायु दाता वृक्षों को अंधाधुंध कटाई की है लेकिन कभी विचार नहीं किया विशाल वृक्ष की हत्या कर, कोई नया पौधा भी रोपा जाए।

क्या है प्राणवायु चक्र– हम जानते हैं कि जिस वायु का उपयोग सांस लेने में किया जाता है। वास्तव में वह अनेक गैसों का मिश्रण है। हवा में नाइट्रोजन व ऑक्सीजन ऐसी दो गैसें हैं, जिनसे वायुमंडल का बड़ा भाग बना है। हवा में कार्बन डाइऑक्साइड, हीलियम, ओजोन, ऑर्गन एवं हाइड्रोजन कम मात्रा में पाई जाती है। ऑक्सीजन वायु में प्रचुरता से मिलने वाली दूसरी गैस है। मनुष्य एवं पशु सांस लेने में वायु से ऑक्सीजन प्राप्त करते हैं। हरे पादप प्रकाश संश्लेषण द्वारा ऑक्सीजन उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार वायु में ऑक्सीजन की मात्रा समान बनी रहती है। यदि हरे वृक्ष काटते है तो यह संतुलन बिगड़ जाता है।

कार्बन डाइआक्साइड पर्यावरण से मिलने वाली महत्त्वपूर्ण गैस है। हरे पादप भोजन के रूप में कार्बन डाइआक्साइड का प्रयोग करते हैं और ऑक्सीजन वापस देते हैं। मनुष्य व पशु कार्बन डाइआक्साइड बाहर निकालते हैं। मनुष्य व पशुओं द्वारा बाहर छोड़ी जाने वाली कार्बन डाइआक्साइड की मात्रा पादपों द्वारा उपयोग में ली जाने वाले गैस के बराबर है लेकिन कारखानों से निकलने वाले धुँआ एवं अंधाधुंध काटे जा रहे वृक्षों के कारण गैसीय संतुलन व पृथ्वी पर मौसम व जलवायु को बिगाड़ रहा है। अपने आस-पास पेड़ों को न कटने दे। वृक्ष काटने का विरोध करे। उनके आस-पास आग न लगावे। अपने आसपास सार्वजनिक स्थान पर प्रत्येक 50 मीटर की दूरी पर एक पेड़ लगाने की मुहिम चलावे।

जिससे वहाँ पर्याप्त मात्रा में शुद्ध हवा मिलेगी और लोग स्वस्थ रहेंगे।

पेड़ लगाने के फायदे– पेड़ लगाने के पाँच फायदे होते हैं। पहला-यह कि ऑक्सीजन के जरिए वृक्ष मानव जाति को बचाते हैं। दूसरा-यह मिट्टी के क्षरण यानी इसे धूल बनने से रोकता है। जमीन से उसे बांधे रखता है। तीसरा-भूजल स्तर को बढ़ाने में सबसे ज्यादा मदद करता है। चौथा- यह वायुमंडल के तापमान को नियत रखता है। पेड़ों से ढके स्थानों का खुले आसमान की तुलना में 3-4 डिग्री तापमान कम होता है। इसलिए अपने आसपास पेड़ लगाने की सलाह दी जाती है। पांचवा-एक पेड़ औसतन दिनभर में करीब 227 लीटर ऑक्सीजन छोड़ता है। जिससे सात लोगों को प्राणवायु मिल पाती है। आज पेड़ लगाने के साथ पेड़ बचाने की जरूरत है। आप समझ सकते हैं कि पेड़ों का इंसान के जीवन में कितना महत्त्व है। यही स्थिति जानवरों की है लेकिन इंसान मुनाफे को लेकर इतना अंधा है कि प्रकृति में पेड़ों की भूमिका नजरअंदाज करने को आमादा है।

शोधकर्ताओं का कहना है कि लगातार घटते जंगलों से जलवायु परिवर्तन व ग्लोबल वार्मिंग का खतरा मंडरा रहा है। महासागरों में भी ऑक्सीजन की कमी आँकी जा रही है। जिससे समुद्री जीव भी मर कर किनारों पर देखने को मिल रहे हैं।

जनसंख्या घनत्व पर घोषित हो ऑक्सीजन– हालात यह बनते जा रहे हैं कि सहज रूप से मिल रही ऑक्सीजन अब पर्यावरण से लुप्त होती जा रही है। अगर पर्यावरणविदों की माने तो जनसंख्या घनत्व के मुताबिक अब आबादी के पास वृक्ष लगाकर ऑक्सीजन घोषित किए जाने चाहिए। तभी भविष्य के लिए मानव जाति अक्षुण्य रह सकेगी।

कोरोना महामारी की दूसरी लहर में जब ऑक्सीजन की कमी से सांसों की डोर टूटने लगी तो लोगों को प्रकृति के जर्रे-जर्रे में मौजूद प्राणवायु की कीमत समझ आई है। हमने पहली लहर में घरों में औषधीय पौधे लगाने की समझ बढ़ी थी। वहीं इस लहर में हम नर्सरी में ऑक्सीजन देने वाले पौधे ढूँढ़ रहे हैं।

पर्यावरण विशेषज्ञों के मुताबिक घर की छत व बालकनी में कुछ खास प्रकार के पौधे लगाकर हम घर की हवा को तरोताजा व ऑक्सीजनयुक्त बनाए रख सकते हैं। नासा के वैज्ञानिकों ने भी हाल में जारी एक रिपोर्ट में घरों में पौधे की जरूरत को बताया है। विज्ञान कहता है कि एक पत्ती एक घंटे में 5 एमएल ऑक्सीजन पैदा करती है। इसलिए अधिक पत्तियों वाले पौधे जैसे बरगद, पीपल, गुलमोहर, चंदन, आर्किड, ऐलोवीरा, नीम आदि के पौधे लगाकर घर व परिवेश को ऑक्सीजोन में तब्दील कर सकते हैं।

ऑक्सीजन प्लांट– अभी हाल ही में देखने को मिला है कि ऑक्सीजन की कमी को दूर करने के लिए हर बीस बैड के अस्पताल में ऑक्सीजन प्लांट लगाने के लिए विधायक कोष के साथ विकास की बड़ी रकम का उपयोग लिया जा रहा हैं लेकिन यह जान लेना जरूरी है कि ऑक्सीजन सिलेंडर भरने के लिए भी कायोजनिक डिस्टिलेशन प्रोसेस के जरिए वातावरण की हवा को फिल्टर किया जाता है। उसमें से धूल-मिट्टी के कणों को अलग किया जाता है। यानी कृत्रिम रूप से ऑक्सीजन बनाने के लिए भी स्वच्छ हवा की जरूरत है।

बिना ऑक्सीजन के मानव जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। कोरोना संक्रमण व आने वाली महामारियों की आहट हमें बता रही है कि हमें ऑक्सीजन नहीं

www.rajsevak.com

ऑक्सीजोन की तैयारी कर लेनी चाहिए। हमारी बॉडी में ऑक्सीजन का सही लेवल बना रहना चाहिए। मानव के रक्त में 95 से 100 फीसदी के बीच का ऑक्सीजन लेवल नोर्मल माना जाता है। शरीर में ऑक्सीजन की कमी से इम्यूनिटी सिस्टम प्रभावित होता है। जो संक्रामक बीमारियों के खतरे को बढ़ाता है।

कैसे बढ़े शरीर में ऑक्सीजन लेवल– यदि स्वास्थ्य विशेषज्ञों की राय माने तो एंटी ऑक्सीडेंट्स शरीर को ऑक्सीजन के लिए प्रेरित करते हैं। इसके लिए हमारे भोजन में ब्लूबैरिज, कैनबैरिज, लाल राजमा, स्टाबैरिज, प्लम, ब्लैकबैरिज आदि का ज्यूस या स्मूटी का होना जरूरी है। रक्त में ऑक्सीजन लेवल बढ़ाने के लिए आयरन से भरपूर चीजें भी आहार में लेनी चाहिए। इसके साथ ही नियमित 25 से 30 मिनट तक क्षमता के अनुसार व्यायाम यथा बटरफ्लाई, अनुलोम-विलोम, पद्मासन, कमलासन, सूर्य नमस्कार, मयूरासन आदि करने चाहिए। जिससे श्वसन क्षमता बढ़े और फेफड़े ज्यादा मात्रा में ऑक्सीजन लेने की आदत बना सके। शरीर विज्ञानी कहते हैं कि बाड़ी में ऑक्सीजन लेवल बढ़ाने के लिए लिक्विड की मात्रा बढ़ानी चाहिए। खासतौर पर पानी का, जिसका रासायनिक सूत्र होता है। जिसमें हाइड्रोजन के दो और ऑक्सीजन का एक परमाणु होता है। इसलिए हमें लिक्विड का सेवन करने पर शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ेगी।

लेकिन भारत जैसे विकासशील व जनसंख्या बहुल देश की अधिकांश जनसंख्या को हेल्दी फूड छोड़कर दो वक्त की रोटी भी संघर्ष के साथ मिलती है। ऐसे में व्यक्ति की दिनचर्या ऑक्सीजन में बनी रहनी चाहिए। हमारा जोर ऑक्सीजन फूड नहीं ऑक्सीजोन निर्माण पर होना चाहिए।

यदि पर्यावरण में वृक्षों की कमी होगी। यूं ही कचरा जलाकर धुंआ किया जाता रहा और आकाश में धुएं के गुबार उठते रहे तो यह प्लांट भी ऑक्सीजन नहीं बना पाएंगे। हमें ऑक्सीजन के फेर को समझा कर मानव जीवन को बचाने में आहुति देनी होगी।

प्राध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोठीनातमाम,
टोंक (राज.)
मो: 9983724227

ओलम्पिक खेल और भारत का प्रदर्शन

❒ पूनमराम सारण

'खेल मस्तिष्क तथा शरीर के लिए ऐसा श्रम है जो कि हमें प्रसन्नता के उस मुकाम तक पहुँचाता है, जिसका कोई अन्त नहीं है'

प्राचीन ओलम्पिक खेल– ओलम्पिक खेलों का जन्मदाता देश यूनान हैं और इस संदर्भ में पूरा विश्व यूनान का ऋणी है। प्राचीन ओलम्पिक खेलों की शुरूआत 776 ई. पू. यूनान के ओलम्पिया नगर (ओलम्पिया घाटी) से हुई थी। इन खेलों में केवल यूनानी पुरुष ही भाग ले सकते थे।

प्राचीन ओलम्पिक लगभग एक हजार वर्षों तक संचालित हुए, जिसमें 293 आयोजन हुए। 394 ई. में रोमन सम्राट थियोडोसिस प्रथम ने यूनान पर आक्रमण कर इन खेलों पर रोक लगा दी। उसके बाद थियोडोसिस द्वितीय ने यूनान के ओलम्पिक स्टेडियम को तुड़वाकर नष्ट कर दिया और ये खेल हमेशा के लिए बंद हो गए। प्राचीन ओलम्पिक उत्सव यूनानियों के बीच शांति, सहयोग और भाईचारे को बनाए रखने का उत्सव होता था। जब खेलों का आयोजन होता था, तब राज्य के सभी विवाद और युद्ध रोक दिए जाते थे। प्राचीन ओलम्पिक खेल यूनान में जियस देवता के सम्मान में आयोजित किए जाते थे। प्राचीन ओलम्पिक खेलों में पैदल दौड़, सद्भावना दौड़, घुड़दौड़, पेन्टाथलॉन (स्प्रिंट दौड़, लम्बी कूद, तश्तरी फैंक, भाला फैंक, कुश्ती), मुक्केबाजी आदि खेल क्रियाओं को शामिल किया जाता था।

आधुनिक ओलम्पिक खेल– आधुनिक ओलम्पिक खेलों को शुरू करने का श्रेय फ्रांस के भाषाविद् एवं समाजशास्त्री बैरन पियरे डी की कुबर्टिन को जाता है। ओलम्पिक खेलों की गवर्निंग बॉडी-इंटरनेशनल ओलम्पिक कमेटी (IOC) का गठन 23 जून, 1894 को कुबर्टिन की अध्यक्षता में किया गया। आईओसी (IOC) का वर्तमान मुख्यालय लुसाने (स्विट्जरलैण्ड) में है।

'ओलम्पिक खेलों में सबसे महत्त्वपूर्ण बात जीत हासिल करना नहीं है, अपितु भाग लेना है। जीवन में सबसे बड़ी बात विजय नहीं है, संघर्ष है तथा अति आवश्यक बात विजय की कामना ही नहीं बल्कि अच्छी तरह द्वंद्व करना है'

आधुनिक ओलम्पिक खेलों का प्रथम आयोजन अप्रैल 1896 एथेन्स (यूनान) में किया गया। पहले ओलम्पिक खेलों में केवल 13 देशों ने भाग लिया था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, ओलम्पिक खेलों में भाग लेने वाले देशों की संख्या बढ़ती गई। वर्तमान में दुनिया के सभी देश इन खेलों में भाग लेते हैं। टोक्यो ओलम्पिक खेल 2020 में 205 देशों और 11090 खिलाड़ियों ने 33 खेलों में भाग लिया। आधुनिक ओलम्पिक खेल भी हर चार वर्ष बाद आयोजित किए जाते हैं। 'ओलम्पिक खेलों का आयोजन नगर के नाम से किया जाता है न कि देश के नाम से'

दो विश्व युद्धों के कारण तीन ओलम्पिक खेलों (1914, 1940, 1944) का आयोजन नहीं हो सका। इसी प्रकार टोक्यो ओलम्पिक 2020 कोरोना वायरस की भेंट चढ़ते-चढ़ते बच गया। लेकिन टोक्यो आयोजन कमेटी की सूझबूझ की बदौलत खेलों के महाकुंभ का आयोजन सफल हो पाया। 'प्राचीन ओलम्पिक खेलों की पवित्रता को बनाए रखने के लिए जहाँ ओलम्पिक के दौरान युद्ध रोक दिए जाते थे, वहीं ठीक इसके विपरीत आधुनिक खेलों को विश्व युद्धों के कारण रद्द करना पड़ा।'

आधुनिक ओलम्पिक खेलों का उद्देश्यः-

1. विश्व शांति एवं सहयोग की भावना का विकास करना।
2. जाति, धर्म और नस्ल के आधार पर भेदभाव खत्म करना।
3. खिलाड़ियों में स्वच्छ आदतों एवं स्वस्थ खेल भावना का विकास करना।
4. विश्व के सभी देशों का शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं की ओर ध्यान आकर्षित कराना।
5. खिलाड़ियों के उत्कृष्ट व्यक्तित्व, देशभक्ति तथा नागरिकता के गुणों का विकास करना।

'ओलम्पिक खेल विश्व का सबसे बड़ा सामाजिक उत्सव होता है, जिसमें ओलम्पिक झण्डे (फाइव रिंग्स विद सिल्की व्हाइट बेस) के नीचे विश्व की विभिन्न संस्कृतियों, रीति-रिवाजों, भाषाओं, खान-पान, परिधान तथा विचारों का आदान-प्रदान होता है।'

www.rajsevak.com

ओलम्पिक खेलों में भारत का प्रदर्शन						
क्र.सं.	आयोजन स्थल व वर्ष	खिलाड़ी का नाम	खेल का नाम	ईवेंट का नाम	उपलब्धि	कुल पदक
1	पेरिस 1900	नॉर्मन पिचार्ड	एथलेटिक्स	200 मी., 200 मी. हर्डल	रजत पदक रजत पदक	02
2	एमस्टर्डम 1928	भारतीय पुरुष टीम	हॉकी	फील्ड हॉकी	स्वर्ण पदक	01
3	लॉस एंजेल्स 1932	भारतीय पुरुष टीम	हॉकी	फील्ड हॉकी	स्वर्ण पदक	01
4	बर्लिन 1936	भारतीय पुरुष टीम	हॉकी	फील्ड हॉकी	स्वर्ण पदक	01
5	लंदन 1948	भारतीय पुरुष टीम	हॉकी	फील्ड हॉकी	स्वर्ण पदक	01
6	हेलंसकी 1952	1. भारतीय पुरुष टीम 2. के.डी. जाधव	हॉकी कुश्ती	फील्ड हॉकी 27 किग्रा. फ्रीस्टाइल	स्वर्ण पदक कांस्य पदक	02
7	मेलबॉर्न 1956	भारतीय पुरुष टीम	हॉकी	फील्ड हॉकी	स्वर्ण पदक	01
8	रोम 1960	भारतीय पुरुष टीम	हॉकी	फील्ड हॉकी	रजत पदक	01
9	टोक्यो 1964	भारतीय पुरुष टीम	हॉकी	फील्ड हॉकी	स्वर्ण पदक	01
10	मैक्सिको 1968	भारतीय पुरुष टीम	हॉकी	फील्ड हॉकी	कांस्य पदक	01
11	म्यूनिख 1972	भारतीय पुरुष टीम	हॉकी	फील्ड हॉकी	कांस्य पदक	01
12	मॉस्को 1980	भारतीय पुरुष टीम	हॉकी	फील्ड हॉकी	स्वर्ण पदक	01
13	एटलांटा 1996	लियंडर पेस	टेनिस	मेन्स सिंगल्स	कांस्य पदक	01
14	सिडनी 2000	कर्णम मल्लेश्वरी	भारोत्तोलन	69 किग्रा.	कांस्य पदक	01
15	एथेंस 2004	राज्यवर्धन सिंह राठौड़	शूटिंग	डबल ट्रेप	रजत पदक	01
16	बीजिंग 2008	1. अभिनव बिंद्रा	शूटिंग	10 मी. एयर राइफल	स्वर्ण पदक	03
		2. सुशील कुमार 3. विजेन्द्र कुमार	कुश्ती बॉक्सिंग	66 किग्रा. फ्रीस्टाइल 75 किग्रा.	कांस्य पदक कांस्य पदक	
17	लंदन 2012	1. सुशील कुमार 2. विजय कुमार 3. गगन सारंग 4. सायना नेहवाल 5. एम.सी. मेरीकॉम 6. योगेश्वर दत्त	कुश्ती शूटिंग शूटिंग बैडमिंटन बॉक्सिंग कुश्ती	66 किग्रा. फ्रीस्टाइल 25 मी. रेपिड फायर पिस्टल 10 मी. एयर राइफल वुमेन्स सिंगल्स वुमेन्स फ्लाइवेट 60 किग्रा. फ्रीस्टाइल	रजत पदक रजत पदक कांस्य पदक कांस्य पदक कांस्य पदक कांस्य पदक	06 पदक
18	रियो डी जेनेरियो 2016	1. पी.वी. सिन्धु 2. साक्षी मलिक	बैडमिंटन कुश्ती	वुमेन्स सिंगल्स 58 किग्रा. फ्री स्टाइल	रजत पदक कांस्य पदक	02 पदक
19	टोक्यो 2020	1. नीरज चौपड़ा 2. मीराबाई चानू 3. रवि कुमार दहिया 4. बजरंग पूनिया 5. लवनीना 6. पी.वी. सिन्धु 7. पुरुष हॉकी टीम	एथलेटिक्स भारोत्तोलन कुश्ती कुश्ती बॉक्सिंग बैडमिंटन हॉकी	जेवलिन थ्रो (87.58 मी.) 49 किग्रा. 57 किग्रा. फ्री स्टाइल 65 किग्रा. फ्री स्टाइल 64-69 किग्रा. वुमेन्स सिंगल्स फील्ड हॉकी	स्वर्ण पदक रजत पदक रजत पदक कांस्य पदक कांस्य पदक कांस्य पदक कांस्य पदक	07 पदक

स्वर्ण पदक-10, रजत पदक-9, कांस्य पदक-16, कुल पदक-35 पदक।

वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दुलचासर,
श्री डूँगरगढ़, बीकानेर (राज.)
मो: 9660881884

www.rajsevak.com

एडमिशन

❐ अरनी रॉबर्ट्स

नवीन हायर सैकेण्डरी बाल विद्यालय में जहाँ नर्सरी से लेकर 12वीं कक्षा तक की शिक्षा दी जाती थी। आज गहमा-गहमी थी। कारण था 6वीं कक्षा में प्रवेश कार्य चल रहा था। पेरेन्ट्स अपने पुत्र-पुत्रियों के साथ एडमिशन कराने के लिए आए हुए थे। राधावल्लभ भी अपनी बिटिया मनोरमा के दाखिले के लिए आया हुआ था। वह कोई बड़ी नौकरी नहीं करता था। उसके पास थ्री व्हीलर ऑटो रिक्शा था और यही उसके परिवार के भरण पोषण का जरिया था। राधावल्लभ का सपना था कि उसकी होनहार बिटिया खूब पढ़े-लिखे और बड़ी अफसर बने।

मनोरमा थी भी बड़ी होशियार। नगरपालिका के प्राइमरी स्कूल से उसने सर्वाधिक अंक प्राप्त करके पाँचवी कक्षा उत्तीर्ण की थी। मनोरमा की स्वयं की भी यही इच्छा थी कि वह किसी बड़े विद्यालय में पढ़े। स्कूल में राधावल्लभ अपनी बिटिया के साथ सही समय पर पहुँच गया। स्कूल के बाहर कार स्कूटर तथा ऑटोरिक्शा की लाइनें लगी हुई थी। यह सब देखकर एकबारगी तो राधावल्लभ सोच में पड़ गए कि दाखिले के लिए कोशिश करे या न करें पर उसे उसके मित्र नरेश की बात याद आ गई। उसने कहा था, 'अब तो किसी भी स्कूल में आम हैसियत वाले अभिभावक भी अपने बच्चे का एडमिशन करवा सकते हैं। यह बच्चों का अधिकार है और इससे कोई उन्हें वंचित नहीं कर सकता।'

राधावल्लभ ने दाखिला कार्य करने वाले अध्यापकों से प्रवेश फार्म लिया। अब समस्या थी कि इसे भरवाए किससे? तभी उसे एक महिला टीचर दिखाई दी जो प्रायः उसके ऑटो से यहाँ स्कूल जाती थीं। वह उनके पास गया। 'नमस्ते मैडम जी!' 'अरे नमस्ते ऑटो वाले भइय्या....यहाँ कैसे? कोई सवारी लाए हो क्या?' 'नहीं मैडम...बिटिया के दाखिले के लिए आया हूँ यह फार्म आप भर दीजिए। मैडम अच्छी थीं, बोली-'आओ मेरे साथ उस खाली क्लॉस रूम में बैठकर भरते हैं'

मैडम ने पेन खोलकर फार्म भरने से पूर्व पूछा 'यहाँ कुछ फीस अधिक है, भर पाओगे?' 'जी भरूंगा...एक ही तो बच्ची है।' अच्छा 5 वीं कक्षा के उत्तीर्ण होने वाली अंक तालिका लाए हो?' 'जी लाया हूँ इसकी जेरोक्स कॉपी भी करवा ली है और टी.सी. भी है।' मैडम ने फॉर्म भर दिया और कहा, 'ऑटो वाले भइय्या एडमिशन की बड़ी मारा-मारी है। प्रिंसिपल और उनके साथ बैठने वाले टीचर बिटिया से सवाल पूछेंगे।' जी मेरी बच्ची होशियार हैं...अच्छे से जवाब देगी। मैडम ने राधावल्लभ की बेटी का फॉर्म प्रिंसिपल रूम में पहुँचा दिया। एडमिशन कमेटी जो प्रिंसिपल के कमरे में बैठी थी एक-एक करके अभिभावकों को बुलवा रही थी। वहाँ बैठे लोग उपहास भरी दृष्टि से ऑटो ड्राइवर की वर्दी में बैठे राधावल्लभ और मनोरमा को देख रहे थे। जैसे कह रहे हो, अरे तुम गरीबी रेखा से नीचे वाले लोग यहाँ कहाँ दाखिला दिलाने आ पहुँचे? मनोरमा भी कुछ घबरा सी रही थी। राधावल्लभ ने बिटिया को हौंसला बंधाया-'तेरा दाखिला जरूर होगा। मनो...तू बहुत होशियार है...अच्छे से उत्तर देना।'

आखिर एक घंटे बाद राधावल्लभ और मनोरमा को अन्दर बुलाया गया। उनके अन्दर आते ही कमेटी के सदस्यों ने एक दूसरे की ओर देखा और व्यंग्य से मुस्करा दिए। एक कमेटी सदस्य टीचर ने पूछा, 'बालिका तुम यहाँ जिस स्कूल में पढ़ना चाहती हो उनका नाम क्या है?' तपाक से मनोरमा बोली, 'जी सर नवीन हायर सैकेण्डरी स्कूल।' दूसरे सदस्य ने पूछा-'हमारे देश के पहले राष्ट्रपति का नाम बताओ जो वैज्ञानिक थे। 'जी श्री अब्दुल कलाम।' आश्चर्य से कमेटी के सदस्यों ने एक-दूसरे की ओर देखा। प्रिंसिपल सर ने पूछा, 'तुम अपना और अपने मदर-फादर का नाम अंग्रेजी में लिख सकती हो? इस कागज पर लिखकर बताओ? मनोरमा ने सुन्दर हैण्डराइटिंग में नाम लिख दिए। प्रिंसिपल साहब और कमेटी सदस्य प्रभावित हो गए लेकिन अचानक स्कूल के सचिव ने जो कमेटी का सदस्य था राधावल्लभ से पूछा क्या तुम बिटिया की फीस जुटा सकोगे? प्रति माह चार हजार रुपये?'

दूसरों के साथ वह व्यवहार ना करें जिसे आप पसन्द नहीं करते।

राधावल्लभ ने रुमाल से पसीना पोंछते हुए कहा 'जी पूरी कोशिश करूंगा' सचिव ने कहा 'अच्छा तुम जा सकते हो। अगर तुम्हारी बेटी का एडमिशन हो गया तो कल आकर नोटिस बोर्ड पर नाम देख लेना।' राधावल्लभ आश्वस्त होकर चेम्बर से बाहर आ गया। कमेटी के सदस्यों ने आपस में विचार विमर्श किया। 'इसका स्टेट्स स्कूल के स्तर के अनुसार लो है...माना कि लड़की इंटेलीजेंट है पर हमें अपने स्कूल का स्टेंडर्ड भी तो देखना है।' अन्य सदस्यों ने हाँ में हाँ मिलाई।

यद्यपि प्रिंसिपल सर चाहते थे कि ऐसे बच्चों को एडमिशन दिया जाए पर वे अकेले अपना निर्णय कमेटी पर नहीं थोप सकते थे। फिर भी उन्होंने कहा 'शिक्षा के अधिकार के तहत हमें पिछड़े और ....के बच्चों को भी लेना पड़ता है।' सचिव ने कहा 'प्रिंसिपल साहब यह सरकारी आदेश है इसकी कितनी पालना हो रही है कौन देखने आ रहा है। ऐसे बच्चे सरकारी और पालिका द्वारा संचालित स्कूलों में ही ठीक रहते हैं।' सचिव की बात सुनकर प्रिंसिपल नितिन मेहता खामोश हो गए।

अगले दिन राधावल्लभ उत्सुकता पूर्वक ठीक सुबह दस बजे स्कूल पहुँचा। साथ में उसका मित्र नरेश भी था। नरेश हायर सैकेण्डरी पास था परन्तु पैसों के अभाव में आगे नहीं पढ़ पाया था और ऑटोरिक्शा चलाने लगा था। नरेश ने नोटिस बोर्ड पर एडमिट किए गए बच्चों की सूची देखी, पर उसमें मनोरमा का नाम नहीं था। कुछ दूर खड़े पियून से उन्होंने पूछा तो उसने कहा-'भूल जाओ यहाँ एडमिशन दिलाना यहाँ तो बड़े सेठ, साहूकारों, मिलिट्री व पुलिस अफसरों के बच्चे, सरकारी अधिकारियों के बच्चों का एडमिशन होता है। सरकारी नियमों की कौन परवाह करता है।'

www.rajsevak.com

पियून की बात सुनकर राधावल्लभ का मुँह उतर गया। नरेश ने उसको हौंसला दिलाते हुए कहा 'मित्र हम हार नहीं मानेंगे। आओ हम जिला कलेक्टर के पास चलते हैं, वे हमारी समस्या का समाधान करेंगे। 'राधावल्लभ जाने से हिचकिचा रहा था पर नरेश ने कहा 'डरो मत हमें अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना ही चाहिए।

कुछ ही देर में वे जिला कलेक्टर के चेम्बर के सामने खड़े थे। पी.ए. साहब ने उनकी बात सुनी और कलेक्टर साहब की अनुमति से उन्हें अन्दर बुलाया। राधावल्लभ ने कहा 'श्रीमान मैं गरीब तबके का व्यक्ति हूँ। मेरी बच्ची पढ़ने में बहुत होशियार है। कल मैं उसका एडमिशन करवाने नवीन हायर सैकेण्डरी स्कूल गया। उन्होंने बच्ची का इंटरव्यू लिया। बच्ची ने सभी सवालों के उत्तर सही दिए...लेकिन इसका दाखिला नहीं हुआ।'

जिला कलेक्टर ने बहुत ध्यानपूर्वक राधावल्लभ की बात सुनी। उन्हें अपने बचपन के दिन याद आ गए जब वे एक बहुत ही गरीब परिवार के अपने माता-पिता की चार संतानों में से सबसे छोटे थे। कठिन परिस्थितियों में वे पढ़े-लिखे और अपनी योग्यता के बल पर कलक्टर बने। उन्होंने तुरंत नवीन स्कूल के प्रशासनिक अधिकारी को फोन लगाया और हिदायत दी कि शिक्षा के अधिकार के तहत इस योग्य बच्ची को एडमिशन दें और उनके कार्यालय में उपस्थित होकर स्पष्टीकरण दें कि सरकार के आदेशों और नीति के तहत पिछड़े वर्ग के बच्चों को एडमिशन क्यों नहीं दिया जा रहा है।

स्कूल प्रशासन को जैसे ही जिला कलेक्टर का फोन आया तो वे घबरा गए। तुरन्त ही राधावल्लभ को फोन पर सूचित किया गया कि उसकी पुत्री मनोरमा का एडमिशन स्कूल की छठी कक्षा में हो गया है। यह सूचना प्राप्त होने की राधावल्लभ के परिवार में खुशी छा गई। एडमिशन न होने से मनोरमा के कुम्हलाया चेहरा पुनः खुशी से नहा उठा। आम आदमी को उसका अधिकार मिलना ही चाहिए।

न्यू पोस्ट ऑफिस रोड़, भीमगंजमण्डी, कोटा जंक्शन (राज.)-324002
मो: 9414939850

सबक

❒ विपिन कुमार भट्ट

शीत ऋतु में शीतल बयार के साथ में नानाजी के गाँव बोरी रोज प्रातः घूमने के लिए जाया करती थी। एक समय घूमते-घूमते नानाजी ने 2 पौधे लिए और उन पौधों को घर पर लाकर के एक को घर के बाहर और दूसरे को गमले में लगा दिया। हमने नानाजी से बात की इन दोनों पौधों में सुरक्षित कौन रहेगा।

मैंने कहा कि गमले वाला पौधा सुरक्षित रहेगा। घर के अंदर वाला पौधा ज्यादा सफल होगा, क्योंकि वह हर एक खतरे से सुरक्षित है, जबकि बाहर वाले पौधे को तेज आँधी, पानी और जानवरों से भी खतरा है। नाना जी बोले-चलो देखते हैं, आगे क्या होता है और वे उठ कर अखबार उठाकर पढ़ने लगे कुछ दिन बाद छुट्टियाँ खत्म हो गई। मैं अपने मम्मी-पापा के साथ वापस शहर चली आई।

इस बीच नानाजी दोनों पौधों पर बराबर ध्यान देते रहे; समय बीतता गया। समय की अपनी गति है, समय की मर्यादा है और समय कभी रुकता नहीं, कभी झुकता नही। तीन-चार साल बाद एक बार फिर से हम अपने पैरेंटस के साथ नाना के गाँव घूमने आए। अपने नानाजी को देखते ही मैंने कहा कि आपसे मैंने अपने बारे में सक्सेसफुल होने के कुछ टिप्स मांगे थे पर आपने तो कुछ बताया ही नहीं। इस बार आपको जरूर कुछ बताना होगा।

नानाजी मुस्कुराए। बड़ी बहन ध्रुवी और मुझे वहाँ ले गए जहाँ उन्होंने गमले में पौधा लगाया था। गमले में पौधा एक खूबसूरत पेड़ में बदल चुका था। मैंने कहा, देखा नानाजी मैंने कहा था ना कि यह वाला पौधा ज्यादा सफल होगा। अरे पहले बाहर वाले पौधे का हाल भी तो देख लो और यह कहते हुए नानाजी हमको बाहर ले गए। बाहर एक विशाल वृक्ष गगनचुंबी मस्तानी हाल में खड़ा था। उसकी शाखाएँ दूर-दूर तक फैली थी। उसके छाँव में खड़े राहगीर आराम से बातें कर रहे थे।

मनुष्य का स्वास्थ्य, चरित्र, संस्कार, शिक्षा आदि विशेषताएँ मिलकर समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं, और उसी के आधार पर उसकी प्रतिभा निखरती है।

अब बताओ कौनसा पौधा ज्यादा सफल हुआ? नानाजी ने पूछा- मैं हक्की-बक्की रह गई। ब..ब..बाहर वाला लेकिन बाहर तो उसे कितने खतरों का सामना करना पड़ा होगा? नानाजी मुस्कुराए और बोले हाँ लेकिन चैलेंज फेस करने पड़ते हैं। बाहर वाले पेड़ के पास आजादी थी कि वह अपनी जड़ें जितनी चाहे उतनी फैला ले। अपनी शाखाओं से आसमान को छू ले। छोटी (हिलोर) इस बात को याद रखो। तुम जो भी करोगी उसमें सफल होगी। अगर तुम भी जीवनभर 'सेफ ऑप्शन चूज़' कर लोगे तो तुम कभी भी उतना ग्रो नहीं कर पाओगे जितनी तुम्हारी क्षमता है लेकिन अगर तुम इन तमाम खतरों के बावजूद भी इस दुनिया का सामना करने के लिए तैयार रहते हो तो तुम्हारे लिए कोई भी लक्ष्य हासिल करना असंभव नहीं है।

हिलोर ने लंबी सांस ली और उस विशाल वृक्ष की तरफ देखने लगी। वह नाना जी की बात समझ चुकी थी आज उसे सफलता का एक बहुत बड़ा सबक मिल चुका था। तो आइए, मित्रों! भगवान ने हमें एक मीनिंगफुल लाइफ जीने के लिए बनाया है। 'बट अनफॉर्चूनेटली' अधिकतर लोग डर-डर के जीते हैं।

कभी भी अपने फूल पोटेंशियलिटी को रिलाइज नहीं कर पाते। इस बेकार के डर को पीछे छोड़िए। जिंदगी जीने का असली मजा तभी है, जब आप वह सब कुछ कर सकते हैं जो सब कुछ आप कर सकते है। वरना दो वक्त की रोटी का जुगाड़ तो कोई भी कर सकता है।

इसलिए हर समय Play it Safe के चक्कर में ना पड़..जोखिम उठाइए 'Risk' लीजिए और विशाल वृक्ष की तरह अपनी लाइफ को लार्ज बनाइए।

अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय गुलाबपुरा, ब्लॉक गढ़ी, बाँसवाड़ा (राज.)-327024
मो: 8769777676

www.rajsevak.com

सपनों की उड़ान

❒ रामगोपाल राही

शिल्पा बारहवीं में राज्य स्तर पर मेरिट में प्रथम आयी। परिणाम देख शिल्पा की खुशियों का ठिकाना नहीं था। बेटी की उपलब्धि पर माता-पिता भी बहुत खुश थे। कस्बे में दो-चार दिन शिल्पा की सफलता की चर्चा होती रही। लोग कहते ऐसी प्रतिभाशाली बेटी को आगे पढ़ाना चाहिए। मगर शिल्पा के रूढ़िवादी माता-पिता की सोच अलग ही थी। इन्हीं दिनों शिल्पा के पिता देवकिशन ने अपनी पत्नी राधा से कहा, 'हमारी बेटी शिल्पा सयानी हो गई, अब हमें उसकी शादी कर देनी चाहिए। सुन पास बैठी पत्नी बोली- 'हाँ मैं भी आपसे यही कहने वाली थी। शिल्पा माता-पिता की इच्छा जान चुकी थी पर उसके मन में जो था-उसे वह अपने माता-पिता से कहना चाहती थी, पर कह नहीं पा रही थी।

भावना और इच्छाओं का चोली दामन का साथ होता है। इच्छाओं का दमन मन में मलाल पैदा करता है, जिससे मन घुटा-घुटा रहता है। शिल्पा इसी स्थिति में गुजर रही थी। चाहती थी घुटी-घुटी रहने से अच्छा हिम्मत कर पापा से सब कुछ कह दूँ। अगले दिन तीनों चाय पी रहे थे। शिल्पा के पिता ने बेटी शिल्पा की बड़ाई करते हुए शिल्पा से पूछा बेटी अब आगे क्या करना चाहती हो? पिता की बात सुन शिल्पा को अपनी बात कहने का अवसर मिल गया। शिल्पा तुरंत बोली-पापा मैं आगे पढ़ना चाहती हूँ। फिर कहा पापा मना मत करना मैं पढ़-लिखकर मजिस्ट्रेट (न्यायाधीश) बनना चाहती हूँ।

शिल्पा की बात सुन पिता देवकिशन आश्चर्य से उसे देखने लगा और देखता रहा। फिर कहा तू मजिस्ट्रेट बनेगी, गरीब की लड़की मजिस्ट्रेट बनेगी। वो फिर मुस्कुराते हुए बोला भांग तो नहीं पी ली है पगली? रूढ़िवादी पिता की बात सुन शिल्पा को बहुत ठेस लगी। उसकी आशाओं पर घड़ों पानी पड़ा था। उधर रूढ़िवादी पिता देवकिशन ने बात कह तो दी, पर अंदर ही अंदर वह भी बेटी की बात पर विचार करता रहा। सोचते-सोचते उसके ध्यान में आया जिले में महिला कलेक्टर, महिला पुलिस एसपी, कस्बे में महिला उपखंड अधिकारी, महिला प्रधान, महिला चैयरमेन, महिला थानेदार, महिला तहसीलदार, यह सब सोचते-सोचते वह रुका। फिर खुद ही बुदबुदाने लगा। सभी अफसर महिलाएँ हैं, ऐसे में मेरी बेटी शिल्पा पढ़ लिख कर मजिस्ट्रेट बने न्यायाधीश बने तो क्या बुरा है? उसके मन यह विचार घर कर गया, सोचने लगा, मुझे शिल्पा की बात पर विचार करना चाहिए।

सोचते-सोचते अंत में उसने निश्चय किया मुझे शिल्पा की इच्छानुसार उसे आगे पढ़ाना चाहिए। पिता पिता होता है वह संतान के हित में ही सोचता है। उसने सोचा जवान बेटी शिल्पा की बात न मानूँ, ठीक नहीं रहेगा। उधर उदास शिल्पा, पड़ी-पड़ी चिड़चिड़ी हो गई थी। अगले दिन तीनों चाय पी रहे थे, पिता देवकिशन ने शिल्पा के सिर पर हाथ रखा और मुस्कुराते हुए कहा-'बेटी पढ़ने की तैयारी करो, तुम जितना पढ़ोगी मैं तुम्हें पढ़ाऊँगा।

पिता की बात सुन शिल्पा के होंठों पर मुस्कान चली आई, वह खुश थी। उसके चेहरे पर प्रसन्नता के भाव दौड़ आए। आत्मविभोर शिल्पा पिता के गले से लिपट गई, बोली पापा आप बहुत अच्छे हैं। कुछ देर बाद शिल्पा ने माँ को बांहों में भर लिया। पिता देवकिशन ने कहा बेटी मजिस्ट्रेट की पढ़ाई के लिए कितना खर्चा आएगा। कितने साल पढ़ना पड़ेगा? इस तरह देवकिशन बेटी से मजिस्ट्रेट की पढ़ाई के बारे में सहजता से जानकारी लेता रहा। बेटे की बातें ध्यान से सुन रहा देवकिशन-सब कुछ समझ गया। सोचा बेटी का का सपना बहुत ऊँचा है।

अगले दो-चार दिनों बाद प्रसन्नता से चहकी-चहकी शिल्पा ला एंट्रेस परीक्षा की तैयारी में जुट गई। इधर देवकिशन खर्चे के बारे में जान ही चुका था। वह मन ही मन अनुमान लगाता रहा, सोचता लाखों की बात है। जब इच्छा शक्ति होती है विकल्प भी सामने आ जाते हैं। देवकिशन के ध्यान में आया, बस स्टैण्ड से कुछ कदम दूर उसकी पच्चीस बीघा की जमीन है। पथरीली होने से वहाँ खेती भी नहीं होती, लोग अतिक्रमण पर उतारू हैं। अगले ही दिन देवकिशन ने अपनी जमीन में प्लॉट काट दिए। कुछ ही दिनों में सारे प्लॉट बिक गए, जिससे देवकिशन को आज जमीनी भाव से काफी रकम मिल गई। उसने सारी रकम बैंक में जमा करा दी।

अब देवकिशन निश्चिंत था, वह खुद ही खुद से बोला-शिल्पा दस साल तक भी पढ़े कोई कमी नहीं आएगी। उधर तैयारी में शिल्पा ने दिन-रात एक कर दो माह बाद ला एंट्रेस परीक्षा दी। बाद में परिणाम जब आया उसे लॉ एंट्रेस परीक्षा में पहली रैंक मिली। अब उसकी कल्पनाओं को पंख लगे थे। कुछ दिनों बाद जयपुर शहर के प्रसिद्ध ला कॉलेज में शिल्पा को प्रवेश मिल गया। हॉस्टल में शिल्पा को अपनी जैसी प्रतिभाशाली सुनीता का साथ मिला। दोनों का संकल्प एक जैसा था। गाँव में माता-पिता अपने पुश्तैनी धंधे मिट्टी के बर्तन मटकियाँ आदि बना बेचकर गुजारा करते रहे। उधर शिल्पा पढ़ाई में दत्त चित्त हो लगी थी। इसी के चलते एक साल गुजरा, फिर दूसरा साल गुजरा, उत्सुकता में समय निकालते देर नहीं लगती।

अब शिल्पा ला तीसरे वर्ष की पढ़ाई कर रही थी। इस अवधि में बीच-बीच में छुट्टियों में शिल्पा अपने माता-पिता से मिलने चली आती थी। रात दिन एक कर पढ़ाई करने वाले शिल्पा ने हर वर्ष प्रथम श्रेणी में टॉप किया। इससे उसका मनोबल बढ़ता गया। शिल्पा की महत्त्वाकांक्षा न्यायाधीश बनने की थी। एलएलबी के बाद शिल्पा आगे की पढ़ाई करने लगी थी। शिल्पा एल एल एम मास्टर ऑफ लॉ करके आगे पढ़ना चाहती थी। आगे की पढ़ाई के चलते भी शिल्पा बीच-बीच में घर आती; माता-पिता आत्ममुग्ध हो पूछते ही पूछते, बेटी न्यायाधीश कब तब बन जाओगी? सुन आत्मविश्वास से लबालब शिल्पा कहती। पापा मम्मी बहुत जल्दी वह समय आएगा जब सब कुछ ठीक हो जाएगा। उत्सुकता उत्साह सक्रियता में समय जल्दी ही गुजरता है। पाँच साल होने को थे। अब दत्त चित्त पढ़ाई में लगी शिल्पा सहेली सुनीता की पलकों में रातें बीतती थी। उधर माता-पिता भी हर दिन उत्साह उल्लास में रहते थे।

'प्रतिभा ईश्वर की देन है', शिल्पा को

www.rajsevak.com

प्रतिभा वरदान के रूप में मिली थी। गॉड गिफ्ट, साथ ही वह व्यावहारिक जीवन में हाजिर जवाबी थी वाकपटुता, शालीनता, सादगी, नम्रता उसके आकर्षक व्यक्तित्व की पहचान थी।' आज पाँच साल की मेहनत का परिणाम सामने था। शिल्पा ने एल एल एम टॉप किया। परिणाम देख शिल्पा बहुत खुश थी। सपनों की उड़ान पूरी होने को थी।

शिल्पा का मन वकालत करने का नहीं था। उसका ध्येय व संकल्प न्यायाधीश बनना था। माता-पिता को अपना सच कर दिखाना था। अंत भले का भला महत्त्वाकांक्षा के मोती गहरे पानी में ही मिलते हैं। शिल्पा ने राज्य स्तर पर जज मजिस्ट्रेट बनने की परीक्षा में दिन-रात एक कर दिया था। नतीजा प्रतिभाशाली शिल्पा ने यह अंतिम परीक्षा भी टॉप रैंक में उत्तीर्ण की। किसी ने ठीक ही कहा है 'कर्म का स्मारक कर्ता से बड़ा कौन अधिक जान सकता है। कर्मों के ध्वनि शब्दों से ऊँची होती है। फल कर्म वृक्ष का अंतिम भाग।'

जज की परीक्षा के बाद शिल्पा पास के जिले में मानकपुर कस्बे में निचली अदालत में मजिस्ट्रेट बनी। शिल्पा का रोम-रोम पुलकित था। हौंसलों व सपनों की उड़ान पूरी हुई। उसने जो सोचा था कर दिखाया। उधर बेटी के जज बनने पर माता-पिता बहुत खुश थे। उन्हें जैसे सारे जमाने की खुशियाँ मिल गई हो। कस्बे में चर्चा थी होनहार बेटी ने कस्बे का नाम रोशन किया है।

समय गुजरता रहा- सांसारिकता में महिला (स्त्री) प्रकृति का प्रतिनिधित्व करती है। महिला जीवन की सफलता, योग्यता, पद और ओहदा पाने तक ही सीमित नहीं। उधर माता-पिता जो सोच रहे थे शिल्पा ने उनके मुँह के बात छीन ली। बोली पापा-मम्मी 'मैं शादी कर रही हूँ।' शिल्पा की बात सुन माता-पिता खुश हुए। फिर आगे कहा मुझसे बड़े जिला जज हैं मैं उन्हीं से शादी कर रही हूँ। बाद में जिला जज देवेश के साथ शिल्पा जज की शादी हुई। आशीर्वाद देने वालों में समाज के तथा गैर मिलने वाले कई बड़े लोग गाँव के जाने-माने लोग शामिल हुए।

लेखक कवि समीक्षक
वार्ड-6, पो. लाखेरी, बूंदी (राज.)-323615
मो: 8949682800

संस्मरण

❒ कमल कुमार जाँगिड़

एक आदर्श विद्यालय की कल्पना करते ही सहजता से जिस विद्यालय का नाम आता है, उसी विद्यालय के बारे में लिखने जा रहा हूँ। जहाँ न केवल राजस्थान बल्कि भारतवर्ष के कई राज्यों से विद्यार्थी विद्या अध्ययन के लिए आते थे। बात उस समय की है, जब मैं नवीं कक्षा का विद्यार्थी था। एक छात्रावासीय अर्द्ध शासकीय विद्यालय साँईनाथ विद्या मंदिर बड़ायली जिला नागौर। ख्याति प्राप्त विद्यालय। संस्था के संचालक प्रातः स्मरणीय आदरणीय गुरुजी गणेश चन्द्र जी सक्सेना (भाई साहब) एक शिक्षाशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, विचारक चिंतक, कुशल प्रशासक, नीति निर्धारक और अनुशासन प्रिय। छात्रावास व विद्यालय की प्रातः जागरण से शयन मौन तक सजग और सक्रिय गतिविधियाँ। संस्था के संपूरक पर्याय। उनके कृत्तित्व व व्यक्तित्व में एक गतिशील संस्था। व्यवस्थाओं के मामलों में त्वरित निर्णय। सभी चीजें व्यवस्थित। 'वॉच वर्ड' प्रत्येक विद्यार्थी के लिए प्रतिदिन स्थानीय संस्था के नाम से 'करेंसी' नोट। चूंकि विद्यार्थी को नकद मुद्रा रखने का अधिकार नहीं था। पूर्ण परिवर्तन शील मुद्रा का चलन केवल विद्यालय परिसर हेतु। छात्र संसद प्रणाली। विविध मंडल एवं उनके प्रमुख। खेल मैदान, परिसर से लेकर आवासीय 'कुटीरों' के नाम से महापुरुषों, विचारकों, संतों व लेखकों के नाम पर। पाँच समूहों में विभक्त आवासीय व्यवस्था। जिनका नामकरण सत्य, न्याय, अहिंसा आदि। सचमुच अद्भुत, अकल्पनीय, अनुपम और अभूतपूर्व। मेरा सौभाग्य है कि मैं उस पावन धरा पर स्थित दस विद्यालय परिवार का दो वर्ष तक सदस्य रहा।

विद्यालय के गुरुजनों का तो कहना ही क्या? सब अपने विषयों के विशेषज्ञ। आज भी विज्ञान की पुस्तक खोलता हूँ तो आदरणीय राधेश्याम जी का चेहरा पन्ना के बीच से मुस्कुराता हुआ दिखता है।

जिनको मैंने कभी पुस्तक का सहारा लेकर अध्यापन करवाते नहीं देखा। ऐसे ही गणित के भीम सिंह जी, अंग्रेजी के गोपीचंद जी व नीरज जी जिन्होंने मुझे बहुत सिखाया। सबसे अद्भुत गुरुजी तो 'मुद्रा विनिमय और अधिकोषण' के अमर सिंह जी साक्षात भारतीय बैंकिंग प्रणाली, अर्थशास्त्र की प्रतिमूर्ति। मैंने कभी, कहीं भी बैंकिंग जैसे तकनीकी विषय को काव्य, छंद व तुकबंदी में सिखाते-पढ़ाते नहीं देखा। दो उदाहरणों के माध्यम से आपको अमरसिंहजी व्यक्तित्व से परिचित करवाना चाहूँगा। अन्तर के आधारों पर दो विषयों में तुलनात्मक अन्तर

व्यापारिक बैंक व साहूकार के व्यवसाय और लेन देन की प्रक्रिया- 'जमाएँ, जमानत, ब्याज दर, कानून, रूप, शाखाएँ, पूंजी, पूँजी की प्राप्तता, अन्य व्यवसाय, कार्यक्षेत्र, चेकों का प्रयोग, ऋण देना, ऋण की अवधि, ऋण का उद्देश्य समझाएँ, बनाएँ। बणिए और बैंक में अन्तर पन्द्रह बन जाएँ।

दूसरा-चेक व विनिमय बिल में अंतर- ऊपर लिखा जाना, टिकट लगाना, भुगतान होना, भुगतान से इंकारी, स्वीकृति, प्रतियाँ, प्रमाणन न करने पर, लेखकी की जिम्मेवारी। अनुग्रह दिवस, अप्रतिष्ठा की सूचना, मूल्य प्राप्य लिखा जाना, विनिमय बिल और चेक में यह ग्यारह अन्तर माना। ऐसे ही संस्कृति के आदरणीय शास्त्रीजी को कारक और विभक्ति की पहचान कभी भुलाए नहीं भूलता।

कर्ता ने अरु कर्म को, 'से' से करण बखान,
सम्प्रदान तुम के लिए, अपादान से दान।
सम्बन्ध का, की, के, अधिकरण में, पे पर मान,
सम्बोधन हे, ओ, अरे, कारक आठ बखान।।

सचमुच जिन्होंने शिक्षण व्यवस्था, प्रक्रिया व अपने व्यक्तित्व को ही पर्याय बना दिया। मैं शिक्षक बना तो उनकी प्रेरणा से। एक आदर्श शिक्षक की छवि मैं आज भी भुलाए नहीं भूलता। आज भी शासकीय विद्यालय में सेवाएँ देते हुए बरबस उस आश्रम व्यवस्था पर आधारित विद्यालय का सजीव चित्र मेरे मन मस्तिष्क पर चलचित्र की भांति चलते हैं।

शिक्षक
माँ सोहनी देवी राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय इन्दोखा, नावां, नागौर (राज.)-341508
मो: 9928278014

www.rajsevak.com

एक मोड़ ऐसा भी...

❐ नदीम अहमद 'नदीम'

मज़हर मस्जिद से नमाज पढ़कर आया था। घर के दरवाजे पे हल्की थाप दी और 'अस्सलामो अलैयकुम' कहते घर में दाख़िल हुआ, रसोई में काम कर रही उसकी बीवी नाज़नीन ने सलाम का जवाब दिया।

मज़हर सोफे पर बैठते हुऐ बोला 'नाजिश किधर है।'

'वह तो सिमरन के घर गई है।' नाज़नीन ने रसोई में से ही जवाब दिया।

कितनी बार कहा है कि उसको अकेले, मत जाने दिया करो, अंधेरा होने वाला है। समीर से कहो कि उसको लेकर आए। मज़हर ने गुस्से में कहा।

समीर भी घर पर नहीं है नाजिश भी तो अपनी मौसी के घर ही तो गई है कौनसी क़यामत आ गई, दो गली छोड़कर मकान है, ख़ुद ही आ जाएगी।

गुस्से को लगभग पीते हुऐ नाज़नीन ने बहुत धीरज से जवाब दिया, मगर उसके सीने में जैसे आग धधक रही थी। वह ख़ुद से ही बात करने लगी।

अम्मी ने इस आदमी के साथ मेरी शादी करके मेरी ज़िन्दगी को जहन्नुम बना दिया। इस सनकी आदमी के साथ रोज तिल-तिल कर मरना पड़ रहा है। अगर ये बच्चे नहीं होते तो बहुत पहले ही इस ज़िन्दगी के सफ़र को ख़त्म कर देती।

नाज़नीन गुस्से को अपने भीतर ही रखती लेकिन खुद में बात करने का हूनर शायद उसे ज़िन्दा रखे हुऐ था। मज़हर एक सरकारी ऑफिस में पहले क्लर्क था। प्रमोशन लेकर ए.ए.ओ. बन गया है। गेहूँआ रंग और चेचक के दाग़ों से भरे चेहरे वाले मज़हर को नाज़नीन जैसी बेहद ख़ूबसूरत और खुद से उम्र में पाँच साल छोटी बीवी मिलना वाक़ई चमत्कार और क़िस्मत जैसे लफ़्ज़ों के अस्तित्व पर मुहर लगने जैसा था।

नाज़नीन से बड़ी दो बहने थी। छोटी होने के कारण अम्मी-अब्बा की लाडली थी। स्कूल में दीपिका मैडम के प्रोत्साहन से टेबल टेनिस खेलना शुरू किया और जल्दी ही राज्य स्तर की टीम में जगह बना ली। नाज़नीन के फोटो अखबारों में आने लगे। शाबाशी और तारीफ के साथ अम्मी के कानों तक ये शब्द भी पहुँचे कि बेटी छोटे कपड़े पहनती है अभी से ये हाल है तो आगे तो और ज़्यादा बेहयाई होगी। मगर अम्मी ने इन बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया बल्कि नाज़नीन की हौसला अफजाई की कहा बेटे हमेशा सबकी सुनो और अपने मन की करो अल्लाह ने हूनर और क़ामयाबी दी है तो इसको बरकरार रखो दुनिया खाती अपना है और बाते दूसरों की करती है। इसलिए अपना काम करते रहो बस ख़्याल अपनी हद और परिवार की इज़्ज़त का ज़रूर रखना।

अम्मी की कही बातों ने नाज़नीन के लिए मंत्र का काम किया और दूगने उत्साह से प्रेक्टिस जारी रखी। दीपिका मैडम हमेशा कहती थी कि नाज़नीन तुम ज़रूर विश्व स्तर पर देश का नाम रोशन करोगी। लोग उसे दूसरी सानिया मिर्ज़ा कहते तो उसको गर्व की अनुभूति होती थी।

कूकर की सीटी ने उसकी तद्रां भंग की, वही कमरे से मज़हर की कर्कश आवाज़ सुनकर नाज़नीन को सुहानी यादों की दुनिया से बाहर आना बहुत बुरा लगा।

चाय बनाने में इतनी देर लगती है क्या मजहर ने लगभग चीखते हुऐ कहा।

हाँ ला रही हूँ। नाज़नीन ने कहा। नाजिश भी मौसी के घर से आ चुकी थी। सीधी रसोई में आकर मम्मी के गले में हाथ डालकर अपनी ख़ुशी का इज़्हार करने लगी।

चाय छान रही नाज़नीन ने उसको कहा कि अरे रूक तो सही चाय गिर जाएगी।

क्या मम्मा हर वक्त काम ही काम, कभी तो ढंग से बात किया करो जब देखो तब मुँह पर ताला चेहरे पर दुःख ही दुःख नजर आता है। आपकी बड़ी बहने अब आपकी छोटी बहने लगने लगी है। पता है क्या ?

नाज़नीन को लगा आज बेटी ने जैसे सच का द्वार खोल दिया। कल ही उसने बहुत दिनों बाद आइना देखा था, बेटी सच ही तो कह रही है। चाय का कप मज़हर के सामने रखा बेटी भी वही पास में बैठी थी।

हाँ अब बता क्या कह रही थी ?

सींगिग इंडिया ऑडीशन' में मेरा सलेक्शन हो गया है। जब मौसी के घर भी तब कॉल आया था। यह बोलते ही नाजिश को भी लग गया था कि उससे अभी बहुत बड़ी गलती हो गई है। आधा घूंट चाय भी मज़हर के मुँह में शायद नहीं गया था कि वह उछल पड़ा क्या कहा? आँखें लाल करता हुआ वह खड़ा हो गया 'ख़बरदार मुझे ये सब पसन्द नहीं है।'

नाजनीन जो हमेशा डर-डर के रहती थी मगर आज शेरनी की तरह सामने आ खड़ी हुई मेरी बेटी कम्पीटीशन में जाएगी और हर हाल में जाएगी।

आवाज़ में पुख़्तगी और मज़बूती के साथ बेटी की पैरवी करना हगांमा-ए-बरपा हो गया टेबिल पर पड़े चाय के कप से उठती भाप धीरे-धीरे मद्धम पड़ रही थी लेकिन मज़हर की जबान आग उगल रही थी। बेटी ने बीच बचाव किया और फ़ैसला सुना दिया कि वो कॉपीटिशन में भाग नहीं लेगी।

ठंडी हो चुकी चाय की तरह माहौल भी ठंडा हो गया मगर नाज़नीन के ज़ेहन में अन्दर ही अन्दर गुस्से का उबाल बरकरार था। बेटी समझदार थी आकर माँ को समझाया, अश्रु धारा बह निकली कुछ गुबार कम हुआ मगर विचारों का तूफान अब भी शान्त होने का नाम नहीं ले रहा है।

उसे याद आया अरशद का चेहरा उसी कि हम उम्र था, प्यार करती थी अरशद को बेइन्तहा और शादी भी करके उसी के साथ ज़िन्दगी बिताने के न जाने कितने ख़्वाब सजाए थे उसने। उस रोज ख़्वाब चकनाचूर हो गए थे। जब बड़ी दो बहने की सगाई के साथ उसकी सगाई की घोषणा भी आनन-फानन में हो गई थी। वह जब प्रेक्टिस करके घर आई, रैकिट यथा स्थान रख रही थी तब उसकी बड़ी बहिन इनाया ने हँसते हुऐ मजहर के साथ सगाई की बात बताई थी।

मज़हर मज़हर दो तीन बार याददाश्त पर ज़ोर डालते ही मज़हर का चेहरा सामने आ गया था। उसी के मोहल्ले का ही तो था मज़हर। मज़हर का ख़्याल करके ही उसकी आँखों के आगे

www.rajsevak.com

अंधेरा सा छाने लगा था वह बिना कुछ कहे बाथरूम में जाकर खूब रोई थी।

टेबिल पर टेनिस की गेंद को रैकिट से छकाने वाली नाज़नीन ज़िन्दगी के खेल में खुद को आज फिसड्डी समझ रही थी। घर के हालात और लड़की होने के अहसास ने उसकी ज़िन्दगी को आज गेंद बना डाला। बग़ावत की दीवार ज़्यादा ऊँची नहीं कर पाई और ज़िन्दगी रूपी गेंद मज़हर के पाले में जा गिरी। खेल ख़त्म हो चुका था नाज़नीन ने उदासी का लबादा ऐसा ओढ़ा कि दुनिया उस खिलाड़ी नाज़नीन को भूल गई। समझौता किया था उसने लेकिन बेटी को अपने जैसा नहीं बनाना चाहती थी। बड़ी बहनें खुशहाल थी दोनों के पति प्रोग्रेसिव सोच के थे, साथ उनमें बहुत ही अच्छा ताल-मेल था। दोनों बड़ी बहिने अपने परिवारों के साथ छुट्टियों में यात्राऐं करती पिकनिक मनाने जाती। नाज़नीन जब भी बहनों के साथ जाने का कहती मज़हर सख़्ती से मना कर देता और नाज़नीन की बहनों और उनके बच्चों की आलोचना करता। कभी उनके कपड़ो पर तंज करता। नाजनीन खून का घूंट पीकर रह जाती थी। नाजिश को हमेशा हिजाब पहनने की ताक़ीद करता और नाज़नीन को भी सर में दुपट्टा सरकने पर डांट देता था।

नाज़नीन पहनावे के आदाब खूब समझती थी। उसे भी सलीके से रहना आता था। मगर मजहर की दकियानुसी सोच के खिलाफ दिल में हमेशा गुस्सा ही रहता था।

मोबाइल की घण्टी ने विचारों को विराम दिया। मोबाइल पर बड़ी बहिन इनाया की आवाज़ थी। नाजनीन हम लोग घूमने जयपुर जा रहे है। तू और तेरे बच्चे आना चाहे तो बता रिजर्वेशन करवा देते हैं।

नहीं बाजी आना हो नहीं पाएगा। समीर ट्यूशन जाता है और नाजिश का कोर्स भी पूरा नहीं है।

दरअसल नाजनीन ने कभी भी हकीकत से रुबरु करवाना मुनासिब नहीं समझा। अपना संघर्ष वो खुद ही कर रही थी। इनाया और शाजिया ने भी बहुत ज्यादा गौर नहीं किया कि नाजनीन और उसके शोहर के बीच सब कुछ अच्छा नहीं है।

अच्छा कोई बात नहीं नाजिश को मेरे घर भेज दे कुछ काम है। सिमरन आज ट्यूशन से देर से आएगी। इनाया ने कहा।

इनाया ने नाजिश को घरेलू काम में सहयोग के लिए बुलाया था।

मौसी और भांजी के बीच बातों ही बातों में नाजिश ने अपने अब्बू मजहर की आदतों और सनकीपन से अवगत करवा दिया। कुछ कुछ शक तो था इनाया को लेकिन बात बहुत गम्भीर हो सकती है ऐसा इनाया ने कभी नहीं सोचा था। मौसी के घर से आने के बाद नाजिश का व्यवहार आज बहुत बदला बदला सा था। घर में दाख़िल होते ही मज़हर से सामना हुआ।

'तुम्हारा हिजाब कहाँ है नाजिश।'

'हवा में उड़ गया' कह कर नाजिश बिना उसकी और देखे कमरे में चली गई।

'हवा में उड़ गया मतलब।' ये क्या-क्या जवाब है। चीखते हुऐ मजहर बोला। कोई जवाब नहीं मिला वह बौखला सा गया। मगर अपनी जगह बैठ गया। मज़हर के समझ में नहीं आ रहा था कि इस लड़की को हो क्या गया है ? समीर से भी बात कि लेकिन उसको भी कुछ पता नहीं था?

दूसरे दिन के मंजर ने तो मज़हर के दिमाग़ को ही जैसे फ्रिज बना दिया था। शाम के वक्त घर के दरवाजे से जींस, टी शर्ट और स्पोटर्स शूज पहने कोई दाखिल हुआ और बरामदे की तरफ जाते देख मज़हर जोर से बोला अरे आप कौन और ऐसे कैसे किसी के घर में.....।

हाँ, बोलिए अब्बू।

नाजि.....श

थूक गले में निगलते हुऐ मज़हर को चक्कर सा आने लगा।

हाँ, अब्बू कहिए कुछ काम है।

नाज़नीन ने आकर मजहर को संभाला पानी पिलाया नाजिश का यह रवैया नाजनीन को भी समझ नहीं आ रहा था। वह भी पशोपेश में थी। समीर भी खामोश था। किसी के कुछ समझ नहीं आ रहा था।

थोड़ी देर बाद नाजिश वापिस आई। ज़रा सी खामोशी के बाद नाजिश अपने अब्बू से मुख़ातिब थी। अब्बू आप भूल गए कि होशियार होना अच्छी बात है लेकिन डेढ़ होशियार होना बहुत बुरा होता है। मेरी खूबसूरत टेलेन्टेड अम्मी ने हालात से समझौता किया लेकिन आप हमेशा कुंठित रहे और कुंठा हम सब पर निकालते रहे। मेरी मौसी इनाया जो मेरी अम्मी से भी ज्यादा खूबसूरत है से मोबाइल पर गन्दी मजाक करते हो, मुझे मेरी मौसी ने सब बता दिया कि वो पहले तो जीजा साली की मज़ाक समझ रही थी और आप लगातार अपनी हदों से बाहर जा रहे थे। उन्होंने आपकी पिछले दिनों की सारी बातें रिकार्ड कर ली है। कहकर नाजिश ने अपने मोबाइल का स्पीकर ऑन कर दिया। मज़हर की गर्दन झुकी हुई थी। नाज़नीन की आँखें पथराई हुई थी, कमरे में मज़हर की आवाज़ थी। इनाया मज़हर को उसकी हरकतों के लिए टोक रही थी और मज़हर इनाया के लिए गाने गा रहा था। अश्लील शब्दों के साथ इनाया के हुस्न की तारीफ कर रहा था। नाजिश ने रिकोर्डिंग पूरी सुनाने की बजाए बीच में ही स्विच ऑफ कर दिया और कमरे से बाहर निकल गई। उसी शाम नाजिश ने म्यूजिक क्लास ज्वाईन कर ली। मजहर जो हमेशा चीखता चिल्लाता था अब एकदम बदल चुका था।

जीवन शान्त प्रवाह सा चल रहा था। आज गायन प्रतियोगिता का फाइनल राउण्ड था। नाजिश टॉप थ्री में थी। टी.वी. के सामने सभी बैठे हुऐ थे। एंकर ने जब नाजिश के विजेता होने का ऐलान किया तो नाज़नीन बेसाख़्ता सबके सामने नाचने लगी। नाचते हुऐ ही टी.वी. के पास खूंटी पर नाज़नीन की निगाह पड़ी वहाँ नाजिश का हिजाब टंगा हुआ था। अजान की आवाज पर नाज़नीन के पाँव थम गए। टी.वी. की आवाज कम हो गई और मजहर टोपी उठाकर थके क़दमों से मस्जिद की और चल पड़ा।

सदैव नैतिक मूल्यों का अनुसरण करें, उच्च आदर्श एवं श्रेष्ठ विचारधारा पर कायम रहें।

अध्यापक
जैनब कॉटेज, बड़ी कर्बला मार्ग, चैखूंटी, बीकानेर
(राज.)-334001
मो: 9461911786

www.rajsevak.com

सिस्टम.....!!!

❒ विकास चन्द्र भारु

सर्दियों के कोहरे के बाद खिली घूप का एक ढलता हुआ दिन था एक लम्बी सी ऊँघ लेकर अमीलाल कमरे से बाहर आया..... उसने देखा परिसर में एकदम नीरवता थी। बाहर मैदान में पांच-सात कुर्सियां पड़ी हुई थी तथा पास मैं ही चाय पीकर छोड़े हुए बीस पच्चीस खाली गिलास उल्टे-सीधे पड़े थे। उन्हे देखते ही एकाएक अमीलाल को ख्याल आया कि कुछ देर पहले ही एक बच्चे ने उसे जो चाय दी थी वो तो कमरे की मेज पर ही रखी हुई है। वह तुरन्त ही चाय की तरफ लपका और ठण्डी होने जा रही चाय के दो घूंट-भरकर गिलास को वापिस रख दिया।

उसने मन ही मन सोचा कि अभी 5-7 मिनट पहले की ही तो बात है, जब वह एक बच्चे को किताबे देने के लिए पुस्तकालय में ही तो गया था तब सभी कक्षाओं और कार्यालय में जोरदार चहल-पहल थी। उसने जेब से मोबाइल निकालकर समय देखा तो चार बजकर दो मिनट हो चुके थे। वह सब समझ गया, क्योंकि वही रोज का घटनाक्रम, कार्यस्थल पर पहुँचे में चाहे कार्मिक को कितनी भी देर हो उसका तर्कपूर्ण जवाब उनके पास हमेशा मौजूद रहता है परन्तु समय के पूर्ण होने के उपरान्त एक क्षण भी हजारों जायज तर्कों के बावजूद उन्हें वहाँ बिताना गवारा नहीं होता। इसलिए वह जानता था कि उसके साथी भी अपने समय का यह एक अतिरिक्त मिनट बचाने के एवज में छात्रों को तो पहले ही रवाना कर तय समय से पहले स्वयं भी मुख्य दरवाजे पर पहुँच जाते थे।

उसने जोर से एक आवाज विद्यालय के चपरासी को लगाई जो सामने के एक कक्ष में दो मेजों को चिपकाकर उन पर बिछौना सजाकर सुस्ताने की तैयारी कर रहा था। अमिलाल वापिस जाकर पुस्तकालय में शेष रही पुस्तकों को व्यवस्थित करने में जुट गया। कुछ देर बाद चपरासी ने आकर कुछ चाबियों के गुच्छे उसे सौंपे तथा स्वयं द्वारा किए जा चुके कार्यों का ब्योरा कुछ यूं प्रस्तुत किया जैसे कि किसी चुनावी सभा में राजधानी से पाँच वर्ष आराम के साथ बिताकर आया विधायक स्वयं को पुनः चुने जाने हेतु बखान करता हैं कि मैं तो राजधानी में आपकी सेवा करने के लिए ही परेशान होता रहा हूँ। चपरासी स्वयं को सुबह से शाम तक एक क्षण भर की फरसत न मिलने और बाकी सब के मजे मारने पर तर्क देते-देते ही बड़बड़ाते हुए वापिस अपने बिछौने की ओर लौट गया। यह बात ओर है कि किसी भी कार्य की कहे जाने पर वह स्वयं को कहीं अन्यत्र व्यस्त बताकर पल्ला झाड़ लेता है। किताबें व्यवस्थित कर अमीलाल वहीं कमरे से बाहर पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया और अपना मोबइल चलाने लगा।

यह सब सुदूर के एक सामान्य से गाँव ऊपनगढ़के सरकारी हाई स्कूल का नजारा है। अमीलाल गत सत्र में ही यहाँ गणित के अध्यापक के रूप में नियुक्त हुआ था। यहाँ से लगभग 450 किमी दूर साधारण से ग्रामीण परिवेश में पला बढ़ा एक नौजवान जो बेरोजगारों की भीड़ भरी आपाधापी से अपने आप को किसी तरह बाहर निकालकर यहाँ पहुँचा था। नतीजा आने के बाद और विद्यालय में तैनाती से पूर्व उसने अनेक बार सपने संजोए और स्वयं को इस बात के लिए तैयार किया कि वह हमेशा अपना सर्वोत्तम देने के लिए उद्यत रहेगा। पहले से मौजूद पन्द्रह-सोलह कर्मियों के अमले के साथ वह भी विद्यालय परिवार में शामिल हो गया।

घर से बहुत दूर होने के कारण मुख्यालय पर ही रहने की विवशता और स्वयं द्वारा ली गई कर्त्तव्यपरायणता की प्रतिज्ञा ने उसका दामन अनेक विद्यालयी दायित्वों से बांध दिया या फिर उसने स्वयं ही अपने को उन दायित्वों से बांध लिया था। सुबह जल्दी आना, देर शाम तक जाना और दिनभर बच्चों के साथ रहना उसकी सामान्य दिनचर्या बन चुका था लेकिन इन सब के बची वह अपने सहकर्मियों से भी निजता बनाये रखने का भी पूरा ख्याल उसे रहता था। उनकी बहसों में अपना नजरिया डालना वह कभी नहीं भूलता था। उनमें से कई साथी तो सुबह आते ही सामने चौक में आकर अपनी कुर्सियां जमा लेते थे और देश के हालात, राजनीति, सेना, अर्थव्यवस्था, विदेश नीति, स्वयं के अत्यधिक कार्यभार, छात्रों के शैक्षिक पिछड़ेपन, अभिभावकों की उदासीनता, स्वयं की विशिष्टताओं प्रधानाचार्य की कार्यशैली, विभागीय दिशा-निर्देशों जैसे अनेक विषयों पर अपने-अपने तर्कों की बौछार शुरू कर देते। इनमें से कुछ कुर्सियां तो सुबह से लेकर शाम तक के लिए स्थाई रूप से आरक्षित रहती थी और कुछ पर चेहरे बदलते रहते थे। सब अपने आप को स्थानियता के पैमाने से, उच्च डीग्रीधारी होने के लिए, राजनैतिक रसूकदार या फिर प्रशासनिक पहुँच के आधार पर एक दूसरे प्रभवी सिद्ध करने से नहीं चूकते थे। हाँ, लेकिन इन सब के बीच उनका ध्यान चाय के समय पर पूरा रहता था और इस कारण के लिए बच्चों को डांटना भी नहीं भूलते थे जैसे कि चाय तो ठण्डी हो गई, इसमें चीनी कम है, गिलास सही नहीं घूलें है.... आदि-आदि। अमीलाल को भी अपने रसूक से उसका स्थानान्तरण करवाने बात के लिए हमेशा लोलुप रखने का प्रयास किया जाता रहता था और वह भी नीरस हाँ के साथ औपचारिक सहमति दे देता था।

कुछ देर बार अमीलाल ने मोबाइल बंद करके कुर्सियों को अन्दर रखना प्रारम्भ किया उन्हें देखकर बाहर से घूड़ाराम भी आ गया जो गत वर्ष विद्यालय से हाई कक्षा पास करके निकला था और वह भी अन्य छात्रों की ही तरह कभी कभी अपने कॅरियर के विषय में आशान्वित होकर उनसे रायसुमारी करने आ जाता था। वह भी अमीलाल की मदद करने लगा। वे आपस में चर्चा करते हुए कुर्सियों के बाद गिलास एकत्रित किये गये, कल के लिए पानी भरा गया और शेष कमरों को ताला लगाकर ढलते दिन के साथ अपने कमरे के लिए रवाना हुए। कमरे पर भी उसे खाना बनाने के अलावा कोई विशेष कार्य न होने के कारण इस प्रकार की देरी उसे कभी नहीं खलती थी लेकिन उसे हमेशा अलग-अलग बहाने के साथ दस मिनट देरी से आने वाले या छुट्टी से पूर्व ही

www.rajsevak.com

छात्रों से पहले दरवाजे पर पहुँचे और स्कूल से जाने को लालायित रहने वाले साथियों के उन विशेष कार्यों के बारे जानने की उत्सकता अवश्य बनी रहती जो वे अपने इस समय में पूरा करते होंगे लेकिन हाँ, अभी तक वह यह जानने में असफल ही रहा है। इस मौके पर उसे अपने दादाजी की बार-बार कही जाने वाली बात अवश्य याद आती है कि ''जो व्यक्ति घड़ी को देखकर एवं उससे भी आगे तय समय से कटौती की सोच के साथ कार्य करते हैं वे अपने आप को कभी भी एक नाक्कर की मानसिकता से बाहर नहीं निकाल सकते हैं, इसलिए हमेशा अपने कर्तव्य को नौकरी के स्थान पर सेवा मानकर पूर्ण करने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि यह हमारी आजीविका भी है और इसी का वैचारिक प्रभाव हमारे परिवार के संस्कारों का भी निर्माण करता है।''

इन सब के बारे में घूड़ाराम का अनेक बार अपने हमखयाली सहकर्मियों के साथ भी पृथक-पृथक से तार्किक विमर्श हो जाता था। जिसमें प्रमुखता से एक ही बात परिलक्षित होती कि ''सिस्टम ही ऐसा है.....।'' उन सबके मतानुसार हर एक सामान्य समझ वाला व्यक्ति इस कर्मभूमि में प्रवेश करते समय अपने ज्ञान, कौशल और आत्म विश्वास के शिखर पर होते हैं तथा वे अपना सर्वश्रेष्ठ देने का इरादा रखते हैं परन्तु समय तथा व्यवस्थाओं की मार एवं खामियां उन्हें विरक्त बनाये जा रही हैं। सिस्टम ही ऐसा बनता चला गया कि जो रके वही मरे भी और भरे भी। आजीविका की ओर से निश्चिंत हो जाने के बाद वह काम करने और न करने के संबंध में उदासीन हो जाता है। इस बस के दौरान समय-समय पर उन्हें अनेकों ऐसे कारण मिल ही जाते हैं जो अपने आप को कर्तव्यपरायणता के अपराधबोध से मुक्त रखने में सहायक सिद्ध होते हैं। इन सब में अधिकतर वे कार्य होते हैं। जो गैर शैक्षणिक, आँकड़ों, की खानापूर्ति तथा सामाजिक परिवेश की स्थितियों से सम्बन्धित हैं।

उनसे चर्चा में एक कहानी प्रमुखता से दोहराई जाती है, जो संक्षेप में इस प्रकार है कि ''चींटियों का एक कैडर था, सभी सुबह शाम ईमानदारी और समर्पण भाव से अपना काम करती थी। जिनके लिए उसे काम करना था वे भी उसके कार्य से पूर्ण संतुष्ट थे। चींटी विभाग के अधिकारियों ने अपने विभग की समीक्षात्मक बैटक में उसके कार्य पर मंथन किया और पाया कि सभी चीटियाँ बिना किसी की मदद केक अपना कार्य कुशलता से कर रही हैं लेकिन जैसा कि यहां पर तो उसके कार्य की समीक्षा की जा रही थी तो समीक्षाकर्त्ताओं द्वारा उच्चधिकारियों को कुछ सुझाव देकर अपनी औपचारिकता तो पूर्ण करनी ही थी, इसलिए उन्होंने सुझाव दिया कि यदि चींटी को उचित मार्गदर्शन हेतु दक्ष पर्यवेक्षण तथा कौशल प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध करवाई जाये तो उसकी कार्यक्षमता को बढाया जा सकता है। चूंकि विभग में बजटीय लक्ष्य की प्राप्ति हेतु व्यय किये जाने ही थे तो उक्त प्रस्ताव को तत्काल प्रीााव से स्वीकृत कर दिया गया। अब चींटी के पर्यवेक्षण हेतु एक रसूखदार टिड्डे की नियुक्ति कर गई और उसकी संस्तुति पर कार्यालय में एक चींटे को क्लर्क, केवड़े को कम्प्यूटर ऑपरेटर तथा कॉकरोच को प्रशिक्षक नियुक्त कर दिया गया। अब टिड्डे को अपनी पर्यवेक्षकीय कला दिखानी थी तो उसने विभिन्न प्रकार के रिपोर्टिंग फॉर्मेट बनाकर चींटी से कार्य प्रतिवेदन मांगना प्रारम्भ कर दिया। उनके लिए दैनिक, साप्ताहिक, मासिक आदि अनेकों रिपोर्ट प्रपत्र तैयार कर रिपोर्ट मांगी जाने लगी साथ ही दैनिक ऑनलाइन डाटा फिडिंग हेतु पोर्टल का निर्माण भी करवा दिया। चींटी अपने कार्य के स्थान पर इन औपचारिकताओं में व्यस्थ होती जा रही थी जिससे उसकी कार्यकुशलता प्रभावित हो रही थी। उसके कार्यक्षेत में उसकी साख भी गिरती जा रही थी। दूसरी ओर टिड्डे को भी आब अपनी कार्यकुशता बढ़ाने के लिए जिला एवं ब्लॉक स्तर पर अपने पर्यवेक्षणीय कैडर स्थापना की आवश्यकता महसूस होने लगी और लगे हाथ ही बजट की उपलब्धता के चलते उसकी इस मांग को पूर्ण भी कर दिया गया और किया भी क्यों न जाता क्योंकि अब इन स्थानों पर कई राजनैतिक और प्रशासनिक रसूखदारों को पदस्थापित किया जा सकता था। अब चींटी का विभिन्न स्तरों पर पर्यवेक्षण प्रारम्भ हो गया। चींटी की कार्यकुशलता को उसके कार्य के स्थान पर उसकी रिपोर्टिंग तत्परता से आंका जाने लगा। इससे भी आगे अन्य विभिन्न कार्यों में आवश्यकता होने पर चींटी विभाग द्वारा उन चींटियों को अपने आपको अग्रणी एवं लोक हितैषी साबित कराने हेतु अन्य विभागों को भी सौंपा जाने लगा। उन चींटियों को अपने आपको अग्रणी एवं लोक हितैषी साबित कराने हेतु अन्य विभागों को भी सौंपा जाने लगा। इस सिस्टम के कारण आज चींटी की स्थिति यह बन गई कि उसने अपने स्थान, गरिमा, अवस्था और वजूद के लिए संघर्ष करना पड़ रहा हे।''

अब हो सकता है कि हर कोई इस कहानी को अपने-अपने तर्कों से उचित या अनुचित सिद्ध करने का प्रयास करे लेकिन वर्तमान समय में सरकारी विभागों में विकसित हो रहे सिस्टम... में यह कहानी पूरी तरह अनुचित तो बिल्कुल भी नहीं कही जा सकती क्योंकि किस तरह पर्यवेक्षण अपने मूल उद्ददेश से भटकर मात्र रिपोटिंग और आंकडों का खेल बन गया था।

इस कहानी और अन्य तर्कों के बावजूद आज भी अमीलाल यह मानने के लिए तैयार नहीं है कि कैसे एक चींटी अपनी मूल प्रकृति को छोड़ सकती है। सिस्टम और व्यवस्थाएं अपनी जगह होती हैं परन्तु एक शिक्षक का कर्म एवं सेवा क्षेत्र सिर्फ और सिर्फ विद्यार्थी ही है। अमीलाल आज भी प्रबलता से सिस्टम के विरूद्ध एक व्यवहारिक तर्क देता है कि ''यह एक कटु सत्य है कि एक शिक्षक के जीवन में हजारों विद्यार्थी आएंगे लेकिन विद्यार्थी के जीवन काल में शिक्षक आप और हम ही होंगे।'' उनके जीवन को संवारना संस्कारित करना हम सबका प्रथम दायित्व होना ही चाहिए। अतः उनके लिए हमें अपना श्रेष्ठ देने हेतु प्रयासरत रहना चाहिए और अपने आपको सिस्टम की बेड़ियों की जकड़न से बचाकर न केवल पाठ्यक्रम तक ही सीमित रखना है, अपितु उनके सर्वांगीण विकास से सुदृढ़ राष्ट्र के कर्णधारों को तैयार करना है और किसी कवि की ये पंक्तियाँ अपने जेहन में रखनी हैं कि-

तू समर तेरे अविराम कर, पल भर भी ना आराम कर।
हित साथियों के जो भी हों, वो काम कर वो काम कर।।

प्राध्यापक (वाणिज्य)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
निराधनू, झुंझुनूं (राज.)
मो: 8118840355

www.rajsevak.com

डंडों का आशीर्वाद

❐ सुमन सिंह

''अरे रूपा कुकर में आलू उबलने रखे तो पानी कितना डाला? ओहो! पानी डालना तो मैं भूल ही गई। भाभी, यही मैं सोचूं कि कुकर में सीटी क्यों नहीं बजी? रौबीली भाभी भड़की रूपा की तो जान ही निकल गई। 10वीं में पढ़ने वाली 14 साल की लड़की रूपा उसे क्या पता आलू उबालने के लिए कुकर में पानी भी भरना पड़ता है। भोली, अनजान रूपा सहम गई। भाभी फिर

कड़की हमेशा ऐसी लापरवाही से काम करती हो कुछ आता है करना? उस दिन तुमने बिना बेसन की कढ़ी बनाई थी और उससे पहले प्लास्टिक की चलनी में गर्म घी डालकर उसे तोड़ दिया था।

कोई काम नहीं आता तुम्हें भेज दिया माताजी ने नौकरानी रखने के बदले। तुम्हें काम करने के लिए। तुम्हें काम करना सिखाओ या नौकरी करने जाओ।

अगर ऐसी लापरवाही से नौकरानी काम करती तो मैं उसे कब का लंबा कर देती। भाभी बड़बड़ा रही थी और रूपा मन मसोसकर आँसू बहा रही थी। सोच रही थी कि क्या भाभी ऐसी होती है?

रूपा ने आँसू पोंछे माँ की बात याद आई बेटा, अब तुम्हें अपने भैया-भाभी के पास देहली रहना होगा। जिससे नौकरानी का पैसा बचे तुम्हें वहीं रह कर पढ़ाई भी करनी है। भाभी भाई अब तुम्हारे माँ-बाप है जो कहे करना, कहना मानना और पढ़ाई भी करना।

उत्तर कभी नहीं देना समझी रूपा सुनती रही हाँ में गर्दन हिलाती रही फुदकनी चिड़िया सी रूपा, चंचल तितली सी रूपा अपने मन में भाई -भाभी के साथ रहने के सपने देखने लगी।

सोचने लगी कि दोनों लेक्चरर हैं खूब शान से रहूँगी वहाँ जाकर खूब पढ़ूँगी। वह दिन भी जल्दी आ गया जब रूपा को पिताजी देहली छोड़ आए। पिताजी के साथ रिक्शा में बैठ भाई भाभी के घर पहुँची। 2 दिन बाद पिता जी रूपा को देहली छोड़कर अजमेर गए दूसरे दिन से रूपा को भाभी ने काम समझाना शुरू किया। किशोरी रूपा गृहस्थन बन गई। सुबह 5:00 बजे से दिनचर्या शुरू होती और रात के 10:00 बजे तक उसे सारे काम निपटाने के बाद आराम मिलता। रात के 10:00 बजे पढ़ाई शुरु होती। सुबह भाई भाभी के लिए चाय बनानी होती, भाई, भतीजे, भतीजी के लिए दूध और नाश्ता बनाना होता। दौड़-दौड़ कर उनका नाश्ता पानी टेबल पर रख नहाने चली जाती।

खाना 8 बजे बनाना शुरू करना होता क्योंकि 9:30 तक भाभी भाई को जॉब पर, भतीजे, भतीजी और खुद भी स्कूल जाना होता। समय घड़ी की टिक टिका हट के साथ आगे बढ़ता गया। भाभी के ताने उल्हाने के साथ रूपा की उम्र भी बढ़ रही थी। पढ़ाई कर स्कूल से 4:30 बजे जब घर लौटती तो आगे पीछे भाभी, भाई, भतीजे, भतीजी सभी आ जाते। वह साइकिल खड़ी कर हाथ मुँह धोकर फिर रसोई में दौड़ जाती।

चाय, दूध, नाश्ता सबको देने में लग जाती। साथ ही भाभी से पूछती शाम के खाने में क्या बनाना है? भाभी आदेश देती आलू, टमाटर के साथ रोटी और सुनो तुम्हारा भतीजा पूड़ी खाएगा खाने के बाद मैंगो शेक 4 ग्लास बना लेना। रूपा सोचती चार क्यों पाँच क्यों नहीं? उसे याद आ जाता माँ ने कहा था भाई-भाभी जो कहें वही करना। उसकी इच्छा होती मैंगो शेक पीने की। पर वह सोचती भाभी से कहूँ 5 ग्लास बना लूँ। भाभी की बड़ी-बड़ी आँखों से खौफ खाते 5 ग्लास की परमिशन लेना टाल देती। दिन-रात, सप्ताह, महीने, साल बीत गए। गर्मी की छुट्टी आते ही डरते, डरते भाभी से कहती अजमेर जाना है भाभी माँ पिताजी के पास।

भाभी गरजती धर्मशाला समझ रखा है क्या इस घर को? 3 बोरी गेहूँ, 2 किलो लाल मिर्च, 2 किलो हल्दी, 3 किलो धनिया, 5 किलो नमक पीसो। दाल, चावल साफ करो फिर अजमेर जा सकती हो। रूपा जैसे मशीन बन जाती। 5 दिन में अपना काम निपटा लेती तब कहीं अजमेर जाने की परमिशन मिलती। अजमेर पहुँचते रूपा फिर फुदकनी चिड़िया बन जाती। छोटी बहन उसके आने के स्वागत में चिप्स और मूंगफली तल कर रखती दोनो बहने बतियाती। माँ पूछती भाभी ठीक तरह से रखती है ना? रूपा कहती मुझे वहाँ की याद मत दिलाओ। मुझे यहाँ इंजॉय करने दो माँ। माँ का मन तड़प जाता वे अपनी बहू के स्वभाव से परिचित हैं। समझ जाती अपनी ननद के साथ भी वह कटु व्यवहार करने से नहीं चूकती। फिर देहली की गाड़ी चढ़ने का दिन आ जाता। रूपा माँ के सामने से खुश नजर आती और गाड़ी में बैठते ही आँसुओं का झरना झरने लगता जैसे किसी यातना गृह में जा रही है। पिताजी समझाते खाना, पानी, टिकट, तुम्हारे पास है। गाड़ी से उतरना नही किसी अनजान व्यक्ति से बात मत करना।

मैगजीन पढ़ती रहना। देहली भैया लेने आ जाएँगे। ठीक है। ट्रेन चल देती और अजमेर के साथ पिताजी को ओझल होता देखती। बाहर निगाहे टिका देती। घूमती हुए जमीन, खेत, पेड़, इमारतें, इंसान जानवर, गाड़ियाँ सब ऐसे लगते मानो कभी ठहरेंगे ही नहीं। पता नहीं क्या क्या सोचती कभी आँखें नम हो जाती 3 घंटे बाद खाना खाती और अजमेर की यादों में डूब जाती है। देहली पहुँचते ही भाभी का राज शुरू हो जाता उस पर। पर रूपा अपनी भाभी से एक ही सीख लेती कि वह भाभी जैसी पढ़ लिख कर नौकरी तो करेगी पर वैसा कटु व्यवहार नहीं करेगी। वह सोचती भाभी दिल की बुरी तो नहीं है। रूपा B.A. में आ गई फाइनल में रिजल्ट आया थर्ड डिवीजन। सुबह शाम घर का काम दिन में कॉलेज और रात को पढ़ाई।

जितना समय मिलता रूपा मेहनत करती। रिजल्ट आते ही भाभी की बौछार शुरू हो गई नाक कटा ओगी हमारी थर्ड डिवीजन आया है। पढ़ती, लिखती नहीं हो मौज करती हो तो थर्ड डिवीजन ही आएगा। रूपा के भाई कहते रिपीट कर लो, इम्प्रूव कर लो। रूपा ने मना कर दिया। उसने मन ही मन अपने से वायदा किया

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

www.rajsevak.com

कि वह M.A. करेगी हिंदी में और 3 डंडों को 1 डंडे में बदलकर भाभी को जवाब देगी। जब वह M.A. प्रीवियस में आई तो भाभी का ट्रांसफर गाजियाबाद हो गया। घर की जिम्मेदारी और बढ़ गई। आला कमान भाभी का ऑर्डर हुआ कि अब तुम प्राइवेट M.A. करोगी। रेगुलर करोगी तो घर कौन संभालेगा। सब ठीक है कर लूँगी, यह बाहर रहेंगी तो उल्हाने तो नहीं सुनने पड़ेंगे। मन डिस्टर्ब तो नहीं होगा तो फर्स्ट डिवीजन आ ही जाएगा। वह खूब पढ़ी, पेपर दिए रिजल्ट आया फर्स्ट डिवीजन रूपा उन दिनों अजमेर थी। उसे अपनी क्षमताओं का पता लग गया था। उसने माँ पिताजी से साफ कह दिया कि वह अब देहली नहीं जाएगी अपना परसेंटेज फाइनल में हाई करेगी और अजमेर ही रहेगी। इसके बाद भाभी की चिट्ठी आई देहली रहकर फर्स्ट रिवीजन आ गया था अजमेर में नहीं ला सकती डबल चुनौती बन गई थी यह लाइनें। रूपा ने इसे स्वीकार किया फाइनल ईयर में फर्स्ट डिवीजन 68 प्रतिशत के साथ रूपा ने पास किया। रूपा जीत गई थी। बी. एड. रीजनल कॉलेज ऑफ एजुकेशन अजमेर से। मेरिट में टॉपर थी स्कॉलरशिप मिली। रूपा ने जो सोचा था वह पूरा होता गया। शादी हुई, पी.एस.सी. राजस्थान स्कूल लेक्चरर फिर H.M. सेकेंडरी स्कूल क्लियर की। पोस्टिंग मिला और गैजेटिड पोस्ट पर 32 साल बीत गए। भाभी-भाई को बस राखी भेजने चिट्ठी लिखन तक संबंध रह गया था। एक दिन वह भी आया कि रूपा प्रमोशन लेकर डिप्टी डायरेक्टर एजुकेशन बन गई। भाभी उन दिनों बहुत बीमार थी, वेदांता में भर्ती थी भाई का फोन आया रूपा तुम्हारी भाभी तुमसे बात करना चाहती है। जी भैया उधर से भाभी की आवाज आई सुना है डी. डी बन गई। जी भाभी आपके आशीर्वाद से। मेरे आशीर्वाद से या मेरे डंडों से। भाभी की अंतिम समय में भी आवाज बहुत जानदार थी। रूपा बोली भाभी आप के डंडे भी मेरे लिए आशीर्वाद बन गए थे। मेरा जीवन बनाने वाली आप हैं। यह कहकर रूपा भावुक हो उठी। भाई ने फोन भाभी के हाथ से ले लिया। शायद भाभी अंतिम समय के नजदीक थी।

उपनिदेशक (सेवानिवृत्त)
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9413725779

छैल-छबीले दिन बचपन के

❐ भगवती प्रसाद गौतम

उम्र रही होगी यही कोई पाँच-छह साल जब मैं सन् 1950 ई. में इस शहर (कोटा) में आया, मगर गाँव में बीते बचपन की मीठी यादें आज भी ताजा-ताजा जैसी ही हैं। यों 5 अक्टूबर, 1943 को मोखमपुरा, जिला बारां (तब कोटा) में जन्म हुआ। लेकिन स्कूल में जन्म तिथि 28 सितम्बर दर्ज हो गई सो हो गई। गाँव के जिस कमरे में जनमा, उसे छाछ वाला घर कहा जाता था। संयुक्त परिवार के अधिकांश बच्चे उसी घर में जन्में।

उसी से जुड़ी बड़ी तिबारी में पिता मदनलाल जी त्रिवेदी भगवान विष्णु की ऐतिहासिक मूर्ति के समक्ष नित्य पूजन-अर्चन करते थे। ऐतिहासिक इसलिए कि वह दस-ग्यारह इंची पीतल की मूर्ति ननिहाल (सारथल) के एक मुस्लिम भाई ने अपने ही हाथों से ढाली थी और लगभग नौ दशक पहले मेरी माँ (ओमकारी देवी) को विवाह के समय तोहफे के रूप में भेंट की थी। तभी से इधर जो सेवा शुरू हुई, उसका निर्वहन आज तक हमारे इस गृह नगर में हो रहा है। खासियत यह भी कि उसी तिबारी में मैंने दूध-राबड़ी और पोस्त दाने का लपटा खाना सीखा पर अब सब बदल गया है। न वह बड़ी तिबारी है, न वह छाछ वाला घर। गारे-मिट्टी से चिने कच्चे मकान की जगह चूने-सीमेंट की दीवारें खड़ी हो गई हैं और उन पर छतें बिछ गई हैं।

पिता जी और बड़े चाचा जमुनालाल जी गाँव में ही रहते थे। थोड़ी-बहुत खेती थी और आसपास के इलाके में पौरोहित्य की जिम्मेदारी भी। इधर पोल के चबूतरे पर मेरी भी एक अलग दुनिया थी जिसमें गोगाड़ी (चकमक पत्थर) की सफेद भूरी गायों और पीपल के पत्तों की भैंसों की कतारें सजी रहती थी। कोई भी जाने-अनजाने में ही उन्हें छेड़ देता तो मैं रो पड़ता था और देर तक सुबकता रहता था।

वैसे कभी-कभार गाँव से बाहर भी जाना होता तो मुझे हरे-भरे लहलहाते खेतों, पंख फड़फड़ाते चिड़ी-चिड़कलों, खिले-खिले फूलों पर मंडराते भौंरों को निहारना या कोयल, कबूतरों, मोरों की आवाजों की नकल करना बहुत ही अच्छा लगता था। पर यह सब याद करते हुए अब समझ में आता है कि रचनात्मकता बच्चों की एक इंस्टिंक्ट, एक नैसर्गिक प्रवृत्ति होती है। शायद इसी के चलते मैंने कभी मुँह से ढोलक की धुन उठाई, पंगेरी (सरकंडे) की बैलगाड़ी बनाई और कभी काठ की घिंसौड़ी (दो मुंही लकड़ी) को भी खेल का जरिया बनाया। पाती-पाती, छिपन-छिपाई, कुलाम-डाली, घेरा-तोड़, गुल्ली-डंडा, कबड्डी आदि तो गाँव में खूब चलते ही थे। ऐसे ही कभी बरसाती झरनों में अठखेलियाँ करते हुए भीगना, बेर-करींदों के झाड़ों-झुरमुटों में भटकना, मक्का के खेत में भुट्टे सेक-सेककर खाना, डेंगड़ो-मचानों पर चढ़कर गोफन से सुगे तोते उड़ाना जैसी हरकतें आज भी एक अजीब-सा रोमांच पैदा कर जाती है।

गाँव में कोई स्कूल नहीं था। छोटे चाचा नंदकिशोर त्रिवेदी इसी शहर में राज्य के सहकारी विभाग में इंस्पेक्टर के पद पर तैनात थे। बड़े भाई साहब जगदीश प्रसाद और रम्मू (चचेरे) भाई साहब पहले से ही उनकी छत्र-छाया में थे। जून (1950) के आखिरी सप्ताह में वे मुझे भी ले आने के लिए गाँव पहुँचे। मैं गाँव से कभी निकला नहीं था। निकला भी तो बस आसपास के खेड़ों-बस्तियों या ननिहाल तक। मगर अब की बार चला शहर को। पहले बैलगाड़ी से छीपाबड़ोद, फिर प्राइवेट बस से सालपुरा स्टेशन (कोटा-बीना लाइन)। लेकिन काफी इंतजार के बाद पहली-पहली बार लंबी-लंबी पटरियों पर धड़धड़ाती और काला स्याह धुआं छोड़ती ट्रेन आती दिखी तो मैं ऐसा डरा कि चीखते हुए भाग खड़ा हुआ, प्लेटफार्म से बहुत दूर। जब इंजन आगे निकल गया और धीरे-धीरे ट्रेन रूक गई तो चाचा जी ने बड़े प्यार से हंसते-पुचकारते हुए मुझे गोद में उठा लाए और ढाँढ़स बंधाते हुए डिब्बे में चढ़कर मेरे पास ही बैठ गए।

महावीर (चचेरा भाई) उम्र में बराबर-सा था, चार-पाँच माह का अंतर होगा। हम दोनों का दाखिला चंद्रघटा प्राइमरी स्कूल में हुआ, पर कुछ दिन बाद ही वह निकट के ही पाटनपोल मिडिल स्कूल में मर्ज (शामिल) हो गया। पहली कक्षा के दो खंड थे। हम दोनों एक ही खंड में रहे। हमारे प्रभारी कक्षा-अध्यापक थे

www.rajsevak.com

रामनारायण शृंगी और दूसरे के फारूख साहब। वे दोनों पंडित जी व काजी जी के नाम से जाने जाते थे। जितना प्यार करते थे उतना ही अच्छा पढ़ाते भी थे। संयोग यह भी कि उस समय चंबल नदी पूरी शान से लबालब बहती थी। नाव घाट स्कूल के नजदीक ही था और कुछ ही दूरी पर रियासत कालीन गढ़ के पीछे 'कोटा बेराज' (मिट्टी का बांध) का निर्माण शुरू हो चुका था। चौबीसों घंटे भारी भरकम मशीनों की कुतूहल भरी धड़-धड़ आवाजें दूर-दूर तक सुनाई देती थी।

मेरा एक सहपाठी था गोविंद भाटिया। वह बहुधा सभी बच्चों पर हावी रहता था। उसकी इच्छा को नजरअंदाज करने का मतलब था कक्षा में अकेले पड़ जाना। एक दिन उसी के कहने पर हम यानी वह खुद, शंभू सोनी, प्रभु, महावीर और मैं चुपचाप सदर दरवाजे से निकले और चंबल के किनारे-किनारे उस दिशा में चल पड़े जिधर मशीनों का शोरगुल व जमावड़ा था। मगर हैडमास्टर दिलीपसिंह जी को इसकी भनक लग गई। बस फिर क्या था, हम चारों-पाँचों ऊपर-नीचे दौड़ते आगे-आगे और हैडमास्टर साहब व शृंगी जी पीछे-पीछे। मगर हम चकमा देकर बोरबाड़ी (बोहरा मोहल्ला) में घुसे और सीधे अपने-अपने घर जा पहुँचे।

अगले दिन हैडमास्टर साहब ने दरवाजे पर ही परेड ले ली और बोले-'तुम्हारे बस्ते कहाँ हैं?... अब तो अपने-अपने पिताजी को बुलाकर लाओ, तभी स्कूल में बैठोगे।' आखिर अन्य सहपाठियों के अभिभावकों की तरह चाचा जी भी खुद आकर उनसे मिले, तब हमारे बस्ते हमें लौटाए गए। सच, आज भी मैं इस अपराध-बोध से मुक्त नहीं हो सका हूँ।

पहली-दूसरी कक्षा तक हम नीचे के बरामदों में ही पढ़े, मगर तीसरी में पहुँचते ही हमें दोनों खंडों को हवेली जैसी बूढ़ी इमारत की ऊपरी मंजिल पर बिठा दिया गया। एक बार पंडित जी व काजी जी ने इशारों-इशारों में पाँच-छह बच्चों को कतार में खड़ा किया और दैनिक प्रार्थना-गायन का अभ्यास करवाया-

वह शक्ति हमें दो दया-निधे,
कर्त्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर-सेवा, पर-उपकार में
हम जग-जीवन सफल बना जावें।

(मुरारी लाल शर्मा 'बालबंधु')

...और प्रार्थना गायकों की नई टीम तैयार। तीसरी कक्षा से यह शुरुआत हुई और आठवीं कक्षा (1958) तक नीम के घने पेड़ के नीचे गोलाकार चबूतरे पर रोज-रोज हम ही यह लीक पीटते रहे। इसी वजह से कभी स्कूल देर से पहुँचने या अनुपस्थित रह जाने पर प्रताड़ना भी सहनी पड़ी। लेकिन इसका सुखद पक्ष यह रहा कि हमें अपनी क्षमता का अहसास तो हुआ ही, साथ ही मंच पर प्रस्तुति देने का हौसला भी बढ़ा।

हाँ, याद आया, सातवीं कक्षा में मेरा एक खास दोस्त था सतीश दाधीच, बड़ा ही कुशाग्र। बहुधा हम दोनों ही पहले-दूसरे स्थान पर रहते थे। शिक्षकों का ही नहीं, प्रधानाध्यापक जी का भी हमें काफी स्नेह मिला। एक बार किसी बात पर हम झगड़ पड़े। कोई सप्ताह भर आपस में नहीं बोले। बात हेडमास्टर साहब तक पहुँच गई। उन्होंने दोनों को बुलवाया और अपने कमरों में बिछे फर्श पर बिठाया। फिर एक कैरम बोर्ड बीच में रखवाकर कहा-सुना है कि तुम लड़ते हो? लड़ना हो तो अब लड़ो, इन गोटियों से। देखें, कौन जीतता है और खेल-खेल में ही हम वापस गहरे दोस्त हो गए। कैसी अद्भुत भूमिका थी गुरुओं की उस कालखंड में।

अंग्रेजी की पहली-पहली शुरुआत छठी कक्षा में हुई। अध्यापक थे अब्दुल हक साहब, ढीला-ढाला कुरता-पायजामा और आँखों पर चश्मा, बस हमेशा यही हुलिया, पर थे बहुत ही कुशल और परिश्रमी। ए-बी-सी, राइम, दिस-दैट, नाउन-प्रोनाउन, वर्ब, सेंटेंस.... धीरे-धीरे इस स्थिति तक जा पहुँचे कि एक दिन उन्होंने ब्लैकबोर्ड पर लिखा-'सीता दूध नहीं पीती।' और बोले- 'अंग्रेजी में वाक्य बनाओ।

थोड़ी देर बाद ही एक-एक बच्चे को टटोला। 'नॉट ड्रिंक', 'इज नोट ड्रिंक', 'डू नोट ड्रिंक' यानी वर्ब (क्रिया) की सही फॉर्म पर बात अटकती रही और सब खड़े होते गए। मेरी भी बारी आई। मैं एक साँस में कह गया-सीता इज नॉट ड्रिंक मिल्क।

हक साहब हँसे और बोले- 'वाह रे पट्ठे। लगा दे सबकी पीठ पर एक-एक डुक। जोश-जोश में मैं हुक्म बजाने लगा। पर अब नंबर पर था मेरा भाई महावीर, डुक तो लगाना ही था मगर मेरा वार कुछ हल्का रहा। हक साहब तुरंत ताड़ गए। अंगुली से इशारा कर बुलाया-इधर आओ, वैसे नहीं, ऐसे लगाओ और उनका जो डुक मेरी पीठ पर पड़ा, उसका एहसास आज भी मुझे झकझोर जाता है। मगर इस घटना ने सिखा दिया कि सामूहिक क्रिया-कलापों में हमें निष्पक्ष ही रहना चाहिए।

इस हकीकत से भी बालपन में ही रूबरू होने का मौका मिला कि अधिकांश बातें परिवेश से ही सीखी जाती हैं। परिवेश ने ही मुझमें सृजन की ललक पैदा की। सच कहूं तो जगदीश भाई साहब ही मेरे खास प्रेरक व प्रशंसक रहे। छोटे चाचा को भी पढ़ने-लिखने का चाव था। उन्हीं से प्रेरित होकर भाई साहब ने लेखन में रुचि ली। वे आज भी यदा-कदा कुछ न कुछ लिखते रहते हैं। उन्हें देख-देखकर ही मैं भी तुकें मिलाने

अनमोल वचन

पान सड़ै, घोड़ा अड़ै, बिद्या बीछठ जाए,
जगरा म बाटी बळै, खै चैला किण दांय।।

गुरुजी ने शिष्यों से प्रश्न किया कि विद्यार्थियों उपर्युक्त कहावत में चार प्रश्न किए गए हैं और चारों का उत्तर एक ही है। विद्यार्थियों को गुरुजी ने चारों प्रश्न समझाए-

पहलाः पान अर्थात पत्ता क्यों सड़ जाता है?
दूसराः घोड़ा क्यों अड़ जाता है?
तीसराः विद्या किसी से क्यों दूर हो जाती है? अर्थात विद्या हम भूल क्यों जाते हैं?
चौथाः आग में बाटी जल क्यों जाती है?

उपर्युक्त चारों प्रश्नों का उत्तर एक ही है। गुरुजी ने समस्त बच्चों से इन प्रश्नों का एक उत्तर पूछा लेकिन कोई भी उसका उत्तर नहीं दे पाया। अतः गुरुजी ने चारों प्रश्नों को समझाकर उत्तर दिया। 'क चैला फेरा नहीं'

(i) पान को बार-बार बदलना अर्थात फेरना होता है। अन्यथा वह सड़ जाता है।
(ii) घोड़े को दैनिक नियत समय पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर टहलाना पड़ता है, अन्यथा वह समय आने पर नहीं चलेगा अर्थात अड़ जाएगा।
(iii) इसी प्रकार एक विद्यार्थी से विद्या भी निरन्तर अभ्यास नहीं करने से उससे बिछड़ अर्थात अलग हो जाती है अर्थात वह भूल जाता है।
(iv) बाटियाँ आग पर रखने के बाद बार-बार बदलना पड़ता है अन्यथा ये जल जाएगी।

उपर्युक्त अनमोल वचन के अनुसार समस्त विद्यार्थियों को निरन्तर अभ्यास जारी रखना है।

– डॉ. पूरणमल माली, प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
धवली, जयपुर (राज.)
मो: 8949336024

www.rajsevak.com

लगा। इसी अधकचरी रचनात्मकता के बलबूते उस दौर में एक उपलब्धि भी हुई।

हुआ यों कि 1957-58 के कालखंड में जिला स्तरीय स्कूल टूर्नामेंट्स के साथ ही अन्त्याक्षरी की प्रतियोगिता भी सम्पन्न हुई। उस दौर में फिल्मी गानों की नहीं, शुद्ध-साहित्यिक कविताओं की पंक्तियाँ ही मान्य होती थी। कवि हृदय शिक्षक सूरजमल शर्मा के मार्गदर्शन में चार लड़कों की टीम बनी। इसमें मेरे अलावा तीन लड़के गोविंद, सतीश और गिरिधारी भी शामिल थे। लंबे संघर्ष के बाद हम फाइनल में जा पहुँचे। अब मिडिल स्कूल लाडपुरा की टीम हमारे सामने थी। निर्णायक थे उस जमाने के जाने-माने विद्वान सदाशिव जी पाठक। सामने वाली टीम की कविताओं का अंतिम वर्ण 'थ' होता था जिसका उत्तर हमें 'थ' वर्ण से शुरू होने वाले पद्यांश से ही देना जरूरी था। दोनों टीमें बराबर अंकों पर थी। समय भी लगभग समाप्ति पर ही था। हम एक मुकाम पर आकर रूक से गए थे क्योंकि हमारे पास कोई काट बची ही नहीं थी। मगर अचानक ही मेरा हाथ ऊपर उठ गया। निर्णायक जी ने कहा-हाँ, बोलो। जो पंक्तियाँ तत्काल मन में उपजीं, मैंने वही उगल दीं-

थी गंदी-सी कुटिया मेरी,
लिपी लाल-पीली माटी।
सन के पौधे को देखा है,
बनी हुई उसकी टाटी।।

लाडपुरा टीम के खजाने में अब 'ट' वर्ण का कोई उत्तर शेष नहीं था। जुंबिश भरे माहौल में सन्नाटा छा गया। पाठक जी उस ओर टकटकी लगाए रहे और पर्याप्त समय तक उत्तर की प्रतीक्षा करते रहे। लेकिन अनायास ही टाइम कीपर की घंटी बज गई और हम जीत की खुशी में उछल पड़े। पलक झपकते हमारे शिक्षकों ने हमें कंधों पर उठा लिया।

इसी बीच लाडपुरा के हैडमास्टर न्यादर सिंह भी आ गए और उन्होंने भी हम सभी बच्चों के कंधे थपथपाए और हमारे हैडमास्टर साहब से कहा- भाई दिलीप सिंह, मेरे स्कूल का बरसों पुराना रेकॉर्ड आज तुम्हारे बच्चों ने तोड़ दिखाया। अब चलो, दोनों टीमों को हम दूध-जलेबी के साथ सम्मानित करते हैं। सच, दो संस्था प्रधानों की इस खेल-भावना ने सभी को अभिभूत कर दिया।

यह भी बताता चलूं कि इस सफलता पर हमारे हैडमास्टर साहब इतने खुश थे कि उन्ही के निर्देश पर सूरज मल शर्मा ने एक दिन चंबल की उसी तलहटी (जहाँ वे हमें अंत्याक्षरी के रिहर्सल के लिए ले जाया करते थे) में अपने हाथों से चूरमा-बाटी बनाया और बड़े प्यार से आग्रह कर-करके खिलाया। यद्यपि आज शर्मा जी संसार में नहीं हैं और उस स्थान पर 'गोदावरी धाम' के नाम से एक हनुमान मंदिर विकसित हो चुका है, मगर तलहटी में छलछलाती चंबल का वह दृश्य और शर्मा जी का वह स्नेहिल आशीर्वाद आज भी इधर जस का तस मन में विद्यमान है।

विद्यालय भवन बहुत पुराना था किंतु अच्छे अध्यापकों और मेहनती सहपाठियों की वजह से ही वहाँ नित्य नई ताजगी व ताकत का अनुभव होता था। सृजन का रास्ता भी वहीं से खुला। इसी के बाद अवसर मिला शहर के ही नामी विद्यालय न्यू हाई स्कूल (अब महात्मा गाँधी उच्च माध्यमिक विद्यालय) में पहुँचने पर। उसी अवधि का स्काउटिंग से जुड़ा एक प्रसंग याद आता है। स्काउट हैड क्वार्टर आज भी विशाल तालाब 'किशोर सागर' की पाल पर स्थित है। वहाँ एक बार पेट्रोल लीडर ट्रेनिंग कैम्प (1959-60) में भाग लेने का मौका मिला। हमारी टोली का नाम था 'अश्व टोली।' पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम व संवेदनशीलता विकसित किए जाने के ध्येय से ऐसे ही नाम चुने जाते थे। समस्त कार्यकलाप दल भावना से होते थे। खास बात यह रही कि छोटी-बड़ी अधिकांश गतिविधियों में हमारी टोली ही बाजी मार लेती थी।

एक दिन शिविर सज्जा में हमारी टोली को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया। लेकिन यह क्या, शिविर प्रभारी ने तुरंत दूसरा आदेश सुना दिया-पिछली रात 'अश्व टोली' ने सारे जूठे व बिन मंजे बर्तन तालाब के जल में छिपाकर पत्थरों से ढक दिए और सभी सदस्य चुपचाप शिविर ज्वाल (कैम्प फायर) में आ बैठे। इसलिए इनकी शिविर सज्जा की 'प्रशंसा' वापस ली जाती है और दूसरे नंबर पर रही 'खरगोश टोली' को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया जाता है। जैसा कि स्वाभाविक था, हमारे चेहरे एकदम मुरझा गए क्योंकि हमारी चोरी-चालाकी पकड़ी गई थी। हम स्काउटिंग के खास संदेश सेवा और ईमानदारी से मुकर गए थे। हमने अपने गुरुओ को ही नहीं, स्वयं को भी धोखा देने का अपराध किया था।

जब-जब जैसे-जैसे अवसर मिले, नई-नई बातें सीखने को मिलीं और इसी तरह अनुभवों का विस्तार होता गया। शिक्षा अनुभवों का विस्तार ही तो है। इसी के चलते हाई स्कूल परीक्षा (1960) से पूर्व वार्षिक उत्सव एवं विदाई समारोह सम्पन्न हुआ तो शिक्षकों-अभिभावकों के आशीर्वाद से मुझे एक ही मंच पर श्रेष्ठतम परीक्षा परिणाम, हिंदी व अंग्रेजी हस्तलेख, संगीत, अभिनय, चित्रकला, सर्वश्रेष्ठ स्काउट आदि के साथ ही स्वरचित कविता-पाठ जैसे नौ पुरस्कार प्राप्त हुए तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा। कदम-कदम सफर जारी रहा तो सफलताओं-असफलताओं का सिलसिला भी साथ ही बढ़ता रहा। ....और इसी के चलते वह दिन भी आया जब एक बाल काव्य-कृति 'गीत शान से गाओ' पर राजस्थान साहित्य अकादमी का पहला शंभूदयाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार (1979-80) मेरी झोली में आ पड़ा। इसी के साथ-साथ हिंदी साहित्य की अन्य विधाओं में भी निरंतर सृजन हुआ, जो आज भी चल रहा है।

वस्तुतः जीवन के सच्चे पाठ बालपन में ही सीखने को मिले और वे भी छोटे चाचा के वत्सल सान्निध्य में। तीन भाइयों की संतानों को एक चूल्हे पर बड़ा करना, एक लालटेन के आसपास बिठाकर पढ़ने-लिखने के संस्कार देना, प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में उस ताकत का संचार करना जो अपने पांवों पर खड़े हो जाने के लिए संबल बनी। आज कहाँ हैं प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के ऐसे मूल्य? पर हाँ, आगे ऐसे ही दायित्व को निभाया बड़े भाई साहब ने, जिनके आत्मिक मार्गदर्शन में मैं अजमेर के दयानंद कॉलेज से एम.ए. चित्रकला (1967) की डिग्री (राजस्थान वि.वि.) प्रथम श्रेणी एवं योग्यता सूची में द्वितीय स्थान के साथ हासिल कर सका और अध्ययन-अध्यापन के कर्मक्षेत्र से जुड़कर अंततः अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी के रूप में सेवानिवृत्त हुआ। लेकिन सच यही है कि इस पड़ाव पर आकर भी अपनी जन्मभूमि और इस शहर की धरती पर गुजरे तितलियो जैसे छैल-छबीले बचपन के वे दिन आज भी यादों में कौंध उठते हैं और बरबस ही रोमांचित कर जाते हैं।

अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
1-त-8 अंजलि दादाबाड़ी, कोटा (राज.)-324009
मो: 9461182571

www.rajsevak.com

बड़ी दीदी

❐ पुष्पलता शर्मा

'चा ची की चपरासन', 'चाची की चपरासन' कहकर चिढ़ाने वाले शब्द आज भी जब मेरे कानों में गूँजने लगते हैं तो मैं आज से 62 वर्ष पूर्व अतीत में लौट जाती हूँ। मैं सात वर्ष की थी। अतिरिक्त कक्षा में पढ़ाई हेतु जाने वाली अपनी चाची के साथ मैं रोज शाम को स्कूल जाती। वहीं कक्षा में बैठे-बैठे सो जाती। कब कालांश पूरा हो जाता, पता ही नहीं चलता। जब सभी छात्राएँ अपने-अपने बैग उठाकर जाने की तैयारी करती तो सबसे पहली बैंच पर सो रही मैं उनके हाथ के एक मधुर स्पर्श से जग जाती। बहुत ही प्यार भरे शब्द मुझे सुनाई देते-'उठो बेटा, अब घर जाना है।' मैं अधमूंदी आँखों से उठने का प्रयास करती तो पुनः वही मधुर स्वर सुनाई देता-'अरे शशि, इस बच्ची को क्यों परेशान करती हो।' चाची कहती-दीदी, मैं ससुराल से आती हूँ। इसको साथ जाना जरूरी है। 'ओ, हो, तो यह नन्हीं सी बोडी गार्ड' एक धीमा सा हँसी का ठहाका पूरे वातावरण में गूँज उठता।

वो मधुर स्पर्श एक संस्थाप्रधान का था जो संबंधित विषय अध्यापिका के अभाव में कोर्स पूरा कराने के लिए शाला समय पश्चात शाला में ही एक कक्ष में बोर्ड की अतिरिक्त कक्षाएँ लेती थी, समर्पित भाव से, बिना किसी मानदेय के। दो वर्ष बाद मैंने उसी विद्यालय में कक्षा पाँचवीं में प्रवेश लिया। छः वर्ष उसी विद्यालय में पढ़ने के बाद 11 वर्ष बाद मैं पुनः उसी विद्यालय में एक नए रूप में आई। अब मैं छात्रा नहीं बल्कि एक शिक्षिका थी। लगभग दो वर्ष उस महान विभूति के सान्निध्य में रहकर मैंने बहुत कुछ देखा, सीखा। मेरे स्मृति पटल पर समय-समय पर सभी अमिट दृश्य उभर कर सामने आने लगते हैं तो मैं अतीत के स्मृति सागर में डूबकी लगाने लगती हूँ जहाँ हर तरल-सरल लहर मुझे हर्षातिरेक से तरंगित कर देती है-

1. आधी छुट्टी की घंटी बजते ही हम बच्चियाँ जल्दी से अपना टिफिन पूरा करके झूले और फिसलपट्टी के पास एकत्र हो जाती। दीदी स्वयं खेल मैदान में आ जाती। हम एक पंक्ति में खड़ा करके बारी-बारी से पाँच-पाँच झूले खाने को कहती। इस पंक्ति में उनका एक बेटा और बेटी भी होते। उस समय मेरा बालमन समझ नहीं पाया लेकिन अब समझ में आया कि दीदी के चंचल छोटे बेटे को लेकर हम बच्चियों के मन में कोई हीन भावना न आ जाए इसलिए दीदी आधी छुट्टी में स्वयं उपस्थित रहती। अपने बच्चों में और हम बच्चियों में कोई फर्क नहीं समझती न ही हमें कोई शिकायत का मौका देती।
2. हमारी स्कूल और पुलिस थाने के बीच एक ऊँची दीवार थी। हम छोटी बच्चियों को स्कूल की दूसरी मंजिल पर जाने से सख्त मनाई थी। पुलिस के नाम से कभी-कभी हमें डराया भी जाता था। एक दिन आधी छुट्टी में हम सहेलियाँ भाग दौड़ खेलते-खेलते दूसरी मंजिल पर पहुँच गई; वहाँ पुलिस थाने में एक पेड़ पर हम सबने एक उलटा लटका हुआ चोर देखा। हम सब इतना डर गई थी कि बड़ी कक्षा की छात्राओं ने हम सबको पकड़ कर बड़ी दीदी की ऑफिस में खड़ा कर दिया। बड़ी दीदी ने हम डरी हुई सभी बच्चियों को प्यार से समझाया। शायद तीन चार दिनों की छुटिट्याँ रही होगी। जब हम स्कूल पहुँचे तो थाने की दीवार काफी ऊँची बना दी गई थी। बड़ी दीदी को कैसे सहन होता कि उनकी बच्चियाँ थाने में किसी दृश्य को देखकर डरे तथा उनके मानसिक विकास पर बुरा असर पड़े।
3. प्रार्थना सभा में बड़ी दीदी हमेशा उपस्थित रहती। प्रार्थना बोलने के लिए हर एक कक्षा की बारी क्रमवार आती थी तथा प्रत्येक छात्रा को रजिस्टर में अंकित रोल नम्बर के अनुसार प्रार्थना के लिए मंच पर आना अनिवार्य था। इन सबका लेखा-जोखा कक्षा मॉनिटर के पास होता था। प्रत्येक छात्रा को मंच पर बेझिझक बोलने का पूर्वाभ्यास ही दीदी का एकमात्र उद्देश्य था।
4. सन 1965 में भारत पाक युद्ध के समय बड़ी कक्षा की छात्राओं के लिए स्कूल में राइफल ट्रेनिंग अनिवार्य कर दी गई थी। छात्राओं को प्रशिक्षण देने के लिए पास के थाने से दो कर्मचारी आते थे तथा स्टेण्ड पर राइफल रखकर निशाना साधना सिखाते थे। कुछ दिनों बाद हमारी परीक्षा ली गई। मिट्टी के कट्टों पर राइफल रखकर लेटकर हमें सामने की दीवार पर बने चिह्न पर निशाना लगा था। बड़े उत्साह से हम छात्राओं ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। उस समय स्कूल में NCC या NSS, स्काउट गाइड या बुलबुल जैसी गतिविधियाँ प्रारम्भ नहीं थी। यह राइफल्स ट्रेनिंग हमें किस आदेश के तहत दी गई इसकी जानकारी भी हमारे लिए आवश्यक नहीं थी, पर इस गतिविधि के तहत दीदी ने हम छात्राओं में स्वाभिमान और देश प्रेम की भावना का बीज-वपन सहजता से कर दिया।

   15 अगस्त और 26 जनवरी राष्ट्रीय दिवस के तहत हम शहर के स्टेडियम में पीटी परेड के लिए ले जाई जाती और हमेशा शहर की अन्य स्कूलों को पछाड़ कर हमारी स्कूल अव्वल आती। बड़ी दीदी हमेशा स्वाधीनता दिवस पर स्कूल में सर्वोच्च अंक लाने वाली छात्रा के हाथों से ध्वजारोहण करवाती। शायद दीदी का उद्देश्य योग्यता को सम्मान देना और छात्राओं में प्रतिस्पर्द्धा की भावना को बढ़ावा देना ही था।
5. सन 1979 ई. में मैंने एक शिक्षिका के रूप में इस शाला में कार्यग्रहण किया तो मैं बड़ी दीदी की कार्यशैली, व्यावहारिकता प्रबन्ध कुशलता और सादगी से बहुत प्रभावित हुई। दीदी ने तीन-तीन पीढ़ियों को शिक्षित किया।
6. मुझे नवीं, दसवीं व उच्च कक्षाओं में हिन्दी विषय पढ़ाने को दिया गया। हम सभी अध्यापिकाएँ छात्राओं की गृहकार्य को समय पर जाँचने हेतु प्रतिबद्ध थी। बड़ी दीदी सदैव हमसे पहले अपने ऑफिस में उपस्थित मिलती। उनकी मेज पर कक्षावार गृहकार्य की कॉपियों का ढेर लगा रहता। एक चपरासिन उनके पास जमीन पर बैठकर कॉपियों पर मोहर लगाती रहती। मैं इतने

www.rajsevak.com

ध्यान से छात्राओं की कॉपियाँ जाँचती पर पता नहीं एक-दो अशुद्धियों पर दीदी लाल गोला लगा ही देती। इतनी पैनी दृष्टि मैंने किसी अधिकारी की नहीं देखी। अशुद्धि संशोधन और सुधार कार्य पर जोर देना दीदी की स्वाभाविक दिनचर्या थी। उनकी मान्यता थी कि गृह कार्य के आधार पर हम छात्राओं का ही नहीं स्वयं अपना मूल्यांकन करते हैं कि छात्राओं ने कितना, किस रूप में हमारे पढ़ाए हुए को ग्रहण किया है। गृह कार्य की कॉपियाँ देखकर एक अध्यापिका का मूल्यांकन भी सहज ही किया जा सकता है। बड़े धैर्य से दीदी हमारी कोई कमी को सबके सामने न कहकर अकेले में हमें समझाती।

7. बड़ी दीदी का कक्षा निरीक्षण का तरीका सबसे अलग था। आजकल तो ऑफिस में सी.सी.टी.वी. कैमरे से पूरे कैम्पस की जानकारी अधिकारी को कुर्सी पर बैठे ही मिल जाती है। दीदी के दिमाग में पता नहीं कौनसा ट्रांसमीटर लगा था कि उन्हें तुरन्त आभास हो जाता कि कौन कहाँ पहुँचा है, कौन नहीं, शोरगुल किस कक्षा से आ रहा है। दीदी फुर्ती से वहाँ पहुँच जाती। उन्हें कभी किसी को डाँटने की आवश्यकता भी नहीं पड़ी। दूर से आती हुई उनकी परछाई मात्र ही कक्षा को शान्त करने के लिए काफी थी। नीचे ग्राउण्ड में खड़े-खड़े ही उनकी तीक्ष्ण दृष्टि ऊपर की कक्षाओं का निरीक्षण कर लेती। गहन कक्षा-निरीक्षण के दौरान दीदी कक्षा की खिड़की के पास खड़ी रहकर हर गतिविधि का निरीक्षण करती। पढ़ाते समय किसी कक्षा में प्रविष्ट होकर छात्राओं के समक्ष किसी अध्यापिका को कुछ कहना दीदी की आदत में नहीं था। अपने ऑफिस में बुलाकर संबंधित को अच्छे से समझाना तथा निरीक्षण रिपोर्ट दिखाना उनका अपना तरीका था।
8. विभागीय आदेशों की अक्षरशः पालना करना और ईमानदारी से उनकी क्रियान्विति करवाना दीदी अपना कर्त्तव्य समझती थी। मेरे अध्यापन काल में आंतरिक मूल्यांकन योजना शाला में लागू की गई थी। मुझे शारीरिक प्रवृत्ति में 'योगासन' और साहित्यिक प्रवृत्ति में 'कविता पाठ' प्रवृत्ति सौंपी गई। इन प्रवृत्तियों के लिए सप्ताह में दो कालांश रखे गए। छात्राओं का मूल्यांकन योजनानुसार प्रार्थना सभा में किया जाता। 15 अगस्त को दीदी ने पूरी स्कूल के सामने योगासन प्रवृत्ति का प्रदर्शन करने के लिए मुझे कहा। मैंने छात्राओं को अच्छे से तैयार किया। योगासन में सूर्य नमस्कार के बाद जब छात्राओं को मत्स्यासन का आदेश मैंने दिया, उस समय मैंने मत्स्यासन उच्चारण किया तुरन्त दीदी ने मेरे नजदीक आकर मेरे उच्चारण को शुद्ध किया। किसी को कानों कान तक खबर नहीं पहुँची। आज भी योगासन के तहत 'मत्स्यासन' का नाम आता है तो मुझे एक झटका सा लगता है। तुरन्त मुझे अशुद्ध उच्चारण का आभास हो उठता है। अशुद्धि संशोधन का अनोखा तरीका था दीदी का, जो उम्र भर किसी को याद रहता है।
9. दीदी की स्मरण शक्ति बड़ी गजब की थी। हम सब छात्राओं को व्यक्तिगत रूप से नाम लेकर बुलाना तथा आप कहकर सम्मान देना दीदी का स्वभाव था। दीदी कहा करती थी कि 'हम सामने वाले को सम्मान देंगे तो वही सम्मान लौटकर हमें मिलेगा।' छात्राओं को हर क्षेत्र में सम्पूर्ण विकास के अवसर प्रदान करना दीदी का ध्येय था।
10. एक बार शहर में छुआछूत को लेकर खूब हंगामा हुआ। उन्हीं दिनों बड़ी दीदी ने छोटी बच्चियों को पानी पीने के लिए अपने घर से गिलास लाने के लिए कहा- क्योंकि छोटी बच्चियाँ नल तक पहुँच नहीं पाती तथा पानी का दुरुपयोग होता। आधी छुट्टी में गाईड की बच्चियों की ड्यूटी लगा दी जाती तो सभी छोटी बच्चियों की गिलास में पानी भर कर देती। स्कूल में इस अवस्था के तीन-चार दिन बाद ही विकृत मानसिकता वाले अभिभावक कुछ व्यक्तियों को साथ लेकर आए और ऑफिस में जोर-जोर से बोलने लगे। दीदी ने उन्हें शांत किया, समझाने की कोशिश की लेकिन गलतफहमी के कारण उत्पन्न क्रोध के आवेग की तीव्रता के आगे उन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। आखिरकार दीदी ने उनसे कहा-आप आधे घंटे इंतजार कीजिए। मैं भी आपके साथ यहीं बैठी हूँ। आप अपनी आँखों से देख लीजिए, स्कूल की व्यवस्था क्या है?
जैसे ही आधी छुट्टी की घंटी बजी, छोटी बच्चियाँ अपना-अपना गिलास लेकर पानी पीने नल के पास पहुँच गई। बड़ी कक्षा की छात्राएँ छोटी बच्चियों को उनके गिलास में पानी भर-भर कर दे रही थी। दीदी ने शिकायतकर्ता अभिभावकों को बाहर भेजा दीदी स्वयं ऑफिस में बैठी रही। नल के पास का दृश्य देखकर जो शेर की तरह दहाड़ मारकर चिल्ला रहे थे, वे सब लज्जा के मारे गड़े जा रहे थे। बोलने के लिए उनके पास कोई शब्द नहीं थे, वे हाथ जोड़कर माफी माँगने लगे। असामाजिक तत्वों द्वारा फैलाए गए जाल को दीदी ने बड़ी निर्भीकता और सूझबूझ से काट दिया। उनकी हर व्यवस्था में पारदर्शिता थी।
11. एक बार स्टाफ मीटिंग के दौरान राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय स्तरीय शिक्षक शिक्षक सम्मान की चर्चा चली। बातों ही बातों में हम सबने एक स्वर में कहा-'दीदी यह सम्मान तो आपको मिलना चाहिए। सभी मापदण्डों के अनुसार....।' हमारी बात पूरी ही नहीं हुई कि दीदी तत्काल बोल पड़ी...। यह सम्मान दिया नहीं जाता लिया जाता है। अपनी उपलब्धियों को स्वयं गिनाना, अपने को श्रेष्ठ साबित करने के लिए आँकड़े जुटाना फिर सम्मानित होना मेरी दृष्टि में उचित नहीं है। मैं अपने पद पर निष्ठापूर्वक कार्य कर रही हूँ। यही मेरा सच्चा पुरस्कार है।

वहीं दिखाता सच्ची राह, जिसे न पद पैसे की चाह कथन के अनुरूप दीदी पद और सम्मान से कोसों दूर रहती थी। उनकी निष्ठा उनके प्रत्येक कार्य व्यवहार में परिलक्षित होती थी। दीदी ने अपने कुशल एवं अनुशासनबद्ध नेतृत्व के फलस्वरूप शाला का उत्कृष्ट परिणाम तथा शिक्षा विभाग के सभी आदेशों की अक्षरशः अनुपालना के कारण बीकानेर संभाग में सदैव ख्याति अर्जित की है।

सादगी ही दीदी का वास्तविक शृंगार था। हमने दीदी को सीधे पल्लू की सौम्य साड़ी में देखा। दीदी का जीवन खुली पुस्तक था। सादा जीवन उच्च विचार सदैव उनके व्यक्तित्व में झलकता था। सच है सीधी रेखा खींचना

www.rajsevak.com

मुश्किल होता है वैसे ही सादगीपूर्ण जीवन जीना बड़ा मुश्किल है। विषम से विषम परिस्थितियों में कभी दीदी ने गलत का साथ नहीं दिया। धैर्य और सहानुभूति की मूर्ति, सच्चा और सही मार्ग दिखाने वाली मार्गदर्शिका, किसी भी प्रकार के प्रलोभन से दूर त्यागमयी, आत्मनिर्भर और स्वाभिमानपूर्वक जीने का पाठ पढ़ाने वाली सच्ची गुरु एवं संरक्षक दीदी पूजनीय है, धन्य है। इस शहर की तथा इसके आसपास क्षेत्रों की कितनी ही विधवा, परित्यक्ता और जरूरतमंद बालाओं को दीदी ने अपने घर बुलाकर उन्हें पढ़ाया ही नहीं बल्कि अपने पैरों पर खड़ा होकर स्वाभिमान पूर्वक जीना भी सिखाया।

दीदी हमेशा कहा करती- 'जीवन में मिले प्रत्येक अवसर का लाभ उठाना चाहिए। मौका हाथ से निकलने पर हमें पछताना नहीं पड़े।' एक तरफ मैं अपने बेटे के अल्पायु में चल बसने के बाद पूरी तरह से टूट चुकी थी। मैंने सबको प्राध्यापक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद साक्षात्कार हेतु जाने के लिए बिल्कुल मना कर दिया था। दीदी ने मुझसे कहा-देखो, मेरे कहने से आप इंटरव्यू के लिए जाओ। ऐसा न हो कहीं अवसर हाथ से निकल जाए और बाद में पछताना पड़े।' दीदी ने मुझे सम्बल दिया, उनका कहना मैं कैसे टाल सकती थी। मैं इंटरव्यू देकर आ गई। परिणाम मेरे पक्ष में आया।

मेरी प्रथम नियुक्ति स्थानीय स्कूल में प्राध्यापक पद पर हो गई। कार्यग्रहण के समय मेरे कानों में दीदी के उपर्युक्त शब्द ही ध्वनित हो रहे थे। अगर अवसर हाथ से निकल जाता तो सचमुच मुझे पछताना पड़ता।

आज दीदी पार्थिव रूप से हमारे बीच नहीं है लेकिन उनका यशस्वी शरीर आज शहर के प्रबुद्ध वरिष्ठजनों और बालिकाओं के हृदय पटल पर विराजमान है। दीदी ने शहर की तीन-तीन पीढ़ियों को शिक्षित किया है। दीदी के जीवन से अगर हम एक ही गुण को अपने जीवन में अपनाने की कोशिश करेंगे तो यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। विलक्षण व्यक्तित्व की धनी, देवी स्वरूपा, एक आदर्श गुरु के रूप में मैं अपनी सम्पूर्ण भावनाओं सहित दीदी को नमन करती हूँ।

प्रधानाचार्या (सेवानिवृत्त)
चाण्डक रोड, नया बास,
सुजानगढ़, जिला-चूरू (राज.) 331507
मो. 9413284943

दो लघुकथाएँ

❐ डॉ. बनवारी पारीक 'नवल'

1. एक दंश यह भी

कोविड-19 में लॉकडाउन ने नानाविध मुश्किलें बढ़ा दीं। विस्थापित मजूदरों के काफिले आ जा रहे हैं। संक्रमण की प्रबल आशंका से आवागमन के साधन प्रतिबंधित होने से तथा निजी वाहन पहुँच से बाहर होने से इन्हें तो पैदल ही चलना है। कुछ महिलाओं सहित चार परिवारों की एक टोली भी 'जान है तो जहान है' के विचार से अपने क्षेत्र की ओर भागी आ रही थी। सभी कुछ न कुछ सामान लिए होते हुए भी तेजी से बढ़े जा रहे थे किन्तु उनमें से एक स्त्री जवान होकर भी नहीं दौड़ पा रही थी। उस सद्य प्रसूता के दोनों हाथों में एक-एक बच्चा था। बार-बार रुक-रुककर उसे साथ ले रही अन्य औरतों में एक वृद्धा समीप आकर बोली-'बेटी! इन जुड़वा भाइयों में से मिट्टी हुए एक को तो तू व्यर्थ ही ढो रही है। अपनी धरती में ही दफनाने की जिद छोड़, सर्वभूमि गोपाल की ही है। मान जा, हमारे बांई और बहती इस नदी में बहाकर इसके हाथ जोड़ ले।'

उस माँ के दुराग्रह और हालात भी बेहद मुश्किल होने से इस माँ ने कलेजे से चिपकाए उस लाल से विलग होने की बात मान ली। अनेक बार मुँह व माथा चूमकर एवं गले लगाकर उसे अपने आँसुओं की माला पहनाती हुई वह बावली से हुई जननी उस नदी को ही सुरसरि मानकर उसमें अपने एक लाल को बहा देती है और फिर स्वयं के आँचल को मुख में दबाकर उधर से आँखें फेरती हुई टोली संग दौड़ने लगती है।

किन्तु यह क्या... कुछ ही देर बाद वह पुनः रुकी और धम्म से नीचे जमी पर जा गिरी। पल भर में ही समीप आई सभी स्त्रियों के आगे घायल गाय जैसे अरडाकर बोली- 'हे मेरी माँ!.. यह दूसरा शिशु भी ठंडा और कठोर क्यों होता जा रहा है? देखो इसको भी सांसे नहीं चल रही है।' तब वही वृद्धा पास में आई और बच्चे को भली-भांति देखकर दहाड़ी-'हे लाडो! तुमने यह क्या किया? इस काला धागा बंधे हाथ वाले को नदी मैया के हवाले करना था, उस मोली बंधे हाथ वाले को बिचारे को जीवित को ही.....'कहती-कहती उस वयोवृद्धा ने बेहोश हो रही उस दो-दो लालों की माता को छाती के चिपका लिया और उन दोनों को चहुँओर से घेर कर लगी टोली की सभी मातृशक्तियाँ रुदन। इन दुर्दिनों में झेल रहे नित नई विपदाओं के बीच हुई इस अनहोनी से साथ के पुरुष ही नहीं, बच्चों ने भी माथा पकड़ लिया।

2. घर आई गंगा

पड़ौसी ऑफिसर शर्मा जी सेवानिवृत्त कार्यक्रम में गाँव से पधारी उनकी खुशमिजाज माँ से दो ही दिन में बढ़े मेल-मिलापवश, अनिरुद्ध ने कुछ दिन यहीं रुकने की प्रार्थना की। तभी झठ से भार्या संग बाहर आए शर्मा जी, 'हाँ बेटा मैं भी आ ही सोच रैयी छूं..' इस प्रकार बोल रही जननी को रोकते हुए, कहने लगे-'अरे! रुकेंगे कहाँ से, खबर है खूंटा है यह घर का, मुखिया बिना घर का नक्शा दो ही दिन में नहीं बिगड़ जाएगा?'

'ई खूंटा नैं अब कुंण गिणै छै नांन्या?' कहती हुई वृद्धा को टोकती हुई बहू दहाड़ी और आपकी वो चौपाल की सखियां भी तो बाट जोह रही है। अपने भोज के उपरांत जाते समय वे सब यही तो कह रहीं थी कि जल्दी भेजना, इनके बिना हमारे नहीं जमती।'

'वा ये बीनणी वा, बापड़ी बै सै ओटिकी अयां कह रही छी'क पापड़ बेलतां ऊपर होयगी, थोड़ा-घणा दिन ई ठाठ-बाट रा सुख भोगज्यो, गाँव में आबा री आगत मती करज्यो।'

तभी पौत्र कार में दादी का सामान रखने लगा और 'अरे वा, अरे वा' कहते हुए हाथ पकड़कर दादी को कार में बिठाया और फूर्र से दादी-पोता गाँव की ओर उड़ चले। उस वक्त चैन की साँस ले रहे शर्मा दम्पत्ति पर अनिरुद्ध को बड़ा रहम आ रहा था कि उनकी संतति में भी ऐसे ही संस्कार घर कर रहे हैं।

प्राध्यापक (भूगोल)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फतहनगर,
उदयपुर (राज.)-313205

www.rajsevak.com

मेरी तीर्थ यात्रा : हरि हर

❒ कल्पना

आज की व्यस्ततम् जीवन शैली में सभी आशंकाओं से अपनी आकांक्षा को आँखों के सामने साकार होते देख मेरी भक्तिमती मातुश्री का यह विश्वास ही फलीभूत हो रहा था कि अपनी पिछली खंडित तीर्थ यात्राओं में छूट गए तीर्थ दर्शन अब साकार हो रहे हैं। इस बार के मेरे तीर्थ दर्शन शृंखलाओं में हरि-हर दर्शन का दैव संयोग मेरी अमिट स्मृति बन गई। पहला द्वारिका और दूसरा सोमनाथ। पाँच हजार वर्ष पुरानी बसी द्वारिका नगरी के उस सनातन सांस्कृतिक धरोहर मंदिर का जीर्णोद्धार और पुनुर्द्धार दोनों लक्षित हो रहे हैं। स्वयं श्री कृष्ण ने अपनी माया नगरी को समुद्र को सौंप दिया। ऐसी किंवदन्ती सुनने में आई। आज भी इनके अवशेष गहरे सागर में गोताखोर देखने जाते हैं। मुख्य द्वारिकाधीश मंदिर में माँ-पुत्र के विग्रह आमने-सामने हैं। यह वही भेंट द्वारिका है जहाँ श्रीकृष्ण सुदामा का मिलन हुआ। मूक बिखरे पाषाणों से उस वैभव की कथा वर्णित की जा सकती है। प्रेम और वैराग्य के अन्तर को इतर करती सोलह कलापूर्ण परमेश्वर भगवान श्रीकृष्ण की सम्पन्नता नगरी द्वारिका, मित्र मिशाल का मस्तूल रही द्वारिका अपनी उस धरोहर की विपन्नता पर परास्त सी प्रतीत हुई।

भेंट द्वारिका के जलमग्न हो जाने की एक कथा यह भी सुनने में आई कि ऋषि वशिष्ठ की पुत्री गोमती ने मोक्ष धाम के लिए त्रिलोकपति द्वारिकाधीश को अपना वर चुना और वह चल पड़ी द्वारिका की ओर। ऋषि पुत्री की पायल की खनक पिता को उसके गमन का आभास कराती रही लेकिन सागर तट तक द्वारिका आते-आते पुत्री गोमती के पैर बालुका में धंस जाने से पायल की खनक बंद हो गयी। चिंतातुर पिता ने पीछे से देखा कि पुत्री जल बन कर रह गई और द्वारिका भी जलमग्न हो गयी- यहीं उसका मोक्ष धाम हुआ।

उदधि आप्लावित भेंट द्वारिका की एक और कथा का रसपान करने को मिला कि रूक्मणी रूठी रानी तो नहीं किंतु द्वारिका नगरी से परित्यक्ता रही। क्रोध के पर्याय ऋर्षि दुर्वासा को भोजन आमंत्रण से पहले स्वयं दम्पति रथ में जुतकर, ऋषि को लाए, बीच मार्ग में श्रमित रुक्मणी को जल की इच्छा हुई तो श्री कृष्ण ने पैर के अंगूठे से जल धार प्रवाहित कर दी। क्लान्त रुक्मणी पहले ऋषि को मनुहार करना भूल गई। क्रोधी ऋषि ने पूरे द्वारिका क्षेत्र को खारे पानी वाला वीरान क्षेत्र बन जाने का श्राप दे दिया। उसी दिन से द्वारिका ऐसी ही रणछोड़ श्रीकृष्ण की शासन स्थली रही। इसी द्वारिका में जाम्बवन्त से द्वन्द्व युद्ध में उसको पराजित कर उसी की पुत्री जाम्बवन्ती से विवाह भी किया।

भगवान शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में एक नागेश्वर भी इसी द्वारिका तीर्थ क्षेत्र में ही है। दारूक राक्षस से द्वन्द्व युद्ध करते भगवान भोले ने यह दारूक वन क्षेत्र विजय स्वरूप प्राप्त किया और नागेश्वर कहलाए। सात मंजिला मंदिर सप्त लोक और चार द्वार धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के प्रतीक माने जाते हैं। चढ़ते 56 और उतरते 52 सीढ़ी। इस नागेश्वर धाम अधिपति की 108 रुद्राक्ष मणिकाओं की माला भक्ति का द्योतक कही गई है। यही महिमा है दारूक वन द्वारिका के नागेश्वर ज्योतिर्लिंग की।

इसी तीर्थ क्षेत्र द्वारिका में अर्जुन का अहं भंग करने श्रीकृष्ण से मिलने आ रही गोपियों को काबाओं से मुक्त कराते अर्जुन प्रभु लीला से हार गया। तब श्रीकृष्ण ने उन सभी गोपियों का उद्धार किया। यही गोपी तलाई तीर्थ का माहात्म्य है, जहाँ का जल पितृ मोक्ष में सहायक माना गया है।

अहेरी के बाण के बहाने योगेश्वर श्रीकृष्ण का महाप्रयाण स्थल भालुका तीर्थ यह संकेत भर देता है कि प्रभु प्रदत्त शरीर तो नाशवान है-हमारे सत्कार्य अजर अमर रहते हैं। सबसे अनूठी बात द्वारिका ही ऐसा तीर्थ स्थल है जहाँ योगेश्वर श्रीकृष्ण के रहते गणनायक गणेश अपनी दोनों पत्नियों ऋद्धि, सिद्धि और अपने दोनों पुत्रों-शुभ, लाभ के साथ सदा से विराजित हैं।

सागर की उत्ताल तरंगों को झेलता भूमि तट सोमनाथ जिसने समय के सागर में सत्रह पराजय का प्रहार झेला फिर भी अदम्य वीर सा आज भी अजेय देदीप्यमान शिव आस्था का ज्योतिकेन्द्र बना बैठा है-यही तो है प्रकृति पुरोधा की नियति-मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में। भगवान स्वयं सोमेश्वर महादेव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में एक यह सोमनाथ ज्वार के प्रहार में भी यही उद्घोष करता है-चिदानन्द रूपो शिवोऽहम् शिवोऽहम्।। अपनी खंडित तीर्थ यात्राओं को पूर्णता देते यहाँ स्वयं को पाकर एक असीम शान्ति मानव मन की समस्त क्लान्तियों का शमन सा कर देती है। बस निढ़ाल मन इतना ही कह पाता है-नजानामि योग जपनैव पूजा, नतोऽहम् सर्वदा शम्भुतुभ्यम्, जराजन्म दुःखोऽघ तातप्यमानं प्रभोपाहि आपन्न शीशशम्भो।।

भगवान सोमनाथ के अलौकिक अनुभूति वाले दर्शन कर बाहर निकलते ही सागर तट पर दैवयोग से दिख गयी अल्हड़ यौवनोन्मत्त मृगनयनी कच्छी बाला के सांस्कृतिक शृंगार भरी देहयष्टि के सामने वहाँ सागर तट पर आयी अधुनाओं के यौवन के क्या सानी।

कवि जयचन्द के शब्दों के अनुसार सटीक आभास कर जिस पुरोधा पृथ्वीराज चौहान ने नयनान्ध होकर भी आक्रान्ता यवन को अपने तीर से ढेर कर दिया-ऐसे भक्तिवीरों के रहते भारत भूमि का सनातन धर्म सदा-सदा अक्षुण्ण ही रहेगा। यही सोमनाथ ज्योतिर्लिंग विग्रह के समक्ष सभी आशंकाओं में अपनी आकांक्षा को साकार होते देख मन गद्गद् था और जीवन धन्य अपनी आकांक्षा अंजलि पात्र अब भी भगवान आशुतोष के समक्ष इसी विश्वस्तता के कृपा प्रसाद की याचना में फैला रहा-हे महादेव! अनुनय विनय करते मैं हारी, आप जीते फिर मेरे कर पात्र क्यों कर रीते? श्री शिवम् समर्पणडस्तु! मेरी मांग मैं जानूं और वह माने!!

सोमनाथ और द्वारिका-दोनों तीर्थ स्थलों में निपट अन्तर है। एक निर्लिप्त व्यवस्था का प्राकार तो दूसरा संलिप्त का साकार स्वरूप सा अपनी-अपनी सोच, अपनी-अपनी दृष्टि यही मेरी अनुभूति। सोमनाथ चन्द्रमा और सागर ज्वार की स्वर्णाभा से सराबोर है तो द्वारिका सोलह कलापूर्ण अवतार लीलाधर श्रीकृष्ण की अमिट स्मृति। ईश्वरीय प्रसाद मेरा पुत्र-इन यात्राओं में सपत्नीक आज्ञावान बना रहा। मैंने अनुभव किया कि उसके संस्कारों में हम देवोभव ही हैं-तेज रफ्तार की आज की जिंदगी में यह सब जन्म का पोषित पुण्य हो तो कहूँगी। अकूत सम्पदा के बावजूद मेरे जो परिवार जन तीर्थ समागमों के लिए कृपण ही बने रहे, भारत को जानों की दृष्टि से उन्हें कूपमंडूक न कहूँ तो क्या कहूँ?

अध्यापिका (सेवानिवृत्त)
70, मरुधर केसरी नगर, जोधपुर (राज.)
मो: 8696042491

www.rajsevak.com

अमर शहीद सरदार भगतसिंह

❒ जयसिंह सिकरवार

मात्र तेईस वर्ष की उम्र में स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राणों को आहूत कर अमर होने वाले भगतसिंह को देशभक्ति अपने परिवार से मिली। उनके दादा सरदार अर्जुनसिंह कट्टर देशभक्त थे, क्योंकि वे स्वदेशी और स्वराज्य के प्रबल समर्थक महर्षि दयानंद से प्रभावित थे। उनकी विचारधारा से प्रभावित होकर ही वह आर्यसमाज से जुड़ गए। उस समय यह संस्था भारतवर्ष को स्वतंत्रता दिलाने के लिए अग्रणी थी। अर्जुन सिंह ने जालंधर में आर्य समाज द्वारा खोले गए 'साँईदास एंग्लो वैदिक' स्कूल में अपने दो पुत्रों अजीतसिंह व किशनसिंह को प्रवेश दिलवाया जहाँ से उन्हें देशभक्ति की शिक्षा मिली। अजीत सिंह लाला लाजपतराय के अनन्य सहयोगी बन गए, बाद में अंग्रेजों ने इन्हें लालाजी के साथ ही वर्मा की मांडले जेल भेज दिया और किशनसिंह ने क्रांति की मशाल को हमेशा जलाए रखा। किशनसिंह का विवाह विद्यावती के साथ हुआ और वे लायलपुर आ गए। भगतसिंह का जन्म इसी क्रांतिकारी परिवार में किशनसिंह और विद्यावती के यहाँ 28 सितम्बर सन् 1907 ई. को हुआ, जिस दिन उनका जन्म हुआ उसी दिन उनके पिता और चाचा स्वर्णसिंह जेल से छूटकर आए। भगतसिंह बचपन से ही सुन्दर तथा शरीर से बलिष्ठ थे। क्रांतिकारी विचारों की तो इनको घुट्टी पिला दी थी। एक दिन किशन सिंह अपने क्रांतिकारी मित्र मेहता आनंद किशोर के साथ आम का बगीचा लगाने के लिए भूमि तैयार कर रहे थे। अढ़ाई-तीन वर्ष का बालक भगतसिंह भी उनके साथ था। भगत सिंह भी मिट्टी में पौधों की तरह तिनके गाढ़ने लगे। पिता ने सहजता से पूछा कि यह क्या कर रहे हो? तब वह होनहार बालक बोला कि मैं बंदूकें बो रहा हूँ। इस अल्पायु में बालक का यह संस्कार उसके परिवार की ही देन थे, जो कि उनके क्रांतिकारी भविष्य की घोषणा कर रहे थे। उनके पिता द्वारा उनका यज्ञोपवीत संस्कार राकेश शर्मा (प्रथम भारतीय अंतरिक्ष यात्री) के दादा एवं वैदिक विद्वान तर्क वाचस्पति 'लोकनाथजी' द्वारा कराया गया। बंगाल में चौथी कक्षा पास करके उन्हें नवाँकोट लाहौर के

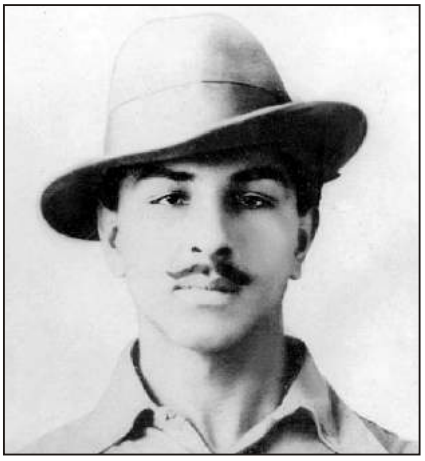

डी.ए.वी. में भर्ती कराया गया। वहाँ भगत सिंह को लाला लाजपतराय, लाल हरदयाल, सूफी अम्बाप्रसाद आदि क्रांतिकारियों का साहित्य पढ़ने को मिला। लाहौर उस समय क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र था। देशभक्ति के पारिवारिक संस्कार की भावना यहाँ पर और विशेष करने के लिए उद्वेलित हो उठी। जलियाँवाला बाग नरसंहार की घटना सुन भगत सिंह घर से निकले और उन्होंने यहाँ-वहाँ खून को बिखरे देखा तथा वे रक्त से सनी मिट्टी एक शीशी में भरकर ले आए। कई दिनों तक रक्त रंजित मिट्टी की वन्दना करते रहे। अंदर ही अंदर भगतसिंह के मन में इंकलाब की भावना तीव्र होती गई। अंततः उन्होंने अपने मन की बात एक मित्र जयदेव गुप्त द्वारा अपने पिता तक पहुँचाई। जन्मजात क्रांतिकारी किशनसिंह ने तुरंत अनुमति दे दी और भगत सिंह नौवी कक्षा की पढ़ाई छोड़कर गांधीजी के असहयोग आंदोलन में सक्रिय हो गए। जब गाँधीजी ने चौरा-चौरी हिंसक घटना के बाद आन्दोलन वापिस ले लिया तब उनके मन को बहुत ठेस पहुँची, उनके मन में यह बात भी बैठ गई कि साम्राज्यवादी अंग्रेजों से केवल अहिंसा के बल पर अंग्रेजों से आजादी हासिल नहीं की जा सकती। उन्हें मदनलाल ढींगरा, वीर सावरकर और करतारसिंह सराभा आदि वीरों का मार्ग अधिक उपयुक्त लगा और उन्होंने मन ही मन इस मार्ग को चुनने का संकल्प ले लिया। लाहौर में ही भगत सिंह का सम्पर्क सुखदेव, भगवतीचरण बोहरा तथा यशपाल आदि क्रांतिकारियों से हुआ। कुछ समय बाद उन्हें पढ़ाई के लिए नेशनल कॉलेज में भर्ती कराया गया, जहाँ उन्हें भाई परमानंद, जयचंद्र विद्यालंकार, आचार्य उदयवीर शास्त्री आदि प्राध्यापकों व प्राचार्य जुगलकिशोर का सान्निध्य मिला। यहाँ इन आचार्यों के माध्यम से इनकी क्रांतिकारी भावना और परिपक्व हो गई। जब उन्होंने एम.ए. की परीक्षा पास कर ली तब भगतसिंह के घरवालों ने उनके विवाह का विचार किया, किन्तु राष्ट्र के लिए स्वयं को समर्पित करने की तमन्ना रखने वाले भगतसिंह ने क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ शान्याल की प्रेरणा से विवाह सूत्र को क्रांति के मार्ग में बाधा मानते हुए पिताजी के नाम एक पत्र लिखकर घर त्याग दिया। पत्र में इस प्रकार के विचार व्यक्त किए गए-'मेरा जीवन एक उच्च लक्ष्य अर्थात भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए अर्पित हो चुका है। अतः अब सांसारिक वासनाएँ अब मेरे लिए आकर्षण का कारण नहीं हैं...आशा है आप मुझे क्षमा कर देंगे।' इसके बाद वे लाहौर से चलकर दिल्ली आ गए। यहाँ उन्होंने प्रसिद्ध पत्रकार पं. इंद्र विद्यावाचस्पति द्वारा संचालित 'अर्जुन' के सम्पादकीय विभाग में काम किया। बाद में इन्द्रजी का परिचय पत्र देकर वे कानपुर में आ गए और अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी के पत्र 'प्रताप' में काम करते रहे। इस समय वे अपने छद्म नाम 'बलवंतसिंह' के नाम से जाने जाते थे। यहाँ उनका परिचय योगेशचन्द्र चटर्जी, विजयकुमार सिन्हा और बटुकेश्वरदत्त आदि क्रांतिकारियों से हुआ। तीन माह काम करने के बाद अंग्रेज सिपाहियों को उनका पता चल गया, मगर वे उनकी पकड़ में आने से पूर्व ही वहाँ से चले गए और पुनः लाहौर आ गए। पत्र संपादन में उनकी रुचि होने के कारण उन्होंने यहाँ 'अकाली' और 'कीर्ति' नाम के दो पत्रों का सम्पादन किया। उन्होंने नौजवान भारत सभा की स्थापना की, जिसके प्रधान रामचंद्र और मंत्री स्वयं भगतसिंह बने, प्रसिद्ध क्रांतिकारी भगवतीचरण बोहरा इसके प्रचार मंत्री बनाए गए। इस सभा ने क्रांतिकारियों को एक मंच देने का

www.rajsevak.com

महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इसी समय बंगाल के एक अत्याचारी कलक्टर चार्ल्स रेगट को जब गोपी मोहन साहा नामक क्रांतिकारी ने गोली से उड़ाना चाहा, किन्तु गोली धोखे से एक अन्य अंग्रेज को लग गई, साहा को इस अपराध के लिए फाँसी की सजा सुनाई गई। सरदार भगत सिंह ने साहा की सजा के विरोध में लाहौर में जनसभा का आयोजन किया और एक उत्तेजक भाषण दिया। इसका परिणाम यह निकला कि वे पुलिस की आँखों का काँटा बन गए। अब भगत सिंह ने क्रांतिकारियों को नौजवान भारत सभा के झंडे तले एकत्र किया और आजादी की लड़ाई को और अधिक उग्र कर दिया।

अक्टूबर सन् 1926 ई. में लाहौर के दशहरा मैदान में एक बम फटा। सरकार ने नौजवान भारत सभा को इसके लिए कसूरवार माना और सभा के कई सदस्यों को पकड़ लिया। भगतसिंह को भी गिरफ्तार किया, लेकिन प्रमाणों के अभाव के कारण इन्हें रिहा कर दिया गया।

सन् 1927 ई. में कांकोरी काण्ड में रामप्रसाद बिस्मिल आदि क्रांतिकारी पकड़े गए तब भगतसिंह ने उन्हें छुड़ाने के प्रयास किए। इधर पुलिस इस तलाश में थी कि भगतसिंह को भी इस काण्ड के साथ जोड़ दिया जाए लेकिन वे एक वकील सरदार सार्दूलसिंह की कुशलता के कारण बच निकले, मगर ज्यों ही भगतसिंह लाहौर पहुँचे उन्हें बंदी बना लिया गया। वकीलों के प्रयास से साठ हजार रुपये की जमानत पर रिहा करा दिया गए। अब सरदार भगतसिंह ने अपने संगठन को 'हिन्दुस्तान रिपब्लिक आर्मी' का नया नाम दिया और क्रांतिकारी गतिविधियों को और तेज कर दिया। बालों के कारण भगतसिंह को जल्दी पहचान लिया जाता था अतः उन्होंने फिरोजपुर आकर अपने बाल कटवा दिए। सांडर्स की हत्या से कुछ समय पूर्व भगत सिंह कलकत्ता गए और वहाँ यतीन्द्रनाथ दास और फणीन्द्रनाथ घोष के साथ मिलकर आर्य समाज कार्नवालिस स्ट्रीट (अब 19 विधान सरणी) में 'गन कॉटन' का निर्माण किया गया।

साइमन कमीशन के विरोध में 20 अक्टूबर सन् 1928 ई. को लाहौर में लाला लाजपतराय के नेतृत्व में विशाल जुलूस निकाला गया। पुलिस ने निहत्थों पर लाठीचार्ज किया, जिसमें लाला लाजपतराय को भी चोटें आई जिनके कारण उनका 17 नवम्बर सन् 1928 ई. को स्वर्गवास हो गया। लालाजी के इस बलिदान पर 'देशबंधु' चितरंजन दास की पत्नी ने देश के नौजवानों से पूछा की क्या आप लोगों में कोई ऐसा भी है जो नेताजी की दारुण हत्या का बदला ले सके। भगतसिंह और उसके साथियों ने माता बसंती देवी की इस चुनौती को स्वीकार किया और लालाजी पर लाठीचार्ज का आदेश देने वाले पुलिस अधीक्षक स्काट की हत्या की योजना बनाई। उनकी योजनानुसार जयगोपाल नामक क्रांतिकारी की गलत निशानदेही के कारण पुलिस सार्जेंट सांडर्स इन गोलियों का शिकार हो गया। सांडर्स को मारकर भगतसिंह और उनके साथी वहाँ से भाग गए। भगत सिंह सूट बूट पहने भगवती चरण बोहरा की पत्नी दुर्गा देवी को अपनी पत्नी बनाकर लाहौर से हावड़ा जाने वाली रेल से कलकत्ता चले गए।

इसके बाद इन क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश साम्राज्य को सावधान और आतंकित करने के उद्देश्य से सेंट्रल असेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई। 8 अप्रैल सन् 1929 ई. को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने धारा सभा में घुसकर बम फेंका और 'इंकलाब जिंदाबाद' तथा 'साम्राज्यवाद का नाश हो' के नारे लगाए। साम्राज्यशाही को जगाने के बाद उन्होंने अपना उद्देश्य पूरा किया तथा भगत सिंह और दत्त ने बिना भागे स्वयं को पुलिस के हवाले कर दिया।

'असेम्बली बम काण्ड', 'लाहौर बम काण्ड' और सांडर्स वध में भगतसिंह को अभियुक्त बनाया गया, मुकदमा लंबा चला। बचाव पक्ष की ओर से अनेक देशभक्त वकीलों ने उनको कानूनी सहायता की। इस फैसले का देशभर में विरोध हुआ। प्रदर्शन, हड़तालें हुई, प्रिवी कौंसिल में अपील की गई परन्तु 11 फरवरी सन् 1931 ई. को अपील ठुकरा दी गई। अंग्रेजों ने 9 मई सन् 1930 ई. को एक ओर्डीनेन्स पास किया इसमें ट्रिब्यूनल को अधिकार था कि अभियुक्तों की अनुपस्थिति में भी मुकदमा चलाया जाए।

'दिल से निकलेगी न मरकर भी
वतन की उल्फ़त,
मेरी मिट्टी से भी
खुशबू-ए-वतन आएगी।'
–शहीद भगत सिंह

7 अक्टूबर सन् 1930 ई. को फैसला सुना दिया गया, जिसमें भगतसिंह के साथ राजगुरु और सुखदेव को फाँसी व अन्य को आजन्म काला पानी से लेकर सात वर्ष व तीन वर्ष की सजा सुनाई गई। भगतसिंह ने जेल में रहते हुए 'रूस की क्रांति' और 'लेनिन की जीवनी' को पढ़ा जिससे उनका झुकाव 'साम्यवाद' की ओर हो गया वे एक 'वर्गहीन' समाज की कल्पना को आधार में रखकर अपने उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहते थे।

भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने कैदियों के साथ असंतोषजनक एवं अमानवीय व्यवहार तथा दूषित भोजन आदि प्रबंधों के विरुद्ध क्रांतिकारियों ने अनशन कर दिया। सरकार की समस्त कोशिशों के बावजूद अनशन नहीं टूटा, जनता की सहानुभूति क्रांतिकारियों के प्रति बढ़ती ही रही। अनशन 60 दिन चला परन्तु इस अनशन ने एक क्रांतिकारी यतीन्द्रदास की बलि ले ली।

सरकार के नियमों के अनुसार फाँसी का समय सुबह होता था लेकिन सरकार को जनता के विरोध का भय था इसलिए तय समय से पूर्व ही महान सपूत को 23 मार्च सन् 1931 ई. को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। निष्ठुर शासकों ने हिंसा के डर से उनकी लाश को उनके संबंधियों को न देकर बहुत ही अपमानजनक तरीके से फिरोजपुर के निकट सतलज नदी के किनारे पेट्रोल डालकर उनका अंतिम संस्कार करवा दिया। शवों की दुर्गति यहीं समाप्त नहीं हुई उनकी अस्थियों और भस्म को नदी में फेंक दिया। दूसरे दिन जनता को पता चला तो हजारों की संख्या में जनता शहीदों के चितास्थल तक पहुँच गई और बची-खुची भस्म को मस्तक से लगाकर हुतात्माओं को श्रद्धा अर्पित की। ऐसे अमर बलिदानी जो स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व हँसते-हँसते न्यौछावर कर गए। उनका जीवन हम देशवासियों के लिए सदैव प्रेरणास्पद रहेगी।

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दयेरी,
धौलपुर (राज.)
मो: 9414712742

www.rajsevak.com

आदेश-परिपत्र : सितम्बर, 2021

1. सत्र 2021–22 में नामांकन अभिवृद्धि तथा अनामांकित एवं ड्रॉप आउट बच्चों को विद्यालय से जोड़ने हेतु प्रवेश तिथि विस्तार के संबंध में।
2. कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों को कक्षा शिक्षण में भाग लेने के सबंध में मानक संचालन प्रक्रिया निर्देश।
3. पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के सम्बन्ध में दिशा–निर्देश।

1. सत्र 2021–22 में नामांकन अभिवृद्धि तथा अनामांकित एवं ड्रॉप आउट बच्चों को विद्यालय से जोड़ने हेतु प्रवेश तिथि विस्तार के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा.द./22492/प्रवेशोत्सव/2019–20/ दिनांक : 04.08.2021 ● 1. समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा। ● 2. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा। ● 3. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)–माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा। ● 4. समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक सन्दर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा। ● विषय : सत्र 2021–22 में नामांकन अभिवृद्धि तथा अनामांकित एवं ड्रॉप आउट बच्चों को विद्यालय से जोड़ने हेतु प्रवेश तिथि विस्तार के संबंध में। ● प्रसंग : इस कार्यालय के पत्र क्रमांक : शिविरा/माध्य/गुणवत्ता/2020–21 दिनांक 04–06–2021 व समसंख्यक पत्र दिनांक 05–07–2021।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 05–07–2021 के द्वारा सत्र 2021–22 हेतु राज्य के समस्त सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 के लिये प्रदेश को अंतिम तिथि 31.07.2021 निर्धारित की गई थी। इस क्रम में लेख है कि नामांकन अभिवृद्धि तथा अनामांकित एवं ड्रॉप आउट बच्चों को विद्यालय से जोड़ने हेतु प्रवेश की अंतिम तिथि बढ़ाकर 16.08.2021 तक निर्धारित की जाती है तथा कक्षा 1 से 8 के प्रवेश सत्रपर्यन्त हो सकेंगे।

● **(सौरभ स्वामी)** आइ.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों को कक्षा शिक्षण में भाग लेने के सबंध में मानक संचालन प्रक्रिया निर्देश।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/मा–स/विविध दिवस/2018 दिनांक : 24.08.2021 ● आदेश परिपत्र ● विषयः कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों को कक्षा शिक्षण में भाग लेने के सबंध में मानक संचालन प्रक्रिया निर्देश।

राज्य सरकार के गृह विभाग द्वारा दिनांक 12.08.21 से दी गई अनुमति के अनुसार राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कक्षा–9 से 12 तक विद्यार्थियों को अभिभावकों की स्वीकृत उपरान्त स्वैच्छिक रूप से दिनांक 01.09.21 से कक्षा शिक्षण में भाग लेने की अनुमति प्रदान की गई है। इन निर्देशों के अनुरूप राज्य के समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों (राजकीय एवं गैर राजकीय) में कक्षा शिक्षण हेतु अनुमत किए जाने के परिप्रेक्ष्य में दिनांक 01.09.2021 से कक्षा 9 एवं 12 हेतु कक्षा शिक्षण प्रारंभ किए जाने के क्रम मैं एतद् द्वारा मानक संचालन प्रक्रिया (Standard Operating Procedure) जारी की जाती हैः–

कोविड–19 के कारण विद्यालय में शिक्षण कार्य प्रारंभ किए जाने से साथ विद्यार्थियों अभिभावकों एवं समुदाय में विश्वास एवं कोविड–19 के बचाव के संबंध में जागरूकता के लिए जारी की जाने वाली मानक संचालन प्रक्रिया (Standard Operating Procedure) के क्रियान्वयन हेतु निम्नानुसार प्रबोधन एवं मार्गदर्शन बैठक (ऑनलाइन/ऑफलाइन) आयोजित की जाएगी, जिसमें मानक संचालन प्रक्रिया के क्रियान्वयन हेतु दायित्व एवं रूपरेखा तैयार की जाएगीः–

क्र.सं.	मार्गदर्शन देने हेतु बैठक लेने वाले अधिकारी	बैठक में भाग लेने वाले संभागीगण	आयोजन की तिथि
1.	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (मा./प्रा.)	अधीनस्थ सभी मुख्य ब्लॉक अधिकारी, चिकित्सा एवं महिला बाल विकास के प्रतिनिधि	25.08.21
2.	पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी	पंचायत में संचालित समस्त विद्यालयों के संस्थाप्रधान, कोविड–19 के लिए बनाई गई ग्राम निगरानी समिति, समस्त शिक्षक एसडीएमसी के सदस्य गण, आँगनबाड़ी कार्यकर्ता, ग्राम सेवक, पटवारी पंचायत में स्थित स्वास्थ्य केन्द्रों पर कार्यरत सभी चिकित्सक एवं स्वास्थ्य कर्मी, अभिभावक प्रतिनिधि	26.08.21
3.	संस्थाप्रधान	सभी शिक्षक, अभिभावक (पीटीएम बैठक) एसडीएमसी के सदस्य, इच्छुक विद्यार्थी	27.08.21

1. स्वास्थ्य स्वच्छता एवं सरंक्षा के लिए मानक संचालन प्रक्रिया

- विद्यालय/छात्रावास के समस्त परिसर, फर्नीचर, उपकरण, स्टेशनरी, शौचालय–मूत्रालय, भण्डार कक्ष, पानी की टंकियां अथवा अन्य स्थान, किचन, प्रयोगशाला एवं अन्य समस्त स्थानों को संक्रमण मुक्त करने के लिए सेनेटाईज किया जाना संस्थाप्रधान द्वारा सुनिश्चित किया जाएगा। विद्यालय में हाथ धोने की सुविधा सुनिश्चित की जावे। इस हेतु लिक्विड हेंडवाश एवं जल की नियमित व्यवस्था का दायित्व विद्यालय का होगा।
- विद्यालय में विद्यार्थी लंच के समय अपने कक्ष में ही भोजन करेंगे, जिनके साथ कक्षा–अध्यापक का भी उसी कक्षा में लंच में रहना

www.rajsevak.com

सुनिश्चित किया जावे। विद्यालय में मिड-डे-मिल नहीं पकाया जाना है।

- विद्यालय के वाहन/बालवाहिनी का उपयोग प्रारम्भ करने से पूर्व उसे पूरी तरह से सेनेटाईज किया जावे। चालक इत्यादि को 14 दिन पूर्व वैक्सीन की कम से कम एक खुराक (1st Dose) अनिवार्य रूप से लेनी होगी।
- बरामदों को साफ एवं हवादार बनाने के लिए रूकावट बने सामान को हटाया जावे, जिससे कमरों एवं बरामदों में पर्याप्त प्रकाश एवं शुद्ध वायु आवागमन की व्यवस्था सुनिश्चित हो सके।
- विद्यार्थियों को पीने का पानी यथासंभव घर से लाने हेतु शिक्षकों द्वारा प्रेरित किया जावे तथा पानी की बोतल के पारस्परिक (अदला-बदली) उपयोग से बचने हतु पाबन्द किया जावे। घर से पानी नहीं ला पाने वाले विद्यार्थियों हेतु विद्यालय परिसर में समुचित स्वास्थ्यप्रद स्थान पर शुद्ध एवं स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित की जावे।
- सम्पूर्ण विद्यालय परिसर की पूर्ण साफ-सफाई एवं शौचालयों-मूत्रालयों की स्वच्छता मानदण्डों के अनुरूप अच्छी प्रकार से सफाई तथा पानी की टंकियों की साफ-सफाई आवश्यक रूप से करवाई जाए। इस हेतु समग्र शिक्षा द्वारा समस्त विद्यालयों को प्रदान की जाने वाली कम्पोजिट स्कूल ग्रांट में से 10 प्रतिशत स्वच्छता अनुदान राशि का उपयोग किया जाए तथा अतिरिक्त आवश्यकता की स्थिति में एस.डी.एम.सी. की अनुमति उपरान्त विकास कोष की राशि काम में लेवें।
- विद्यालय में सम्पूर्ण स्टाफ एवं विद्यार्थियों में अनिवार्य रूप से मास्क लगाकर ही आने के लिए सख्ती से पाबन्द किया जाए। 'NO MASK NO ENTRY' की पालना आवश्यक है।
- विद्यालय एवं गाँव में एसओपी के प्रचार-प्रसार के लिए ग्राम स्तरीय निगरानी समिति कार्य करेगी। जो कि कोरोना के लक्षणों एवं बचाव के बारे में अभिभावकों को जागरूक करेगी। इससे अभिभावक प्रारम्भिक लक्षण वाले विद्यार्थियों की पहचान कर उन्हें विद्यालय नहीं भेजेंगे।
- यदि संभव हो, तो विद्यार्थियों के बैठने के लिए सिंगल सीटेड बैंच/डेस्क का उपयोग किया जावे, अन्यथा कक्षा-कक्ष से फर्नीचर बाहर निकाल कर, दरी पर न्यूनतम शारीरिक दूरी की अनिवार्यता के अनुसार चिन्ह लगाते हुए बैठक व्यवस्था की जावे।
- आगामी निर्देश आने वाले तक विद्यालयों में प्रार्थना सभा एवं सामूहिक खेल तथा उत्सवों के आयोजन/रैली/सभाओं पर अनिवार्य रूप से रोक रहेगी।
- विद्यालय खुलने से पूर्व बैठक व्यवस्था का प्लान तैयार कर लिया जावे तथा वह विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा किया जावे, विद्यार्थी को आवंटित सीट पर ही बिठाया जाना सुनिश्चित किया जावे जिससे कक्षा संचालन वाले दिवस को बैठक व्यवस्था आसानी से बनाई रखी जा सके।
- पृथक-पृथक कक्षाओं का विद्यालय में आगमन एवं प्रस्थान का समय अलग-अलग रखा जाना है

एक पारी विद्यालय	कक्षा 9 व 11 का आगमन समय प्रातः 7.30 तथा प्रस्थान दोपहर 12.30 बजे तथा कक्षा 10 व 12 का आगमन समय प्रातः 8.00 तथा प्रस्थान दोपहर 1.00 बजे रखा जाए।
दो पारी विद्यालय में द्वितीय पारी विद्यालय	कक्षा 9 व 11 का आगमन समय दोपहर 12.30 तथा प्रस्थान सायं 5.30 बजे तथा कक्षा 10 व 12 का आगमन समय दोपहर 1.00 तथा प्रस्थान सायं 6.00 बजे रखा जाए।

जिससे प्रवेश एवं निकास के समय भीड़ एक स्थान पर एकत्रित ना हो पाए।

- दिनांक 01 सितम्बर 2021 से विद्यालयों में कक्षा 9 एवं 12 का कुल कक्षा कक्षों की संख्या तथा क्षमता एवं कक्षा 9 से 12 की विद्यार्थियों की संख्या के अनुपात में विद्यार्थियों के लिए शिक्षण कार्य किया जाना है।
- संस्थाप्रधान द्वारा प्रवेश एवं निकास द्वार पर शिक्षक ड्यूटी लगाई जावें। शनिवार को भी कक्षा शिक्षण का आयोजन करवाया जाना सुनिश्चित करें।
- यदि बाल-वाहिनी है तो उसके उपयोग एवं आने-जाने के रूट एवं विद्यार्थियों का उल्लेख हो। इस संबंध में बैठक प्लान वाहन के बाहर एवं विद्यालय नोटिस बोर्ड पर चस्पा किया जावे तथा आंवटित सीट पर ही बच्चे को बिठाया जाना सुनिश्चित किया जावे।
- चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के संबंधित निकटतम स्वास्थ्य केन्द्र के स्वास्थ्य कार्मिकों एवं स्थानीय प्रशासन को विद्यालय खुलने की सूचना देना।
- इस दल में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में कार्यरत चिकित्सक, एएनएम, कम्पाउंडर को भी सम्मिलित किया जाएगा। उक्त सम्बन्ध में सम्बन्धित जिला कलक्टर द्वारा तत्सम्बन्धी आदेश जारी किए जावे।
- दिनांक : 1 सितम्बर 2021 से समस्त राजकीय एवं गैर राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 9 से 12 का नियमित कक्षा शिक्षण प्रारंभ किया जाएगा। विद्यालय में विद्यार्थी की उपस्थिति बाध्यकारी नहीं होगी। अपरिहार्य कारणों से अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों को किसी प्रकार से बाध्य नहीं किया जावें। विद्यार्थियों को विद्यालय में उपस्थिति हेतु अभिभावक की स्वीकृति प्राप्त की जावे।
- विद्यार्थियों को छात्रावास में अनुमत करने से पहले उनके स्वास्थ्य के संबंध में समुचित जानकारी प्राप्त की जावे। बीमार अथवा ऐसे किसी लक्षणों वाले विद्यार्थियों को छात्रावास में अनुमत नहीं किया जावे।
- विद्यार्थियों के बैग को पारस्परिक रूप से समुचित दूरी पर रखा जावे। इस हेतु अस्थाई पार्टीशन भी किया जा सकता है।
- स्वास्थ्य विभाग से समन्वय कर ऐसी व्यवस्था की जावे कि छात्रावास प्रारंभ करते समय तथा बाद में नियमित अन्तराल पर स्वास्थ्य विभाग

www.rajsevak.com

के चिकित्सक एवं कार्मिक छात्रावास में आकर विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की जांच करें। यह स्वास्थ्य दल किचन एवं शौचालय आदि का निरीक्षण कर आवश्यक सुझाव भी देवे।

- कोविड-19 की गाइडलाइन के अनुरूप छात्रावास की क्षमता की समीक्षा कर आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों के लिए वैकल्पिक व्यवस्था रखें। छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों के मानसिक एवं संवेगात्मक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए परामर्श शिक्षक की नियमित विजिट करवाई जावे।
- विद्यार्थियों के बार-बार बाहर अथवा निवास स्थान की यात्रा पर प्रतिबंध रखा जावे तथा छात्रावास में अवांछित आगन्तुकों के प्रवेश पर पूर्णतः प्रतिबंध रखा जाए।
- आकस्मिक स्थिति के लिए पूर्व तैयारी रखी जावे तथा आवश्यक दूरभाष नम्बर, छात्रावास के नोटिस बोर्ड पर चस्पा किए जावें। छात्रावास प्रारम्भ करने से पूर्व अभिभावकों के साथ ऑफलाइन/ऑनलाइन मीटिंग कर उनसे वांछित सहमति प्राप्त की जावे।
- छात्रावास की किचन पूर्णतः संक्रमण मुक्त हो एवं उसमें उपयोग में आने वाली सामग्री को संक्रमण मुक्त रखने के लिए आवश्यक उपाय करने के पश्चात् ही काम में लिया जावे।

2. स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं संरक्षा के लिए मानक संचालन प्रक्रिया

- सम्पूर्ण विद्यालय एवं उसके परिसर की प्रतिदिवस सफाई की जावे तथा सफाई किए गए परिक्षेत्र का रिकार्ड रखा जावे।
- कक्षा-कक्ष एवं विद्यालय के प्रवेशद्वार तथा उपयोग में आने वाले स्थानों को प्रतिदिवस सेनेटाईज किया जावे।
- स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को देखते हुए विद्यार्थियों को सीधे परिसर की सफाई संबंधी कार्यों से मुक्त रखा जावे।
- बार-बार छुए जाने वाले उपकरणों, धरातल यथा कक्षा-कक्ष का फर्श, दरवाजे के हैंडल, नल आदि की सफाई बार-बार की जानी सुनिश्चित की जावे तथा उन्हे प्रतिदिन सेनेटाईज किया जावे।
- प्रत्येक कक्षा के बाहर डस्टविन रखे जावे तथा उन्हें अलग-अलग कचरे के अनुसार रखें तथा तद्नुसार नष्ट करने की व्यवस्था करें। सभी डस्टबिन साफ तथा ढके हुए हों। इसे नष्ट करने के लिए निर्धारित प्रोटोकॉल की पालना की जावे।
- प्रतिदिवस हाथ धोने के लिए साबुन एवं साफ जल की व्यवस्था के लिए किसी शिक्षक को मनोनीत किया जावे, जो इसकी उपलब्धता की मोनेटरिंग करेंगे।
- विद्यालय में मिड डे मिल नहीं बनाया जाएगा, सूखा राशन बांटा जाएगा। मिड डे मिल वितरण सम्बन्धी गतिविधियाँ विद्यालय संचालन अवधि में नहीं की जावे।
- सभी स्टाफ सदस्य एवं विद्यार्थी आवश्यक रूप से फेसमास्क पहन कर ही विद्यालय आएंगे तथा विद्यालय गतिविधियों के दौरान मास्क पहने रखेंगे।
- विद्यालय में अतिरिक्त फेसमास्क रखे जावे, जो विशिष्ट परिस्थितियों यथा मास्क फटने, गुम होने पर विद्यार्थी को उपलब्ध कराया जावे।
- प्रत्येक विद्यार्थी को यह जानकारी उपलब्ध कराई जावे कि खांसी आने अथवा छींकने पर बांह को मोड़ कर नाक को कोहनी के जॉइन्ट के मध्य रखें।
- बालवाहिनी को प्रतिदिवस कम से कम दो बार सेनेटाईज किया जाना सुनिश्चित किया जावे। वाहन की बैठक व्यवस्था में शारीरिक दूरी के अनुरूप क्षमता से ही विद्यार्थियों को बिठाया जावे।
- बाल वाहिनी के ड्राईवर एवं कण्डक्टर शारीरिक दूरी तथा फेसमास्क संबंधी निर्देश की पालना सुनिश्चित करेंगे।
- बाल वाहिनी में प्रवेश एवं निकास के समय शारीरिक दूरी का ध्यान रखा जावे।
- यदि विद्यालय में एक से अधिक द्वार हैं, तो आगमन एवं प्रस्थान के समय उन सभी को खोला जावे।
- स्थानीय प्रशासन से समन्वय कर विद्यालय परिसर के ठीक बाहर भीड़ पर नियन्त्रण की व्यवस्था सुनिश्चित की जावे।
- प्रार्थना तथा समूह क्रियाएं यथा खेलकूद, समूह नृत्य इत्यादि सामूहिक गतिविधियों पर प्रतिबंध रहेगा।
- प्रायोगिक कार्य छोटे समूह में ही किए जावें, जिससे न्यूनतम शारीरिक दूरी रखे जाने की पालना की जा सके।
- विद्यार्थी परस्पर कोई सामग्री यथा पाठ्यपुस्तकें, नोटबुक, पेन, पेन्सिल आदि साझा नहीं करेंगे।
- यथा संभव विद्यालयों में एयर कण्डीशनर का उपयोग नहीं किया जावे। यदि किया जाता है, तो उसका तापमान 24 से 30 डिग्री सेन्टीग्रेड के मध्य ही रखा जावे।
- संक्रमित स्थान एवं बीमारी के विशिष्ट लक्षण वाले व्यक्ति (स्टाफ अथवा विद्यार्थी) को तत्काल अन्य स्थान पर पृथक (आइसोलेट) कर दिया जावे।
- ऐसे विशिष्ट लक्षण वाले व्यक्ति (स्टाफ अथवा विद्यार्थी) को तत्काल पूर्ण सुरक्षा में उसे चिकित्सकीय जाँच हेतु भेजा जावे। इसके लिए चिकित्सा विभाग से समन्वय कर उन्हें सूचित भी किया जा सकता है।
- पूरे परिसर एवं जिस कक्ष में संभावित संक्रमित पाया गया है, उसे अनिवार्य रूप से संक्रमण विहीन किए जाने की कार्यवाही तत्काल सुनिश्चित की जावे। यदि छात्रावास में कोई संक्रमित पाया जाता है, तो उसे घर नहीं भेजना है, वरन चिकित्सा विभाग के निर्देशानुरूप अस्पताल अथवा छात्रावास में आईसोलेशन में रखा जावे।

www.rajsevak.com

3. लक्ष्यानुरूप लर्निंग आउटकम अर्जित करने के लिए अध्ययन–अध्यापन एवं मूल्यांकन का पुनर्निर्धारण

- कक्षा 1 से 8, कक्षा–9 एवं कक्षा–12 के लिए पूर्व की भांति 'आओ घर में सीखें 2.0' के तहत प्राप्त होने वाली स्माइल अध्ययन सामग्री, वर्कशीट तथा साप्ताहित क्विज, शिक्षावाणी, शिक्षा दर्शन, ई–कक्षा इत्यादि के माध्यम ऑनलाइन अध्ययन निरन्तर रहेगा। कक्षा–9 से 12 के वे विद्यार्थी जो बीमारी अथवा अन्य कारणों से विद्यालय नहीं आ सकेंगे, उन्हें भी ऑनलाइन अध्ययन सामग्री से अध्ययन करवाया जाएगा।
- विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए कक्षा–कक्ष में कुछ मिनटों के लिये योगिक क्रियाएँ भी करवाई जा सकती है।
- विद्यार्थियों को राज्य सरकार के डिजिटल विषयवस्तु से यथा स्माइल–3.0, आओ घर में सीखें 2.0 तथा ई–कक्षा के कार्यक्रम निरन्तर रहेंगे।

उपर्युक्त निर्देशित एसओपी के तहत समस्त सम्बन्धितों द्वारा प्रदत्त निर्देशानुरूप पालना एवं क्रियान्विति सुनिश्चित की जाए।

●(**सौरभ स्वामी**) **आइ.ए.एस.,** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर।

3. पेंशन प्रकरणों की प्रभावी मोनेटरिंग एवं शीघ्र निस्तारण के सम्बन्ध में दिशा–निर्देश।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/पेंशन अ/34925/2021 दिनांक : 26.08.2021 ● आदेश परिपत्र ● विषयः पेंशन प्रकरणों की प्रभावी मोनेटरिंग एवं शीघ्र निस्तारण के सम्बन्ध में दिशा–निर्देश।

इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक 26 फरवरी 2021 (प्रति संलग्न) के अनुसार माध्यमिक एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग में पेंशन प्रकरणों की जिला स्तर पर मॉनीटरिंग एवं जिले की मासिक प्रगति प्रतिवेदन प्रपत्र एक से आठ संकलन का दायित्व मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी का निर्धारित किया गया था किन्तु संभाग स्तरीय समीक्षा बैठकों के दौरान ज्ञात हुआ है कि जिला स्तर पर पेंशन प्रकरणों की प्रभावी मोनेटरिंग व मासिक प्रगति प्रतिवेदन प्रपत्र एक से आठ संकलन समय पर नहीं हो रहा है जिसके प्रकरण संभाग व निदेशालय स्तर पर मोनेटरिंग व सूचना समय पर संकलन में कठिनाई आ रही है। इस क्रम में निम्न निर्देश दिए जाते है–

1. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी प्रत्येक माह की पाँच तारीख तक जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक/प्रारंभिक मुख्यालय एवं जिले के समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय के वरिष्ठतम लेखाकर्मी/पेंशन प्रकरण से सम्बन्धित कार्मिकों की बैठक कर प्रति माह पेंशन प्रकरण वार समीक्षा करें।
2. मासिक प्रगति प्रतिवेदन में ठोस कारण के अभाव में प्रकरण विभाग में कार्यालयाध्यक्ष, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी स्तर पर लंबित रखना/अंकित किया जाना उचित नहीं है।
3. पेंशन विभाग में एक माह से अधिक पेंशन प्रकरण लम्बित नहीं रहता है; अतः सूचना संकलन करते समय पेंशन विभाग में एक माह से अधिक समय से लम्बित प्रकरण पेंशन विभाग की वेबसाइट पर वस्तुस्थिति की जाँच कर भिजवाएँ।
4. प्रोविजनल पेंशन एवं न्यायिक प्रकरणों की भी प्रतिमाह समीक्षा करें।
5. राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम 1996 में कार्मिकों की सेवानिवृत्ति तिथि से छह माह पूर्व पेंशन विभाग को भिजवाने के प्रावधान का प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो रहा है। नियंत्रण अधिकारी नियमों की अक्षरशः पालना सुनिश्चित करें।
6. संभाग स्तर पर प्रत्येक माह की आठ तारीख तक प्रत्येक जिले के कार्यालय मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी के वरिष्ठतम लेखाकर्मी/पेंशन प्रकरण से सम्बन्धित कार्मिकों की बैठक कर प्रति माह पेंशन प्रकरण वार समीक्षा की जावे। समीक्षा के उपरांत प्रत्येक माह की दस तारीख को निदेशालय को प्रपत्र एक से आठ पूर्ण, सुस्पष्ट एवं पठनीय प्रेषित करें।

● **(बी.एल. सर्वा)** वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के बकाया पेंशन प्रकरणों की समीक्षा के दौरान ध्यान में आया कि कार्मिकों के पेंशन प्रकरण लम्बे समय से बकाया चल रहे है। पेंशन प्रकरण बकाया रहने को गंम्भीरता से लेते हुए राज्य स्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान चलाया जा रहा है। पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण हेतु निम्न कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित करें :–

सेवानिवृत होने वाले कार्मिक स्तर पर की जाने वाली कार्यवाही

1. राजस्थान सिविल सेवा पेंशन नियम 1996 के परिशिष्ट – 11 के अनुसार कार्मिक सेवानिवृत्ति तिथि से 24 माह पूर्व सेवापुस्तिका व अवकाश खाता की जाँच कर ले कि जन्मतिथि सेवा प्रमाणीकरण पदौन्नति, स्थायीकरण पदावन्नति, निलम्बन अवधि असाधारण अवकाश, विदेश सेवा का पेंशन अंशदान उपार्जित अवकाश आदि का इन्द्राज सही रूप से कर प्रमाणित कराना।
2. कार्मिक का सेवानिवृत्ति/मृत्यु ग्रेच्युटी का नोमीनेशन सही रूप से प्रमाणित कर सेवा पुस्तिका में इन्द्राज करते हुए संलग्न कराना।
3. राजकीय आवास, दीर्धकालीन ऋण का सबंधित विभाग से अदेय प्रमाण पत्र।
4. परिवार के सदस्यों की सूची निर्धारित प्रपत्र–3 में स्वयं के हस्ताक्षर एवं कार्यालयाध्यक्ष द्वारा प्रति हस्ताक्षर कर सेवापुस्तिका में चिपकाना है।
5. सेवानिवृति तिथि से 8 माह पूर्व फार्म 5 (कुलक) तीन प्रतियो पूर्ण कर कार्यालयाध्यक्ष को प्रस्तुत कर प्राप्ति रसीद लेंगे। आवेदन समय पर न

www.rajsevak.com

करने पर पेंशन स्वीकृति में विलम्ब के लिए कार्मिक स्वयं जिम्मेदार होंगे।

6. सेवानिवृति तिथि को कार्यालयाध्यक्ष से अदेय प्रमाण पत्र, एल.पी.सी., जीए-55 प्राप्त करें।
7. राजस्थान सेवा नियम के नियम 160 राज्य सरकार के निर्णय 2 व 3 के अनुसार डूप्लीकेट सेवापुस्तिका प्राप्त करें।

पेंशन प्रकरण निस्तारण हेतु कार्यालयाध्यक्ष/नियुक्ति अधिकारी स्तर पर की जाने वाली कार्यवाही

1. राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम 1996 के परिशिष्ट-8 के अनुसार सेवानिवृति से 24 माह पूर्व कार्मिक की सेवापुस्तिका में जन्मतिथि सेवाप्रमाणीकरण, नियुक्ति पदोन्नति पदावन्नति, अवकाश खाता, असाधारण अवकाश, निलम्बन अवधि, विदेश सेवा आदि का इन्द्राजप्रमाणीकरण की जाँच कर लें जहाँ अपूर्ण है पूर्ण कराने की कार्यवाही करें।
2. सेवानिवृति तिथि से आठ माह पूर्व कार्मिक से पेंशन स्वीकृति हेतु आवेदन पेंशन कुलक तीन प्रतियो में प्राप्त कर तथ्यों को सेवापुस्तिका के आधार पर प्रमाणित करें।
3. सेवानिवृत्ति तिथि से छह माह पूर्व पेंशन, कुलक, सेवापुस्तिका, बकाया वसूली हेतु कार्मिक का सहमति घोषणा पत्र, कम्यूटेशन आवेदन पत्र, दीर्घकालीन ऋण व राजकीय आवास यदि है तो अदेय प्रमाण पत्र सहित पेंशन विभाग को भिजवाना सुनिश्चित करेंगे। पेंशन विभाग में पेंशन प्रकरण छह माह पूर्व न भिजवाने पर पेंशन स्वीकृति में विलम्ब के लिए कार्यालयाध्यक्ष व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होंगे।
4. पेंशन विभाग को प्रकरण भिजवाने से पूर्व अवकाश खाते की प्रमाणित प्रति कार्यालय में रखेंगे।
5. सेवानिवृत्ति तिथि को कार्मिक का अंतिम वेतन प्रमाण-पत्र, जीए-55, अदेय प्रमाण पत्र (यदि कोई ड्यूज न हो तो) यदि ड्यूज है तो कार्मिक को उपलब्ध कराए।
6. पेंशन स्वीकृति हेतु प्रकरण पेंशन विभाग को भिजवाने के बाद पेंशन को प्रभावित करने वाली घटना की सूचना तत्काल पेंशन विभाग में देंगे।
7. राजस्थान सेवा नियम के नियम 160 के राज्य सरकार के निर्णय 2 व 3 के अनुसार कार्मिक को डुप्लीकेट सेवा पुस्तिका उपलब्ध कराए।
8. कार्मिक के देय परिलब्धियों की जाँच का प्रमाण पत्र लेखाकर्मी से सेवानिवृत्ति तिथि से छह माह पूर्व प्राप्त करे। जहाँ कार्यालयाध्यक्ष के अधीन लेखाकर्मी के कार्यरत नहीं है वहाँ मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी/जिला शिक्षा अधिकारी/मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी/संयुक्त निदेशक कार्यालय के वरिष्ठतम लेखाकर्मी से परिलब्धियों का प्रमाण पत्र प्राप्त करें। लेखाकर्मी सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिक की सेवापुस्तिका परिलब्धियों की जाँच का प्रमाण-पत्र हेतु तीन कार्यदिवस से अधिक पेन्डिंग नहीं रखेंगे।
9. नियुक्ति अधिकारी सेवानिवृत्ति तिथि से एक वर्ष पूर्व सेवानिवृत्ति आदेश जारी करेंगे। इसके लिए अधीनस्थ कार्यालय/कार्मिक से आवेदन आवश्यक नहीं है।
10. सेवानिवृत्त कार्मिक के सेवाअभिलेख/पे मेनेजर, आधार कार्ड, पैन कार्ड, एस.एस.ओ. आईडी में नाम, स्पेलिंग एवं जन्मतिथि समान हो यह सुनिश्चित किया जाए।
11. राजस्थान सिविल सेवा नियम (पेंशन) 1996 के नियम 92 के अनुसार सेवानिवृत्ति के समय कार्मिक से वसूली योग्य राशि का नैसर्गिक न्याय के सिद्धांत के अनुसार कार्मिक को सुनवाई का अवसर देने के बाद वसूली सम्बन्धी आदेश जारी करे।
12. राजस्थान सिविल सेवा नियम (पेंशन) 1996 के नियम 90 के अनुसार विभागीय जाँच/न्यायिक कार्यवाही बकाया है तो तत्काल प्रोविजनल पेंशन स्वीकृत कराए। इस नियम के अन्तर्गत प्रोविजनल पेंशन स्वीकृति हेतु नियुक्ति अधिकारी सक्षम है। किसी सेवा सम्बन्धी अभिलेख में पूर्ति या अन्य कारण से जहाँ विभागीय/न्यायिक कार्यवाही बकाया नहीं है राजस्थान सिविल सेवा नियम (पेंशन) 1996 के नियम 86 के अनुसार प्रोविजनल पेंशन स्वीकृति हेतु कार्यालयाध्यक्ष सक्षम है।
13. राज्य सरकार के आदेश क्रमांक-एफ1 (9)एफडी/नियम/2015 दिनांकः 13.3.2020 के अनुसार सेवानिवृत्त कार्मिक के विरुद्ध विभागीय जाँच विचाराधीन है तो सेवानिवृत्ति तिथि को उपलब्ध उपार्जित अवकाश का राजस्थान सेवा नियम 91 बी के अन्तर्गत देय परिलाभ का भुगतान विभागीय जाँच समाप्त होने से पूर्व देय नहीं है।
14. पेंशन प्रकरणों के निस्तारण की मॉनीटरिंग के लिए सेवानिवृत्ति आदेश की सूची के आधार पर ब्लॉक, जिला, मण्डल एवं विभागाध्यक्ष के स्तर पर की जाएगी। ब्लॉक स्तर पर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, जिला स्तर पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, मण्डल स्तर पर संयुक्त निदेशक एवं विभागाध्यक्ष स्तर पर वित्तीय सलाहकार नोडल अधिकारी होंगे।
15. किसी कार्मिक की सेवापुस्तिका खो जाय और कार्मिक के पास डूप्लिकेट सेवापुस्तिका उपलब्ध नहीं है तो कार्मिक से आवश्यक दस्तावेज प्राप्त कर डूप्लिकेट सेवापुस्तिका कार्यालयध्यक्ष नियुक्ति अधिकारी से अनुमति लेकर बनाएगे।
16. दो माह से अधिक समय से बकाया पेंशन प्रकरण जिनके प्रोवीजनल पेंशन स्वीकृत हो चुकी है या नहीं हुई है, के निस्तारण हेतु कार्मिक जहां से सेवानिवृत हुआ है वहाँ के कार्यालयाध्यक्ष को प्रभारी अधिकारी मनोनीत करने का आदेश मुख्य ब्लाक शिक्षा अधिकारी स्तर पर जारी किए जाकर सात दिवस में प्रकरण में विलम्ब के कारण व वर्तमान स्थिति की प्राप्त कर आगामी मासिक प्रतिवेदन में अंकित करेंगे। जो प्रकरण निस्तारण योग्य है उन्हें निस्तारण की कार्यवाही सुनिश्चित करेंगे।

उपरोक्त निर्देशों की पालना सुनिश्चित करें।

● **निदेशक,** प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ।

www.rajsevak.com

राज. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर
(प्रभाग–4, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान अजमेर)

शिक्षावाणी माह सितम्बर प्रसारण कार्यक्रम (दिनांक 01.09.2021 से 30.09.2021 तक)

प्रसारण समय–प्रातः 11.00 से 11.55 तक

क्र.स	दिनांक	वार	प्रारंभ से 15 मिनट		16 मिनट से 35 मिनट तक							36 मिनट से 55 मिनट तक						
			मीना की कहानियां	डाइट/यूनिसेफ	कक्षा	विषय पाठ्यपुस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	डाइट/यूनिसेफ	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री	समीक्षक का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री	कक्षा	विषय पाठ्यपुस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	डाइट/यूनिसेफ	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री	समीक्षक का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री
1	01.09.2021	बुधवार	हाथ बढ़ाओ	यूनिसेफ	4	पर्यावरण अध्ययन	1	बचपन की यादें	उदयपुर	शिखा गुप्ता	डॉ सत्य नारायण सुथार	10	हिन्दी क्षितिज	1	काव्यखंड पद–सूरदास	उदयपुर	डॉ विन्नू कुंवर शेखावत	डॉ मीना यादव
2	02.09.2021	गुरूवार	स्कूल हो तो ऐसा	यूनिसेफ	8	विज्ञान	3	संश्लेषित रेशे एवं प्लास्टिक	जयपुर	आशीष गोस्वामी	छुट्टन लाल मीणा	11	जीवविज्ञान	1	जीव जगत का वर्गीकरण	जयपुर	अर्चना परमार	डॉ रश्मि गोगर
3	03.09.2021	शुक्रवार	निबंध प्रतियोगिता	यूनिसेफ	7	संस्कृत	11	समवायो हि दुर्जयः	बीकानेर	सुधीर कुमार	कैलाश कुमार व्यास	12	हिन्दी अनिवार्य आरोह 2	12	बाजार दर्शन	बीकानेर	अंजुमन आरा	रेणु वर्मा
4	04.09.2021	शनिवार	खुल के बोलो	यूनिसेफ		No bag day Kota 1- व्यवसायिक मार्गदर्शन –अर्चना श्रीवास्तव 2.पर्यावरण संतुलन –अल्का शर्मा												
5	06.09.2021	सोमवार	सबकी सुनो	यूनिसेफ	7	संस्कृत रूचिरा II	6	सदाचारः	बीकानेर	रचना सारण	कैलाश कुमार व्यास	10	अंग्रेजी First Fight	9	Madam rides the bus	बीकानेर	आरती खण्डेवाल	डॉ ओम प्रकाश विशनोई
6	07.09.2021	मंगलवार	अव्वल कौन	यूनिसेफ	7	हिन्दी	7	पापा खो गए	जोधपुर	लक्ष्मी कंवर	डॉ श्याम सुन्दर सोलंकी	9	सामा0विज्ञान	5	विश्व की प्रमुख घटनाऐं	जोधपुर	शीला आसोपा	श्री मजाहिर सुल्तान जई
7	08.09.2021	बुधवार	मजेदार पढ़ाई	यूनिसेफ	6	विज्ञान	6	हमारे चारों ओर के परिवर्तन	उदयपुर	अजय कुमार उपाध्याय	दीपिका त्रिवेदी	11	भूगोल	6	भू प्राकृतिक प्रक्रियाएं	उदयपुर	योगेश रावल	सुनिता बैरवा
8	09.09.2021	गुरूवार	पढ़ने का हक	यूनिसेफ	6	सा0विज्ञान	4	लोकतांत्रिक सरकार के मुख्य तत्व	जयपुर	अनिता शर्मा	महेश बाबू शर्मा	10	विज्ञान	14	ऊर्जा के स्त्रोत	जयपुर	मनोज मित्रा	छुट्टन लाल मीणा
9	10.09.2021	शुक्रवार	हमारी सुनो	यूनिसेफ	4	अंग्रेजी	8	Kalpna Chawala the star	कोटा	रेखा कुमावत	आभा दाधीच	9	हिन्दी	7	मेरे बचपन के दिन	कोटा	मंजू गर्ग	डॉ आजाद सिंह
10	11.09.2020	शनिवार	कवि की कविता	यूनिसेफ	No bag day Diet JAIPUR 1. चरित्र निर्माण में परिवार, विद्यालय और समाज की भूमिका–मितेश कुमारी 2. मौसमी बिमारियों से बचाव–वंदना यादव													
11	13.09.2021	सोमवार	पड़ौसी	यूनिसेफ	6	विज्ञान	9	सजीव विशेषताऐं एवं आवास	कोटा	प्रीति शर्मा	अल्का शर्मा	9	अंग्रेजी	9	My Childhood	कोटा	मधु विजय	मंजेश चौरसिया

www.rajsevak.com

12	14.09.2021	मंगलवार	बिना बोले क्या कहा	यूनिसेफ	8	हिन्दी	6	भगवान के डाकिए	उदयपुर	जगदीश चन्द्र चौबीसा	डॉ अंजली कोठारी	12	रसायन विज्ञान	6	तत्वों के निष्कर्षण के सिद्धान्त एवं प्रक्रम	उदयपुर	अनिल गुप्ता	डॉ ओप्रकाश
13	15.09.2021	बुधवार	हाथी मेरे साथी	यूनिसेफ	6	सा0विज्ञान	3	आरंभिक नगर	जयपुर	अर्चना माकन	महेश बाबू शर्मा	10	विज्ञान	15	हमारा पर्यावरण	जयपुर	अनिता चौधरी	छुट्टन लाल मीणा
14	17.09.2021	शुक्रवार	कठपुतली	यूनिसेफ	6	सा0विज्ञान	6	नए प्रश्न नए विचार	बीकानेर	विनोद कुमार सुथार	सीमा शर्मा	12	हिन्दी अनिवार्य आरोह 2	16	नमक	बीकानेर	पूनम कुमारी	रेणु वर्मा
15	18.09.2020	शनिवार	बोल दो	यूनिसेफ	No bag day- Jodhpur 1 पर्यावरण को समर्पित खेजड़ली शहीद दिवस– प्रीति शर्मा 2 बालकों के सर्वांगीण विकास में बालसभा की भूमिका– रीतू संदल													
16	20.09.2021	सोमवार	सही निर्णय	यूनिसेफ	7	विज्ञान	10	जीवों में श्वसन	जोधपुर	रीना चौहान	गायत्री भारद्वाज	12	अर्थशास्त्र	3	मुद्रा एवं बैंकिंग	जोधपुर	मंजु माकड़	डॉ0 श्याम सुन्दर सोलंकी
17	21.09.2021	मंगलवार	साइकिल चोर	यूनिसेफ	8	विज्ञान	18	वायु एवं जल प्रदूषण एवं नियंत्रण	बीकानेर	गरीमा	जितेन्द्र सिंह राठौड़	9	विज्ञान	13	हम बीमार क्यों होते हैं?	बीकानेर	दीपक मेहरा	सुनीता
18	22.09.2021	बुधवार	नाव की सैर	यूनिसेफ	6	विज्ञान	7	पौधों को जानिए	उदयपुर	शिल्पा शर्मा	दिपिका त्रिवेदी	9	संस्कृत शेमुषी	6	भ्रान्तोःवाल	उदयपुर	सत्यप्रिय आर्य	किशन लाल गुर्जर
19	23.09.2021	गुरूवार	झांसी की रानी	यूनिसेफ	7	विज्ञान	11	जंतुओं और पादप में परिवहन	जोधपुर	शमीम	संयुक्ता गुप्ता	10	उर्दू	2	बेतकल्लुफी	जोधपुर	अकमल नईम	मजाहिर सुल्तान जई
20	24.09.2021	शुक्रवार	नाटक मंडली	यूनिसेफ	8	हिन्दी	17	बाज और सांप (कहानी)	कोटा	चंचल खींची	निशा चौरसिया	11	हिन्दी अनिवार्य	11	कबीर (आरोह)	कोटा	डॉ0रंजना शर्मा	निशा चौरसिया
21	25.09.2021	शनिवार	सोचो समझो	यूनिसेफ	No bag day उदयपुर 1– अधिगम एवं सम्प्रेषण की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी का महत्व– श्री पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा 2 विद्यालय शिक्षा के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कैसे करें– आकांक्षा दुबे													
22	27.09.2021	सोमवार	मेरा पौधा	यूनिसेफ	7	हिन्दी	8	शाम–एक किसान	बीकानेर	निशा शर्मा	ज्योति वर्मा	10	सामा0 विज्ञान	4	औद्योगिक युग	बीकानेर	बुधाराम गोदारा	अनिल कुमार स्वामी
23	28.09.2021	मंगलवार	पौधे की तरह	यूनिसेफ	8	सामा0 विज्ञान	6	बुनकर लोहा बनाने वाले और फैक्ट्री मालिक	उदयपुर	डॉ देवेन्द्र राठौड़	शशी त्रिपाठी	10	विज्ञान	6	जैव प्रक्रम	उदयपुर	डॉ0 वैन्कटेंश्वरी पानेरी	अनुराग मेड़तवाल
24	29.09.2021	बुधवार	रियाज	यूनिसेफ	6	विज्ञान	8	शरीर में गति	कोटा	पल्लवी राज जौहरी	अल्का शर्मा	12	अंग्रेजी अनिवार्य	1	My Mother at Sixty Six	कोटा	अंशिता जैन	ऊषा पंवार
25	30.09.2021	गुरूवार	मत रोको	यूनिसेफ	7	हिन्दी	10	अपूर्व अनुभव	बीकानेर	रेणु बाला चौहान	ज्योति वर्मा	10	सामा0 विज्ञान	6	विनिर्माण उद्योग	बीकानेर	अनीता कुमारी	अनिल कुमार स्वामी

www.rajsevak.com

सूचनात्मक

निष्ठा : एकीकृत शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिक्षा में गुणात्मक सुधार व शिक्षकों की क्षमता संवर्धन एवं विविध कौशलों का विकास करने के लिए समय-समय पर केन्द्र व राज्य सरकार सेवाकालीन-शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करती हैं। NCERT एवं RSCERT द्वारा प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक कक्षाओं को अध्यापन कराने वाले शिक्षकों के लिए विशेष शिक्षक-प्रशिक्षण आरंभ किए गए हैं। यह सभी प्रशिक्षण दीक्षा पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन दिए जा रहे हैं। इनका उद्देश्य शिक्षकों की क्षमता संवर्धन का निर्माण करना, शिक्षकों को अपने व्यवसाय में नवीनतम नवाचारों और प्रगति को विभिन्न तरीकों से सीखने के लिए तैयार करना, आत्म सुधार के लिए अवसर प्रदान करना, छात्रों के सीखने के परिणामों में सुधार करना, एक सक्षम और समृद्ध समावेशी कक्षा वातावरण का निर्माण करना, शिक्षक को छात्र स्तर के परामर्शदाताओं की सामाजिक, भावात्मक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के प्रति सतर्क और उत्तरदायी बनाना, छात्रों के समग्र विकास के लिए व्यक्तिगत सामाजिक गुणों का विकास और सुदृढ़ीकरण करना, एक स्वस्थ और सुरक्षित स्कूल वातावरण का निर्माण करना है। यह प्रशिक्षण बाल केन्द्रित शिक्षाशास्त्र एवं राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में दिए जा रहे है।

निष्ठा एकीकृत शिक्षक-प्रशिक्षण भारत एवं राज्य सरकार का एक फ्लैगशिप प्रोग्राम है। निष्ठा प्रशिक्षण को पूरे देश में सत्र 2019-20 प्राथमिक स्तर पर (कक्षा 1 से 8) के 17 लाख शिक्षकों को (फेस टू फेस) व सत्र 2020-21 में 24 लाख (ऑनलाइन) शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया। इस सत्र में (2021-22) में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से 12) के 56 लाख शिक्षकों को शामिल किया जा रहा है। वर्तमान में दो प्रकार के निष्ठा शिक्षक-प्रशिक्षण राजस्थान में प्रारंभ किए गए हैं-

1. माध्यमिक शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण (निष्ठा 2.0)- राजस्थान में माध्यमिक कक्षाओं में अध्यापन कराने वाले (9 से 12) 46,641 वरिष्ठ शिक्षक, व्याख्याता, प्रधानाध्यापक एवं हेड टीचर को निष्ठा का ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण राज्य में 1 अगस्त 2021 से प्रारंभ किया गया है। जिसमें प्रतिमाह शिक्षकों को 3 मॉड्यूल का प्रशिक्षण लेना है। इस प्रकार से कुल 13 मॉड्यूल (पाठ्यक्रम) का प्रशिक्षण निम्न समयानुसार दिया जाना है।

प्रशिक्षण का समय एवं मॉड्यूल (पाठ्यक्रम):

1-31 अगस्त 2021 : 1. पाठ्यचर्या और समावेशी शिक्षा, **2.** शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन में आईसीटी, **3.** शिक्षार्थियों के समग्र विकास के लिए व्यक्तिगत सामाजिक गुणों का विकास।

1-30 सितम्बर 2021 : 4. कला एकीकृत शिक्षण, **5.** स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा, **6.** शिक्षार्थियों को समझना एक मार्गदर्शन और परामर्श दृष्टिकोण।

1-31 अक्टूबर 2021 : 7. व्यावसायिक शिक्षा, **8.** शिक्षा में लिंग संबंधी मुद्दे, **9.** माध्यमिक विद्यालय नेतृत्व विकास में अवधारणाएँ और अनुप्रयोग।

1-30 नवंबर 2021 : 10. विद्यालय की पहल, **11.** खिलौना आधारित शिक्षा शास्त्र, **12.** विद्यालय आधारित मूल्यांकन।

1-31 दिसंबर 2021 : 13. अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, संस्कृत, गणित, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान का शिक्षाशास्त्र।

2. प्राथमिक शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण (निष्ठा 3.0)- राजस्थान में प्राथमिक कक्षाओं में अध्यापन कराने वाले (1 से 5) 1,45,000 शिक्षकों को निष्ठा प्रशिक्षण 1 सितंबर 2021 से दिया जा रहा है। जिसमें प्रतिमाह शिक्षकों को 2 मॉड्यूल का प्रशिक्षण लेना है। इस प्रकार से कुल 12 मॉड्यूल (पाठ्यक्रम) का प्रशिक्षण निम्न समयानुसार दिया जाना है-

प्रशिक्षण का समय एवं मॉड्यूल (पाठ्यक्रम):

1-30 सितंबर 2021 : 1. FLN मिशन का परिचय, **2.** योग्यता आधारित मूल्यांकन।

1-31 अक्टूबर 2021 : 3. सीखने वाले को समझना-बच्चे कैसे सीखते हैं? **4.** कक्ष एक के बच्चों के लिए 3 महीने का स्कूल तैयारी मॉड्यूल।

1-30 नवंबर 2021 : 5. मूलभूत भाषा और साक्षरता, 6. मूलभूत संख्या।

1-31 दिसंबर 2021 : 7. सीखने का आकलन, **8.** माता-पिता की भागीदारी।

1-31 जनवरी 2022 : 9. शिक्षण, सीखने और आकलन में आईसीटी, **10.** प्राथमिक कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण।

1-28 फरवरी 2022 : 11. FLN को मजबूत करने वाला स्कूल नेतृत्व, **12.** खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र।

ये प्रशिक्षण नवीन पाठ्यक्रम, सीखने के परिणामों और शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षाशास्त्र पर आधारित है। इस प्रशिक्षण में NEP-2020 के सभी अनुशंसित क्षेत्रों को शामिल किया गया है। शिक्षण व सीखने में आईसीटी का प्रयोग, सीखने की क्षमता पर केन्द्रित, तनाव मुक्त स्कूल आधारित मूल्यांकन का विकास करना, गतिविधि आधारित शिक्षण को बढ़ावा देना ताकि विद्यार्थी रटने के बजाय समझ के आधार पर सीखने में सक्षम हो सके। कला को शिक्षाशास्त्र के रूप में उपयोग करें जिससे छात्रों में रचनात्मक और नवीनता में वृद्धि हो। शिक्षक एवं प्रधानाध्यापकों को स्कूल शिक्षा में नई पहल के बारे में जागरूक करना। स्कूल के लिए शैक्षणिक और प्रशासनिक नेतृत्व प्रदान करने के लिए स्कूल के प्रधानाध्यापकों को प्रशिक्षण करना जैसे इस प्रशिक्षण के प्रमुख उद्देश्य है।

इस प्रशिक्षण में पाठ संसाधन, इंटरएक्टिव और चिंतनशील, शिक्षकों के लिए आकर्षक गतिविधियाँ, ऑनलाइन और ऑफलाइन, ऑडियो, व्याख्यानात्मक और प्रदर्शन वीडियो, अतिरिक्त संसाधन (वेबलिंक, पठन सामग्री, ब्लॉग) एवं मूल्यांकन के लिए प्रश्नोत्तरी को शामिल किया गया है। RSCERT द्वारा शिक्षकों के विचार विनिमय के लिए, निष्ठा प्रशिक्षण एवं अपने शिक्षण के अनुभव इत्यादि को शेयर करने के लिए ब्लॉग का निर्माण भी किया है। शिक्षक द्वारा 70 प्रतिशत प्रशिक्षण पूर्ण करने पर डिजिटल प्रमाण पत्र दिया जाएगा।

देश के सभी राज्यों में निष्ठा शिक्षक-प्रशिक्षण को लागू किया जा रहा है। निष्ठा योजना के तहत शिक्षकों के प्रशिक्षण की इस पहल से स्कूल शिक्षा को मजबूती मिलेगी। इससे शिक्षकों की गुणवत्ता काफी बेहतर होगी। छात्रों के सीखने के परिणामों में सुधार आएगा। इसके साथ ही लर्निंग आउटकम्स के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में भी सुधार होगा।

चैनाराम सीरवी
निष्ठा कार्यक्रम समन्वयक
आरएससीइआरटी उदयपुर, **मो: 9983449410**

www.rajsevak.com

हिन्दी कविता

मास्क लगाओ

❒ डॉ. सत्यनारायण 'सत्य'

सब मिलकर एक टास्क बनाओ,
मास्क लगाओ भई मास्क लगाओ।

बड़ी आई मुसीबत भारी,
कोरोना की ये बीमारी
सब घबराए, दुनिया हारी,
क्या करे जनता बेचारी।।

हाथ धोएं और दूरी रखें,
भीड़भाड़ से सदा बचें,
सैनिटाइजर का करें प्रयोग,
सुन्दर नियम सबको जँचें।।

जब भी छींकें और खाँसें,
ढकें रुमाल से अपनी साँसें
डरें नहीं बस सावधान रहें,
कोविड गाइडलाइन पूरी बाँचें।

नया साल है नई आशा रखें,
घर पर रहें, स्वस्थ रहें,
'सत्य' कह रहा हूँ भाई आपको,
रहें प्रेम से, मस्त रहें।

सब मिलकर एक टास्क बनाओ,
मास्क लगाओ भई मास्क लगाओ।

समता भवन के पास, रायपुर,
भीलवाड़ा (राज.)-311803
मो: 9460351881

प्रकृति और मानव

❒ सुनिता पंचारिया

प्रकृति और मानव का
रिश्ता बहुत पुराना है,
हम प्रकृति से,
प्रकृति हम से है,
साधु संतों के अध्यात्म में,
विश्व की सभ्यता के विकास में,
मनुष्य की चिर सहचरी,
ईश्वर प्रदत्त उपहार है।
भावाभिव्यक्ति का उद्गम स्थल,
सर्वव्यापी सत्ता का भाव है।
प्रकृति नदियों की कलकल,
समुंदर की हलचल,
रिमझिम सावन की बरसात है,
मौसम का मिजाज है।।
लेकिन....
जब मानव मन में लालच जन्मा,
ताप बढ़ा धरती का,
धरती काँपी अंबर काँपा,
कांपा ये संसार,
बूंद-बूंद पानी को तरसा,
ये सारा जहान,
गुस्सा फूटा प्रकृति का किया जो तूने
खिलवाड़,
बढ़ा धरती पर भूकंप बाढ़ व सूखा सैलाब
का तूफान,
नहीं बचा पाएगा तू अपना सम्मान रे
मानव तू नहीं सुधरा तो
दूर नहीं विनाश रे,
मुझ पर कहर खूब ढाया,
अब बारी मेरी है।
मैं थी और मैं हूँ और मैं रहूँगी,
पर तेरा अस्तित्व नहीं रहेगा,
यह कहावत सिद्ध हो पाई
जैसा बोएगा वैसा काटेगा
और कर भला तो हो भला
जैसे नियम हुए साकार, अटूट है सम्बन्ध,
पूरक है हम, संभल जा रे मानव।

शिक्षिका
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जूना,
गुलाबपुरा (राज.)
मो: 9251775153

www.rajsevak.com

मेरा राजस्थान

❒ धर्मेन्द्र कुमार सैनी

वीरों का स्थान है
ये मेरा राजस्थान है।

छलिया टिका है बोलो कहाँ का
जहाँ था शासक रहा वहाँ का
भव्य अनोखा लोक जहाँ का
अपना-पराया सब है यहाँ का।।

पाहुँन देव समान है
ये मेरा राजस्थान है।

धूर्त, लोभ भी काम ना आया
वीर प्रताप ने मान बढ़ाया
राणा सांगा को रास था आया
कुम्भा जैसा शासक पाया।।

शूरवीरों की जान है
ये मेरा राजस्थान है।

तेग उठाकर रण में निकल गई
एक-एक कर शत्रु दल गई
अस्मिता की खातिर जल गई
वैरी की भी सोच बदल गई।।

नारी का सम्मान है
ये मेरा राजस्थान है।

अरावली हिमालय-सी है
धरती धोरां कंचन-सी है
चंबल जन का जीवन-सी है
सांभर फैली सागर-सी है।।

कुदरत के वरदान है
ये मेरा राजस्थान है।

दुर्ग मुकुट-से इसके प्यारे
वन जगंल-से पट है न्यारे
मोती माला निर्झर सारे
गुरु शिखर-सा मस्तक धारे।।

मरुधरा उद्यान है
ये मेरा राजस्थान है।

कल्पतरु है यहाँ खेजड़ी
बगियां झूमे खुशी हर घड़ी
कलियाँ महके प्यार से खड़ी
ओस की बूँद हीरे-सी पड़ी।।

फल-फूलों की खान है
ये मेरा राजस्थान है।

संध्या-सुबह फैले है लाली
फसलों में अमृत-सी बाली
गेहूँ, बाजरा बने दिवाली
सावन में छाए हरियाली।।

इस पर सबको मान है
ये मेरा राजस्थान है।

घूमर जैसा नृत्य निराला
नन्दन-सा संगीत को पाला
तीज सवारी उर में माला
गणगौर का दृश्य निराला।।

सारे देश की शान है
ये मेरा राजस्थान है।

ऊँट सुहाने मन को भाते
गोडावण मिल-सुर में गाते
बाघ भी वन में शोभा पाते
सारस पक्षी घूमने आते।।

भारत की पहचान है
ये मेरा राजस्थान है।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय अलीपुर, बांदीकुई,
दौसा (राज.)

नारी नारायणी

❒ डॉ. भगवान सहाय मीना

नारी तू नारायणी जग की सृजनकार,
मानव का कल्याण करें बनकर पालनहार।
अवरुद्ध पथ की प्रशस्तक बन रोड़े तू हटाती,
जीवन प्रदायिनी लोक की बनकर तारणहार।
ममता की झिलमिल रोशनी में सदा रही मुस्काती,
हर पल पुष्पित पल्लवित रहती सदाबहार।
सागर जितना वात्सल्य बहती स्नेह जलमाला,
कितने गुण बखान करूँ महिमा तेरी अपरम्पार।
भिन्न नहीं ईश्वर से तेरा प्रकृति सा रूप,
डग भर चलती नहीं पृथ्वी बिन नारी परोपकार।

तेरे ही कर-कमलों से सजती दुनिया,
जग में करती पालन पोषण बन शिल्पकार।
हे! नारी जग में अनगिनत है स्वरूप तेरे,
तू सजीव बनाती चित्र भूलोक की चित्रकार।
रामराज्य में सीता परखी गई आग में,
पत्थर बन रखी अहल्या गौतम नर की नार।
घोषित कर पांचाली जुआ चढ़ाई द्रौपदी,
पुरुष बता, अब क्या शेष है दरकार।
बुद्ध बनकर फिर छली गई थी यशोधरा,
फिर भी गंगा यमुना सी बहती है सदियों से नार।।

सवाई माधोसिंह पुरा,
तह. चाकसू, जयपुर (राज.)-303903
मो: 9928791368

www.rajsevak.com

कोरोना तेरा कहर

❒ आर्यन श्रीमाली

कोरोना ने कर दिया,
यह कैसा-कमाल!
ना स्कूल ही खुल रहे
ना घर पढ़ाई याद।

मास्क लगा कर घूमना,
फिर भी पाबंदी।
हाथ मिलाना ना कभी,
दो गज की रखना दूरी।

अब ना कोई पार्टी,
ना याद रहा पिकनिक
घर का घर में रहना,
दिनभर यही चिंतन-मनन।

साल भर से पिछड़ रहे,
धंधे-चकनाचूर।
माता-पिता नित सोच में
हुआ प्रकोप यह खूब।

कोरोना तेरा यह कहर
दूसरी, तीसरी लहर।
क्यों सबको तू सता रहा?
चला गया सब नूर।

यदि फेर ली हमने आँखें,
भूल जाएगा, नखरे-सारे।
यह चीन नहीं, भारत है प्यारे,
यहाँ तो सिकन्दर जैसे भी हारे।

S/o डॉ. नितिन व्यास
जिला रोजगार कार्यालय, जालोर (राज.)
मो: 9414531050

आधुनिकता

❒ अमित श्रीमाली

(1) टीवी

जब से घर में टीवी आया
दरवाजे को बंद करवाया।
घर के घर में,
बाहर का प्रेम,
ना अंदर झांके
सिकुड़ गए आँगन व रिश्ते।

(2) ए सी

एसी ने कर दी,
पूर्ण बंदी
दरवाजे, खिड़की,
सब बंद, कोई कैसे, झांके।
बाहर की हवा
अंदर ना आए
तब व्यक्ति को कैसे, पहिचाने!
खुद ने खर्च किया है भाई!
दूसरे आनंद कैसे पाए।
स्वार्थ की भावना
यहाँ से आयी।

विवेकानन्द आदर्श माध्यमिक विद्यालय
जालोर (राज.)
मो: 9460087724

शिक्षक

❒ स्नेहलता शर्मा

जीवन में जो राह दिखाए,
अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए
सन्मार्ग पर चलना सिखाए,
माता-पिता और भगवान से भी पहले आता,
आदर जीवन में सदा वह पाता।।

जीवन की प्रतिष्ठा जिससे, सत्य, अहिंसा,
करुणा, नैतिकता, मानवीयता,
सदाचार सीखते उनसे।
कभी रहा न जाए दूर जिनसे,
हम सब ज्ञान सीखते उनसे।।

हम सब के मन को भाते वो,
जगद्गुरु कहलाता है वो।
कभी शान्त तो कभी धीर,
सदा रहते है वह गम्भीर।।

हम सभी के मन में यह प्रबल इच्छा,
काश बने हम भी उन जैसा।
हम सब का ऐसा अरमान,
शिक्षक होता ईश्वर समान।।

विशेष शिक्षिका
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, जोगीपुरा,
नदबई, भरतपुर (राज.)
मो: 9928388935

www.rajsevak.com

संगत

❐ श्रवण लाल

संगत का असर
जीवन में सदा होता है,
संगत से आती जीवन में रंगत
संगत के रंग में रंग जाते
सब के काम सुधर जाते
यदि संगत हो गलत
तो बनते काम बिगड़ जाते
जीवन में दुःख ही दुःख उमड़ आते।
यदि मिले अच्छी संगत
तो जीवन में वारे न्यारे हो जाते।
मंगलमय जीवन हो
सारे काम सुधर जाते।

प्रबोधक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बड़ा तालाब,
नगवाड़ा, नागौर (राज.)
मो: 9982553744

मर्यादा

❐ हनुमानराम लोरा

अनोखा है इंसान का जीवन
छोटा सा है मनुष्य का जीवन
मत तोड़ो अच्छी परम्परा
मर्यादा में रहो, जीवन जियो।

जीवन को जियो हँस खेलकर
मत दुखाओ किसी का दिल
मदद करो जरूरतमंदों की
लाखों दुआएं मिलेगी आपको।

सीमा में रहना हमारा धर्म है
मर्यादा में होना जरूरी है
मर्यादा में रहकर जीवन का निर्माण होता
उज्ज्वल भविष्य का रास्ता खुलता
मर्यादा पालन सबको सम्मान देती
गुरुजनों को मान देती।

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नगवाड़ा, कुचामन
सिटी, नागौर (राज.)
मो: 9413928559

इक्कीस

❐ श्रीपाल श्रीमाली

इक्कीस हमारा इक्कीस रहे,
ना ये उन्नीस-बीस बने
बीमारी यहाँ से नौ दो ग्यारह हो,
विकास नित-नित बढ़ता हो।

हर कोई यहाँ इक्कीस बने,
भेदभाव सब क्षीण पड़े
विश्व होता रहे अचंभित,
हमारी प्रगति देख हो सब चकित।

बालक बूढ़े भी नित इतराए,
किसी पर कहीं मायूसी ना छाए,
विद्वता-विकास में हम हों इक्कीस,
कुप्रथाएँ-कुसंगत हो जल्द तैतीस।

भ्रष्टाचार में न हो तनिक बीच बचाव
इक्कीस में तोड़े इसकी जड़ें
राजनीति में आये स्वच्छ छवि
यह कहती मिले, इक्कीस की घड़ी।

भारत में रही इक्कीस की महत्ता,
हर क्षेत्र में लाएंगे गुणवत्ता,
कोई आँख उठाकर जब भी देखे,
उसे उखाड़ जड़ से ही फैंके।

खंडप, बाड़मेर (राज.)
मो: 9413171217

पेड़

❐ भँवरलाल महला

पेड़ हमें छाया देते
फल-फूल और मेवा देते
जीवन की हमें श्वासें देते
धरती को शीतल कर देते
हरी-भरी धरती माता का
शोभा का शृंगार देते
पर्यावरण को शुद्ध बना
जीवों का उद्धार करते
खुद का बलिदान देकर हवन यज्ञ से
देवों को प्रसन्न करते पेड़ हमारे रक्षक हैं।
प्रदूषण के भक्षक हैं।
देवों के देव पेड़ हमारे
सबको जीवन देने वाले
पक्षियों को आश्रय देने वाले
सब पापों को हरने वाले।

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नगवाड़ा,
कुचामन सिटी, नागौर (राज.)
मो: 9468911441

गुरु

❐ मूलाराम लोरा

यदि होता नहीं गुरु
तो मार्ग नहीं मिलता
मार्ग नहीं मिलता
तो ज्ञान का विकास नहीं होता
पशु समान जीवन होता
बुद्धि का विकास नहीं होता
यदि विकास होता बुद्धि का
तो सही दिशा में नहीं होता
मानव का विकास नहीं होता
विकास नहीं होता
तो मानव का कल्याण नहीं होता
गुरु बिना मार्ग नहीं मिलता
गुरु बिना ज्ञान नहीं मिलता।

प्रधानाध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय हनुमानपुरा,
नगवाड़ा, नागौर (राज.)
मो: 9828255804

www.rajsevak.com

कोरोना इक महामारी

❐ राकेश मेघवाल

कर दी कोरोना ने, मानव से मानव की दूरी।
अब दो-गज दूरी, मास्क हो गया जरूरी।।

भयग्रस्त हुए सभी, कमजोर या मजबूत हो,
बार-बार हाथ धोना हो गया अब मजबूरी,
कर दी कोरोना ने, मानव से मानव की दूरी।
अब दो-गज दूरी, मास्क हो गया जरूरी।।

पूरे विश्व को जकड़ा, इस अनोखी बीमारी ने,
अर्थव्यवस्था चौपट कर दी इस महामारी ने,
मनुज को कंपा दिया, ग्रसितों की शुमारी ने,
बेबस मनुष्य, तमन्नाएं अधूरी की अधूरी,
कर दी कोरोना ने, मानव से मानव की दूरी।
अब दो-गज दूरी, मास्क हो गया जरूरी।।

हो रहा विद्यार्थियों को, शिक्षा का नुकसान,
विकट काल में, सभी व्यापारी भी परेशान,
मेले-त्योहार फीके, शहर के बाजार सुनसान,
खस्ताहाल किसान, ना मजदूर को मजदूरी,
कर दी कोरोना ने, मानव से मानव की दूरी।
अब दो-गज दूरी, मास्क हो गया जरूरी।।

संकट से जूझ रहे, अमेरिका जापान चीन,
तब भारतीय वैज्ञानिक लेकर आए वैक्सीन,
वैक्सीन लगाकर 'राकेश', बनो खौफहीन,
धन्य भारतीय योद्धा, बचायी मानवता पूरी
कर दी कोरोना ने, मानव से मानव की दूरी
अब दो गज दूरी, मास्क हो गया जरूरी।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बावड़ी, जालोर
मो. 9983587759

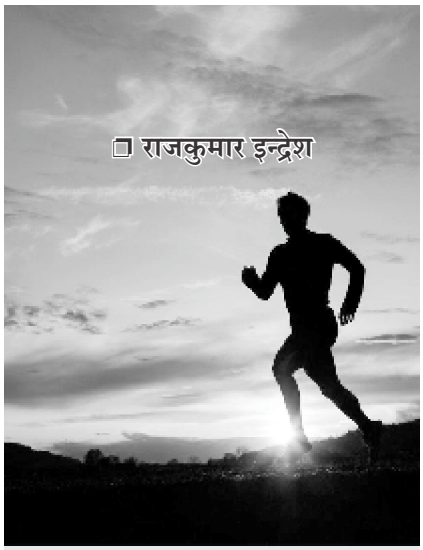

मैं रुका नहीं

❐ राजकुमार इन्द्रेश

मैं रुका नहीं, मैं रुका नहीं
मैं थका नहीं, मैं थका नहीं
आशाओं की बेला से अब
चीर निराशाओं को भगाता।
विघ्न बाधाओं की शिलाएं
दृढ़ विश्वास से तोड़ जाता।
चलता जाता बढ़ता जाता।।

मैं रुका नहीं, मैं रुका नहीं
मैं थका नहीं, मैं थका नहीं
पतझर, झंझावत लपटों से
देखो मैं बिल्कुल डिगा नहीं।
दुःख के सागर में डूब कर
मानवता का फूल खिलाता।
चलता जाता, बढ़ता जाता।।

मैं रुका नहीं, मैं रुका नहीं
मैं थका नहीं, मैं थका नहीं
गिरि, गह्वर खड्डों को अब
कर साहस मैं लाँघ जाता
पथ के कंकड़ पत्थर हटा
मैं राह को सरस बनाता।
चलता जाता, बढ़ता जाता।।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिजौरी बड़ी,
कुशलगढ़, बाँसवाड़ा (राज.)
मोः 9001311561

गुरुओं के चरणों में नमन

❐ उत्सव जैन

जीवन को शुरू करने में,
गुरुओं का ही हाथ होता।
ज्ञान के द्वार खुल जाते,
जब गुरुओं का साथ होता।।

उनके चरणों की धूल,
हमारे मस्तक पर लगाते।
तब मानो साक्षात,
दर्शन प्रभुजी के हो जाते ।।

जब हम ज्ञानार्जन कर,
उच्च पद को प्राप्त करते।
तब उन गुरुओं के,
त्याग को हम याद करते।।

गुरुओं का जिन्हें भी मिला सान्निध्य,
उनका जीवन सफल हो जाता।
गुरुओं के आशीर्वाद के बिना,
सफल होना मुश्किल लगता।।

इसलिए गुरुओं को नमन करना,
हमारी नैतिक जिम्मेदारी।
उत्सव जैन कहता प्यारे,
गुरु होते बड़े उपकारी।।

वरिष्ठ लिपिक (सेवानिवृत्त)
मु.पो. नौगामा, तहसील-बागीदौरा
जिला-बांसवाड़ा (राज.) 327603
मो. 9460021783

www.rajsevak.com

विश्व गुरु भारत

❐ बुद्धि प्रकाश महावर 'मन'

विश्व गुरु है देश ये भारत,
आज किसे समझाना है।
शत-शत वन्दन करके इसको,
चरणों शीश झुकाना है।

उगता है सूरज नित पूर्व,
ज्ञान का दीप जला है।
हम जगते दुनिया ये सोती,
सब को राह दिखाता है।

ना कोई बढ़कर है हम से,
भारत गौरवशाली है।
ज्ञान और विज्ञान हमारा,
जग में उन्नतशाली है।

चरक भास्कर नागार्जुन और
वराह प्रतिभाशाली है।

ज्योतिष शतरंज लूडो ताश,
वास्तु की कलाकारी है।

आर्यभट्ट, गार्गी, मैत्रेयी,
सारा जग तो जाना है।
गौतम नानक चाणक्य और
राम कृष्ण को माना है।

रामायण गुरुग्रंथ साहिब,
वेद पुराण व गीता को।
सावित्री पन्ना व काली
नमन है मात सीता को।

मोहनजोदड़ो हड़प्पा सभ्य,
ललित कला व खगोली भी।
आयुर्विद्या गणित की शिक्षा,
सिर चढ़कर जग बोली थी।

नृत्य संगीत यहां के,
मुस्कानें नई देते हैं।
मातृभूमि पर वारि जाऊं,
प्रेम से प्रेम लेते हैं।

वन्दे मातरम कहता जाऊं,
आन व शान हमारी है।
विश्व गुरु ये देश है मेरा,
झुकती दुनिया सारी है।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय खोहरा कला,
दौसा (राज.)
मो: 9929675140

प्रकृति के बोल

❐ लक्ष्मी कान्त शर्मा 'कृष्ण कली'

नीला-नीला आसमान
क्या कहता।
क्या कहता भाई
क्या कहता?
पढ़ो लिखो
विद्वान बनो तुम
जग में अपना
नाम करो तुम
काम करो भाई
काम करो भाई
सुबह-शाम
दिन-रात करो तुम।।1।।

हरी-भरी धरती
क्या कहती।
क्या कहती भाई
क्या कहती?
सावन की हरियाली
जैसे बन जाओ तुम
मधुर बोल से
मनभावन कहलाओ तुम।।2।।

गहरा-गहरा सागर
क्या कहता
क्या कहता भाई
क्या कहता?
ज्ञान की गहराई
जानो तुम
विज्ञान की सचाई
मानो तुम।।3।।

चम-चम चमकता चंदा
क्या कहता।
क्या कहता भाई
क्या कहता?
घट-बढ़ कर भी
पूर्ण बनो तुम
चंद्र कलाओं का
रहस्य बखानों तुम।।4।।

लाल-पीला सूरज
क्या कहता
क्या कहता भाई
क्या कहता?
रंग बदलती
दुनिया में अपना रंग
जमाओ तुम।
अपने यश की रोशनी फैलाओं तुम।।4।।

काले-काले बादल
क्या कहते।
क्या कहते भाई
क्या कहते?
अच्छाई पर
एतबार करो तुम बुराई पर
तड़ित प्रहार करो तुम
हरदम परोपकार का
नीर बरसाओ तुम।।6।।

प्यारी-प्यारी प्रकृति
क्या कहती।
क्या कहती भाई
क्या कहती?
हे मानव!
प्रदूषण फैलाने वाले
अभिमान करो ना तुम
जिस थाली में खाते हो
उसमें छेद करो ना तुम
गाइडलाइन का पालन कर लो
कोरोना-ग्रास बनो ना तुम।।7।।

अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय संतों की ढाणी,
मोरीजा, चौमूं, जयपुर (राज.)
मो: 9784132269

www.rajsevak.com

❒ मोना शुक्ला

शिक्षक शब्द ही महान है शिक्षक है तो जहान् है
सहजता, सरलता, धैर्य से, समस्याओं को करता आसान है
कर्त्तव्यों की गठरी का सदा रहे जिसे भान है
शिक्षक शब्द ही महान है, शिक्षक है तो जहान् है।।
ज्ञान पुंज जग भर को देकर, दिया जगत को आधार है
मजबूत संकल्प शक्ति का संचार कर, किया ज्ञान का विस्तार है
शिक्षक शब्द ही महान है, शिक्षक है तो जहान् है।।
सादा जीवन, उच्च जीवन मूल्य, दूर रखा अभिमान है
अनुशासन और धैर्य सिखाना, यही उसकी पहचान है
शिक्षक शब्द ही महान है, शिक्षक है तो जहान् है।।
भाग्य विधाता, जीवन दाता, ज्ञान पुंज फैलाता है
दीपक की ज्योति जैसे जीवन को चमकाता है
नैया को जो पार लगा दे, ऐसी वह पतवार है
शिक्षक शब्द ही महान है, शिक्षक है तो जहान् है।।
अंधेरों में उजास है, प्रज्ञा का प्रकाश है
सदा सुरक्षित सब के बच्चे, अभिभावक का विश्वास है
शिक्षक शब्द ही महान है, शिक्षक है तो जहान् है।।
महामारी के इस काल में मिली अलग पहचान है
ऑनलाइन शिक्षण में भी, मन से बच्चों के पास है
घर-घर जाकर शिक्षण देना, शिक्षा के नए-नए आयाम है
शिक्षक शब्द ही महान है, शिक्षक है तो जहान् है।।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बोरदा,
झालरापाटन, झालावाड़ (राज.)

विद्यालय

❒ अंकित शर्मा 'इषुप्रिय'

जग की सुंदरता सिमटे, निर्मल सुरसरि लहरें बन।
शिक्षा-शशि की किरणों से शीतल सित हो अंतर्मन।
गुण-सुगंध की धूपों से, सुरभित हो जैसे देवालय।
ऐसा हो अपना विद्यालय।।1।।

आदर्श-ज्ञान, सहयोग, कला, कर्त्तव्यनिष्ठ निर्माता हो।
सत्य, शांति, सौहार्द्र, शील, धीरज का पाठ पढ़ाता हो।
श्रम, सहनशीलता, तन्मयता, हो सदाचार का कोषालय।
ऐसा हो अपना विद्यालय।।2।।

वात्सल्य मूर्ति आचार्य जहाँ, सुत गुरुओं का सम्मान करें।
हो वातावरण निडरता का, जिस पर समाज अभिमान करें।
हो राज्य राष्ट्र जग के हित में, हो जन मानस का गर्वालय।
ऐसा हो अपना विद्यालय।।3।।

तज भेदभाव विद्वेष गरल, मानवता उन्नायक हो।
उठ धर्म-जाति वैषम्यों से, समता के संचालक हो।
आशाओं की पूर्ति करें, बनकर धरती के दिव्यालय।
ऐसा हो अपना विद्यालय।।4।।

नैतिकता की नींव रखे, सामाजिकता संचित हो।
सीखें जो विद्या बालक वो, देशोन्नति में अंकित हो।
मिलकर यों सारे कार्य करें, निज शाला हो सहयोगालय।
ऐसा हो अपना विद्यालय।।5।।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय पथरौला कलाँ, सिंघावली,
बरेह, धौलपुर (राज.)-328001
मो: 8827040078

www.rajsevak.com

ग़ज़ल

❐ राजेन्द्र कुमार टेलर

रिश्ता जो उससे रूहानी रखना।
जीने में जैसे आसानी रखना।।

होठों पे तबस्सुम आ जाए अक्सर।
ऐसी भी कोई याद पुरानी रखना।।

आगाज़ सुबह का अच्छे से करना है।
हसरत है गर ये शाम सुहानी रखना।।

बात चले जब भी घर परिवारों की
बच्चों के संग दादी और नानी रखना।।

ऐ बादल! बारिश में इतना बरस तू
कुएं सरोवर दरिया में पानी रखना।।

बिना झोली के फकीर हैं ये याद रहे
पंछियों को दाना और पानी रखना।।

ज्यों की त्यों धर दीन्हीं चदरिया जैसे
'राही' ऐसी तेरी जिंदगानी रखना।।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रायपुर
पाटन, सीकर (राज.)-332718
मो : 9680183886

अरदास

❐ ललिता छीपी

भरे भंडार विद्या का यही विश्वास लाए हैं
तेरे चरणों में हे मैया यही अरदास लाए हैं।

कि हिन्दू हैं मुसलमां हैं अकाली हैं इसाई हैं
कि सब मिलकर के हे मैया तेरे हम पास आए हैं।

जलेगा ज्ञान का दीपक तेरी सुंदर सी दुनिया में
मिटाएंगे सभी अज्ञान के बादल जो छाए हैं।

न दीपक है न बाती है न फूलों की हैं मालाएँ
ये नन्हा सा हमारा दिल ही माँ के पास लाए हैं।

तेरी संतान भारत की नहीं पीछे रहेगी अब
ऐ माँ इस दिल में आशाओं भरा आकाश लाए हैं।

अध्यापिका
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय गुणदी,
खैरियानाद, कोटा (राज.)

आम का पेड़

❐ डॉ. दयाराम

सड़क किनारे खड़ा
आम का पेड़ कर रहा है इंतजार!
एक यात्री का जो उसकी छाया में
खड़ा होकर
सुन सके कोयल का मधुर गीत
चिड़िया का संगीत, भंवरे की गुंजार
महसूस कर सके
कच्चे आमों की खट्टास
हवा में फैली सुगंध
अपनेपन का एहसास
इक्कीसवीं सदी की
भाग दौड़ में उसका इंतजार
बढ़ता ही जा रहा है। दिनों दिन!

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
आंतरी,
राजसमंद (राज.)-313325
मो: 9462205441

अब आजमा के देख लिया

❐ रतन लाल जाट

अब आजमा के देख लिया
अपनी सारी ताकत या
धन बल कुछ शेष रह गया
बताओ बाहुबल और है कितना

क्यों दिमाग काम करना बंद हो गया
विज्ञान कैसे हाथ खड़े कर रहा
इन्सान तो खुद को भगवान समझ रहा था
मंगल पर जाकर जमीन ले रहा था

फिर क्यों घर में बंद हो गया
काम बता सब कैसे छोड़ दिया
मरने से किस तरह आज डर रहा
अब कुछ नहीं चाहिए और क्या?

जरा सा बाहर घूम फिर आओ ना
इतना जल्दी समझ गए हो इशारा
क्या नहीं चाहिए प्रमाण पूरा
कुछ याद आया पिछला किया अपना

क्यों शांत मन है तेरा
इतना समय कहाँ से मिला
कैसा होता है आसमां देख रहा
और धरती की सुंदरता

टकटकी लगाए है निहारता
नदियों का पानी हरी-भरी वादियाँ
कैसी होती है रातें यहाँ और कैसा
टिमटिमाना तारों का चाँदनी का छिटकना

सुबह कितनी सुंदर होती देख समाँ
कैसी होती है मंद बहती शीतल हवा
बोल क्यों ना, अब तू पिछड़ रहा
चुपचाप क्यों है, नहीं कुछ कह रहा

क्यों सुनसान पड़ी है सड़कें यहाँ
बाजारों की भीड़भाड़ गयी हैं कहाँ
कल-कारखाने क्यों नहीं उगल रहे हैं धुआँ
क्यों नहीं परमाणु परीक्षण और कहीं हो रहा

सजा किसी की भुगत कोई रहा
मित्र में भी क्यों शत्रु दिख रहा
क्यों सबको अब लग रहा
जीवन अपना बहुत बदला

शायद इंसान फिर इंसान बन रहा
खोए हुए जीवन-मूल्य सीख रहा
पश्चाताप हर एक गलती का कर रहा
देखो कैसा अपना सारा जहाँ लग रहा

व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय डिण्डोली,
कपासन, चित्तौड़गढ़ (राज.)
मो: 9636961409

www.rajsevak.com

शपथ जनमानस की

❐ पूरणमल खटीक

ओ! धरा के मनुज पूतले।
क्यों ना समझे इन इशारों को।।
खतरे में होगा इस पर जीवन
पहचान कृत्य परिणामों को।।

क्यों प्रकृति से खिलवाड़ करता
सुखी जीवन बनाने में।।
जीना मुश्किल हो जाएगा।
पूछ ले भविष्य के जमाने से।।

कितना सुन्दर चित्रण होता।
अगर पर्यावरण शुद्ध होता।।
रोज सवेरे की लाली में।
पंछियों का मीठा कलरव होता।।

देख धरा के हालातों से।
हमें अब संभलना होगा।।
करते हुए पेड़ों को।
जीवन नया देना होगा।।

कल-कल करती नदियाँ।
झर-झर झरते झरने।।
सर-सर बहती ये हवा।
ये प्रकृति के शृंगार है।।

ओ! धरा के मनुज पूतले।
तू इतना तो समझदार है।।
प्रदूषण का विष घोलकर।
क्यूं करता प्रकृति का संहार है।।

सुखी धरा के आँचल को।
फिर से हरा करके देखो।।
कितना सुन्दर होगा जहाँ।
एक पेड़ आँगन में लगा के देखो।।

आओ इस धरा खातिर।
मिलकर सब शपथ लेते हैं।।
प्रदूषण रहित हो वातावरण।
जनमानस में ये संदेश देते हैं।।

वरिष्ठ अध्यापक (सामाजिक विज्ञान)
स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल
भूपालसागर, चित्तौड़गढ़ (राज.)-312204

अन्तिम सत्य

❐ पूरणमल तेली

ईश्वर का दिया यह तन,
न जाति का न पांति का और न ही धरम।
बुद्धजन यह कहते,
मानव रूप मिला पूर्व जन्म के बड़े करम।।
माँ के स्नेह में बालपन,
सिखाया माँ ने हँस हँसकर मुस्कुराना।
रूप बनाया ऐसा मेरा,
करते हुए सद्कर्म से सबको खुश कर देना।।
माँ केवल माँ है जो,
समझती मेरे हर दुःख और दर्द।
पर इस जगत में उसके,
दुःख और दर्द की कौन दे सका दवा मर्म।।
बालकों संग
न कोई ऊँचा न कोई नीचा,
क्रीड़ा काल में आया न कभी निज का अहम्।
कालचक्र ने खाया पलटा,
बालपन के नटखट मन से यौवन में रखा कदम।।
देखकर भेद का भाव,
हुआ बड़ा पश्चाताप।
वातावरण के रंग में
रंगकर हुआ बड़ा मनःसंताप।।
अस्तित्व अपना जब,
अन्त समय छोड़ने दुनिया को आया।
ज्ञान चक्षुओं में शाश्वत,
इस ब्रह्म जगत का चहुँओर प्रकाश छाया।।
भक्ति का भाव जगा,
घाव पर मरहम लगाने को।
पर घाव इतना गहरा,
पूर्व में क्यों न आया विचार हटाने को।।
यही विचार मन में कर
हुआ पुनः पुनः बहुत अधिक पश्चाताप।
पर अब क्या जब जीवन
अन्तिम क्षणों में लेने लगा चिर विश्राम।।

वरिष्ठ अध्यापक (संस्कृत)
सण्डियारड़ा, मुंगाना, भूपालसागर, चित्तौड़गढ़
(राज.)-312204
मो: 9460910799

सुहाने समय का साया

❐ बस्तीराम जाट

उड़ जाते हैं सारे पंछी पतझड़ में छोड़ तरु।
आते ही बसंत होती चहचहाहट फिर शुरू।।
दूर हो जाती है सारी धूप, रहती गहरी छाया।
आता है जब सुहाने समय का साया।।1।।

ग्रीष्म में होती मेहर, बरसे जब काल बदरा।
तपा तन होता तरोताजा, उड़े तुरंत तंद्रा।।
पलभर में शीतल होता खूब ताप का ताया।
आता है जब सुहाने समय का साया।।2।।

देती है सच्चा साथ जब पादप का मूल।
तो खिलने लगते हैं कीचड़ में भी फूल।।
रह जाता नीचे पंक ऊपर कोमल काया।
आता है जब सुहाने समय का साया।।3।।

मिलता पीने को जब मधुकर को खूब मधु।
आवास अपने आता है डोल-डोलकर बुद्धू।।
गा लेता है ऐसे गीत जो कभी ना गा पाया।
आता है जब सुहाने समय का साया।।4।।

आते हैं मेघमाला को लेकर जब मेघनाथ।
भर जाते हैं सारे ताल-तलैया एक ही रात।।
दूर किनारा अब चंद पलों में ही पास आया।
आता है जब सुहाने समय का साया।।5।।

गूँजती अमराइयों में खूब कोयल की कूक।
रहते नहीं आज अब पपीहा व मोर भी मूक।।
करते नहीं ये अपना वक्त कभी जाया।
आता है जब सुहाने समय का साया।।6।।

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ग्वालू,
मूण्डवा, नागौर
मो: 9983203162

www.rajsevak.com

फिर से उद्धार

❐ आकांक्षा शर्मा

बचपन से एक कहानी मुझे बहुत लुभाती थी
वो कहानी जो परियों से ज्यादा सुहानी थी
हाँ वही जो धरती के जीवन की कहानी थी
वो कहानी जो माँ मुझे अक्सर सुनाती थी
हाँ गंगा मैया वो कहानी थी तेरे पावन रूप की
तेरी उज्ज्वल धवल चंचल लहरों की
तेरे धरती पर अवतरण की थी वो कहानी
भगीरथ के भगीरथी प्रयासों की थी वो कहानी
माँ की वो कहानी मैंने जब से सुनी थी
मेरे मन में तुझे देखने की इच्छा बसी थी
गंगोत्री में मैंने तेरा वो अनुपम रूप देखा
मैं सचमुच मंत्रमुग्ध तुझे निहारती रही
तुझमें खोकर तुझी से बतियाती रही
लगा तुम मेरी जनम जन्मांतरों की कोई
सहचरी थी
हिमशिखरों से उतर कर तुम मैदानों में
इठलाती आई
मैदानों में मैंने तेरी आँखों में छिपी कोई
गहरी वेदना देखी
अपने रूप, लावण्य और उज्ज्वलता को
खोने की पीड़ा देखी
अब बस दिन रात सोचती हूँ यही
काश! फिर से धरती पर आए भगीरथ कोई
बहुत हुआ! अब हमें संकल्प उठाना होगा
हमारी आस्था हमारी गंगा को
हमें बचाना होगा
अपने खोए और सोए वैभव को
फिर से जगाना होगा
गंगा मैया को फिर से उसका खोया रूप
दिलाना होगा।
साफ करना होगा गंगा को
पूरे श्रम से पूरी निष्ठा से
रोकना होगा दूषित पदार्थों को गंगा में मिलने से
शवों को गंगा में अब नहीं बहाने देंगे
चाहे अपने प्राणों की आहुति लगा देंगे।
कूड़ा-कचरा, औद्योगिक
अपशिष्ट या हो पूजा सामग्री
अपनी गंगा में न गिरने देंगे
दर्ज करेंगे आपत्ति
अपने श्रम से अपने प्रण से
ये स्वप्न करेंगे साकार
भगीरथ बनकर करेंगे
अपनी माँ का फिर से उद्धार

व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
तलवण्डी, कोटा (राज.)-324005
मो: 9460388594

आशा की किरण

❐ दीपक मूंदड़ा 'मन'

निःशब्द है स्तब्ध है चहुँओर मचा हाहाकार है
सूर्य दीप्तिमान मध्य दिगंतर में
फिर भी अंधकार चहुँओर है।

प्रकृति की दिखी अजब वृत्ति ये
भौतिकता का आवरण ओढ़े
पथभ्रष्ट मानव को दण्डित किया घोर है।

प्रकृति के नियमों से परे माना निज को
वह मानव आज निःशब्द है स्तब्ध है।
क्षण कुछ ही अशेष हैं
आशा की किरण अब भी शेष है

चाहे अंधकार कितना घोर है।
लौट के प्रकृति की गोद में
प्रतीक्षा कर रहा कवि 'मन' तेरा
समक्ष एक नया भोर है।

व्याख्याता (अंग्रेजी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय डांगावास,
नागौर (राज.)
मो: 9460272029

बेटियों को बचालो

❐ गायत्री यादव

बेटियों को बचालो, बेटों की तरह पालो,
ये भी अपनी संतान है कोई गैर नहीं
अरे इनके अन्दर भी जान है करो बैर नहीं
गर्भ के अन्दर बेटी के जो प्राण हनन करते हैं
सबसे बड़ा पाप दुनिया का अपने सर धरते हैं
भगवान रूपी बच्ची से नफरत करते हैं
वो दुनिया से अंजान है कोई गैर नहीं
अरे इनके अंदर भी जान है करो बैर नहीं
बंदरी अपने बच्चों को भी छाती से चिपकाती
कुतिया भी तो आठ-आठ
बच्चों को दूध पिलाती
हैं सबको बच्चे प्यारे, इन्हें कोई नहीं मारे
तू कैसा इंसान है कोई खैर नहीं
अरे इनके अंदर भी जान है करो बैर नहीं
माता में ममता होती संतान लगे हैं प्यारी
बेटी नहीं बेटे से कम
इनकी अपनी पहचान है कोई गैर नहीं
अरे इनके अंदर भी जान है करो बैर नहीं
अल्ट्रासाउंड करने वाले सुनो डॉक्टर भैया
जिसने तुम को जन्म दिया है वो भी तेरी मैया
वो पढ़े-लिखे, मत बेटियों को मारो
ये राम, कृष्ण का देश है कोई गैर नहीं
अरे इनके अंदर भी जान है करो बैर नहीं

प्रधानाचार्या
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खोहर,
अलवर (राज.)
मो: 9982035402

www.rajsevak.com

तेरे कितने रूप

❐ प्रदीप कुमार वर्मा

हे मातृशक्ति वसुधा पर तेरे कितने रूप,
वसुधा पर अबला नहीं, सबला हो तुम
सबको जीवन देती, जीना सीखाती हो तुम
त्याग और बलिदान की देवी सदैव हो तुम
प्यार, स्नेह और वात्सल्य की भाषा हो तुम
कौमुदी-सी धवल चंद्र सी शीतला हो तुम
सुखी सफल जीवन का धरा पर आधार हो तुम
हे नारी शक्ति दुर्गा सरस्वती सदैव सबला हो तुम
नारी होना कमजोर नहीं जीवन की ज्योति हो तुम
जग को जीवन दान देने वाली जननी माता हो तुम
वसुन्धरा पर मानव जीवन की जीवनदायिनी हो तुम
शिक्षा ज्ञान और दृष्टि से मानव की प्रथम गुरु हो तुम
मानवीय दृष्टिकोण से आत्मिक मातृशक्ति हो तुम
नैतिक, बौद्धिक और सुविचारों का भण्डार हो तुम
मत मरने दो अपने सपनों को उड़ान भरने दो,
आज स्वतंत्र हो, हे नारी! दीपक लौ हो तुम

अध्यापक
शहीद ज्ञान सिंह राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पट्टी डोबरिया, नागौर (राज.)
मो: 7742233066

हौंसला ...

❐ सत्यनारायण नागौरी

फिजूल बाहर जिंदगी मुश्किल होती है।
कोरोना कहर मास्क ही हल होता है।।
सीख कोरोना सफाई जरूरी हर वक्त
स्वच्छता में वाकई ईश्वर निवास होता है।
ज्यादा पाओ तो ज्यादा बांटो
संकट का दौर आपसी सहयोग होता है।
वक्त से कीमती तोहफा कोई नहीं
पहला सुख निरोगी काया होता है।
बचत की अहमियत बूंद-बूंद घड़ा भरें
छोटा प्रयास भी बड़ा कदम होता है।
सोशल मीडिया भयभीत झूठी खबरें
सही जानकारी सबसे जरूरी होता है।
सीखने की कोई उम्र नहीं कभी
खुशनुमा माहौल साहित्य होता है।
मन में साहस तो हर संकट बौना
हौसला सबसे बड़ा हथियार होता है।

व्याख्याता (सेवानिवृत्त)
केलवाड़ा, राजसमंद (राज.)-313325
मो: 9610334431

तितली के अंग

❐ कुसुम अग्रवाल

प्यारी तितली हमें बताओ
तुमने क्या-क्या पाया है?
कुदरत ने इतना सुंदर सा
कैसे तुम्हें बनाया है?

देख रहे हैं छः टांगे हैं
दो पर तुम आराम करो।
बाकी चारों टांगों पर ही
अपना सारा काम करो।

चार पंख हैं पतले पतले
जिनसे तुम उड़ सकती हो।
दो आगे हैं दो हैं पीछे
रंग उन्हीं में भरती हो।

सिर है एक, वक्ष भी है
तेरा एक उदर भी है।
इन्हीं तीन भागों से तेरे
जुड़े पैर और पर भी हैं।

सिर के ऊपर दो एंटीना
वही गंध बतलाते हैं।
सही जगह पर तुमको हरदम
वे ही तो ले जाते हैं।

एक जोड़ी संयुक्त आँख है
लैंस हजार उनमें हैं।
अल्ट्रावॉयलेट किरणें देखे
अजब शक्तियाँ जिनमें हैं।

जीभ एक है बड़ी लचीली
प्राबोसिस कहलाती है।
फल-फूलों का रस पीने को
उछल के बाहर आती है।

छह चार तीन दो एक की संख्या
ध्यान सभी बस रखते हैं।
तितली के अंगों के बारे
जानकारी यूं करते में।

90-महावीर नगर, कलेक्ट्रेट 100 फीट रोड, कांकरोली, राजसमंद (राज.)-313324
मो: 9461179465

हिम्मत से काम लो... ऐसे डरो ना
जीत होगी अपनी....हारेगा कोरोना

हम सबने जान लिया
इसको पहचान लिया।
घर के ही अन्दर रहना
अब हमने ठान लिया।

घर में ही गाना-बाजा...घर ही बिछौना
जीत होगी अपनी...और हारेगा कोरोना

ज्यादा ही जरूरी हो
तब ही घर से बाहर जाये
पहले साबुन से हाथ धो ले
जब बाहर से घर आये।

आपस में दो मीटर की....दूरी सब रखो ना
जीत होगी अपनी....और हारेगा कोरोना

हाथ न मिलाना अब
करना नमस्ते!
मास्क लगाकर तुम्हें
चलना है रस्ते

प्रेम रूपी मोती इस...माला में पिरोना
जीत होगी अपनी....और हारेगा कोरोना

हिम्मत से काम लो.... ऐसे डरो ना
जीत होगी अपनी.....हारेगा कोरोना।।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जयश्री नगर, जिला-भरतपुर (राज.)
मो: 9929768080

www.rajsevak.com

मन तो सभी का

❑ सम्पत लाल शर्मा 'सागर'

टूटे तारों में स्वर देने का,
दिल तो सभी का करता है।
मन वीणा के साथी लाने का,
मन तो सभी का करता है।।
ऋतुरानी लेती अंगड़ाई,
सुगंध सौरभ बिखरता है।
बुलबुल संग गुनगुनाने का,
मन तो सभी का करता है।।
मादकता के मानसरोवर में,
अंतर्मन जब धुलता है।
नित नूतन अनुबंधों में,
मन तो सभी का बंधता है।।
कही न जाती सकल व्यथाएँ
फिर क्यों दिल मचलता है?
अन्तरभेदी मर्म कथाएँ सुनने को,
मन तो सभी का करता है।।
अपने दुख के हम खुद है साक्षी,
फिर आशा का भाव क्यों उमड़ता है?
चीर कलेजा बतलाने को,
मन तो सभी का करता है।।
जब आशाओं के महल ढहे तो
मलबे से अरमान निकलता है।
कादम्बिनी नभ में इतराती,
तब मन तो सभी का भटकता है।।

प्राध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जवासिया,
गिलूण्ड, रेलमगरा, राजसमंद (राज.)-313207
मो: 8003264828

प्लास्टिक थैली

❑ राजेश कुमार

वाह! रे प्लास्टिक थैली,
तू हरी, लाल और पीली,
धौली, काली और नीली,
तू ऐसी रंग रंगीली।
वाह! रे प्लास्टिक थैली

कभी चाय डाल, कभी दूध डाल,
कभी डाला तुझमें पानी,
तुझे बना दिया महारानी,
तू ऐसी बनी सहेली।
वाह! रे प्लास्टिक थैली

कोई पशु तुझे खा जावे,
अल्पायु वह हो जावे,
बिन जहर पीए मर जावे,
तू है ऐसी जहरीली।
वाह! रे प्लास्टिक थैली

हमने भी अब ली है ठान
तेरा मिटाना नामो-निशान,
देश बनेगा तभी महान,
तू बनी रहेगी पहेली।
वाह! रे प्लास्टिक थैली

सांख्यिकी अधिकारी
कार्यालय संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा,
भरतपुर संभाग, भरतपुर
मो: 8003441330

साथ

❑ विजय

जिन्दगी एक खूबसूरत स्वप्न,
चमक-दमक में बहके मन।
आसमानी ख्वाबों के संग,
विवेक, रुदन दिन-रात करें।
सच्चा साथी पाकर के
दुःखों में भी महके मन
तिमिर के अंधकूप में
आशा जो साथ मिले।
गमों के महासागर से,
इक तिनका भी पार लगे।
उलझी-उलझी जिन्दगी में,
जो सुलझी-सी पतवार मिले।
साथ मिले जब साहस का,
चिंगारी भी रोशन अंधकार करें।

अध्यापक लेवल-2 (गणित)
महात्मा गांधी राजकीय स्कूल
रामसर, बाड़मेर (राज.)
मो: 9461491844

अजन्मी बिटिया का संदेश

❑ मनोज कुमार तँवर

कुछ कहना चाहती हूँ,
अपने हिस्से का जीवन जीना चाहती हूँ,
दुनिया के रंग दुनिया के संग,
मैं भी जीना चाहती हूँ।।
माँ मैं तेरी कोख में आई,
फिर जन्म क्यूं न ले पाई।
न कोई जाने मेरा मर्म,
मेरी कब्र बन गया कैसा तेरा गर्भ।।
तेरा खून तो पाया मैंने,
फिर दूध क्यूं न पी पाई।
अस्तित्व अपना मिटने पर भी,
आँसू तक बहा न पाई।।

दुर्दशा देखकर मेरी तो,
ब्रह्मा भी पछताया होगा।
संग मुझे ले जाते हुए,
यमराज भी थर्राया होगा।।
जन्म लेने दो मुझे भी,
बेटे से बढ़कर दिखलाऊँगी।
धरा के सुख क्या चीज है,
तोड़ आसमां के तारे भी लाऊँगी।।

अगर बेटी को मरवाओगे,
ममता माँ की कैसे पाओगे।
खो जाएगा कहीं बहन का प्यार,
दुलार किस पर बरसाओगे।।
अंतिम संदेश यही है 'तँवर' का।
बचा लो जीवन अजन्मी बिटिया का
अस्तित्व वरना, मिट जाएगा।
इस दुनिया से मानव का।।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय बंवली गुढ़ा, नावां,
नागौर (राज.)
मो. 7737370500

www.rajsevak.com

कर्म

❐ संजय कुमार 'शिवम'

समय तुम्हें ना हरा पाएगा,
तू कर्मपथ का राही है।
वीर वीरता तुझसे सीखे,
तू वीरपथी अवगाही है।।

समर भयंकर जीवन का,
मन की मौजों पर बहता चल।
कुछ बाधा को ठोकर मारो,
कुछ को तन पर सहता चल।।

तू जब तक कर्म करेगा अपना,
विजय समर अट्टहास करेगा।
व्यर्थ हार के आत्मघोष से,
जीवन विजय का नाश करेगा।।

तू कर्त्तव्य के सागर पर,
जीवन की तरणी ले चल।
कर्मों की पतवार थामकर,
आत्मविश्वास की धरणी ले चल।।

कर्म शक्ति है यौवन की,
आलस्य जीवन विराम बना।
कर्मपथ अग्रसर होकर,
रामचन्द्र अभिराम बना।।

धरती चलती रहे निरन्तर,
चन्द्रमा प्रतिक्षण चलता।
सूर्य प्रतिपल कर्मनिरत हो,
नस-नस में ऊर्जा भरता।।

'शिवम' कर्म ही सच्ची तपस्या,
कर्म ही सच्चा यौवन धर्म।
मानवता से मानव बनकर,
त्यज चिन्ता बस करो कर्म।।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जोरावरपुरा,
हनुमानगढ़ (राज.)
मो: 8279285481

हाँ, नववर्ष आया है

❐ संतोष कुमार राणा

गर्मी की धूप गई, वर्षा की बूंद गई,
पर वसंत संग लाया है,
हाँ, नववर्ष आया है।

मदमस्त हुए सब दीवाने
गौरी बाहों की छाँवों में
पर ठिठुरन भी लाया है
हाँ, नववर्ष आया है।

काली नागीन इन रातों में,
बेदर्द दिनों (लॉकडाउन) की यादों से,
पैगाम किसी का लाया है,
हाँ, नववर्ष आया है।

आतंक भरे इन लम्हों में,
आँसू से भीगी पलकों में,
कुछ खुशियाँ भी लाया है,
हाँ, नववर्ष आया है।

प्राध्यापक (कॉमर्स)
सारड़ा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सांजू,
डेगाना, नागौर (राज.)
मो: 9680083787

एक शिक्षक की चाह

❐ विनोद बी. राजपुरोहित

तुझमें इतना ज्ञान भर दूं,
दुनिया को बदल सके तू।
तू मेरे अरमानों की परछाई है,
आज मैं हूँ, कल होगा तू।
तुझमें इतना उत्साह भर दूं,
आसमां से तारें तोड़ सके तू।
तू मेरे हौसलों की ऊँचाई है,
आज मैं हूँ, कल होगा तू।
तुझमें इतना भाव भर दूं,
चिन्ता नहीं, चिन्तन करे तू।
तू मेरे विचारों की गहराई हैं,
आज मैं हूँ, कल होगा तू।
तुझमें इतना मान भर दूं,
शीश कटे पर डरे न तू।
तू मेरे राष्ट्र-खेत की बुवाई है,
आज मैं हूँ, कल होगा तू।

प्रधानाचार्य
विश्व भारती उ.मा.वि. नाडोल
पाली (राज.)-306603
मो. 9571921066

बच्चे हैं वरदान

❐ नवीन कुमार बाबेल

बच्चे हैं वरदान, बच्चे देश की शान।
बच्चों में न भेद करो, ये कल वर्तमान।।

बच्चे तो बस बच्चे हैं, उम्र के वो कच्चे हैं।
लड़का हो या लड़की दिल के वो सच्चे हैं।।

देश का वो सम्मान, बढ़ाए देश का मान।
बच्चे हैं वरदान, बच्चे देश की शान।।

उनमें भेद ना करो, ईर्ष्या ना भी करो।
बच्चे हैं कोरे दीए, ज्ञान से दीप्त करो।।

दो इनको संस्कार, गुणों की है ये खान।
बच्चे हैं वरदान, बच्चे देश की शान।।

कन्या का अवतरण हुआ आँसू न बहावो।
पढ़ा लिखा कर उसको काबिल बनाओ।।

बन के कल्पना, भरेंगे वो उड़ान।
बच्चे हैं वरदान, बच्चे देश की शान।।

कन्या भ्रूण हत्या, अभिशाप है मिटावो।
लड़का हो या लड़की दुनियाँ में लाओ।।

दोनों हैं समान, दिल से दो सम्मान।
बच्चे हैं वरदान, बच्चे देश की शान।।

वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान)
राजकीय माध्यमिक विद्यालय मेहता जी का खेड़ा,
भीलवाड़ा (राज.)
मो: 9799093142

www.rajsevak.com

बेबस हथिनी

□ ब्रज पाल सिंह

कितने अरमान जागे होंगे
गर्भ में पल रही नन्हीं जान के लिए
सारे सुख त्याग दिए, उस छोटी सी जान के लिए
फूली नहीं समाई होगी, जानकर के ये बात
जिंदगी कटेगी अब नन्ही जान के साथ
माँ ने मानव पर कर लिया था विश्वास
भूखी हथिनी ने खाकर अनानास बाद हुआ संत्रास
खाकर के अनानास भूख उसकी मिटी नहीं
अंदर ही अंदर दम घुटा लेकिन देह उसकी फटी नहीं
दुःखी मन से तीन दिन पानी में वो टिकी रही
आस लगाकर मृत्यु पर्यंत जिंदगी के समर में डटी रही
ना चिंघाड़, ना तोड़फोड़ हथिनी यह सोच रही
मानव की धरती पर भगवान की कैसी खोज रही
ज्वालामुखी का लावा सा अनानास फटा
कैसे जान बचाएं, करुणानिधि तू ही बता
निर्मम हत्या की खबर जब छपती है अखबार में
तब ऐसा लगता है इंसानियत खत्म हो गई संसार में
उनका क्या होगा अंजाम, मेरे मरने के बाद
लोग उनको गालियां देंगे, करेंगे उनसे विवाद
पांव तले जमीन खिसक गई सुनकर माँ की बात
इंसानियत शेष रखो रब से करती हूँ फरियाद
ऐसे इन्सान चाहिए जो प्यार से जानवरों को गले लगाए।

व्याख्याता (हिन्दी साहित्य)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय माल की टूस, भीण्डर, उदयपुर (राज.)
मो: 964902506

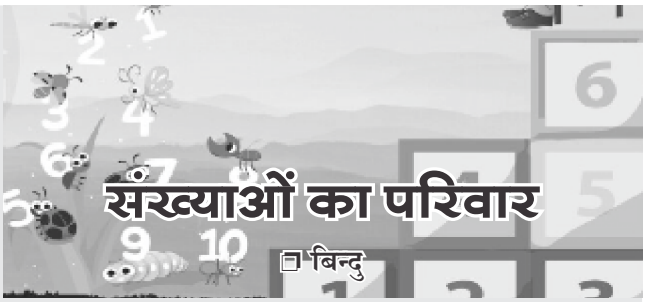

संख्याओं का परिवार

□ बिन्दु

आओ बच्चों तुम्हें सुनाए, कहानी संख्या रानी की,
आओ तुमको सैर करवाए, संख्याओं की दुनियाँ निराली की।
संख्या का इक बड़ा परिवार, जिसमें रहते अंक अपार,
आओ तुमको हम मिलवाए, परिवार के मुखिया राजा से,
राजा के है दो हकदार,
वास्तविक संख्या और अवास्तविक संख्या है उनके नाम।
पहले जानकारी करवाए, तुमको वास्तविक संख्या की,
इसको समझने के लिए तुम, कल्पना करो एक संख्या रेखा की।
इस संख्या रेखा के, मध्य में बैठा जीरो है,
जीरो तो सभी संख्याओं का सुपर हीरो है।
जीरो के जब दाएं जाएँ, सभी संख्याएँ धनात्मक पाएँ,
एक से लेकर अनंत तक की, सभी धनात्मक संख्याएँ 'प्राकृत संख्या' कहलाए।
जीरो के बिना तो भाई, सब अधूरा सा लगता है,
जीरो के मिलते ही, सब पूरा-पूरा सा लगता है।
प्राकृत संख्याओं में जब जीरो भी मिल जाए तो,
शून्य से लेकर अनंत तक की, सभी संख्याएँ 'पूर्ण संख्या' कहलाए।
आओ फिर से जरा दृष्टि डाले, संख्या रेखा की ओर,
जीरो के बांयी ओर भी तुम करो जरा गोर।
जीरो के जब बाएं जाएं सभी संख्याएँ ऋणात्मक पाए।
संख्या रेखा के दोनो हाथ, जब मिलते एक साथ,
ऋणात्मक, शून्य, घनात्मक मिलकर कहलाते पूर्णांक।
संख्या रेखा पर, अभी भी कुछ छुट रहा है,
सोचो बच्चो सोचो, बाकी रही संख्याओं को खोजो।
संख्या रेखा की दो संख्याओं के मध्य जब झांका
यहाँ पर भी हमने अनंत संख्याओं को आंका।
इन संख्याओं का स्वरूप, थोड़ा सा अनोखा,
दशमलव, भिन्नात्मक, वर्गमूल जैसा।
जब इन संख्याओं के नाम सुझाए, परिमेय और अपरिमेय कहलाए।
प्राकृत, पूर्ण, पूर्णांक में जब परिमेय और अपरिमेय मिल जाए,
मिलकर ये सब संख्याएं, वास्तविक संख्याएँ कहलाए।

वरिष्ठ अध्यापक (गणित)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जालोड़ा
ब्लॉक-लोहावट, जिला-जोधपुर
मो. 9887127081

www.rajsevak.com

मैं शिक्षक हूँ

❐ बाबू लाल मीणा

मैं शिक्षक हूँ।
बिना शिक्षक नहीं होता जीवन साकार,
सिर पर होता जब शिक्षक का हाथ।
तब ही बनता जीवन का सही आकार,
शिक्षक ही है सफल जीवन का आधार।
चॉक-डस्टर से खेलते-खेलते,
बदरंग सा हो जाता हूँ।
लाल स्याही के रंग में रंगकर
गुलाल सा हो जाता हूँ
क्योंकि मैं शिक्षक हूँ।

घंटों खड़े रहने की मुश्किल,
किसी से कुछ न कह पाता हूँ।
एक ही पुस्तक सालों तक पढ़कर
पूरे पन्ने भी समझ जाता हूँ।
सिर्फ पढ़ना-पढ़ाना ही हुनर नहीं है।
सब कुछ मैं कर पाता हूँ।

स्कूल के कार्यक्रम करा-करा के
कलाकार सा बन जाता हूँ।
अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत वर्ण माला और
एम.एल.सी.एल. का जोड़-तोड़ कर
अर्थ बचाने की चिंता में खो जाता हूँ।
मैं शिक्षक हूँ।
और ऐसे ही समझाता हूँ।
बीमार होने का हक नहीं मुझे।
आधी बीमारी में भी ठीक हो जाता हूँ।
गलतियाँ निकालने की ऐसी बुरी लत लगी है।
घर पर आए शादी के कार्ड पर भी गोले लगाता हूँ।

अपनी गृहस्थ जीवन छोड़ रोज मैं तपस्या करने जाता हूँ
अपनी छोटी सी जेब के लिए मान-सम्मान कमाता हूँ।

पर गर्व है इस पर कि मैं भावी पीढ़ी के नागरिकों का
भविष्य बनाने जाता हूँ। क्योंकि मैं शिक्षक हूँ।

कच्ची मिट्टी पर हल्के हाथ से नए-नए आकार बनाता हूँ।
हर वर्ष नए बीजों के साथ नई फसल उगाता हूँ।
बता दो कोई एक ऐसा पेशा जो नैतिक मूल्य सिखाता हो
बच्चों का सिखाते-सिखाते खुद भी
सीख व सुधर जाता हूँ।
क्योंकि मैं शिक्षक हूँ। और ऐसे ही समझाता हूँ।

पी.एच.डी. शोधार्थी (शिक्षा)
सुरेश ज्ञान विहार विश्वविद्यालय जयपुर,
राजस्थान-302033

सुबह होने को है

❐ भावना विशाल

मन मेरे किस बात का डर
अब तो सुबह होने को है
तू चलता चल, होकर निडर
अब तो सुबह होने को है

ये रात गम की लम्बी सही
खुशियाँ जरा रूठी सही
मुस्काएगी पल में सहर
अब तो सुबह होने को है

तू राह सच की न छोड़ना
मंज़िल से मुँह न मोड़ना
उठ हौसलों के कदम भर
अब तो सुबह होने को है

यदि कठिनता से भय लगे
स्वप्नों की मृग मरीचिका ठगे
बढ़ आत्म संयम थामकर
अब तो सुबह होने को है

व्याख्याता
वार्ड नं. 17, दुलमानी, पीलीबंगा
हनुमानगढ़ (राज.)
मो: 9680213565

सफर

❐ ब्रिजेश कुमार वैष्णव

घास के घरौंदे में बैठा सोच रहा था,
क्या है उस क्षितिज की सीमा
मैं भी कर सकता हूँ इस धरा की एक परिक्रमा!
जाना चाहता हूँ नभ के उस पार
इसी जिज्ञासा ने किया मुझे उड़ने को तैयार,
पंख नहीं दे रहे थे साथ
पर हौसले ने दी डर को मात
मैं उड़ा और उड़ता गया।
देश की रक्षा करने का जज्बा मैंने भी
मन में पाला था,
वीर पुरुषों की वसुधा को मैंने भी संभाला था,
इस बार अवसर ने मुझे चुना
खुद को मैंने इस लायक बुना,
सीमा पार जो दुश्मन खड़ा न जाने
शायद वो कितना बड़ा
लेकिन मेरे साहस के आगे
उसको भी झुकना पड़ा
मैं लड़ा और लड़ता गया।
उपत्यका पर बैठा देख रहा उच्च शिखर को
आज हर हाल में छूना है आसमान
के आंचल को,
हिम कणों की चादर से रक्त जमने लगा
प्रस्तर की मार से पांव भी थमने लगा,
पर चोटी की दृश्यता ने मुझे किया मन विभोर
उन्मुख था मैं अपने ध्येय की ओर
मैं चढ़ा और चढ़ता गया।
लेटे-लेटे देख रहा था कल की वो हार
जिसने तोड़ दिया मुझे असंख्य बार,
पर इस हार के अनुभव ने खोल दिए
सफलता के द्वार
सूरज की पहली किरण से हुआ फिर
नव चमत्कार
कोटि दिव्य रश्मियों ने किया स्फूर्ति का संचार।
अंधेरा दूर हो जाता है जब रोशनी की
किरण आती है,
वैसे ही जीत के लिए बुलंद हौसलों का
एक कदम काफी है।
मैं चला और चलता गया।
यही है जीने की कला
मैं चला और चलता गया.....

'संतोषिका'
E-87/2 मन मंदिर के पास, कांता खतूरिया
कॉलोनी, बीकानेर-334003
मो: 9509260381

www.rajsevak.com

पेड़ की पुकार

❐ हजारी लाल सैनी

मैं धरती का शृंगार
मुझे! मत मारो मानव तुम
मैं जग का पालनहार
मुझे मत काटो मानव तुम।

मेरा तन भी सुंदर, मेरा मन भी सुंदर
मेरे अंग-अंग का, हर अवयव सुंदर
मैं सुंदर सा संसार
मुझे मत मारो मानव तुम।

मैं जल चाहता हूँ, ताकि तुम जीवन का सुख भोग सको
मैं कल चाहता हूँ, ताकि तुम हँस खेल सको
मैं फल चाहता हूँ, ताकि तुम फल-फूल सको
मैं जीवन का आधार
मुझे मत मारो मानव तुम।

मैं रो देता हूँ, जब तेरी साँस घुटती है
मैं सह लेता हूँ, जब तेरी मार पड़ती है
मैं सिहर जाता हूँ, जब तेरी सोच बिगड़ती है
मैं करता तुझसे प्यार
मुझे मत मारो मानव तुम।

टैंकर भर-भर करके तू, कितने दिन निकालेगा
जहर हवा का तू, कितने दिन पचा लेगा
वीरान धरा को तू, कितने दिन संभालेगा
मैं ऑक्सीजन का भंडार
मुझे मत मारो मानव तुम।

तुझे घरो में कैद देखकर,
मेरा कलेजा भर आया
कोरोना का कहर देखकर,
शायद तुझे कुछ समझ में आया
इन्दर का व्यवहार देखकर,
आज समय ने यह फरमाया
मैं शिव शंकर का अवतार
मुझे मत मारो मानव तुम।

मेरी छांव में जब, तुम आकर सुस्ताते हो
मैं कितना खुश होता हूँ
मेरी डाल पर जब, तुम झूला झूलते हो
मैं कितना पुलकित होता हूँ
मेरे फलों का रस,
जब तुम गटक-गटक कर पीते हो
मैं कितना हर्षित होता हूँ
मेरे सहारे जब तुम इतराते हुए चलते हो
मैं कितना इठलाता हूँ
मेरे फूलों का हार, जब तुम गले में धारण करते हो
मैं कितना मोहित होता हूँ
मैं खुशियों का भंडार
मुझे मत मारो मानव तुम।

मैं दवा भी हूँ, मैं दुआ भी हूँ
मैं हवा भी हूँ, मैं प्राण भी हूँ
मैं जल भी हूँ, मैं जीवन भी हूँ
मैं फल भी हूँ, मैं कल भी हूँ
मैं देवों का अवतार
मुझे मत मारो मानव तुम।

तू लगा पेड़, तू बढ़ा पेड़
तू बचा पेड़, तू सजा पेड़
कर धरती का शृंगार मुझे अब पालो मानव तुम
मुझे अब पालो मानव तुम, मुझे मत मारो मानव तुम
मैं धरती का शृंगार मुझे मत काटो मानव तुम।।

वरिष्ठ अध्यापक (गणित)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गढ़, मामोड,
थानागाजी, अलवर (राज.)
मो: 8104326722

हाइकू

❐ दीनदयाल शर्मा

(1)

पागलपन सफलता का राज
मिलेगा ताज।

(2)

घमंड जड़ नरक का आवास
खुद का नाश।

(3)

नारी के आँसू अथाह समंदर
मैं कैसे बांचूं।

(4)

भलाई कर
ना कर अपराध
पाएगा दाद।

(5)

बात तो कर कतई मत डर
खुलेगी गाँठ।

(6)

खेलेगा 'खेल' कौन करेगा मेल
घर ही जेल।

(7)

नयन भरे कहते हुए डरे
सच्चाई परे।

(8)

पढ़ या खेल भीतर से जुड़ाव
जीतेगा दांव।

(9)

कभी मत रो रोना इलाज नहीं
कह अपनी।

(10)

जले न आत्मा न भीगे-सूखे आत्मा
अमर आत्मा।।

10/22 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
हनुमानगढ़ जं.-(राज.)-335512
मो: 9414514666

www.rajsevak.com

मैंने एक जमाना बदलता देखा है

❒ सुखदेव चौधरी

मैंने एक रुपये के तीन गोल गप्पों को
दस रुपये में तीन होते देखा है
और एक रुपये की चार नारंगी को
चार रुपये की एक होते देखा है।

मैंने छोटी-छोटी खुशियों को
बड़ी-बड़ी माँगों में बदलते देखा है
और उन्हीं मांगों के वादे न्यारों में
लोगों को फिर पिसते देखा है।

मैंने एक जमाना बदलता देखा है।

आज भी याद है वो शक्तिमान का जमाना
जब रविवार को बारह बजे होता था हंगामा
और शुक्रवार की रात से अंत्याक्षरी होती चालू
और शनिवार की सुबह आता था जंगल का भालू
वो जी टीवी पर हॉरर शो और रात में डरना
और सी.आइ.डी. में लोगों का बिना बात पे मरना
और मम्मी के बोरिंग सिरिअल्स भी दिल को लुभाते थे
जब हर शाम हमसे मिलने मिक्की डोनाल्ड आते थे
मैंने डीडी वन के कार्टून्स को जमाने में पिघलते देखा है
और अच्छे कार्टूनों से छोटा भीम और डोरेमाने निकलते देखा है
खेल खेल में सीखते बच्चों को आज मोबाइल पर चिपका पाया है
छुपक-छुपाई और पकड़म-पकड़ाई को आज का कौन बच्चा जान पाया है
मैंने लूडो, सांप-सीढ़ी और तीन-दो-पाँच को मोनोपोली में बदलते देखा है

मैंने एक जमाना बदलता देखा है

एक जमाना था जब एक घर में परिवार बड़ा रहता था
घर तो होते थे छोटे मगर दिल सबका बड़ा होता था

सभी एक साथ रहते और सुख-दुख बाँटते थे
जब पड़ोसियों के यहाँ पर भी हम खाना खा आते थे
तब किसी के भी दिल में बैर नहीं होता था
चोट किसी को भी लगे और दुख सभी को होता था

शाम होते ही सब चबूतरे पर इकट्ठा हुआ करते थे
और गली के फिर बड़े बुजुर्ग कहानियाँ सुनाया करते थे
शाम खाना चाहे कोई भी बनाए सब एक साथ खाते थे
और क्रिकेट का वर्ल्ड कप देखने पड़ोसी के यहाँ जाते थे

मोहल्ले में एक ब्लैक एण्ड व्हाइट टीवी से हर घर में कलर आते देखा है
गली के एक टेलीफोन बूथ को आज हर जेब में समाता देखा है
मैंने चिट्ठी टेलीग्राम को फेसबुक, व्हाट्सएप, हाईक बनते देखा है

मैंने एक जमाना बदलता देखा है।

था एक जमाना प्यारा जब लोगों में न बैर था
जेब में होते सौ रुपये और जमाने का होता सैर था
छुट्टी वाले दिन हम सब रेडियो नोब घुमाते थे
आकाशवाणी सुनते थे और खूब गाने गाते थे
बिजली जब गुल हो जाती थी तो हाथ का पंखा करते थे
और नहाने के बाद बाल में सरसों किया करते थे
मैंने सरसों के तेल को हेयर जेल में बदलते देखा है
बिजली जाने की फीलिंग इन्वर्टर में दबता देखा है

रफी, लता और किशोर कुमार के गाने जब भी कहीं आते थे
सारे काम छोड़ हम वही गाना गुनगुनाते थे
मैंने अच्छे गानों को योयो रैप के तले डूबते हुए देखा है
शास्त्रीय संगीत का मर्डर करते ढिंचक पूजा तक को झेला है

मैंने एक जमाना बदलता देखा है।

अध्यापक लेवल-।,
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
माल गोदाम रोड, बाडमेर (राज.)
मो. 7014751356

www.rajsevak.com

एक शहीद का पिता

❐ रितु चौधरी

आज खबर मिली है, आप का बेटा अमर जवान हो गया
भारत माँ की बलिवेदी पर बलिदान हो गया
सोच रहा हूँ, सलामी दूँ या दर्द बयां करूँ
आसूँ का सैलाब बह जाने दूँ या फख्र करूँ
एक बाप हूँ अपने अंश को चिता पर देख रोया
कैसे ये मंजर अपनी आँखों को दिखाऊँ
कैसे अपनी दारुण पुकार, तुझ तक पहुँचाऊँ
जहाँ मेरे सोने का वक्त था, तू सो गया
पिछे अपना भरा-पूरा संसार छोड़ गया
कितना भार तू अपने इस बूढ़े बाप के कंधों पर छोड़ गया
आज मेरा इकलोता बेटा, देश की सीमा पर शहीद हो गया
उस अमर शहीद को सलामी दूँ या दर्द बयां करूँ,
आसूँ का सैलाब बह जाने दूँ या फख्र करूँ
तेरी माँ रो रही कलेजा फाड़-फाड़
क्या कहूँ इसको कैसे चुप कराऊँ
किस तरह इसको शहादत की परिभाषा समझाऊँ
क्या जवाब दूँ, इसके सवालों का
ये वो मेडल नहीं, वो मुआवजा नहीं
वो सलामी नहीं, वो फख्र नहीं, वो बेटे की मूर्ति नहीं
अपना बेटा चाहती है उससे बतियाना चाहती है
उसको पकवान खिलाना चाहती है
वो चिल्ला रही बस अपने बेटे को खड़ा देखना चाहती है
वो रो रही चीख-चीख छाती पीट-पीट
किन शब्दों में समझाऊँ उसको ये देशभक्ति की रीत
तिरंगे में लिपटे उसके कलेजे के टुकड़े को सलामी दूँ
या दर्द बयां करूँ।
आसूँ का सैलाब बह जाने दूँ, या फख्र करूँ।
गोद में लिए साल भर के नन्हे बालक को
तेरी पत्नी बदहवास रो रही,
तेरी शहादत को इंकार कर वो दरवाजे पर
खड़ी तेरा इंतजार कर रही
बार-बार चिल्ला रही और तुझे फोन लगा रही
कह रही तूने वादा किया था, सात जन्म साथ निभाने का
ये नहीं हो सकता संदेशा, तेरा यूं रूखसत हो जाने का
वो मांग में सिंदूर सजा रही, अपनी बिंदिया संभाल रही
देख वो दरवाजे पर खड़ी तेरा इंतजार कर रही
कैसे उसे हकीकत की दासता सुनाऊँ
कैसे उस नवखिली बच्ची को विधवा कहाऊँ
इसका साथ छोड़ चले उसे हम समझाएँ कि सलामी दूँ
या दर्द बया करूँ....
आसूं का सैलाब बह जाने दूँ या फख्र करूँ
नन्हा सा ये बालक पिता को अग्नि दे रहा
हे माँ भारती आज तेरा ये वीर तुझमें समा रहा
गूंज रही है सलामी की गोलियां आसमानों में
जय शहीद के नारे गुंजायमान है फिजाओं में
मासूम ये नन्हा बालक मेरी गोद में, मुझे निहार रहा
ये कोई खेल नहीं तू कठोर पुत्र धर्म निभा रहा कैसे इसे बताऊँ?
इसकी मासूमियत को कैसे बिना बाप का कहाऊँ
कैसे इसकी कोमल कच्ची उम्र पर ये सत्य थोप दूँ
इसके बचपन को अनाथ छोड़ चला उस पिता को
सलामी दूँ या दर्द बया करूँ
आसूँ का सैलाब बह जाने दूँ या फख्र करूँ

व्याख्याता
डाइट, बीकानेर (राज.)
मोः 9461815539

वो पहले सा बचपन, अब आता कहाँ है

❐ संजय कुमार

यूं कहने को तो मुट्ठी में, हमारे सारा जहाँ है।
पर पहले सा बचपन, अब आता कहाँ है।।
वो कागज की कश्ती, वो बारिश का पानी।
पर पहले सा सावन, अब बरसता कहाँ है।।

वो पहले सा बचपन.....

घुटुरन चलत, रेनु तन मंडित,
शोभित श्याम जो धूल सने हैं।
पर धूल भरा वो आंगन, अब होता कहाँ हैं।।

वो पहले सा बचपन.....

चंदा मामा दूर के, अब दूर ही के हैं।
इन पत्थरों के जंगल में, चांद अब दिखता कहाँ हैं।।

वो पहले सा बचपन.....

काली दह में गिर गए हैं, अब वो सारे खिलौने।
कालिया से लड़कर ले आए, वो कान्हा अब आता कहाँ हैं।।

वो पहले सा बचपन.....

चैन से सोए हुए, अरसा हो गया है 'संजय।'
कोई लोरी गाकर, अब सुलाता कहाँ हैं।।

वो पहले सा बचपन.....

वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देवली कलाँ, खैराबाद, कोटा (राज.)

www.rajsevak.com

शिक्षा

❐ इन्द्रा

आते-जाते सबने रोका
हर पल मुझको सबने टोका।
बातें करती है बड़ी-बड़ी
बता जरा हमको क्या है शिक्षा?
बात सुनी तो हँसना आया
कैसे बताऊँ क्या होती है शिक्षा?
करे न जब कोई उपेक्षा
ऐसी अमूल्य धरोहर होती है शिक्षा।
सड़क किनारे नन्हें बच्चों को
लेते देखा उनको भिक्षा।
उन्हें बना दे सबके काबिल
कुछ ऐसी होती है शिक्षा।।
देता जन्म विधाता सबको
हर पल करता सबकी रक्षा।
कठिन दौर जब जीवन का हो
हम भी कर पाए सबकी सुरक्षा।।
काँटों भरा जब जग में मग हो
चुभते कटु तानों से कर पाए आत्मरक्षा।
धैर्य से भरी हो अपनी प्रतीक्षा
सुकोमल भावों से सजी होती है शिक्षा।।
माता-पिता ने संसार दिखाया
लेता जग हर पल अग्नि परीक्षा।
गिरने न दे वो खाई में
डोरी संस्कारों की होती शिक्षा।।
पंख फैला दे इतने ऊपर
जितना आसमां है ऊँचा।
अपनी वजह से न कोई देखे नीचा
खुद की नजरों में सम्मान दिलाए।
वो है शिक्षा।।

अध्यापिका
श्रीमती राधा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
बींजवाड़िया, तिंवरी, जोधपुर (राज.)
मो: 9680693930

मुसाफिर का मन

❐ शालू मिश्रा

मन ये तेरा परेशान क्यूँ है,
इस जग से बेफिक्र क्यूँ है,
नित नए ख्वाब सजा कर
मन में दबा बैठा क्यूँ है।
पथ पर नित आगे बढ़ चल
न चंद कांटों से तू डर,
मुसीबतों को चीर तू देख,
बिन अंधकार चमकता सितारा भी नहीं है।
ए मुसाफिर तूँ रुकता क्यूँ है।
तू रुकता क्यूँ है।

अध्यापिका
राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय सराणा,
जालोर (राज.)

पहिया

❐ रानू सिंह

पहिया गोल-गोल घूमा करता,
खुद घूमता मुझे घूमाता,
सड़क, कच्चे में सैर कराता।
मैं हाथों से इसे चलाता,
ये पैरों से मुझे दौड़ाता।
धड़धड़, धड़धड़ करता है,
मुझे थकाता, खुद न थकता,
चलना खूब सिखाता है।
साइकिल का यह पहिया गोल,
करवाता है वर्जिश रोज।
केवल मैं न इसे चलाता,
गाड़ी, मोटर, ट्रक, ट्रेक्टर,
रोज सड़क पर खूब घूमाता।
कभी रबर, कभी काठ का,
कभी लौह का, कभी भाट का।
पहिया, पहिये से चलता,
ये पहिया है कभी न थमता।
पहिया हर मौसम में चलता,
पहिया गोल-गोल घूमा करता,
खुद घूमता सबको घुमाता,
ये न कभी थकता है।।

अध्यापिका
महेश्वरी गर्ल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल
सिंघी जी का रास्ता, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003
मो: 8278615657

पगडंडी वाले गाँव

❐ दिनेश विजयवर्गीय

गाँव की आत्मा में रची-बसी है
गाँव से गाँव को जोड़ने वाली पगडंडी।
वह सड़क की तरह नहीं होती
पत्थर गिट्टी मिट्टी से तैयार
नहीं चलता उस पर कोई रोलर
समतल बनाने के लिए
और नहीं चढ़ती उस पर डामर की परत
सीमेंट कंक्रीट भी नहीं बिछती उस पर
वह तो संतुष्ट है
अपने स्वाभाविक मौलिक रूप से।
पगडंडी होती नहीं प्रदूषित कभी
फर्राटे भरते वाहनों और उनकी चिंघाड़ती
आवाज से
लहूलुहान करने वाली दुर्घटनाओं से भी
रहती है बची वह।
पगडंडी पर नहीं होता सड़कों की तरह
ट्राफिक जाम न कोई आंदोलन,
धरना प्रदर्शन और न धारा एक सौ चवांलीस
हिंसक वारदातों से रहती है बची
पुलिस की लाठी गोली भी नहीं चलती
वहाँ नहीं होता किसी नेता का रोड़ शो।
वहाँ तो रहता है सदा-सुख
शांति से भरा भाईचारा
और आते-जाते लोग करते हैं
मंगलता से भरा राम-राम।

215-मार्ग-4, रजत कॉलोनी, बून्दी
(राज.)-323001
मो: 9413128514

www.rajsevak.com

मैं कलम हूँ

❐ सुशीला चौधरी

मैं कलम हूँ,
लिखती रहती,
पढ़ने-लिखने वालों के
हाथों में सजती रहती।
बच्चो से ले, लेखक तक
सबके दिल की बातें कहती।
मैं कलम हूँ,
लिखती रहती,
चलती रहती।
बच्चों को मैं प्यारी लगती
हर घड़ी काम आती हूँ।
काली, नीली, लाल, हरी
सब रंगों में मिलती हूँ।
मैं कलम हूँ,
लिखती रहती,
चलती रहती
कीमत मेरी बहुत कम है,
पर कीमती बन जाती हूँ,
दिल की बातों, विचारों को,
जब कागज पर लिख जाती हूँ।

अध्यापिका
ई-53, कान्ता खतुरिया कॉलोनी,
बीकानेर (राज.)

बूढ़ा पीपल

❐ ईसरा राम पंवार 'मजल'

बूढ़ा पीपल खड़ा है गाँव में,
सब प्राणी बैठते है छाँव में।

कोई सोये कोई सुस्ताते हैं,
कोई अलसाए, कोई बतियाते है।

गाय-भैंस बैठी, करती जुगाली,
ऊँट ग्रीवा लम्बी पहुँचती डाली।

डाली-डाली घनी हरीयाली,
कूँह-कूँह करती कोयल काली।

भ्रमर भर उड़ान करते गुंजन,
पीपल पर पल पल मनोरंजन।

पीपल लाए घनघोर घटा,
सुंदर लगती ग्राम की छटा।

उड़ उड़ आते खग वृंद,
कितना मनोहर कितना आनंद।

पात-पात तोतों की टें टें,
पीपल तले भेड़-बकरी की बैं बैं मैं मैं।

बूढ़ा पीपल देता आराम।
पूर्वजों का था सुकृत काम।

आओ ऐसा सृजन करें।
वृक्षारोपण हर सज्जन करें।

5, संजाड़ा रोड, देवनगर मजल, समदड़ी,
बाड़मेर (राज.)-344021
मोः 9983413969

जीत को आदत बनाना

❐ लखन पाल सिंह 'शलभ'

है नहीं आसान कोई
स्वप्न आँखों में सजाना
जीतना मंज़िल को फिर-फिर
जीत को आदत बनाना।
पूछता है कौन तुमसे
नींद कब कितनी थी त्यागी।
छोड़ सारे सुख-क्षणों को
बन गए तुम क्यों विरागी।।
देखती जनता सदा ही
एक मंज़िल को ही पाना।
जीतना मंज़िल को फिर-फिर
जीत को आदत बनाना।।
किसने देखे पग तुम्हारे
और उनमें गहरे छाले।
किसने देखे हैं हलाहल
से भरे वो तिक्त प्याले।।
जो पिये हैं घूंट कड़वे
स्वाद कितनों ने वो जाना।
जीतना मंजिल को फिर-फिर
जीत को आदत बनाना।।
किसने देखी किस डगर पे
गहरी ठोकर तुमने खाई।
कौन क़ीमत जान सकता
जो कि थी तुमने चुकाई।।
सहज ही होता नहीं है
रूठी क़िस्मत को मनाना।
जीतना मंज़िल को फिर-फिर
जीत को आदत बनाना।।
किसने जानी भूख तेरी
जब ना रोटी तू ने खाई।
कौन गिनता उन निशा को
जो बिना निंदिया बिताई।।
आँख धोई थी जो जल से
रोकने निंदिया का आना।
जीतना मंज़िल को फिर-फिर
जीत को आदत बनाना।।
जीत की आदत मनुज की
है पुरातन एक थाती।
जीतते ही फैलकर दूनी
हुई जाती है छाती।।
घोर श्रम के सीकरों से
छाँव तारों की सजाना।
जीतना मंजिल को फिर-फिर
जीत को आदत बनाना।।

प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सालाबाद,
भरतपुर (राज.) **मो: 9414945170**

www.rajsevak.com

राजस्थानी विविधा

संस्कृति समरथक : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

❒ डॉ. बंशीधर तातेड़

दुनियां रै देसां रो आकर्षण जिण खास कारणां सूं भारत री संस्कृति कांनी है, उणां मायं सूं अेक कारण औ है कै इण ऋषियाँ-मनीषियाँ री परम्परा मांय अेड़ी घणी प्रतिभावां नै जलम दियो, जिकी आपरै जीवन-दरसण रै सारूं जग चावी है। भारत भौम रो अै चमत्कारिक पक्ष है कै उण अपणै आध्यात्मिक चरित्र नै संस्कारां रै निरमांण मांय उपयोग कियो तो दूजी कांनी शिक्षा नै ई वो ई स्वरूप प्रदान कियो, जिको उण नै ऋषियाँ अर मुनियाँ री विरासत सूं मिली ही। अै सही अरथां भारत री मनीषा री ई खास बात है कै उण रो कोई ई काळखण्ड अेड़ो नहीं र्‌यो, जिकौ किंणी न किंणी प्रतिभा नै जलम नीं दियो हुवै अर जिकौ भारतीय प्रतिभा री पैचाण दुनियां नै नीं कराई हुवै।

ख्यातनाम विचारक मैथ्यू आर्नल्ड कयो हो कै-'दुनिया रै सैं'सूं ऊंचै कथणां अर विचारां रो ज्ञान ई संस्कृति है' अर वां रौ औ कथण ऋषियाँ री परम्परा मांय जलम्या डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन माथै सोळै आनां चरितारथ हुवै है। राजनीति, धरम, संस्कृति, अध्यात्म, दरषण, समाजशास्त्र अर शिक्षा रै जबरै ग्यांनकोश ई वांरी प्रतिभा नै दुनियां मांय प्रसारित किया हा। सही रूप मांय वो आपणी भारतीय परंपरा रा ई नीं, भारतीयता रा प्रतीक हा अर पर्याय ई। आखी दुनियां मांय वांरी गिणती प्रमुख दरसण शास्त्रियां मांय होवती ही। अेक दीठ सूं दैख्यो जावै तो वो भारतीय दरसण रा नीं सिर्फ सही मीमांसक हा, वरण वो उणरा व्याख्याता ई हा।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन रो जलम 5 सितम्बर 1888 नै चैन्नई सूं लगैटगै 40 किलोमीटर दूर अेक गाँव तिरूत्तणी मांय अेक सामानय परिस्थितियाँ वाळै विद्याव्यसनी ब्रांमण परिवार मायं हुओ हो। उणां रा पिता वीरस्वामी उय्या पौरोहित्य-करम करता हा। जिण सर्वपल्ली शबद रो उपयोग, वां रै नांम रै पोलां कर्‌यो जावै है- अै गांम उणां रै पुरखां रो गांम है, पण राधाकृष्णन रो जलम इण गांम मांय नीं हुआ; कारण कै वांरा पिताजी तिरुत्तणी आयग्या हा।

जदै म्है वां री प्रतिभा अर संस्कारां माथै निजर करां तो अै सैहज ई ध्यांन पड़ण लाग जावै कै पक्की तौर सूं उणां में धरम अर भगवांन रै प्रति गैरो अनुराग बचपण सूं ई पैदा व्हैग्यो हो अर इण रै सारूं वां रै परिवार रो वातावरण खासकर नै जिम्मेदार हो। उणां में सरु सूं ई अै गुण पैदा हुयग्या हा कै-वारै मांयी किंणी रै प्रति वैर-भाव जलम्यो ई नीं हो। नीं राग, नीं रोष अर नीं द्वेष। वां री जिकी पढ़ाई हुई उण मांय ई समभाव रा स्वर गूंज रया हा। गाँम री स्कूल सूं लैय'र ईसाई मिशनरियां री पाढशालावां मांय पढण रै बावजूद वे सगळां सूं कंई न कई ग्यान ग्रहण करता ई रैवता हा।

अै कितरै अचरज री बात है कै सिरफ बीस वरसां री ऊमर मांय वे मद्रास रै प्रेसीडेंसी कॉलेज मांय दरषण तर्कशास्त्र रा सहायक प्राध्यापक बणग्या। वो 1911 मांय एम.ए. पास व्हैग्या हा।

डॉ. राधाकृष्णन एम.ए. करण सूं पेलां वेल्लूर मांय आपरी स्कूली पढ़ाई करी ही अर एम.ए. करण तांई वां ने कठिनाइयां वाळा दिन ई दैखणा पड्या हा। पढ़ाई करण रै दिनां मांय ई उणां मांय भारतीय दरसण रै प्रति गैरी श्रद्धा जलम लैय लीनो हो। वांरी प्रतिभा री पैचांण करतां थकां कोलकाता विश्वविद्यालय वांनै प्रोफेसर नियुक्त किया हा। अर इण विश्वविद्यालय रै कारण वांरी ख्याति मांय घणी वधोतरी हुई। इण विश्वविद्यालय वांनै सन् 1936 मांय ब्रिटिश साम्राज्य रै विश्वविद्यालयां रै अेक सम्मेळण मांय आपरो प्रतिनिधि बणाय भेज्या हा अर अेड़ो कर'र विश्वविद्यालय सही मांय आपरो ई मांन बधायो हो। सन् 1931 मांय जद वो आंध्र विश्वविद्यालय रा कुलपति बण्या तद वांरी ख्याति आखी दुनियां मांय फैल चुकी ही। काशी हिंदू विश्वविद्यालय मांय उणां रो कार्यकाल ई घण मैहताऊ मांन्यो जावै है। अेक महान शिक्षाशास्त्री होवण रै साथै ई दरषण शास्त्र रै मनीषी री अै प्रतिभा विलक्षणता रो समुच्चय कयो जाय सकै।

12 मई, 1962 नै वो दुनियां रै सैंसूं मोटै

www.rajsevak.com

प्रजातांत्रिक देस भारत रा राष्ट्रपति बण्या, इण रै साथै ई भारतीय दरसण नै वां जिको सारथक परिभाषा दीनी, उण सूं वारी गंभीर अध्येता दृष्टि-सम्पन्नता रो बोध हुवै। आपरै राष्ट्रपति काल मांय वां घणै ई देसां री जातरा कीनी, पण हरैक जातरा मांय भारतीय संस्कार ई वां रै साथी रै रूप मांय भैळा रया। मूळ रूप सूं दैख्यौ जावै तो भारत री संस्कृति कांनी सूं मिळ्योड़ा संस्कार वां री सै'सूं मोटी सगती ही।

वे लोकमान्य तिलक, स्वामी विवेकानन्द अर गांधी जी रै जीवन सूं घणा प्रभावित हा। उणां मांयी दरसण री जिकी प्रतिभा अर संस्कार हा, उणां आपरै अेक अध्यापक ए.जी. हांग नै वांरै लिखियोड़ै अेक निबंध माथै अै टिप्पणी करण सारूं मजबूर कर दीना कै एम.ए. परीक्षा सारूं इण विद्यार्थी जको निबंध लिख्यो हो-वो इण बात रो परमांण है कै वो खास-खास दारशनिक समस्याओं नै चौखी तरै सूं परगट करण री योग्यता अर खिमता राखै है। इण रै टाळ अंगरेजी भाषा माथै उणरी जबरी पकड़ है।

देस रै सै'सूं ऊंचै ओहदै माथै विराजणो इण वास्तै ई उल्लेखजोग है कै वो अेक दार्शनिक हा अर अध्यात्म मांय गैरी रुचि राखणिया प्रतिभाशाली व्यक्ति हा। सन् 1951 मांय वो मास्को मांय नीं सिरफ भारत रा राजदूत हो, वरन ऑक्सफोड़ विश्वविद्यालय मांय प्राच्य धरमां अर आचार संहिता रा प्रोफेसर ई हा। औ गरब सूं कयो जाय सकै है कै जद-जद ई आप परदेसियां रै विचाळै रया कै वां सूं बातचीत हुई, तो वांरै बातचीत मांय अपणो देस, उणरी संस्कृति-संस्कार अर उण री अस्मिता वां रै सारूं सै'सूं ऊंचा विषय रया। भारतीय मनीषा रा घणा ई चमत्कार वांरी बौद्धिक ऊर्जा सूं झरता हा। वां ऐकर अंगरेजी सभ्यता नै ध्यांन मांय राखतां थकां कयो हो कै-थे म्हांनै धरती माथै तेज दोड़णो, हवा मांय घणी ऊंचाई तांई उड़णो अर पांणी माथै तिरणो सिखाय सको हो पण मिनखां रै ज्यूं रैवणो थांनै नीं आयो।

आपरै अध्यापन काल मांय वो हमेस छात्रां री स्यायता करता रैवता, इण वास्तै छात्रां री वां रै प्रति गैरी जबरी श्रद्धा ही। छोटी ऊमर मांय ई वांरै दरसण मोटी सूं मोटी प्रतिभावां अर विद्वानां नै परभावित करै राख्या हा। तीस वरस री ऊमर मांय उणां रै दोय महत्त्वपूर्ण ग्रंथां रो परकासण हुओ हो। अै ग्रंथा हा- दी रेन ऑफ रिलीजन इन कटिंपररी फिलॉसफी अर दी फिलॉसफी ऑफ रवीन्द्रनाथ। उल्लेखजोग बात अै है कै डॉ. राधाकृष्णन अपांणै प्राचीन ग्रंथां उपनिषद, दरषणाशास्त्र अर दूजै आध्यात्मिक ग्रंथां रा अध्येता हा।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जिण घण मैहताऊ कृतियां रो अवदान साहित्य नै दियो, उण मांय ई भारत नै दैख्यो जाय सकै है, ज्यूं-दी हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ, दी हार्ट ऑफ हिन्दुस्तान, दी गौतम बुद्ध, दी फिलॉसफी ऑफ रविन्द्रनाथ, महात्मा गाँधी, इंडिया एण्ड चाइना, रिलीजन एण्ड सोसायटी, भगवद्गीता, ग्रेट इंडियन्स, दी धम्मपद, दी प्रिंसीपल ऑफ उपनिषद अर ब्रह्मसूत्र आदि मैहताऊ ग्रंथां मांयी उणांरो संस्कृति प्रेम, राष्ट्रीयता अर न्यारै-न्यारै धरमां रै प्रति सम्मान री झळक मिळै है। वां री राजनीतिक सोच मांय ई जीवन दरसण अर अहिंसा री अनुगूंज सुणीजै है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन संस्कारां नै अेक नुंवो रूप दैवण री पूरी कोसिस कीनी। पछिमी संस्कृति अर संस्कार सूं वां रौ मन अर दिमाग कदै ई परभावित नीं हुओ। वो अपणै देस मांय रया कै परदेस मांय, वां रै पेरावै मांय कदै ई, कोई ई फरक नीं आयो। वो जद-जद ई जाण्यै-अणजाण्यै मिनखां, सत्ताधारियां अर राजनेतावां रै विचाळै रया तो ई वो सिरफ भारतीय ई रया। अपणै देस री गरिमा रो ध्यांन राखणो कोई वां सू सीखै। वांरा भाषण अर वांरी किताबां पढ़ां तो लागै कै वो संस्कृति अर राष्ट्रीयता रा सैं'सूं मोटा समरथक हा।

वांरो जलम शिक्षक दिवस दिवस रै रूप मांय इण वास्तै मनायो जावै है कै वां रै जीवन रो घण मैहताऊ हिस्सो वो रयो हैं, जद उणां अेक शिक्षाविद् रै रूप मांय आपरी सेवावां दीनी ही। अेक संवेदणशील शिक्षक रै रूप मांय वो आपरै वखत रा साक्षी रया। सई रूप मांय वो अेक अे'ड़ा महापुरुष हा जिणां मांय म्हैं पूरै मानव समाज, उणां रा संस्कार, उणा रा विचार, जीवन दरसण अर वां री आस्थाआं नै देख सकां हां। वां री दिव्य प्रतिभा नै शत-शत नमण।

ऐसोसिएट प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)
केशर कुंज, स्कूल नं. 4 रै कनै,
बाड़मेर (राज)-344001
मो: 9413526640

गुमेज

❐ विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'

बस ठसामठस भरेली हती। केटलिक सवारियं ने तो सीट पण न्हे मली हती। अटले ई मनखं ऊभं-ऊभं जात्रा करी र् यं हतं। मोहन अने एनो छोरो विमल पण एणी'ज बस मँय एक सीट ऊपर बैठा हता। एनी वगत धक्को खातो-खातो एक डोकरो एणं नी सीट कने आवी ग्यो हतो। विमल ने एणा डोकरा ऊपर दया आवी गई ई आपड़े बापू नै केवा लाग्यो 'बापू, म्हूँ ऊभो थई जऊ।'

'कैम?'

'तो आ दाजी आँय खरी बैही सकै'

'ना छानोमनो बैही जा देखतो नथी भीड़ केटली वदी रई है।' मोहन ए विमल माथै रीस करते जाईनै क्यु। विमल ने आपड़े बापू थकी आवा जवाब नी आसा न्हे हती..ई एणा डोकरा सामू जोहते जाई ने एक वगत फेरी केवा लाग्यो.. 'अटले'ज तो बापू म्हूँ कही र् यो हूँ। भीड़ वदी रई है..आ दाजी आम हरते ऊभा रहेंगा।'

'दाजी नी तने हु पड़ी है। छानोमनो बैही जा नै..आ भीड़ तारा पोग कचरी नाकेगा' आणी वार बापू 'ए विमल हामी आँकि काड़ते जाईनै क्यु।' बापू...तमे'ज तो काले पाठ भणावते जाई ने क्यु हतु के 'डूकरं नी सेवा करवी जुवै... आणा थकी बड़िया आणं दाजी सारू म्हूँ हुं करी सकूँ।'

विमल नी आणी वात थकी मोहन थुड़ोक नरम पड़ी ग्यो...थुडूक आमनु-ऊमनु जोहवा पूठै...ई परेम थकी आपड़ा बेटा ने हमझाड़वा लाग्यो 'बेटा आ वातैं चौपड़ियं मए'ज असल लागैं...आ बीजं सब लूगं गांडं हैं.जे कोय ऊभू नथी थातु।'

बापू नी आ वात सांभळी ने विमल'ए बड़ा भोळापण थकी पूछ्यू 'चौपड़ियं मए लख्यू आवे के माँ बाप नी सेवा करवी जुवे आ वात पण चौपड़ियं मँय असल लागे बापू।'

विमल नी आ वात सांभळी ने मोहन नी जीबान ताळुए अटकाई गई...कोय ने बुलंणू एने वते..बस आपड़ा हामू जोहतो'ज रई ग्यो। आजे प्हेली वगत एने आपड़े बेटा ऊपर गुमेज थई र् यो हतो।

(यह लघुकथा बाँसवाड़ा की आंचलिक भाषा में है।)

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रैयाना, अरथूना,
बाँसवाड़ा (राज.)-327034
मो: 9928699344

www.rajsevak.com

म्हारौ माण म्हारी मायड़ भासा-भासा रौ आवणो

❒ अशोक कुमार व्यास

शिक्षा रो अरथ सीखणौ-सिखावणौ अर सीखणै री क्रिया सूं है। शिक्षा तौ जनमजात खिमतावां रौ चौमुखो करणै रौ नांव है। बाळक मांय पैलां सू ही सोयो ग्यान हुवै पण शिक्षा उण ग्यान अर पूरणता नै सामी लावै। शिक्षा बाळक रै मन-बुद्धि अर परवतियां रौ विगसाव करै।

बाळक री पैली पोशाळ (स्कूल) उण रौ परवार अर आसै-पासै रो वातावरण हुवै। उण सूं वौ मायड़ भासा अर आतम निरभरता री शिक्षा लेवै। पछै उण नै जमानां मुजब आज री आधुनिक शिक्षा खातर भणाई रौ ठेकौ लियां कुकुरमुत्ता दांई उग्योड़ी तथाकथित कॉनवैन्ट इंगलिस मीडियम मांय भरती होवणो पड़ै, उण सूं कोई पूछै नीं। बाळक आपरै सहज अर सुभाव मुजब बाळपणै ढंग सूं सीखै अर सीखणौ चावै पण आज री नूंवी पोशाळा मांय जिकी शिक्षा पद्धति चाल रैयी है उण सूं बाळकां रो वास्तविक विगसाव अवरुद्ध हुय रयौ है। सगळां ने आपरै स्कूल रै सौ परसैन्ट रिजल्ट री चिन्ता है। बाळक नै नम्बरां री मसीन बणाय दी है। वैग्यानिक सर्वे नै ध्यान करां जद ठा पड़ै क औसत नम्बर लावण वाळा टॉपर सूं ज्यादा बढ़ रैया है।

शिक्षा रै अवरोही स्तर रौ एक मोटौ कारण मायड़ भासा में शिक्षण नी देवणौं है। माँ रै दूध सागै खून में, वैवार में आवण आळी मायड़ भासा सूं आंतरी दूजी भासावां मांय आज सरुआती शिक्षा नूवी पोशाळां मांय परोसी जाय रई है। इण स्कूलां मांय टाबर आपरी मातभाषा में जे बोल लेवै तो झट टोकीजै। आज च्यारूंमेर स्कूला मांय सुभाविक अभिव्यक्ति नै दबावण री कोसीस हुय रैयी है। सरकार भी अंगरेजी रौ पल्लौ झाल राख्यौ है। एक सूं पाँच पढ़ावण वाळा गुरुजी भी नूवीं इंगरेजी री किताबां नै देख-देख भुंवाळी खाय रया है। ना अरथ जाणै ना उच्चारण, फीड बैक इंस्ट्रक्सन भी अंगरेजी मांय देख'र सोचै अल्ला-अल्ला खैर सल्ला।

गाँव रौ एक बाळक म्हारै खनै रोंवतौ आयौ, बोल्यौ गुरुजी सकूल (प्राइवेट) जाऊं जणै बठै रा सर ठोकै। डर सूं स्कूल नीं जाऊ जणै माइत ठोकै। किताबां सगळी इंगलिस में है। म्हनै समझ में कीं नीं आवै। टाबर री आंख्यां बोलते-बोलतै आली हुयगी। पूछे कोई इसा माइतां नै, क्यूं देखा देखी करै अर टाबरां रौ भविस घूड़ करै? म्हनै इण विक्रत थिति माथै झाळ आवण लागी। म्हारी आंख्यां साथ म्हारौ ई पचीस बरस पैली रौ चितराम घूमग्यौ। जद स्यामपट्ट माथै म्हैं गुरुजी रे 'आरंभ' नै मिटा रे 'प्रारंभ' लिख दियौ। किलास मांय आवंते पाण स्यामपट्ट माथै लैण बिचाळै लिखावट आंतरी देख'र पूछ्यौ और सबद कुण लिख्यौ? म्हैं पुरस्कार मिलणै रै भाव सूं खड़ौ हुयौ। गुरुजी खनै आवण रौ इसारौ कर्‌यौ। म्है कोड सूं खनै गयौ। बाज ऊँदरै माथै झपटे ज्यूं गुरुजी म्हारी गुद्दी झाल'र म्हारी कोमल कमर माथै विस्व रौ उणियारौ मांड दीनौ। म्हारी दुरदसा देख सगळा टाबर डरग्या। म्हारी अर वांरी छाती डर सूं धसकगी। वा घड़ी अर आज रौ दिन, म्है दब्बू बणयोड़ौ हूँ। म्हारी अभिव्यक्ति री खिमता ओज्यूं ताई डाँवाडोळ है।

विगत दाखलां सूं कैय सकां क आज री शिक्षा बाल मनोविग्यान नै ध्यान राख'र देवणी चाइजै। सरुआती शिक्षा रौ आधार तौ मायड़ भासा ई हुवणै चाइजै। इण मायड़ भासा रै सायरै सूं शिक्षा संस्कार मजबूत हुवै अर बाळक रै चौमुखे विकास नै बधावै। बाळक मनोविग्यान री दीठ सूं देखां तो निगै आवै क बाळक रै सुभाविक विगसाव नै कठोर-दमनात्मक वैवार सूं गति नी मिळै। उण सूं बाळक कुण्ठाग्रस्त हुय जावै। सीखणै री गति विचलित हुय जावै। वौ पांख्यां कट्‌यौड़ै पंछी दांई हुय ज्यावै। जद कै बाळक मछली दांई तिरणौ अर पंछी दांई उड़णौं चावै। शिक्षा रै पाण बाळक री कल्पनावां नै विगसाव मिळै।

शिक्षा रौ मूळ सरवांगीण विकास है। इण में शिक्षा मनोविग्यान सायक है। और गुरु ने दीठ देवै क बाळक काची माटी अर कोरो कागज दांई व्है। ज्यूं कुम्हार माटी में दोस देख्यां बिना उण नै सुधार निखार भांत-भांत री कलाकृतियाँ बणावै उणीज तर्‌यां गुरु नै भी बाळक री पैचाण कर उण रा कमजोर छेत्रों नै पैचाण उणी री रुचि ध्यान कर उण नै परिपूरण बणावणौ चाइजै।

गुरु जी बाळक रै कोमल मन-भावनावां नै निगै कर उण कोरै कागज माथै आपरी अर इण मानखै री अैड़ी चोखी इबारत लिख सकै जिकी समूंचै जगत वास्तै गौरव री बात हुय सकै। मिसाल बण सकै।

ई जगत मांय हर एक चीज आपरै निजू सुभाव-परकति सूं विगसित हुवणी चावै। आज रौ बाळक काल रो भविस है। ई खातर गुरुवां रौ परम दाइतव है क वै आपणै भविस नै सांतरौ बणावण खातर छोटी सूं छोटी बारीक मनोविग्यान माथै खरी उतर्‌यौड़ी तकनीक नै शिक्षा मांय काम में लेवै। जिके सूं बालळ रै बिना बोझ विसयां रौ सांतरौ ग्यान उण री रुचि मुजब सगळै समाज नै मिनखापणै नै मैकावै। उण री सौरम सूं खुद माळी भी खुदोखुद सुरभित व्है।

शिक्षा रौ आधार थम्भ भासा हुवै। भासा बिचारां रौ, आतम रौ मिनखां रै होठां सूं गुजायमान रुप हुवै। भासा संकेतां-प्रतीकां रौ रूप है जिण सूं मनुज आपरा बिचारां नै दूजां सामीं प्रगटै। भासा रौ औ प्रकटाकरण आंख्यां रै इसारै, चैरे रै हावभाव अर सपर्स सूं हुया करै।

बाळक जलम लेवता पांण आपरी ग्यान-इंदरियां सूं निजू जरूरतां (सीखणौ) सरू कर देवै। इण मांय सपर्स-हावभाव घणा महताऊ व्है। अै चेस्टावां उणरी सरुआती भासा हुवै। बाळक मांय नूवीं आवाजां-ध्वनियां जाणनै-सीखणै री घणी ललक हुया करै। वौ अनुकरण सूं सै सूं बेसी सीखै। अनुकरण कर परो वौ नूवीं ध्वनियाँ आवाजां नै घड़ी-घड़ी पलटे फेरै। भासा रौ औ अभ्यास उण री भासागत जड़ नै थिर करै। बियां बडेरा कैंवता आया है क 'करत-करत अभ्यास रै जड़मति होत सुजान...'

मायड़ भासा सीखण मांय बाळक रै मगज मायं भांत-भांत रा दरसाव बिम्ब, सुती बिम्ब अर विचार बिम्ब, भाव बिम्ब बण्या करै। अै बिम्ब उण रै परिवेस रा हुया करै जका उणनै उणरी मायड़ भासा सीखण मदद करै। बाळक आपरै च्यारूमेर री जींसा नै देखै, आसै-पासै रा लोगां नै उण जींसा बावत करता इसारा, लोगां रा होठां री गतिविधियाँ अर आवाजां नै वौ एकमेक करतौ चालै। इण तरै सगळी दीसती घटनावां रै जोड़ सूं हर एक चीज रौ बिम्ब बाळक आपरै मगज मांय थिर कर लेवै। आ समूंची क्रिया वौ

www.rajsevak.com

सहज सायास आंतरिक रूप सूं करै। उण री कल्पना सगति इतरी बेजोड़ हुवै क वौ आपरी निजरां सूं कोई चीज छौड़ै कोनी। हर जीनस रौ चितर वौ बणाय लेवै अर उण जिनस रौ प्रत्यय हाड़ोहाड बैठाय लेवै। विचार बिम्ब री औस्था मांय बाळक मन उण जीनस रै बगैर भी उण सूं जुड़योड़ी बातां अर काम री कलपना कर लेवै। इण औस्था मांय उण रौ दिमांग घणौ क्रियासील हुवै। विचार बिम्बां नै वौ आपरौ लगाव-खिंचाव देयनै भावां सू जोड़ै। इणी कारण बाळक आपरी हरेक जिनस सूं लगाव राखै। टूटोड़ै रामतिए नै वौ आपरी कीमती सम्पत्ति मानै। माँ-बाप भाई-बैन जीव-जिनावरां सूं लगाव भाव-बिम्बां रा भासाई जोड़ मजबूत होवण रौ परमाण हुया करै।

बाळक मांय भासा री (कौशल) खिमतावां, सुणनो, बोलणो, भणनौ अर लिखणौ बाळपणै सूं ही उण मांय हुवै। मायड़ भासां री इण भांत री खिमतावां नै चमकावण-बढ़ावण री दरकार उणरै परिवार वाळा अर भणावण वाळा सूं है क वै उण री इण खिमतावां नै माकूल अभ्यास अर अवसर देवै।

बाळक मांय अनुकरण रौ मिजाज हुवै जिण री मदद सूं मायड़ भासा रै स्रवण री खिमता बढ़ा सकै। मायड़ भासा सीखण री पैली पेड़ी सुणनै री क्रिया है जिणरी बदौलत दूजी खिमतावां रौ विगसाव हुवै। वौ सुणपरौ, दुहरा-दुहरा समझ'र समरण करपरौ आपरी मायड़ भासा रौ ग्यान भेळौ करै।

बाळक रै सुणनै री इण खिमता री बढ़ोतरी खातर शिक्षक नै माकूल विधियाँ नै काम में लेवणी चाइजै। ससवर बांचणो, उथळा करना अर पडूत्तर देवणौ, बातां काण्यां कैवणौ-सुणनौ, भासण देवणौ, वाद-विवाद, आड़ी-पहेली, आद विधियाँ सूं मायड़ भासा री खिमता नै बढ़ा सकै।

आज रौ जुग वैग्यानिक जुग है। सौ तरै रा सीखणै-सिखाणै अर विगसित हुयग्या है। इणा रौ सावचेत सांवठौ काम मायड़ भासा नै सीखणै-सिखाणै अर विगसित करणै में लेय सका। टैपरिकॉर्डर, रेडियो, प्रोजेक्टर, टीवी, वीडियो, कम्प्यूटर, चलचित्र आद दरसाव-सुणन री तकनीकां रै सायरै जुगानुरूप हाइटैक हुयर मायड़ भासा रा कौसलां रौ विगसाव कियौ जा सकै। इण तरै रा आधुनिक बदळावां रौ भासा छेतर मांय सुवागत हुवणौ चाइजै।

कैवत है-बातन हाथी पाइए बातन हाथी पांव 'जे सुद्ध उच्चारण नी करां तौ अरथ रौ अनरथ हुय जावै। बाळक रै मायड़ भासा रै सुध उच्चारण मुजब गुरुजी नै ध्वनि तत्वां रौ ग्यान कराणौ, आदरस-सुध उच्चारण पेश करणौ चाइजै। जियां काळै खनै गोरौ बैठे रंग नई तो अकल आवै।' 'संसरो गुण दोष भवति' सुध उच्चारण री संगत देयर अनुकरण सूं बाळक मायड़ भासा रै ठेठ मिजाज नै समझ सकै। बुजुरगां सूं सुणयौ क अठै रा महाराज गंगासिंह जी आपरी सेवा में राखण सूं पैल्या सेवक सूँ आ ओळी बोलावता 'बोल खाळौ बैवै खळळ-खळळ.....' इण सूं मातभासा रै सुध उच्चारण रौ मैतव प्रगटै।

जै बाळकां ने राजस्थानी री लिपि रौ सांतरौ अर पूरण ग्यान करा देवां, सुध उच्चारण व्याकरण रौ ग्यान अर लिखणै रौ सांतरौ अभ्यास, गळत लिख्यौड़ै हर एक सबद नै सुधारणो, लिखित काम रौ सुधारौ करणो, उण नै सबद कोस नै बरतणो सिखावणो आद मायड़ भासा राजस्थानी रौ सांतरौ ग्यान करायौ जा सकै।

आपां जे विचार करां तो निगै आवै क घणाई डोकरा-डोकरी जका कदैई पाठसाला री मूंडो नई देख्यौ वां री मायड़ भासा माथै गजब री पकड़ हुवै। वै कम सबदा मांय गैराई री बात कैये देवै। उणा री धरा मुजब भासा देखतै ई बणै पण घणै दुःख अर पीड़ा री आ बात है क जिकी भासा आपणै परिवेस अर घर री नी है उण रै लारै सगळा गैला हुय रैया है। इण नै सीखणो घणी अबखाई रौ काम, जिकै वास्तै गाड़ौ-गाडौ रिपिया अर समै री बरबादी हुय रैयी है। पण फैरूं भी अधकचरी सैंस्क्रति मांय लौट लगावण री कोसीस हुय रैयी है। म्हनै म्हारा गुरुजी रा सबद याद आवै-

'नुगरे को छोड़ती कुदरत नहीं।'

मायड़ भासा री नुगराई जनम देवाळ री नुगराई है। जिण सूं जीवण लियौ है उणरी सेवा मांय ई जीवण सारथक हुया करै। भारतेंदु जी इणरा सबळ दाखला है-

निज भासा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भासा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

व्याख्याता (राजस्थानी)
सेठ भैरुदान चौपड़ा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
गंगाशहर, बीकानेर (राज.)-334004
मो: 9414013080

खेजड़ली

❐ नगेन्द्र नारायण किराडू

खेजड़ी म्हंनै
था सूं घणी आस
तपती लूआं बाजै इत्ती
ओ खीरा उछाळतौ तावड़ौ
कुण मिटावै थारी प्यास
थारै ऊपर लागै है मेवौ
सांगरी, खोखा हर कोई लेवौ
तू नीं हारी तू नीं मिटी
ऊनाळौ कांई सियाळौ
थारो मिटा सकै नीं मान
खेजड़ी तू म्हांरौ अभिमान।
पंखी पंखेरू अर मानखौ
थूं ई दीनी छांव घणी
म्हां लोगां री खातर
थूं तो अपने आप बणी
खेजड़ी म्हंनै
था सूं आस घणी
तू अडिग है तू असल है
खाली बिरखा मिटावै
थारी प्यास
खड़ी रैवै अेकली
सगळी रितुआं नैं तू समेट ली
जावतोड़ै बटाऊ री तू है खास
खेजड़ी म्हंनै
था सूं घणी आस।

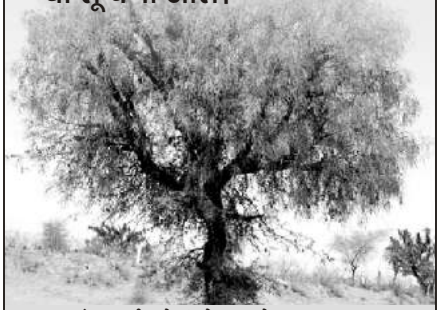

चंपा बाई बगेची के सामने, नया शहर,
बीकानेर (राज.)-334004
मो: 9460890205

www.rajsevak.com

भेराळ काळ छपनो

❒ दीपसिंह भाटी

स्रस्टी री उतपती सूं लेय'र मानखै नै आपरो अस्तित्व बचाय राखण वास्ते घणी मसकत करणी पड़ी है। आज री पीढ़ी ने ओ बैरो कोन्या के आपां रा माइतां किता दुख भोग'र आपरी जीयाजूण नै बचाय राखी। संतां हेला कर-कर मिनख नै चैतायो है कै 'लख चौरासी में भटकत-भटकत अबकै मिल्यो मौहेलो, करणा व्है सो कर ले भाई मानखौ जलम दौहेलो।'

चौरासी लाख जूणियां भुगत मानखै रो जमारो मिळे। इण बात माथै आजकल रा लैला मजनू अर प्रेम दीवाना गिनर ई नीं कर रिया है। अरे, ओ नौ नारायण री देही घणी अणमोल है। भगवान री घड़्योड़ी इण देही सूं मिनख पुरुसारथ कर इतिहास सिरजै। इण देही सूं ई मिनख आपरो वंस कायम राखै। आदिकाल सूं पैला ई मिनख एक बुधी वाळो जानवर हो। आपसूं लूंठा-लूंठा जंगळी जानवरा रै बिचाळै कींकर जीतो रियो, ओ तो ई जाणै कै पछै भगवान जाणै।

कैई ऊनाळा, कैई सीयाळा, केई बरसाळा, कैई आंधी तूफानां जैड़ी आफतां में डूंगरां, दररां, खोहा, धोरां अर दरखतां री शरण ले मिनख कुदरत री कोख रै सहारै आप खुद ने बचाय'र राख्यो। बखत रै परवांण रिसी मुनियाँ री संगत सूं मिनख आपरै मगज रै बळ माथै पशु जूण सूं न्यारी सभ्यता अर जमात पनपाई, आचार-विचार कायम कर कुदरत रै अथाह भंडारां रौ उपयोग करवा लाग्यो।

आपां रा माइतां खुद रो जीव बचावण सारू किता जतन कीधा इणरो कोई लेखो-जोखो पण आ बात सौळे आनां साची है कि जूना जमाना में मिनखां अबखा दिन घणा दीठा। बडेरा बातां करता कै अपांरा माइत विपत वेळा सूं भिड़ण वाळा लूंठा मिनख हा।

आठ कोस सूं अनाज लाता, पांच कोस सूं पाणी।
मांटी मिनख मांड देता, ढिब्बा ऊपर ढाणी।।

कोसां अळगा सूं धान री पोटळी सिर माथै मेल अंधारी रात रा ऊजड़ मारग परड़ां रा माथा खूंदता परगाळ रा आय घर में पग मेलता। अर दिनुगै मोटो घड़ो जिणने माट कैवे, ले पांच सात कोस सूं कुंआ सूं पाणी लाय'र आजीविका करता अर टाबर पाळता। आज रै मिनख ज्यूं नीं तो ब्रेकफास्ट हो, नीं लंच हो अर नीं डिनर। कदै तीजै टंक तो कदै तीजै दिन धान रो दांणौ पेट पूगतो। रोटी कठै। खाली नाम सुण डकार खाय लेता। जदै तो कैवताणो बाज्यो-मूंछ वाळो चावळ।

वाह सा, एक बात तो माननी पड़ेला कै आपां रा माइत हुता घणा लूंठा अर हीमत रा गाडा। बस एक ई लगनी, एक ई जिद्द कै कींकर ई कर जीवतो रैणो। मरणो नीं है। काळ माथै काळ अर कदै कदै तो सातकाळी झैली पण मड़द रां बच्चां कदै हीमत नीं हारी अर नीं कदै हीणो दाव दीधो। अपांनै घणो गीरबो अर अंगेज है कै अपां मौत नै हरावण वाळां अर जीयाजूण नै जीतण वाळां जौधारां री औलाद हां।

मरुधरा में काळ कोई नवी बात कोनी। पण आज सूं कोई 120 बरस पैला विक्रम संवत 1956 में च्यारूंकूंट ऐसो भेराळ काळ पड़्यो कै राजस्थान, सिंध समेत घणकरा प्रांत इणरी चपेट में आयग्या। जावै तो जावै कठै? च्यारूं दिसां एक सरीखी। मालमवेशी अर टाबर पाळणा जोर होयग्या।

आयो छपनो ओछतो, भमंतो काळ भेराळ।
गौआं डाकै गवाड़ी, बरकां करैह बाळ।।

वाह सा, मिनखां आपो आपरी जूना कलारां खोल दिन तोड़्या। छैवट घरां आगी ऊभा ढांढा कदै धापै। सीमाड़ै में जै कोई गाभो पाधरो कर ठिरड़ै फिरै तो ई एक सिळी नीं लागै। आखै बरस मेह री उड़ती छांट नीं पड़ी। धूड़ियो धण (भेड़-बकरी) तो चैतरांगै में ज्यूं त्यूं मरा-जीयो करै पणं गायां बचावणी मुसकल होयगी। चारै रो कठै नामी निसाण नैड़ो नीं। अर मिनखै गौमाता ने बचावण सारूं झूंपड़ां में हाथ घाल्या। छैवट झूंपड़ां रा वळा अर खूंटा दीसण लाग्या। अबै तो कोई आसरो नीं।

वाह सा, भेराळ काळ सूं मारियौड़ी नागी धरती माथै धूड़ रा पोटका उड़ावती डाकणी आंधी कोढ़ में खाज ज्यूं सालै। मिनखां नै बगना कर मनभंज कर दीधा। कैवत है कै इण रुत में तो राणियां रां कंगण ढीली पड़ै। घर रै मुखियां रा पेट पासळियां चढ़ग्या। विरंगी बथाण में ऊभी गायां डाकां करै। टाबरिया नै तो बोध नीं सो दिन भर हाथ ऐठ्योड़ा राखै। धन रा कोठार तळिये पूगा अर नैनां बाळां नै छोड़ बाकी सगळां मोटेरा धान सूं हाथ झेल्या।

गायां ढोळा झेल लीधा। जिण गायां वाळी गवाड़ी में कदै मिनखां मारग घाल दिया हा, कदै बळधां री जोड़ी, कदै दूध दही छाछ सारू आवण वाळां नित नैमी उणांज मिनखा उण गवाड़ी रो पासौ ले लीधो। ढोळात गायां नै उठावै कुण। बैठी-बैठी गौ मातावां रै पगां में लुडंग पड़ग्या। रात री बैठ्योड़ी गायां माथै धूड़ रो धोरा बाध जाता। घरां आगी ऊभी गायां हियाफूट होय डाकां कर-कर हेठी पड़ती अर प्राण मुगत। च्यारूंमेर ढूंढी रा ढिगला लागग्या। भूंडी बासना सूं मिनखां रो जीवणो नरग होयग्यो।

गिरजड़ां आभै में छिंया कर दीधी। कूतरा हाडखा खेंचण लाग्या। अमरत निरझरणी गायां री अकाळ मौत रो मंजर देख मिनखां रै आंख्यां सूं रगत रा आंसू छळकण लाग्या पण करै तो करै कांई। मिनख आंख्या फाड़ आभै सामौ देख त्रिलोकीनाथ नै हेला करता पण आभै में बादळां री ठौड़ गिरजड़ियां उड़ती निजर आवती।

छायौ मुरुधर छपनियो, भींता छोड्यो भार।
माल मवेशी मारिया, क्यूं रूस्यौ किरतार।।
छिपतो लुकतो छपनियौ, आयो ऊभीताळ।
मरगी धेनां मावड़ी, गयो कठै गोपाळ।।

माल मवेशी सै मर खूटो। पण मरुधर रो मरटधारी मिनख नी तूटो। आफतां सूं जूझतै मिनख भूख नै अपारे घट मांय ईज मारी अर घर रा लुगाई-टाबरां सामो हरमेस मुळकतो रियो। जीवण रै असली अरथ री घड़ी आयगी।

वाह सा, जिंदगी अर मौत दोन्यूं सुनसान जंगळ में एक जगै भेळी हुई। मौत बेशरमाई सूं मुळकती बोली, 'बाई! अबे पड़ेला खबर कै कुण लूंठी है। माल मवेशी रो तो लाटो ले लीधी अबे मानखे री बारी है सो देखू कै थे किताक दिन मिनखां नै बचावै। जिंदगाणी आंख्यां सूं खीरा बरसाती पडूतर दीधो, 'थने ठा कौनी अठै रै मानवी थनै कितां बार धूड़ चटाई। अठै रै

www.rajsevak.com

मानखौ छैली दम तांई थारै सूं जंग लड़ेला अर जीत म्हारो सुख भोगेला।'

घर रा मोट्यार सवार रा वैगा उठ कुदरत री कोख रो सहारो लेता। रोही में कैर, कूंबट, खेजड़ी, नीम, गांगेटी, सिरगू, जाळ, गूंदी आद दरखतां रा फळ भेळा कर'र परिवार रै सदस्यां में बांट'र टैम पास करता। टूळां रा कैर आठ पौर पाणी में भिगोय गिण-गिण घर में बांटता। कैर अर कूंबट रा छूंतका सिलाड़ी माथै झींणा वाट लूण-मिरच लगाय पेट नै भाड़ो दे दुख रा दिन तोड़ता पण कदै मन में कोई ऊंधी-पाधरी नी आई। भगवान री दीधोड़ी अमोलक जीयाजूण नै बचाय राखी। नमो है वां लोगां री जीवटता नै जो धार री पोटळी बांध ऊकळतै पाणी में घुमाय अन्नवाणी बणाता अर कैर रे छिलकां में मिळाय पापी पेट पाळता।

वाह सा, छपना री इण विभीषिका में राज रा कोठार भी खाली व्हेग्या। मिनखां कनै सोनो घणो, चांदी रा कळदार रोकड़ा घणा पण सोने-चांदी सूं कोई पेट भरीजै। महंगाई अणूती वधगी। सेठ, साहूकार, ठाकर, जागीरदार, गळियां में आयग्या। छपना काळ रो आंख्यां देख्यो बरणाव महाकवि ऊमरदान जी यूं करै-

माणस मुरधरिया माणक सूं मूंगा।
कोड़ी-कोड़ी रा करिया स्रम सूंगा।
डाढ़ी मूंछाळा डळियां में डळिया।
रळिया जायोड़ा गळियां में रुळिया।
आफत मोटी नै रैयत रोवाई।
मुरधर में मोटी विपत आई।।

पेट रै खातर मोटा-मोटा टणका, मूंछां वाळा, मैहल माळियां में रैवण वाळा मिनख तगारी फावड़ो ले फैमीना माथै माटी खोदता निजर आया। इण मौके जोधपुर महाराजा सरदारसिंह जी बाड़मेर सूं बालोतरा रैल री लैण रो काम सरू करायौ। इण काम माथै आखै मारवाड़ रा मिनख गुड़ माथै माखियां ज्यूं आय अड़थड़्या।

लूट खसोट, मारामारी, जमाखोरी रो गोरखधंधो देख'र मारवाड़ दरबार सगळां स्टेटां री तिजोरियां राज रै महकना खास में रखाय राज री निगैदास्ती में मदत देणी चालू राखी। ज्यूं ई गरमी रा दिन आया कुर कुपोखण रै कारण हैजा री महामारी फैलगी। मारवाड़ में पांच लाख लोग भूखमरी अर महामारी सूं बटोबट काळ रो कलेवो बणग्या।

वाह सा, छपना काळ में मिनख भूख अर मांदगी री दोहरी मार सूं दुरबळ होयग्या। पेट पासळियां रै चिपग्या। आंख्यां ऊंडी धंस गई। उठण री सरदा नीं रैयी। मिनख आपरां झूंपड़ां में वळां रै रस्सियां अर लोहे री सांकळां लटकाय राखता जिणनै पकड़'र ऊंचा उठता। साख्यात मौत नै सामी ऊभी देख अठै रा जूझारू मिनख कदै हीमत नी हारता अर किरको राखता।

वाह सा, दिन वहै गया, कयो है कि रात माथै रात नी पड़े पण अठै सात-सात रातां पड़ती। इण धरती रै मिनखं आंख्यां देखी अर अबखी वेळा में आपने बचाय राख्यो। आज ओ बखत नी है अर राम करै छपनै जैड़ी आफत आवै ई नी। आपां रा माईत भूख रै भाड़ै रुळता फिरता पण आज रा मिनख मौज मस्ती सारू रुळता फिरै। आज आखै संसार माथै महामारी रो संकट आयग्यौ। ऊंची तरक्की वाळा मुलक आफळ रिया है। राम जाणै ओ संगणी बेमारी कींकर पसरी। पण आज आखो संसार इण बड़बड़ी सूं कांप र्‌यौ है।

आपण देस में ओ रोग आय तो ग्यो पण हाल लग है कबजे में। आपणे देस रा मुखिया मोदीजी इण आफत सूं बेड़ो पार लगावण खातर आपो आपरे घरां में बंद रैवण रो ऐलाण करियौ है। थोड़ाक दिन घूमण-फिरण, मेलजोल, भीड़भाड़ रो सांगोपांग परहेज राखो तो ऐ बड़बड़ी मिट जावेला अर भारत जीत जावेला। आज री टैम में राज कितो सुभीतो कीधो है। खावण पीवण अर रैवण रो सुभीतो घर में है तो पछै बारै क्यूं निकळो।

बार-बार हाथ जोड़ आखे देस रो प्रशासन आपो आपरे घरां में रैवण री अरदास कर रियो। अपारै वास्त रात-दिन पुलिस, प्रशासन, मेडिकल, मेडिकल महकमो, मीडिया आद आपरो जीव जोखे में डाळ पचै रिया है तो अपांनै घरां में बैठण सूं कांई बरछै लागै है। टाबरां रै भाग रा बोला-बौला बैठा क्यूं नीं रैवो। क्यूं बिना मतळब फिरो।

वाह सा, छपनो अर सतावनो लगोतार दो बरस मानखै सारूं घणा घाती रिया। सतावने में बरसातां तो हुई पण मांदगी री वजैह सूं धान खेतां में ई रैग्यो। छपनै रे पछै विक्रम संवत 1975 में बड़बड़ी वाळो धास्ती रोग फैल्यो। पिचोतरै में जान माल रो घणौ नुकसाण हुयो पण आपां रा माईत हीमत नी हारिया। उणरै पछै पचीसो काळ आयो। इण तरै मारवाड़ हरमेस काळ रो घर रियो है। आज तो साधन घणा। जगै जगै टूवेल, बेरा घणा। राज मदत घणी करै। ओ आफत थोड़ा'क दिनां री है। कीं नी करणो है।

फखत आपरो जी झेलणो है। आप खुद माथै काबू राखणो है। सब ठीक होवेला। पण जाबतो राखणो जरूरी है। साबण सूं हाथ धोवता रैवो। सफाई राखो अर मूंडै माथै कपड़ो राखो अर घर में ई विराज्या रैवो। धनेवाद।

प्राध्यापक (हिन्दी)
सणाऊ, चौहटन, बाड़मेर (राज.)
मो: 9460221222

बात म्हारी थे सुणज्यो रे

❐ **पारस चन्द जैन**

ओ भायाँ भणज्यो रै! औ भायाँ गुणज्यौ रै!
पण भण्या पढ़्या बेईमान, मती थे भणज्यो रै!!

दोपारां में दफतर आवै, टेम सुबै का मांडै रै!
खुद तो आवै मौड़ा-मौड़ा, पण दूजां पर टांडै रै!!

चीज पड़ी घर माहीं, पण पाड़ौसी स्यूं मांगै रै!
दूजां नै दैवण री वेळा, सगळी सीमा लांघै रै!!

छोटी-छोटी बातां ऊपर, लाचारां ने कूटै रै!
दुखियां रा दुख देख-देख अै, घणौ मजौ नित लुंटैरै!!

काम करै नीं पीस्या भरको, करै दिखावौ भारी रै!
मुख उपर मिठियास अंणूती, हिवड़ा मांय कटारी रै!!

दीन, दुखी, अर मरतगाळ ने, बाहर स्यूं ही काटै रै!
खुद बैठ्या रैवे घर माँही, टाबरियां स्यू नाटै रै!!

होसी कस्यां विकास पछै यूं, आं नै कुण समझावै रै!
ओ भायाँ भणज्यौ रै! ओ भायाँ गुणज्यौ रै!!

भण्या-पढ़्या बेईमान, बणां जी जात आपणी न्यारी रै!
कागदियां में पाक-साफ, पण कर दिया घपला भारी रै!!

पण भण्या-पढया बेइमान मती थै बणज्यौ रै!
औ भायां भणज्यौ रै! औ भायां गुणज्यौ रै!

जिला शिक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
जनता कॉलोनी, देवली, टोंक (राज.)-304804
मो: 9413603345

www.rajsevak.com

मा री महिमा

❒ संग्राम सिंह सोढ़ा

आपणी सांवठी नै सुरंगी संस्कृति में वैदिक विधान रै मुजब 'जग जननी' सिरजणहार सूं अणमोल नै ऊजळो उपहार है। आ जनमदात्री स्रिस्टी रै सरोकारां रौ सिणगार है। इण जग जननी नै मा केवै। मा रौ पर्याय है मावड़ी। मावड़ी ईज ईसर रूपी माया री मैकार है। जिकौ आपां नै पैलै सूं लैय'र छैहलै संस्कारां रै ओळावै इण विराट जगत रौ दरसण करावै। धरती माथै सुरंगी सौरम लेवण सारू जीवण देवै। मा स्रिस्टी रौ मूळ है। वा मिनखा जूण में महान है। जिण री विसाल कूख ग्यान रौ खजानो है। इण री कूख में जलम लेवण नै भगवान खुद तरसै। इण पेटै कवि रा ऐ बोल उल्लेखण जोग है–

मा स्रिस्टी रौ मूळ है,माता मुदै महान।
मा री कूख ज जलमवा, भव तरसै भगवान।।

मा रौ कारोमदार आखी स्रिस्टी में समायोड़ौ है। मा रौ मैतब नै जीतब अनादि काल सूं घणौ सरावण जोग रैयौ है। श्रीराम जननी अर जलम भोम नै सुरग सूं सिरै री उपमा सूं मंडित करतां कैयौ है कै–'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'

हजरत मुहमद रै मुजब आपणी जन्नत आपणी मां रै पगां रै हेटै है। 'कवि तखत सिंह शेखावत 'सीरत रा छंद' नामक रचना में जलम भोम अर जननी नै अमोल थोक मानियौ है–

जलम भोम जननी जनगत,दोनूं थोक अमूल।
जो इनसे नफरत करै,ताका जीवन धूल।।

आपणै जूनै सास्तर तैतरीय उपनिषद में मा नै मातृ देवो भव रौ पावन पद देय'र माण बढ़ायौ है। इतौ ई नीं मा रौ दरजो केई आचार्यां सूं ऊंचौ नै इधकौ है। भागवत पुराण में मा री महत्ता वखाण जोग है कै–'मा री आसीस सात जलमां रा दोस दूर कर दे।इणी सिलसिलै में' महाभारत अनुशासन पर्व' में भीष्म रै मूंडे रा ऐ गुरु पेटै बोल–'मा रै समान कोई गुरु नीं' घणा महताऊ नै वजनदार है। मनु स्मृति रौ औ मत–'पिता सूं मा दस गुणा गौरवसाली हुवै।' मा री महानता नै भली भांति प्रगट करै। जद ई तो मनु रौ औ कथन घणौ प्रासंगिक लागै–'यत्र नार्यस्ते पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता।'

इणी भांत ब्रह्मवैतर्त पुराण में सौ गुणी सिरै अर वंदनीय मा नै मानी है, क्यूं कै–मा गरभ धारण अर पोषण करै।' मातृशक्ति रौ मोटपणौ मोळो ई नीं सिरै ओळ रैयौ है। महाभारत रै शांति पर्व में उल्लेख मिलै कै माता रै बरोबर कोई छिंया नीं है।माता रै समान कोई प्रिय नीं है। जथा–

नास्ति मातृ समा छाया,नास्ति मातृ समा गतिः।
नास्ति मातृ समंत्राणं,नास्ति मातृ समा प्रिया।।

संतान सारू मा री महत्ता रौ साचौ चितराम आदि शंकराचार्य आपरी श्रदेय जनमदायिनी जननी नै एक भावांजलि देवण रै बगत वां'रै अंतस री ओलूंड़ी रा हियै ढूकता ऐ आखर अंजस जोग लखावै–

'प्रसूति बगत री अनिवार्य सूळ व्यथा नै रैवण दे तो ई म्हारै मारफत मळ मूत्र रै कारणै,मळयुक्त बिस्तर, माता द्वारा गरभ भार रौ वहण अर उण रौ पोषण।इणां मांय सूं एक रिण में सूं ई उरिण होवण सारू औ पूत असमरथ है।उण माता नै म्हारौ निवण।'ओ है एक नारी रै अनूंते उदात्ती सरूप रौ जथारथ चित्रण।

मा रौ आदर नीं करणौ।मा री आज्ञा नीं मानणी। औ ओछै लोगां रौ काम है।ऐड़ी अवहेलना सूं बचणौ चाइजै। मा ईज तो सब सूं पैली समर्पण त्याग री सरव दात्री रैयी है। मा रै सान्निध्य में आपां नै अमर फळ मिलै। आपणै नीति सास्तरां में ऐड़ी बातां रा प्रमाण मिळ जावै–

आयु: पुमान् यश:स्वर्ग कीर्ति पुण्यं बल श्रियम।
पशु सुखं धनं धान्यं प्राप्नुयान्मातृवन्दनात।

अरथात् माता री सेवा करण वाळा सत्पुरुष मोटी उमर, जस, सुरग, कीरती, पुण्य, बल, लिछमी, पशु, सुख, धन धान्य सैंग ई प्राप्त कर सकै। मा विधाता री वाल्ही माया है। मा संसार री स्सै सूं बड़ी साधना, स्सै सूं मोटौ त्याग अर स्सै सूं मोटी विजय है। मा रौ कारोमदार लगोलग अछेही अर अनन्त हैं। क्यूं कै–जलम, सूरज–पूजा, छुछ, ढूंढ, सगाई, ब्याव सगळा टाणा मा बिना अलूणा लागै। मा भक्ति–शक्ति री बैजोड़ धणियाणी है। वां री अनूठी लीलावां रौ लेखो–जोखो मांडणो हरेक रै वंस रौ नीं है। पौराणिक आख्यानां रै मुजब मा रौ कृतित्व अनूठौ है। क्यूं कै–मा कुमाता नीं व्है। छेरू कुछेरू व्है सकै। माता कुमाता न भवति। वा तपेसरी नै जोगेसरी है। मा कुंती आपरै पुत्रां नै तप बळ रै पाण उत्पन्न करया तो राणी मदालसा आपरै टाबरां नै गरभ में ई ब्रह्मग्यान री शिक्षा देय'र ब्रह्म ग्यानी उत्पन्न करया। महाभारत में वर्णित प्रसंगानुसार वीर अभिमन्यु नै जलम सूं पैलां ई चक्रव्यूह तोड़ण री शिक्षा आपरी मा री कूख सूं ग्रहण करण रौ अवसर मिल्यौ।

साची है कै–मा री सेवा–बंदगी अर खेचल भरी खुसी रै बिना जन्नत हासिल नीं करियौ जा सकै। जदे ई तो महाभारत रै 'यक्ष–युधिष्ठर संवाद' में भूमि सूं भारी संतान नै धारण करण वाळी माता नै बताईजी है। आपां रै जीवण में पूजण लायक चीज है तो फगत मा ईज है। मा सूं वती गरज धन्तरवेद रै ई नीं व्है। मा रै ऊजळे अंतस में मिनखापणै री मुळक हुवै। वां'रै इण उजास में जुग बोध री अगवाणी रौ सुर हुवै।

मा री गरिमा नै महिमा जग चावी नै ठावी रैयी है। मा कैवतां मूंडौ भरीजै। मा रै अंतस कमळ में हेत, प्रेम, ममता, लाड कौड अर सनैव–सनमान जैड़ी भावना पळपळाहट करै। मा रै ममताळू झरोखै सूं झरता ऐ मार्मिक बोल मिठास री बिरखा करता थका जाया–जलमिया रौ मनडौ मोह लेवै। वा घणै लाड कौड सूं बोलै बतलावै–म्हारै हिवड़ै रा इकलोता लाडेसर, म्हारै घर रा चांनणा, म्हारा नैना सा कानूड़ा, म्हारी काळजै रा कोर, म्हारी आंख्यां रा तारा, म्हारा छेल भँवर सा, वडेरां री पुन्यायी सूं

www.rajsevak.com

जाम्योड़ा म्हारै कुळ रा दीवा, ऐड़ा मीठा संबोधन ठेठ हिवड़ै में हेत जगावै। मा रै अंतस रा ऐ अमोलख संबोधन कांनी-कांनी सोरम राळे। मा ई आत्मीयता रै आणंद री सागर है। मा बाप री दांई ई आपां नै जीवण री सचाइयां सूं रूबरू करावै।

मा रौ प्यार ऐड़ौ है कै-वां नै पतझड़ रौ रोग कदै नीं लाग सकै। मा री ममता आगळ भला-भला पांव थम जावै-

मा री ममता देख'र, थम जावै है पांव।
मिल जावै तकदीर सूं, उण आंचल री छांव।।

मा ममता री मूरती है। संसार री जहान है। उण में ई भगवान है।इण पेटै कवि रा आ कथन सरावण जोग है-

मा ममता री मूरती,जाणै सकल जहान।
जिण सूं ही जीवन मिलै,मा में है भगवान।।

मा गुणां री गागर ई नीं सागर है। मा रा गुण अपरम्पार है। मा जलम दात्री, धात्री, जग निर्मात्री, ग्यान दात्री अर जुग जात्री है। मा सदैव झांझरकै सूं लैय'र ब्याळू बगत तांई घर रै कामां में लागी रैवै। करम पूजा सूं कदै ई मुख नीं मोड़े। करम करयां भाग बदल जावै।

टाबरां में संस्कारां रा बीज उण री माता सूं ईज पड़िया करै। मातावां आपरी संतानां नै सदैव स्वाभिमान, त्याग, वीरता अर बलिदान जैड़ा वीरोचित गौरवशाली भाव भरै। मा ईज ओजीलै सुरां सूं हालरिया हुलरावती थकी आपरै लाडलां नै पालणियै में मातर भोम री रिक्सा खातर किणी ई कीमत पर (जलम भोम) नीं देवण री सलाह देवै-

इळा न देणी आपणी, हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय।।

जीजल मावड़ी आपरै नैनै नै हरख कौड रै पाण घणै हेत सूं हिवड़ै ताणी हालरिया हुलरावती, लोरियां गावती, नैणां रै नूर रौ निछरावल करती थकी ऊमाई गोदड़ली रौ अटूट हेत जतावती रैवै, जाणे इमरत री धार बरसती व्है। वा चाहै आधी रात हुवै चाहै झांझरकौ हुवै, जायोड़ै रै खातर जतन रौ जाळ गूंथती रैवै, भलै ई ऊजळो उणियारौ सांवळो पड़ जावै। वा बड़भागण हिमाळे री दांई सरद गरम री सूलां झेलती सावचेती सूं इण उजास री पगडांडी माथै टस सूं मस नीं हुवै।

सचियापुरा, पो-माणकासर, बज्जू,
बीकानेर (राज.)-334305 **मो: 9983181510**

इक्कीस दिन इक्कीस दोहा

❐ **मुकेश कुमार जोशी**

पर-घर पग नीं मैलणो, कित्ती करै मनवार।
अरज करै है आपने, भारत री सरकार।।

कोरोना ने रोकणो, पहलां रुकजो आप।
नीं रुकिया जै आज तो पछै रहत पछताप।।

दवा नहीं इण रोग री, बचणौ ही उपचार।
है रती भर मिनखपणो, मत आजो थे बार।।

हाथ मिलाणौ छोड़ ने दूर सूं नमस्कार।
मास्क लगा ने बोलजो ओ ही है उपचार।।

साबुण सूं कर धोवजो दिन में दस-दस बार।
तो ही रुकसी देस में, कोरोना परसार।।5।।

कोरोना रै कोप सूं, मचियो हाहाकार।
मिनख हुवो तो मानजो मत आजो थै बार।।

पुलिस खड़ी है सड़क पर सब री पेहरेदार।
ऐकर मन सूं बोलजो, इण की जय जयकार।।

अठी उठी नीं जावणो, घर में कर रैवास।
मान सला सरकार री, पूरण होसी आस।।

ठंडी चीजों सूं भला, करजो थै परहेज।
पछै भली थै खावजो, थोड़ी करलो जेज।।

जै चावो थै देस में, कल खुशियों रा ताज।
सरकारी आदेश को, सगळा मानो आज।।

खबर सही अखबार री, जिण रो कर परसार।
झूठी अफवा इण घड़ी, मत मानो नर नार।।

भारत रो परधान भी, सबनै जोड़े हाथ।
समय बितावो आपरो, घर वाळां रै साथ।।

धरती रै भगवान री, सेवा आठूं याम।
दूर करे ऐ रोग ने, आप करो विसराम।।

भामासा भी जोर रो, कर रहिया उपकार।
घर में बैठे कीजिए, आंरौ भी सत्कार।।

संकट री इण टेम में, सब करजो उपकार।
भूखे पेट गरीब ने, रोटी री मनवार।।

कालाबाजारी कठी, मत करजो रै सेठ।
मजबूरी रो फायदो, कितोक भरसी पेट।।

सीएम ने सलाम है, सजग करिया प्रांत।
काफी हद तक हो गयो, कोरोना भी शांत।।

मिलणै री वैला नहीं, मन सूं राखो मेल।
घरवासौ भगवान रो, मत मानो थे जेल।।

पढ़ो किताबां ज्ञान री, और पढ़ो अखबार।
दुनिया भर री खबर सूं पावो साचौ सार।।

घर बैठा मत भूलजो, कर लो वां नै याद।
जिण रै कारण दैस री, सीमावां आबाद।।

इक्कीस दोहे हर दिन, पढता रहजो आप।
शिवलेहरी री वीणती, घर ने राखो साफ।।

अध्यापक लेवल-1
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बामसीन,
समदड़ी, बाड़मेर (राज.)

चॉक

❐ **ओम प्रकाश सैनी**

टेर-चॉक चोखी चालै रै! चॉक चोखी चालै रै!!
हरियै-हरियै बोर्ड माथै दौड़ी चालै रै!

चॉक से ही देखो बच्चा ए बी सी डी सीखै,
देखतां ई देखतां वे अ आ इ ई सीखै,
अक्षर पढ़बो लिखबो सीखै रै।
हरियै-हरियै बोर्ड माथै दौड़ी चालै रै।।

एक दो की गिनती सीखै, जोड़ बाकी सीखै,
उछळ-कूद करता-करता बोर्ड माथै लिखै,
खेल-खेल में गणित सीखै रै।
हरियै-हरियै बोर्ड माथै दौड़ी चालै रै।।

छोटा-मोटा टाबर देखो अक्षर ज्ञान सीखै,
जात-पाँत को भेद मिटाकर पढ़बो लिखबो सीखै,
ये तो संग में रहबो सीखै रै।
हरियै-हरियै बोर्ड माथै दौड़ी चालै रै।।

मोती-सा अक्षर चमकावै सगळा ज्ञान बढ़ावै,
जोड़ बाकी गुणा भाग सै किस्मत नै चमकावै,
बोर्ड पर भाग्या-भाग्या जावै रै।
हरियै-हरियै बोर्ड माथै दौड़ी चालै रै।।

आड़ा-टेढ़ा चित्र बणता फेर बणती बात,
देख-देख कर बोर्ड माथै वां सू करता बात,
वे तो धीरे-धीरे नाचै रै।
हरियै-हरियै बोर्ड माथै दौड़ी चालै रै।।

अध्यापक, 270, ग्रीन पार्क, बैनाड़ रोड, झोटवाड़ा, जयपुर-302040 **मो: 9929474602**

www.rajsevak.com

देस बिराना

❒ डॉ. मदन गोपाल लढ़ा

'ओ मकान बिकाऊ है' बलराम जी आपरै घर रै बारलै पासै ओ पोस्टर चेप दियो। पोस्टर में बां रो नांव अर मोबाइल नम्बर भळै मांड्योड़ा हा।

बियां ओ काम बलरामजी सारू सोरो कोनी हो। भींत माथै पोस्टर चेपतां बां रा हाथ कांपै हा अर जीव कळपै हो। बिकवाळी काढतां ई जे अै हाल है तो घर बिक्यां कांई हुवैला? बां सूं ओ घर कींकर छूटैला। बां इण घर नैं बेचण री काठी धार लीवी, आ बात साव साची ही। पक्कायत ई बां रै काळजै ऊंडी चोट लागी ही नींतर तो बै इण कॉलोनी नैं सुरग सूं ई सवाई बतावता।

बियां आ बात जाबक कूड़ी ई कोनी ही। सुरग तो कुण देख्यो पण इण सहर में उणरी होड़ करण वाळी कॉलोनी बीजी कोनी ही। ठौड़ देख लेवो चावै घरां री बसावट, सफाई देख लेवो चावै संपत, हरेक दीठ सूं आ कॉलोनी सै सूं सिरै ही। अठै नींतो जात-पात रो रोळो, नीं धरम रो कोई भेद। सवा सौ नैड़ा घरां में बीसूं जात रा लोग रैवता। होळी, दियाळी, ईद, गुरु परब सै हरख-उमाव सूं मनावता। नौरता में नौ दिन डांडिया चालता तो लोहड़ी री मस्ती ई जोवण जोग ही। रहमान मिस्त्री रै घरै जद ईद री सेवइयां बणती तो खावण सारू सगळा ढूकता। पंदरै अगस्त अर छब्बीस जनवरी नैं कॉलोनी रै अैन बिचाळै पार्क में जद झण्डो फिराइजतो तद टाबरां सूं लेय'र बडेरां रै मन में देसभगति रा भाव हिलोरा लेवण लाग जावता।

अै बातां फगत जबानी कोनी रैयी, मोबाइल-अखबारां तांई में गाइजगी। जमीन रा दलालां इण कॉलोनी रो इत्तो बिड़द बखाण कर्‌यो कै सहर री बीजी ठौड़ सूं अठै दाम दूणा हुयग्या। अैड़ी जगै छोड़'र कुण जावणो चावै, सो बिकवाळ ई कोनी रैया। बलराम जी निवेश री मनगत सूं प्लाट लियो, पण अठै री तरक्की देख'र सात बरस पैलां आपरो रैवास बणा लियो। बियां बां रो पुश्तैनी घर परकोटै रै भीतर हो जको अबै किरायै चढायेड़ो है। परकोटै सूं बारै आवण रो आपरो फैसलो इण सूं पैलां कदेई बां नैं गळत कोनी लाग्यो। लागतो ई कींकर, अठै सगळा रैवासियां सागै हेत-अपणायत रो समंध जको जुड़ग्यो।

बियां तो बलरामजी स्वास्थ्य महकमै में मेल नर्स हा पण घणखरा लोग बां नै डाक्टरजी ई कैवता। कागदां में लिख्योड़ी जात खटीक री ठौड़ कद-कींकर डाक्टर जुड़ग्यो, खुद बां नैं ई ठाह कोनी पड़्यो। अबै ओळै-दोळै किणी रै कोई दुख-पाछ हुवै तो सै सूं पैलां बलराम जी डाक्टर नैं ई बुलाइजै। बां री सल्ला मुजब ई इलाज री पैथी, अस्पताळ अर डाक्टर रो चुनाव करीजै। कॉलोनी में कोई बहू-बेटी पूरै दिनां हुवै तो जापो करावण रो जिम्मो बलरामजी रो। किणी बूढै-बडैरै री आंख्यां री जोति कमती पड़ जावै तो लैंस घलावण सारू बलरामजी ई चेतै आवै। कोई मोट्यार का लुगाई मोटापा सूं तंग आय जावै तो डाइट चार्ट बणावण सारू बो ई सागी नांव। बां रो घर आखती-पाखती रैवणियां लोगां सारू अैड़ो घरू क्लिनिक हो जिण री नींतो फीस ही अर नीं कोई बगत। बात अठै तांई ई कोनी निवड़ै। जे किणी रै भाई-बेली नैं अस्पताळ में इमरजेंसी में खून री दरकार पड़ जावती तो ब्लड बैंक में बलरामजी रै फोन सूं ई कांटो कढतो। कॉलोनी सूं जे कोई सरकारू अस्पताळ में भरती हुवतो तो उणरै घर सूं टिफण लावण ले जावण रो काम ई बलरामजी नैं ओढाइजतो अर बै चाव सूं करता। खड़ाखड़ी जे किणी नैं दवाई-दाखळ सारू रिपिया चाइजता तो बलरामजी नैं बतळाइजता। बलरामजी अैड़ा दिलदार कै गूंजो खाली करण रै सागै सामलै रै हाथां आपरो अेटीअेम राखतां ई जेज नीं करता।

बियां ओ तसवीर रो अेक पहलू ई हो। जियां बलरामजी सगळा री अड़ी-बगत आडा आवता बियां ई लोग ई बांरै आदर-मान में पाछ नीं राखता। कॉलोनी में किणी रै घरै ब्याह हुवतो चावै जलम दिन, घर रो नांगल हुवतो चावै अजूणो, हरेक अेढै-मौकै डाक्टरजी सिगरी नूंतीजता। नौकरी री भाजान्हासी में बां सूं कदेई पूगीजतो तो कदेई कोनी, पण बां री जोड़ायत-टाबर अवस हाजरी मांडता।

बलरामजी रो पारकी पीड़ सारू भाजण रो सुभाव सगळा रै इसो चित्त चढ्यो कै कॉलोनी रै रैवासियां बां नैं अेकमत हुय'र सोसायटी रै सचिव पद रो जिम्मो सूंप दियो। बलरामजी घणा ई नट्या, नौकरी री व्यस्तता रो हवालो दियो, पण बां री चाली कोनी। बलरामजी सोसायटी री जिम्मेदारी घणी सुथराई सूं निभाई। आपरो काम खोटी कर्‌यो अर सोसायटी नैं संवारी। हरेक रै सुख-दुख में ऊभा रैया। बगत पड़्यां पगां जूती ई कोनी घाली। हरेक अदीतवार नैं सोसायटी में सफाई अभियान री सरूआत बां करी। दो अदीतवार तो बै दो-तीन जणां सागै साफ-सफाई में लाग्या रैया पण होळै-होळै लोगां री गिणत बधगी। अब तो रीत ई पड़गी। लगैटगै हरेक घर सूं अेक-दो जणां सफाई अभियान में सामल हुवता। इण खेचळ सूं कॉलोनी रै पार्क रा ई दिन फुरग्या। कित्ता बरसां सूं पार्क उजाड़ पड़्यो हो। बलरामजी पाणी रो कनैक्शन पाछो जुड़वायो अर चौगड़दै भींत री मरम्मत ई करवाई। सगळा री खप्पत सूं पार्क कॉलोनी री सै सूं चावी जगैं बणगी। चारूं कांनी गुलाब, गैंदा, चमेली, चांदनी अर सूरजमुखी री कतार। बिचाळै लीली दूब। गिलोय, आंवळा, अरजुन, तुळसी जैड़ी सेहत सारू फायदेमंद वनस्पति भळै लागेड़ी। लारलै बरस नगरपालिका री मदद सूं अठै भ्रमण-पथ ई बणग्यो जिणसूं दिनूगै-आथण लोगां री घुमाई ई सरू हुयगी। काम सगळा नैं व्हाळो लागै। बलरामजी रो काम तो हो ई जबरो। लोग साम्हीं अर पीठ पाछै बां नैं सरावता। बै सुण'र मुळक देवता। जस रै हरफां सूं हूंस तो बधै ई है।

बगत रो पहियो भंवतो-भंवतो बीस रै बाड़ै में बड़ग्यो। लोगां नैं उम्मीद ही कै बीसो इक्कीस हुवै चावै नीं हुवै उन्नीस तो पक्कायत ई कोनी हुवैला। पण मिनख री चींतेड़ी सदीव साच हुवण लाग जावै तो फोड़ा ई क्यांरा? हुवै तो हरि चींती ई। हरी कांई चींतै, कुण जाणै? जद पारकै देसां सूं महामारी रा विषाणु भारत री सींव में बड़'र धूमस मचावण लागग्या तद सगळा रै काळजै खड़को हुयो। अड़ंगो बध्यो तो इसो

www.rajsevak.com

बध्यो कै हाहाकार ई मचग्यो। टीवी–अखबार–सोशल मीडिया, सगळी ठौड़ अेक ई बात। राज रै हुकम सूं ताळाबंदी हुयगी अर देस जठै हो बठै ई थमग्यो। रेल–बस सै बंद। इण अबखै बगत में घर ई अेक आसरो हो। बाकी सगळा तो घरां में बड़'र आडा जड़ लिया पण मेडिकल स्टाफ, पुलिस अर सफाई कर्मी तो इण बीमारी सागै जुद्ध में हरावळ दस्तै में ई हा। बीमारां री गिणती लगोलग बधी तो अस्पताळां में बेड कमती पड़ग्या। इण हालात में डॉक्टर अर नर्सिंग स्टाफ रो काम बधग्यो। पैलां आठ घंटा री अेक पारी में ड्यूटी लागती पण अबै बारह–बारह घंटा अेकल काम करता। दिनूगै घर सूं जावता जका पाछा तारा ऊग्यां ई बावड़ता। केई बार तो डबल ड्यूटी लाग्यां रात ई अस्पताळ में बीतती। आ ड्यूटी सदां दांई कोनी ही। इण में पग–पग पर खतरो हो। माड़ी–सी चूक सूं चोखो–भलो आदमी संक्रमित हुय सकै हो। ध्यान राखतां–राखतां ई कद–कींकर चूक हुयगी, ठाह ई कोनी पड़्यो। दो दिन ताव आयां जद बां सावचेती बरतता थकां जांच करवाई तो बै कोविड पॉजिटिव निकळ्या। सोषल मीडिया रै जुग में आ बात थोड़ी–सी ताळ में चौगड़दै गाइजगी। बलरामजी नैं सांस दोरो आवै हो इण सारू डाक्टर री सल्ला सूं बां नैं वार्ड में भरती करवा दिया। बलरामजी री जोड़ायत अर बां री दोनूं बेटियां रा सेम्पल ई लिरीज्या। बां दोनूं बेटियां री रिपोर्ट नेगेटिव ही पण जोड़ायत माथै विषाणु आपरो असर कर दियो। जांच में पॉजिटिव आवणै रै बावजूद बां रै डील में ताव टाळ'र कोई बेसी तकलीफ कोनी ही। डॉक्टर बां नैं दवाइयां लिख दीवी अर घरै अेकायंतवास री छूट दे दीवी। इण बिचाळै कॉलोनी रै रैवासियां री मनगत पॉजिटिव सूं नेगेटिव हुवणो सै सूं मोटी त्रासदी ही। जकै बलरामजी सारू आखी कॉलोनी अेक परिवार दांई ही, अैड़ै माड़ै बगत में बीं कॉलोनी रै बासिंदा सारू बां रो घर–परिवार जाबक परायो हुयग्यो। बाप कारोना अस्पताळ में जिनगाणी री लड़ाई लड़ै हो अर मा घरै माचै माथै सूती ही। बलरामजी री तेरह अर दस साल री बेटियां साव अेकली पड़गी। कोई इमदाद करणियो कोनी। परकोटै में तो बियां ई हालत बदतर ही सो किणी रिश्तेदार री मदद मिलण री आस ई बिरथा ही। जकां नैं आपरो स्सो कीं मान्यो बां ई मूंडो फेर लियो। घरै दूध–रासन रो तोड़ो हुयग्यो। सै सूं बेसी दरकार ही सायरै री। हिम्मत बधावण री। बीमारी में जित्ती दवाई असर करै बीं सूं बेसी हेत–अपणायत रा दो बोल असर करै। छोरयां आखती–पाखती रैवणियां परिवारां सूं कोई चीज–बस्त मंगावणी चावी तो ई बां टाळा ले लिया। केई तो दूध–सबजी वाळा नैं ई बां रै घरै सामान देवण सूं बरजै हा। बगत सदां अेक जैड़ो कोनी रैवै। इण बिचाळै बलरामजी रै सांस री तकलीफ बधगी। बां नैं आईसीयू में लेय'र जावणो पड़्यो। दो दिन तो वैंटिलेटर माथै ई राख्या। अस्पताळ रो स्टाफ ई बां री संभाळ करी। दो दिनां तांई टाबरां री बलरामजी सूं बात ई कोनी हुय सकी। जोड़ायत अर बेटियां रो जीव उठग्यो। रोवता–कळपता पंदरै दिन टिप्या। हरेक रात रो झांझरको हुवै ई हुवै। माड़ो बगत जियां तियां बीतग्यो। छोरयां मा रै बतायां मुजब दोरो–सोरो घर रो धाको धिका दियो। छेकड़ बलराम जी सावळ हुय'र पाछा आयग्या अर बां री जोड़ायत ई महामारी सूं जीतगी।

घरै आयां बां नैं जद सगळी बात रो ठाह पड़्यो तद बां रो सत्त–सो निकळग्यो। बां नैं लाग्यो कै बै पाछा बीमार पड़ग्या। बो गहणो कांई काम रो जको कान फाड़ै। जठै आदमी नै आदमी नीं समझीजै, बठै रैवण में कांई सार!

प्रधानाचार्य
144, लढ़ा निवास, महाजन, बीकानेर,
(राज.)–334604
मो: 9982502969

एकादश दूहा कोरोना रा

❒ नरेश व्यास

भांत भांत रा लखण है इण रा, पण सगळां री जांचा अेक।
नेगेटिव स्यूं मिलसी राहत, पॉजिटिव तो कदै नीं नेक।।

मुख नास्यां पर चढ़िया मासक, होवै कई सवाल।
मिनख हुयो बैरी मिनखां रो, आछो मच्यो बवाल।।

सरदी, धांसी, नाक-झरणियो, है खतरै की बात।
ऐड़ां स्यूं राखो थे दूरी, जद टळ जासी घात।।

पल-पल मायां 'कर' धोवण री, आदत थे घालो भरतार।
जे थे चूक करी इण मायां, क्रूर हुवेलो वो करतार।।

मिनख भांगिया नियम कायदा, कोरोना रो हुयो प्रभाव।
आछा-आछा टंग्या आज तो, घर-घर लाग्या ऊंडा घाव।।

मौतां तो हर ओर हुई है, आरत च्यारूं दिस अणमाप।
समसांणां में सजी चितावां, तो ई इणरै नीं है धाप।।

गाँव, सै'र अर राज्य, देस में, लोकडाउन रो होयो राज।
घर-घर में घमसांण मच्योड़ो, आटो खूट्यो सगळै आज।।

बहन हुई इण कोरोना रै, 'ब्लैक-फंगस' है जिणरो नाम।
आ घातीली घात करै है, अजब अनोखो इणरो काम।।

प्रांण-पूंज री कमी हुयोड़ी, हर दिस में माड़ा हालात।
मिरतू सगळै मुखर हुयोड़ी, संकट मांया मानव-जात।।

ओ जीवण अनमोल अंणूतो, लगवा लो थे सगळा टीको।
समझो थे उणने सुख-सुपनो, नीं तो जीवण होसी फीको।।

मानव-सेवा धारो मन में, जांणै कद टूटै आ डोर।
कोरोना ने कूट काढ दो, नीं तो उण रो ओर न छोर।।

वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी), राजकीय माध्यमिक विद्यालय लड़की, पीथा का खेड़ा,
रायपुर, भीलवाड़ा–311803 **मो: 08764018111**

www.rajsevak.com

करम धरम

❒ डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत

ताराचन्द मटका बणा रह्यो छौ। बी को बाप धन्नाराम बी नै कह रह्यो छो 'बेटा आदमी को करम बड़ो छै। आपां करम तो करां छां पण करम की साथ धरम भी जुड़ियोड़ौ छै।' ताराचन्द कै सुवारै पहली धूजणी छूट री छी। वो आपका बाप नै पूछ रह्यो छो 'ई भर स्याळा में आपां नै बासण बणाबो जरूरी थोड़ी ही छै। पोष का महनां में हाथ ठर रह्या छै। थांकै हाथां में बुवायां फाट री छै। बा म कदै-कदै तो खून भी आ जाय छै, मनै प्याली में मोम अर सरस्यूँ का तेल नै गरम कर'र सब सूं पहली थांकी फाट्योड़ी बुवायां मे लगाणो पड़ै छै।'

मटका बणाबा की काळी अर चीकटी माटी ने चून की जियां औसण अर मुलायम बणाणी पड़ै छै, ज्यो बरफ की जियां ठण्डी रहवै छै। फैर भाटा का गोळ चाक माळै पींडां नै मैल अर मटका की सकल देणी पडै छै। चाक कनै पाणी को चकूंडौ रहवै छै, जी मै बार-बार पाणी गरम कर'र घालणो पडै छै। बीमै मटका का कन्दारा नै गोळाई देबा नै कपड़ा की लीर को बणायोड़ो पटियो रह्वै छै। मटको बण्या पाछै चाक माळै सूं नीचै उतारबा सूं पहली डोरा सूं काटणो पडै छै। बो डोरो भी चकुण्डा म ही रह्वै छै। ताराचन्द कह रह्यौ छो पिताजी थानै ई भाटा का बण्योड़ा भारी भरकम चाक नै चकलाठी सै जोर लगार फैरणो पड़ै छै। ई चाक नै फैरतां-फैरतां थांकै थकान हो जाय छै। रात नै मनै थांका खुवां कै, हाथां के, पगां की पीण्डल्या कै सरस्यूं का तेल की रोजीना मालिस करणी पडै छै। थै भी थक जावो छो। सारा घर का भी सरदी में परेश्यान हो जाय छै, थै मानो कौने। पोष अर माघ का महीनां में रोजीनां मटका बणवावो छो। मटका भी कम संख्या में बणै छे। छोटो से दिन होवै छै। सूरज भी दिया की जियां उजाळो करै छै। तावड़ो भी हळको ही रह्वै छै। जल्दी ही आंत जाय छै। ये बातां ताराचन्द आपका बाप नै खै ही रह्यो छो, अतरी देर में ताराचन्द की मा धापां देवी बोली- 'बेटा तू हाल तांणी ना समझ छै, असली बात तो तू थारा बाप नै पूछ। कांई कारण छै?'

धन्नाराम लकड़ी का थापां सूं मटका नै घड़तो जा रह्यो छो। फूट्योड़ौ घड़ी की नाळी कै बोरी को टाट बाँध'र कुण्डी बणा मैल्यो छो। दहणां हाथ सैं लकड़ी थापा सूं घड़ा कै चोट मार रह्यो छो। बायाँ हाथ सूं घड़ा कै मायनै भाटा सै बण्योड़ी पीण्डी सै सहारो दे रह्यो छो। राख लपेट र जल्दी-जल्दी थप-थप गीला घड़ा नै घड़ रह्यो छो। मा-बेटा की बातां ने सुण अर धन्नाराम खैबा लाग्यो- 'बेटा आपां प्रजापत छां। आपां नै ब्रह्मा जी को वरदान मिल्योड़ो छै। आपां दक्ष प्रजापति की संतान छाँ। जनता की सेवा करबो आपणो फरज छै। यो ही आपणो करम छै, यो ही आपणो धरम छै। ई करम नै आपां पूरी ईमानदारी सूं करां, जी का फळ ही आपा नै मिलै छै। स्याळा में बण्योड़ा घड़ां में ही गरम्यां में बरफ की जियां ठण्डो पाणी रह्वै छै।

ज्यो घड़ा आपां पोष माघ का महीनां में बणा रह्या छां यां में ही ठण्डो पाणी रहवै छै। या मटका को गरम्या में ज्यो भी पाणी पीवै लो, बीकी आत्मा तरपत हो जायली अर मूंडां सूं अपणा आप ही आशीष मिलैली बी आशीष सैं ही आपणौ कल्याण होवै लो। आपां सियाळा में घड़ा, मटका, मटकी, बासण ने बणावां तो आपणो कांई महत्व रह्यो। बेटा या समझ की बात छै। दुख बिना सुख कौने। रुजगार चाहै कोई भी हो सब मेहनत मांगे छै। आदमी समझदारी सैं काम करै गुरु का ज्ञान सूं ही शिष्य को बेड़ो पार होवै छै। आपां ई गीली मांटी सूं कोई भी बर्तन को आकार दे सकां छाँ। आपां ही आपणां करमां सै आपका जीवन नै कोड़ी नै भी मोड़ सकां। छाँ आपणा जीवन म अयान का करम करां ज्यां सैं आपां नै लोग याद करै।

हुन्दाळा में ज्यो घड़ा बणावां छा बां म गरम पाणी रहवै छै। आपां लोग बागां नै सियाळा में बणयोड़ा मटका नै ऊनाळै में देवां छाँ, ज्यां में ठण्डो पाणी रह्वै छै। अर ऊनाळै में बणयौड़ा मटका नै स्याळा में पाणी भरबा नै देवां छां ज्यां में गरम पाणी रहवै छै। गरीब लोग स्याळा में तांबा-पीतल का बर्तन पाणी भरबा नै कोडै ल्यावै। वे माटी का मटका में ही पाणी भरै छै।

बेटा! हर रुजगार में सेवा भाव लुक्योड़ौ रह्वै छै। ई धरती माळै हर प्राणी नै करम करणो पड़ै छै। बीकी साथ धरम भी जोड़ै दे तो सोना में सुहागो जो जाय छै।' ताराचन्द आपका बाप की बातां सुणतो जा रह्यो छो अर गीली माटी नै आपका हाथां से ओसण तो जा रह्यो छो। बाप की बातां सुणतो-सुणतो चकित होगो। हाथां में अपणा आप ही गरमी आयगी। बो कह रह्यो छो बापू अब म्हैं समझगो आदमी नै करम करतां हुयां आपको धरम भी याद राखणौ चायजै। अब स्याळा मे दुख पावण को कारण समझगो। आपां करम की साथ धरम भी निभा रह्यां छाँ, जियां एक शिक्षक को करम छै बच्चां नै अक्षर ज्ञान देवो अर बीकी साथ बच्चां नै चोखा संस्कार देवो बीकी भावनां की साथ जुड़ जावौ यो शिक्षक को धरम भी छै। हर रुजगार में करम की साथ धरम जुड़योड़ौ रवै छै।

प्रधानाचार्य
श्री सर्वेश्वर भवन, नाँगल जैसा बोहरा, झोटवाड़ा,
जयपुर (राज.)-302012
मो: 8946838583

बेली रौ रूप

❒ निशान्त

झड़ गयौ चौको
डाई करणी छोड़ दी
केस
बिरंगा हुग्या
कोनाळो वंग
खूट गयौ
आत्मबिस्वास
बीं ढाळै म्हैं
होयौ हूं कीं
पण म्हैं
बेली बदळणौ चावूं
जे मिल ज्यावै कोई

प्राध्यापक (सेवानिवृत्त)
वार्ड-10, निकट वन विभाग,
पीलीबंगा, हनुमानगढ़ (राज.)-335803
मो: 8104473197

www.rajsevak.com

मारवी

❒ शंभूदान बारहठ

धोरा धरती री सुरंगी संस्कृति में अपणायत री ओळखांण है। जदै ई तो अठै रौ सूरापो अर प्रति-दोन्यूं नै अमलां री वेळा रंग दिरीजै। मूमल, बालोचण, ढोलामारू रेशमा शेरा अर सोढ़ो खींवरो जैड़ा लोक गीतां में हेत प्रीत री पवित्र जोत है। हेत प्रीत में नीं तो प्रान्त रौ परायो पणो अर नीं देश परदेस री सींवा 'जसमा ओढण ही तो मरवण राजकंवरी' जलाल खान हौ तो नांगोदर सुमरो। न्यारा न्यारा डीलां सूं हेत प्रीत री आतमा कद अळघी रयी। उणरी तो एक ई लवना-हेतप्रीत री रळियावणी चावना।

सोरठ तो सोढ़ा तणी सिंघ रा सोढा अमर कोट राणा सिंघई बण्या रह्या। अखीतण अमराण गढ सोढाण। उणी अमराण री अमराई में बाबा रामदेव री बहन नेतळ रौ सासरो जग चावौ।

अमराणो अमरावती धरा सुरंगी घाट।
राजैसोढा राजवी, पह परमारां पाट।।

टेम री पालटी खायां अमरकोट रावन राज में उमरकोट बणग्यौ। अर सुमरो वंश रा बादशाहां नै आपरी राजधानी थरपी। भारत पाक सीमाड़ै ने जोड़ती रेलगाड़ी थार एक्सप्रेस रौ पाकिस्तानी सींव में जीरो पोइन्ट टेसण रौ नाम राखीजियौ मारवी।

मारवी थाट धरा री अजर अमर प्रेमगाथा। या बात उमरकोट रा बादशाह सुमरो 25वें रै टेम री। घाट अर भाटी पे दोन्यूं ठौड़ उण दिनां रौ औ ई धारौ। धीवड़ जल में तो कसूंबल पाय सीख देय देवणी। पुत्र मोह में बंध्या इण धरती रा संस्कार इण धीवड़ रै ई आडा आया। हमीर रै पैलां तो उमर जलम्यो अर पछै जलमी कन्या नै राज-दाई नै सूंप सदा सदा नेगमनींद सै सूंप देवणी। पण राज-दाई भी तो एक मां ही हेज री सीर जाग्यां उण बालकी जोड़ा रै तो घरै जाणै लिछमी वासौ लियौ। आपरां मऊ लेय वो लाखो चरवाहौ आजरा नगर पार कर'र कनै मालवा जाय बसग्यौ जिकौ पछै मलीर नाम सूं जाणीज्यो। विधाता रा प्रसाद उण बालकां नै नाम दियौ मारवी टेम बीत्यां मारवी तिल बधती। जव बधती गयी। दिनां परवाण कुदरत उण नै रूप ई अयाम दियौ।

केहरि कटि गज गामिनी नैन मिरग सम होत।
कोकिल कण्ठी कुच भुरज इन्द्रपुरी सी जोत।।

समाजोग सूं आपरी साईणी साथणियां सागै रमतां उण मारग सूं नीसरत बटाऊ उण रूप री डळी मारवी नै देखी तो इचरज में पड़ग्यौ। गवाळियै रै घरै अर इसी रुपाळी राजकन्या! जरूर कोई भेद है।

मनां ग्यानां उण बटाऊ रूपाळी मारवी री माता तांई पूग करी। सेवट मारवी री मां रै मूड़ै आ बात नीसर ई गयी के उणरी पालगत धीवड़ उमर कोट रै सुमरो वंश री। हमीर रा बेटा उमर री या सगी बहन। ओ लै ऊभी मारवी इण बात नैं सुणली। अरे! उमरकोट रौ कुंवर उमर उण रौ भाई! वा यौ राज बातां बातां में आपरी सहेलियां नै घणे गुमेज सूं दरसाय देवती। अठी लाखै आपरी मऊ अर मेवड़ री रूखाळी सारू एक ग्वाळियौ रख लियौ। नाम हो उण रौ फोगाण रूपाळी अर ओपतै कदकाठी रौ मनमोवणौ मोट्यार। साईनी उमर चढ़ण लाग्यौ। जाणे फोग मारवी सारू अर मारवी फोग सारू विधना घड़ी हुवै। पण उण जात बिरादरी री पग बंधणी में फोग नीची जांत में गिणीजण सूं हंसां रौ औ जोड़ो हेत रै मान सरोवर नै पार नीं कर सक्यौ।

सेवट बेटी परायौ धन हुवै। लाखै उण रौ रिश्तो खेत नाम रा एक मोट्यार सूं करण री विचारली। ठा पड़्यां फोग नै आ बात घणी

शिक्षा

❒ रामस्वरूप रैगर

शिक्षा छै अमृत की बूंटी
ई के बिना लागे दूनिया झूठी
शिक्षा से जीवन में फैले उजियारो
मेट दे जीवन को सारो अँधियारो।
घर का टाबर इसै हो जावे समझदार
डूबे कौनी नैया घर की होवे बेड़ा पार
शिक्षा की छै माया न्यारी
सैर करा दे दुनियाँ सारी
चाहे रोटी कम खा लि ज्यो भाई
टाबरां ने शिक्षा दिलवाज्यो सांच्याई
बेटा बेटी में फर्क थे कदे मत करज्यो
दोन्या की शिक्षा में बराबर ध्यान थे धरज्यो

वरिष्ठ अध्यापक, रा.उ.मा.विद्यालय ड्योढ़ी,
सांभरलेक, जयपुर **मो. 9928139161**

www.rajsevak.com

बड़गड़ा! बड़गड़ा!!

❒ आशुतोष

सूरा पूरां री धरती चित्तौड़। त्याग अर बलिदान री अणगिण कहाणियां उकेरती भोम चित्तौड़। मायड़ भोम री आजादी री ओळख बणायी राखण री आण सारू जूझारां माथा देय दिया तो वीर नारियाँ जौहर री जोत ने सदा सवायी राखी। सिर साटै जे धर रहे तो भी सस्ती जाण-इणी लवना री पंगत फतहपुर सीकर कनै खानवा री लड़ाई में आपरौ सूरापौ जतावता महाराणा सांगा। लड़तां भिड़तां महाराणा रौ बज्जर शरीर दुसमी रा वार झेल झेल नै अस्सी घाव लेय अबे थाकळ पड़ग्यौ हो। मन के हारे हार है मन के जीते जीत। विष तीरां सूं बाथह पड़्या सांगा रा शरीर में उण जूझार रौ मन अजे ई मजबूत हौ। अजमेर परगना में गांव कालपी रा शिविर में चेतौ वापरतां पाण सिंघ हुंकार ज्यूं पूछ ई लियौ-म्हैं कठै? म्हारौ घोड़ो कठै?

रिसता घावां रै पाण ई सांगा रै काळै घोड़ा री पोड़ां सुणीजी-बड़गड़ा बड़गड़ा। विष रौ असर महाराणा सांगा रै चित्तौड़ जीतण री अधूरी आस लाचारगी रौ पछतावौ बण आंख्यां सूं छळक पड़्यौ। खानवा रौ औ संग्राम महाराणा भाग री अभागी भूल री धूल ज्यूं अंतस में ऊँची चढ़गी। विचार रा अणगिण गोट महाराणा री चेतना में विचरण लाग्या। बापड़ी उण चारणी ठीक ई कह्यौ के मेवाड़ रौ राजमुकुट सांगा नै सूंपणौ सिरै रहसी पण ईसकाळा उतावळा भायां रै आ बात हिये नीं ऊतरी पग में भाई पाटवी हा सो वां रै विपरीत वार तो कीकर करलै। खानवा रै उण घमसाण में सांगा घणा घाव खाया पाण ई भाइपै नै बाथल कियां पटक दै। वां रा अंतस में तो चित्तौड़ री आजादी रा उछाळा त्राटक मचावै हा! बाज पराया पाणि पहि न पंछिन्ह ना मारि अर सांगा आपरौ मन काठौ कर सूना कानां में एक ई घोर-दौड़तां घोड़ां री टापां बड़गड़ां बड़गड़ां!!

सिंघणी रा जाया महाराणा सांगा पसवाड़ौ फेरता कराहता फेरूं विचारणा में पड़ग्या। स्वाभिमान अर सामधरम री सेवना में वीर प्रसूता चित्तौड़ री नारियां आपरा आभूषण देय दिया तो गांव गुवाड़ रा वासियां केसरिया फौज री पंगत में जाय ऊभा होयग्या। आक्रांता नै मायड़ भोम सूं मार भगावण आं देश रूखाळां री पंगत देशभक्ति री इदक दीठ बणगी। अचेत महाराणा फेरूं झिझक्या-अरे! अरे! घोड़ां री पोड़ां सुणीजै-बड़गड़ा! बड़गड़ा!! ल्यावै म्हारा सस्तर पाती, म्हैं भी करसूं देस रूखाळी-जय एकलिंग जय चित्तौड़!! जय मेवाड़!!!

अर पाटा पीड़ करता सामधरमी सेवकां महाराणा ने धीरप बंधावतां पडूतर दियौ- नेठाव महाराणा! ना कुछ नेहछौ करापौ। आपरा घाव अजे ऊंडा है।

महाराणा री आंख्यां बोल पड़ी- आ नैहछै री वेळा है? म्हारी मायड़ भोम री मरजाद री इण घड़ी में तो जीवण के मरण रौ जस कमावण री वेळा है। आ वेळा शांत री नहीं क्रांति री है-बजावौ त्राटक। करावौ घमसाण आजादी री हेतालू म्हारी हरावळ रै घोड़ां री टापां म्हनै सुभट सुणीजै बड़गड़ां! बड़गड़ां!! अर घायल महाराज फेरू अचेत हुयग्या।

खानवा रै इण संग्राम में आक्रान्ता बाबर यौ खण लिख बतावै के चित्तौड़ जीतै जितरै पांच वक्त नमाजी रैवेला। अर शराब कवाब कबूल नीं करैला। उण रौ इष्ट उण री आस्था।

अचेता पौढ़्या महाराणा रा होठ फेरूं फुरकतां पाण सेवकां अरज करी-महाराणा! पाणी? पण लवना धणी सापुरुष बोल्यौ- पाणी नहीं, म्हनै बैरी रो लोही लाय दो। महाबली पृथ्वीराज री आंख्यां रै रगत रौ तो ब्याज म्हैं इब्राहिम लोदी सूं लड़ाई रै थाकैळे रै उपरांत ई बाबर सूं बदलौ लेय वसूलण री तेवड़ ली ही। पण भाग्य नै वीरां री पिछाण कोनी। म्हारौ तन हार्‌यो पण मन नहीं। म्हारा घोड़ा तो खानवा रा त्राटक में अजे ई दौड़ता सुणीजै रे-बड़गड़ां! बड़गड़ां!! अर महाराणा री फेरूं आंख्यां मींचीजगी।

चित्तौड़ इतिहास री अजोगती भूल फेरूं अचेत महाराणा रै अंतस में शूल ज्यूं चुभगी। पसवाड़ौ फेरतां बोलण लाग्या- मेवाड़ रा सामन्तां! सुभट सुणल्यौ। म्हनै क्रियावर कर्‌यौ सारंग देव। म्हारा पर पृथ्वीराज अर जयमाल रै वार नै सामधरमी सारंगदेव आपरै ऊपर झेल इदकी रीत निभायी। उणरै सामधरम री कूंत कोई कींकर कर सकै। अणगिण मूंघां मोत्यां सूं भी घणी अणमोल। रंग थारा सामधरम नै सारंग।

घायल बेखाके सिंघ सांगा नै चेतो बावड़ता पाछी वाहीज लवना-महाराणा फतहसिंह रा घोड़ा भी थाकग्या दीसै पण वां पर असवार सूरा पूरा अजै काठी सूं काठा चिपक्योड़ा वीर धरा रूखाळी में कर्मवीर बण्या दौड़ायां जावै-बड़गड़ां! बड़गड़ां!!

अर वीर सांगा रै जीवण री इणी छेहली छांव में उण स्वाभिमानी सामधरमी सूर सपूत री आंख्यां पथरीजगी-सुरग री सोय करती उणरी वीरात्मा रौ घोड़ौ दड़ाछंट दौड़्यौ जाय रह्यौ हौ-बड़गड़ां! बड़गड़ां!! सेल घमोड़ा किम सह्या किम सहिया गजदन्त। अर जावसी देह सोभा न जावसी, वास रह जावसी फूल वाली।।

भाषा अध्यापक
सनराइज एज्युकेशन एकेडमी, समदड़ी (राज.)
मो: 9414244195

नीत

❒ रामनारायण सैनी

बड़ा बूढ़ा कैवै छ
दशा बिगड़्योड़ी बावड़ ज्यावै
पण नीत बिगड़्योड़ी
कौने बावड़ै
चाहे मांग'र खाल्यौ
पण नीत न बिगाड़ै
जिकी नीत बिगड़ जाय
जिकी जिन्दगी बिगड़ जाय छै
जिन्दगी असफल हो जाय छै
नीत बिगड़्या सूं
सारा काम बिगड़ जाय छै
जिकौ आपकी नीत नै
ठीकाणे रांखै छै
बिकी समाज म इज्जत रहवै छै
मनख समाज को हीरो छै
पण नीत ठीकानै राख्यां छै
दुनियां में सब सूं कामयाब
सारां सूं न्यारो दीखै छै
नीत ठीकाणै रांख्यां सूं
भगवान घणौ सुख दे
जीवन में घणो भलो करावे
पण नीत ठीकाणै रांख्यां सूं ही
सब कुछ छै।
मिनखा-जूण सफल छै।

व्याख्याता (हिन्दी)
रा.उ.मा. विद्यालय श्रीमाधोपुर,
सीकर (राज.)
मो: 8949805882

www.rajsevak.com

जूत्याँ रो झोड़

❐ महेन्द्र सैनी 'कारी'

सन् 1974 ई. जोहड़ै मांय थरप्योड़ी गुसायांळी ढाणी री प्राइमरी इस्कूल। उण वगत म्हैं अठै चौथी क्लास रो भणेसरी। म्हैं कक्षा मं सैऊं लारै बैठूं। क्यूंक म्हैं जऊ रा चून री रोट्यां खावूं जिणां सूं म्हारै पाद भोत आवै। आखै दिन ठुस-ठुस करूं। छोरा पाद फुस करै। स्सऽऽऽ अर थूऽऽ करती छोर्‌या नाक भींचै। बांनै कोजी नै कुवी-कुवी बासं आवै अर बै खारी-खोरी सुणावै। मैं घणूं लाजीणो हुज्यावूं।

म्हारी क्लास मांय समेतरा अर सरवणी सेती सोळा पढ़ाळू। बण में धनेतर्‌यांळा टाबर तो जूता-चप्पल पैरता। काड्यो पाणी पीवणियां रा टाबर फाटी-टूटी लीतर्‌यां पगां में पजायां झेलता। पण म्हारे सरीखा सरजीवण टाबर उभाणै पगां ई बमडी मारता। क्लासमेट समेतरा म्हारी घणी हेताळु नै धापता घर री बेटी ही। बा म्हारी पीड़ पिछाणती। दुपैर रा खावण में म्हारै तोड़ी कदै पुआ पापड़ी, कदै परांठा रै साथै अथाणा मिरच, कणां सीरो सूसवा अर कणी खीर चूरमो ई लांवती। म्हारै धोरै आय नै कैंवती 'लै बीरा थोड़ो थूं ई खालै। म्हूं चिणेक बेसी लियाई। जबरानै म्हारै हाथी झलाय देवती।

जुलाई रो म्हीणो। तावड़ा री लाय तातेड़ तपै। बळबळती धूप भूमरड़ा सूं भैभीत हुंवतो म्हूं पोटा मांय पग रोपूं अर कणाई पगथळी रै बूई रा फूंदा लपेटूं। पसीना में हळाबोळ होय नै गंडकड़ै री ज्यूं लखर लखर करतो अर रूंखड़ा री छियां ढोवतो कुम्हळयोड़ौ ने घरां पूगतो। माँ मन्नै बुचकारती, आप री लूगड़ी सूं पसेव पूंछतां- 'बासदी लागो ई भणाई रै, छोरा रो मूण्डो लापसी हुग्यो। करणी जावै। घण कंई करै?

घाटा सूं गोदम करतां नै ओठाळ्यां सरकतां थकां गिरस्ती री चाकी चक्करघिनी व्हीयोड़ी चूंचाट करै। बापू बिचापड़ो घणां ताफड़ा तोड़ै। ल्यावै बीस खरचो पच्चीस। पग्गी लागै कोनी। पेट ई निठ भरै। पछै खूंसड़ी कठऊं बापरै?

म्हारी माँ गाय री संभाळ सारू खेत गियोड़ी ही। अेकर बावड़ती बेळां पाड़ौसी बाणियाळा खेत मांय अकूरड़ी सूं चपलां रा दोय तलवा चुग लाई अर बांरा कोचर मांय फीतां री जग्यां लीर पोय नै पगां में पजणवाळा लीतर बणा न्हाक्या। दिनुगै पोसाह कानी पांवड़ा धरतां लाय नै बोली- 'लै रै छोरा अै पगां में पजालै अुंवार हावै थी, सो म्हैं अैड़ी सूं चोटी ताणी धूळ रा धोबा उछाळतो पोसाळ पूगियो।

आज शनिवार थो। बाळसभा रै पाछावटी माटसा केवता 'गुड बिना किसी चौथ? म्हन्दर थारा गीत बिना बाळसभा फीकी लागै।' कैवता पाण म्है उभो होय नै म्हारो गीत उगीर्‌यो- 'हीण्डो तो घलायद्‌यो गुरुसा हरिये बाग में साऽऽऽ।' बा मुळकती म्हारो मूंडो जोवै। म्हारी मधरी नै मीठी वाणी सूं बी रो संग-संग झणकारै। बी'रै मन मांय इमरत झरै। लाडू सा फूटै। ताळियां री वड़ातड़ रै साथै म्हैं म्हारी जग्यां जा बैठ्यो। बा बाळ भोळप रै मिजाज सूं बात रळकावती बोलै- 'भाई बाप री सूं गरी ढाळ सूं टपकै।

धेकड़ तीजै दिन ओजूं पोसाळ आविया। इस्कूल में आगूँच आय नै बा मुळकती म्हारी बाट जोवै। आज तो मूंडो कांई वीरो सगळो डील अेकण साथै हाँसण लागर्‌यो हो। कदै ई बा म्हारै नैड़े आव र गणित रो सवाल बूझै तो कदै आप रो रय्योड़ो उथळो मुं जुबानी सुणावै। कणां ई बा आप री मांडयोड़ी सुन्दर लेख म्हानै दिखावै तो कणां खिलकरिया बातां रो बतंगड़ बणावै। हँसी मसखरी सागै समै रो भूणियो सरकतो गियो। जाँटी री छियां साँपड़गी। सगळा भणेसर्‌यां आप रा मूंडा मार नै घण्टी री टन-टन सुणबा तांई तळछू-मळछू करता तड़ाछ खावै हा।

अचाणचक बा म्हारै नेड़ै आवै। म्हारी खातर अेक नूंवी नकोर जूत्यां री जोड़ी रो बण्डह लाय नै म्हारी बोरी रै खाया ऊँ सियोड़ै चावड़ धान थैला मांय ठूंसै। 'भाई बा री सौं, म्हारी मां थारै ताणी खिनाई है। आज तूँ आंनै पैर नै घर्‌यां जाई। 'कैवती बा आप रै घरां कानी टुरगी।

म्हारै मनड़ै रो मोरियो नो-नो ताळ नाचै। मैं बारै आय'नै बेगोसीक जूत्यां थैहा मं सूं काढ'र पैर लीवी। सांच्याणी बै म्हारा पगां मांय सावळ जचगी। म्हारा पग बेजां सातरा लागै। इब म्हारी तो चाल-ढाळ बदळगी। म्हैं थैला नै कांख में बा'र म्हारी जीवणी टांग सूं हवा में किक मारी अर दोन्यूं मुठ्यां भींच'र कल्पना री मोटर साइकिल रो अेक्सी लेटर सूं रेस दीनी अर मूंडा सूं दर्रऽऽ री आवाज सागै तनड़ा री फटफटी नै ढाणी कानी दौड़ा दी। बीजा पढोकड़ां नै भाज'र नावड़ लिया।

स्सै म्हारां पगां कानी देख नै धोळा धक हुग्या। केई रो म्हारा मनमेळू मोद कर्‌यो। ईसको करणियां रो बळ र भूंगड़ो हुग्यो। जाबक बलोकड़ां रै बेजां बळत लागगी। इब बण की जुबान रा तूणीर मांय न ऊं तीखा न खारा सबदां रा तीर चालण लाग्या। सीतियो सेडो सारतो म्हानै मंगतो न नादीदो बतावै। सरवणियो आप रो थोबड़ो सुजा लियो। धूड़ो तो म्हारै मांय नै धूळ रो धाबो बगावै। धक्को देय'र म्हानै गुड़ा दियो। म्हारो मूण्डो ताती माटी में जा टिक्यो। सदियो ई म्हारी साबत थूक फजीती कीनी। भोमलो बेजां भचबचाट करै। पैलाद्‌यो ई पै पै पै पै करतो फिरै। मोवनियो म्हानै चरपरी बातां रा चूंटक्या ऊं चोखी तर्‌यां चिड़ावै। लालूड़ो लोई घटो लाल हुयो पण करै कंई? किसोरियो ई घणो किरकराट करतो खासी कसर काठी। स्यो करण्यो म्हानै सावचेत कर नै सल्ला दवंता बोल्या-अै नूंवी जूत्यां बी जांटाळी छोरी नै पूठी अपड़ा दीजै नींतर थारो जीणूं दोरो कर देस्यां।

कुमलायोड़ो न गाफळ हुयोड़ो म्हैं घरां घुस्यो। म्हारी मां नै फळसै ऊभी देख'र म्है डूसक्या भरतो जोर सूं बरळायो। मायड़ म्हारै मांथै री माटी आप री ओडणी सूं झड़कावै न पंपोलै। बोली 'क्यूं रोवै? मैं सुबकियां रै साथै साव सांची बता दी। मावड़ी उणां नै गाळयां रा सागीड़ मुआवणां रै अबार घरै जास्यूं न उणां रै बळता ठूँठ री धमकास्यूं। पूतकाट्या रो सत्यनास हुसी। म्हारो मूण्डो धोयो तो चिणेक जी सोरो हुयो। म्हैं ओ निरणै लीनो कठी नूंवी जूत्यां म्है कोनी पैरूं। ओठी अपड़ारा देस्यूं। म्हारा पग बळै तो बळै।' आज मैं बोलबालो पोसाळ स्सै सूं पैल्यां पूगियो अर नूंवी जूत्यां रो बण्डळ बी रै हाथां झलाय दीनो। बा कमरां मांय ऊभी म्हारो उतर्‌योड़ो मूंडो न होठां फेफड़ी देख'र माजरो जाणगी। अडवार लेवती बोली- 'कांई होयो? थारै नीं दाय आई? बता तो सरी। 'घराळा नाटग्या-म्हैं पडूतर देय नै बवाडग्यो।

बांस ई नीं रैसी तो बंसरी कियां बाजसी? आ सोचतो मैं रोलोरोपो करता न कूदड़का मारता बीजा भणे सरयो मै ले जा रलयो।

अध्यापक (सेवानिवृत) 'निर्मल निकेतन'
गांव-वीणा दास री ढाणी, डाकखानो-कारी,
पिन-333305 जिला-झुन्झुनूं
मो. 9462888404

www.rajsevak.com

जठै जोधा जलम्या नित, वठै बंसार री भूमि।
उणी भूमि रै माथै तो, जलमियौ जोध वो नामी।।

जलमियौ जोरकौ-जोधौ, दिसम्बर एक हो उण दिन।
हुयौ हो हेम हद राजी, दिवाकर नेक हो उण दिन।।

पढयौ रजपूत-शाला में, मिली साथ्यां री सद-संगत।
दिखायौ जोश दसवीं में, बंण्यौ फुटबॉल रौ पंडत।।

चढ्यौ जसवन्त-कॉलेजां, तंणीजी कीरती तिरती।
हुयौ गुणवास में हिय स्यूं, जोधपुर-फौज में भरती।।

मात सारू मिटूंला म्हैं, धरम वो धार हिय धड़क्यौ।
लियां आदेस सेना रौ, कुमाऊ-दळ में जा कड़क्यौ।।

गयौ अभियान-नागा में, कड़कियौ सिंघ ज्यूं करड़ौ।
पुरतगाल्यां ने जा पटक्या, छाळ भर घालियौ झुरड़ौ।।

जून-बासठ री ग्यारा में, बण्यौ मेजर वो मतवाळौ।
सिंघ री गिद्ध-आंख्यां में, दिख्यौ हो जोस-रौ जाळौ।।

हियै में हूंस ले ऊंची, चढ्यौ लद्दाख री भूमि।
हवा-बरफानी हू हरसित, उणां री चरण-रज चूमी।।

चुशुल री तंग-चोटी चढ़, संभाळ्यौ मोरचौ मेजर।
सवा सौ शूर हा साथै, हूंस ललकार री भर-भर।।

नवम्बर-अठरा हो उण दिन, हुयोड़ौ क्रुद्ध हेमाचळ।
हवावां-मौत-री हांसै, गुड़ै ज्यूं हाड खुद गळ-गळ।।

काळजा-गात कांपै हा, जमैलो आज जग पूरौ।
हुयां निःसंक ऊभौ हो, साल अड़तीस रौ सूरौ।।

भाग फाटण री त्यारी ही, दिवाकर आवतौ दीस्यौ।
उणी छुटपुट-अंधारै में, पड़ौसी-कोझियौ रीस्यौ।।

चमकता-पुंज झींणा सा, दिख्या हा ढाळ स्यूं ढळता।
याक-दळ साथै आ पूंच्या, चीनीया काळ स्यूं रळता।।

खबरच्यां भाज दी खबरां, हुवै हमलौ अठै दाता।
सबळ शैतान ने धिन-धिन, हुयौड़ा नैण दो राता।।

मगर मजबूर वो नाहर, साज गिणती रा हा साथै।
जांण और भेद जुगती स्यूं, मौत खुद आ चढ़ी माथै।।

रसद, हथियार नीं-जे'ड़ा, बन्दूकां भी नहीं छांनी।
दबावै दुष्ट दिल्ली ने, दियौ समचार सैनानी।।

मिल्यौ उत्तर उणां रौ जद, आपणां भाग नीं आछा।
चीन इक्कीस आपा स्यूं, कदम थूं राख ले पाछा।।

मिल्यौ समचार वो मोळौ, हुई ही आतमा आहत।
जग्यौ हो जोस जोधै रौ, काळजौ क्रोध स्यूं लथपथ।।

घात कर चीन चढग्यौ जद, देश रौ फाटग्यौ बाकौ।
रखूंला पग नहीं पाछौ, अड्यौ रजपूत कर हाकौ।।

उठै कविता-री-कळकळ जद, हियै में हूंस उठ जागै।
रळै तोफान सांसां में, रगां में लाय सी लागै।।

उफणती रीस में आंधौ, बोलियौ जोध भेळा कर।
मिटालां आज आपां भी, मिट्या पुरखा समेळा कर।।

परमवीर मेजर शैतानसिंह

❒ सुरेश सोनी

उतरकर ले सकै मारग, जिकौ भी जावणै चावै।
अठै रैवैला वो ई भड़, जिकौ खळ खावणा चावै।।

सुणी ललकार जोधा जद, मुळकियौ काळ मुख माथै।
जोस में ऐक-सुर बोल्या, मरांला आज थां साथै।।

लियां गिणती रा लूंठां ने, खड़ी इक भारती-चौकी।
भडां गुंजार-तोपां-री, रगत-री-रेख सूं रोकी।।

चीनिया चित्त चूक्या हा, 'घरा आ' धूजतां धोकी।
नरां रळ बाढ-बळती ने, रगत-री-रेख सूं रोकी।।

पटकिया ऐक दस-दस ने, काळ पर छाळ भर खीज्यौ।
बंवडर धूजतौ बोल्यौ, जोध! थूं जोरकौ जूझ्यौ।।

जिकौ आयौ हो भख लेवण, झाळ भर घाल दी छींकी।
ऐक आसुर री आमद ने, रगत-री-रेख सूं रोकी।।

अनुशासन

❒ ओम प्रकाश कुम्हार

अनुशासन अर काण कायदो
जीवन भर को करे फायदो
ज्यो अनुशासन अर मर्यादा म रहवै ला
जिन्दगी भर मौज करै ला
अपणा घर म अन्न-धन को भण्डार भरैला
मन की मुरादा पूरी करै ला
भला भला काम करैला
खुद अनुशासन में रहवै अर दूसरा नै रांखै
जिसै एक दूसरा का काम बणै
खुद बढ़ै अर दूसरा नै बढ़ावै
पीढ़या धन्य हो जाय अर सम्मान मिलै
अनुशासन जिन्दगी में पारास समान छै
सबका सपना पूरा करै
कोई काम बाकी नै रह सकै कर्योड़ो
अनुशासन का ध्यान राख करयोड़ो काम सदा बणै
ईमान धरम ने खुद रांखो
अर मर्यादा पालन करो तो अनुशासन कायम रहवै
भारत वर्ष आपकी सनातनी परम्परा नै
बणाई राखै अनुशासन सै
अर दुनिया सदा सिरमौर रहवै
अनुशासन का पालन सै
विश्व में आपणो नाम कायम रहवै।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा. विद्यालय सांवलपुरा तंवरान, नीम का थाना,
सीकर (राज.)-332707 **मो: 9636204566**

इसी ओळात ही उणरी, सबळ रौ थोबडौ सूज्यौ।
क्यौ खुद चीनियां लुळ-लुळ, जोध! थूं जोरकौ जूझ्यौ।।

निहारै भड़ ने होयां नत, पळकतै-पा'ड़ री टोकी।
उग्र-अवसाद री आंधी, रगत-री-रेख सूं रोकी।।

भाजतौ गात भूंईज्यौ, उफणती-आग में सीज्यौ।
हुळसती पूंन यूं हरखी, जोध! थूं जोरकौ जूझ्यौ।।

चीनिया आ चढ्या छाती, गिगन अरडावतौ गूंज्यौ।
गुड्या गिणती रा साथीड़ा, जोध! थूं जोरकौ जूझ्यौ।।

नरां री सोच कद नैड़ी? नरां री राह नित नीकी।
बरसते अभ्भ री झाळां, रगत-री-रेख सूं रोकी।।

हिन्द रौ अंग-आछोड़ौ, भळकतै-रक्त में भीज्यौ।
बवंडर-शीत-रौ बोल्यौ, जोध! थूं जोरकौ जूझ्यौ।।

पड़ी भू माथै देही पण, जोश कर जान ने झौंकी।
क्रोध कर अंवळी-कायरता, रगत-री-रेख सूं रोकी।।

करी ही पालना उणरी, छळकतौ काळजौ छीज्यौ।
ऐक रट वां रै होंठा पर, जोध! थूं जोरकौ जूझ्यौ।।

पगां रै इक इसारै स्यूं, बिंधीजी फौज वा, बोकी।
नगां स्यूं ढळती धारा ने, रगत-री-रेख स्यूं रोकी।।

करी मनवार मिरतू स्यूं, म्हांरलौ प्राण भी लीज्यौ।
क्यौ जद काळ हू कंपित, जोध! थूं जोरकौ जूझ्यौ।।

रीस कर रण में रजपूतां, जम्म रै भाळ पर ठोकी।
हिन्द-री-आंण ने हुळस्यां, रगत-री-रेख सूं रोकी।।

चरम पर पूंचगी हिम्मत्त, परम ने मुळकतां पूज्यौ।
कवै औ देश कर जोड्यां, जोध! थूं जोरकौ जूझ्यौ।।

सबळ-शैतान ने धिन-धिन, मौत ने मोद कर धोकी।
अरी री काळी-आंधी ने, रगत-री-रेख सूं रोकी।।

राख दी लाज रसना री, अैक रजपूत जद रीझ्यौ।
क्यौ खुद श्काळ्य हू कंवळौ, जोध! थूं जोरकौ जूझ्यौ।।

हजारूं मारकर मरग्यौ, अरी रै आयगी ओकी।
अहा! अपजस-री-आंधी ने, रगत-री-रेख सूं रोकी।।

मरग जांण्यौ हो मिरतू नै, धरम-री-राह चढ़ धीज्यौ।
करम कीरत-रा कर कड़क्यौ, जोध! थूं जोरकौ जूझ्यौ।।

अरी-दळ आखौ उथळायां, सूंपग्यौ देश ने सो-कीं।
सुरग चढ शूर अपजस ने, रगत-री-रेख सूं रोकी।।

करम री राह पर कडक्यां, भरम-रै-भाव ने भूंज्यौ।
मिल्यौ बन्दूक ने झाल्यां, जोध! थूं जोरकौ जूझ्यौ।।

बणै भरतार अेड़ा ही, काळ रै भाळ री टीकी।
महामाया महासुर री, रगत-री-रेख सूं रोकी।।

हुकुम कर आज शैतां थूं! बळी खुद आयनै बूज्यौ।
कवै सोनार-सिंहथळ-री, जोध! थूं जोरकौ जूझ्यौ।।

एफ-521, मुरलीधर व्यास कॉलोनी,
बीकानेर-334004
मो. 9414092266

www.rajsevak.com

बाल साहित्य

कुदरत पर उपकार

❒ गोविन्द भारद्वाज

ना ना जी.... नाना जी, हम दोनों फुटबॉल खेलने बगीचे में जाएँ? गुल्लू ने अपने नाना जी से पूछा। 'हाँ, नाना जी घर में खेलने में मजा नहीं आता।' छोटू ने भी कहा। नाना जी ने मुस्कुराते हुए कहा-'ठीक है बेटा...जरा संभल कर खेलना। ये पहाड़ी इलाका है। जमीन भी उबड़-खाबड़ है। कहीं पानी के नाले भी है।' आप चिंता मत करो नाना जी...हम संभल कर ही खेलेंगे।'-दोनों ने एक स्वर में कहा। दरअसल गुल्लू और छोटू दोनों सगे भाई थे। वे छुट्टियों में उत्तराखंड के एक गाँव में अपनी ननिहाल आए हुए थे। उनके नाना सूरज सिंह गाँव के मुखिया थे।

गुल्लू और छोटू फटाफट अपनी फुटबॉल लेकर टेकरी वाले बगीचे में पहुँच गए। दोनों भाई बड़ी मस्ती में फुटबॉल खेल रहे थे। अचानक छोटू ने जोरदार किक मारा। फुटबॉल तेजी से जा रही थी। गुल्लू उसे पकड़ने के लिए दौड़ लगाने लगा। उसके पीछे-पीछे छोटू भी दौड़ पड़ा। 'छोटू तुमने इतनी जोर से किक क्यों मारा..देखो फुटबाल कहीं दिखाई नहीं दे रही..लगता है किसी नाले या पहाड़ी गुफा में चली गयी। गुल्लू ने कहा-'मैंने जानबूझ कर तो मारी नहीं थी...भैया। चलो दोनों मिलकर ढूँढ़ते हैं।' छोटू ने जवाब दिया।

दोनों भाई फुटबॉल ढूँढ़ने में लग गए। अचानक एक गहरे नाले की तरफ से कुछ फुसफुसाहट सुनाई दी। उसने आगे बढ़कर देखा कि कुछ पहाड़ी लोग जाल बुन रहे थे। गुल्लू के कदम डर के मारे ठहर गए। 'क्या हुआ भैया... रुक क्यों गए? छोटू ने पूछा। 'चुप शोर नहीं.. कोई इस गहरे नाले में हैं। शायद उन्होंने ही हमारी फुटबॉल उठाई है।' गुल्लू ने मुँह पर उंगली रखते हुए धीरे से कहा।

धीरे-धीरे दोनों भाई गहरे नाले तक पहुँच गए। तब ही छोटू बोला, 'देखों भैया...इनके पास बड़े-बड़े पिंजरे हैं और उनमें रंग-बिरंगे पहाड़ी पंछी बंद हैं।' 'चलो यहाँ से भागो ये हमें भी बंद कर लेंगे।' गुल्लू ने डरते हुए कहा।'क्या भैया..मुझसे बड़े होकर भी डर रहे हो?' अरे नाना जी ने कहा था कि यहाँ खतरा हो सकता है इसलिए संभल कर खेलना..सचमुच यहाँ तो बहुत खतरा है..ये लोग सुंदर-सुंदर पंछियों को पकड़कर शहरों में बेचते हैं या फिर।' गुल्लू ने छोटू के कान में धीरे से कहा। फिर दोनों ने घर चलने का इशारा किया। दौड़ते हुए घर पहुँचे तो उनकी सांसें फूली हुई थी। 'क्या हुआ तुम दोनों को इतनी तेज दौड़ते हुए कहाँ से आ रहे हो..?' नानी जी ने पूछा।

'अरे नानी जी...हमने पंछियों को पकड़ने वाले गिरोह को देखा।' छोटू ने उत्तर दिया। 'कैसे पंछी...कैसा गिरोह..कहाँ चले गए थे तुम दोनों?' नानी जी ने चिंता जताते हुए कहा। उसी समय सूरज सिंह भी आ गए। गुल्लू ने कहा, 'नानाजी..नानाजी.. गाँव से दूर गहरे नाले में।' उसने अपने नाना-नानी को सारी बात बता दी। नानाजी ने कहा, 'आज पंचायत में भी इसी बात का जिक्र चल रहा था कि अपने गाँव के इलाके में पहाड़ी पक्षियों की संख्या दिनों दिन घट रही है। अब समझा इसके पीछे कौन हैं।'

दूसरे दिन सूरज सिंह ने पुलिस और वन विभाग को सूचना दी। छोटू और गुल्लू के बताए नाले पर शाम ढले छापा मारा । सचमुच जो छोटू व गुल्लू ने बताया था वैसा ही निकला। आठ-दस लोग उस इलाके में पंछियों को पकड़ने का काम कर रहे थे। उनके पास से बरामद पिंजरों में रंग-बिरंगे पहाड़ी तोते, छोटी-छोटी खूबसूरत चिड़ियाँ व और भी कई प्रकार के पंछी मिले।

पुलिस ने सभी को गिरफ्तार कर लिया। छोटू-गुल्लू के नाना जी सूरज सिंह को पुलिस अधिकारी ने कहा, 'आपका बहुत-बहुत शुक्रिया, जो आपने पंछियों के तस्करों को पकड़वाने में हमारी मदद की। 'मदद मैंने नहीं, मेरे इन दोनों नातियों ने की... इन्होंने ही इस नाले में इनको सबसे पहले देखा था। यह है छोटू और यह है गुल्लू।' सूरज सिंह ने मूँछों पर ताव देते हुए कहा।

'शाबाश बच्चों...तुम सचमुच पंछी प्रेमी ही नहीं हो बल्कि सच्चे देशभक्त भी हो। हजारों पंछियों की जान बचाकर तुम दोनों ने इन पर बड़ा उपकार किया है। वन विभाग को पंछी घटने के रहस्य का पता अभी तक नहीं चला था। वन विभाग के अधिकारी ने भी उन्हें शाबाशी देते हुए कहा, 'आपने पक्षियों पर ही नहीं कुदरत पर भी बहुत बड़ा उपकार किया है। छोटू-गुल्लू भी अपनी तारीफ सुनकर बहुत खुश हुए।

पितृकृपा, 4/254, बी-ब्लॉक हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी पंचशील, अजमेर (राज.)-305004
मो. 9461020491

www.rajsevak.com

अनमोल का मोल

❐ विमला नागला

पानी...पानी...पानी। सारा दिन सब बस, यही कहते रहते हैं। यह मत करो, ऐसा मत करो। बेटा! यह बहुत गन्दी बात है न। वो यह न..। मिष्ठी गुस्से में भरी, मन ही मन पलंग पर लेटी बुदबुदा रहती थी। नहीं करनी, अब मुझे किसी से भी, कोई बात। आज तो सारे दिन कितना अच्छा मूड था। पार्क में इतने दिनों बाद जाकर तो सारी सहेलियों से मिलना हुआ, कितने समय बाद तो जाकर हम सबकी खुशियों के पंख लगे थे और घर आते ही फिर से वही पानी की राम कहानी।

दादी जी, जब तक कमरे में आई, मिष्ठी गहरी नींद में सो गई थी। उन्होंने प्यार से उसके माथे पर हाथ फेरते हुए मन ही मन कहा- 'कितनी प्यारी है, मेरी गुड़िया रानी परन्तु...बस, अपनी यह आदत पता नहीं कब छोड़ेगी? न जाने क्यों नहीं सुधारना चाहती और फिर सबकी लाड़ली सबसे। अब दादी जी भी उसके पास सो गई।

गहरी नींद में सो रही मिष्ठी बहुत उदास थी। वह गहरे नीले समंदर के किनारे अकेली बैठी थी। उसका मन आज बिल्कुल भी नहीं लग रहा था। सामने, अथाह पानी था। उसमें उठती ऊँची-ऊँची समुद्र की लहरें भी उसको खुश नहीं कर सकी। वह वहाँ से उठकर अब गीली रेत में घरौंदा बनाने लगी। उसको थप-थप कर गीली मिट्टी से घर बनाने में खूब मजा आता था, पर न जाने क्यों आज तो उससे हमेशा की तरह सुन्दर घर भी ठीक से नहीं बन रहा था।

वो फिर से किनारे बैठ उस विशाल समंदर को देखने लगी। तभी उसने देखा समंदर के अन्दर से एक परी निकल रही है। वो बहुत ही सुन्दर थी। उसकी अनुपम छवि को देखकर तो उसकी आँखें फटी की फटी ही रह गई। वाह! वेरी ब्यूटीफुल एकदम नीले समंदर के रंग की, उसने परिधान भी बिल्कुल नीले रंग के ही पहन रखे थे और उसका आधा हिस्सा मनुष्य जैसा और आधा मछली जैसा था।

'यह कौनसी परी हो सकती है?' उसने अपने आपसे ही प्रश्न किया।' 'हो न हो..., यह तो पक्का जलपरी ही हो सकती है।' इनकी विशेषता तो ठीक वैसी ही लग रही है, जैसी मैंने सुनी। उसकी दादी जी से उसने बहुत तरह की परियों की कहानियाँ सुन रखी थी और उन्होंने ही उसको सबकी अलग-अलग पहचान और विशेषता भी बताई थी, जैसे हरियल परी, जादुई परी, सोनपरी, जलपरी...।

मिष्ठी अभी इन्ही विचारों में खोई हुई थी कि जलपरी अब उसके बिल्कुल पास ही आ गई और उससे बहुत प्यार से पूछा, 'प्यारी मिष्ठी, कैसी हो तुम?' अरे वाह! दीदी आप तो मेरा नाम भी जानती हो, उदासी से घिरी मिष्ठी अब परी को अपने पास देख, खुशी से उछल ही पड़ी। 'मिष्ठी! तुम हँसते हुए कितनी प्यारी लग रही हो। मैंने देखा, तुम बहुत देर से उदास बैठी थी, बताओ क्या हुआ तुम्हें? जलपरी ने पूछा। वो परी दीदी, क्या है न...। अचानक कहते हुए वो कुछ सोचकर रुक गई। उसको अचानक मम्मी की बात याद आ गई, 'कभी भी घर की बात बाहर नहीं बतानी चाहिए।'

'अरे परी दीदी, कुछ नहीं हुआ। आप यह बताइए कि आप जलपरी ही है न' और आपका नाम क्या है? हँसते हुए मिष्ठी ने अपनी जिज्ञासा को शांत करते हुए पूछा। हाँ मिष्ठी तुमने ठीक पहचाना मैं जलपरी ही हूँ। मेरी नीली आँखों की वजह से सब मुझे नीलूपरी भी कहते है। परी ने मिष्ठी को बहुत ही मिठास से कहा। अरे वाह! तब तो मैंने भी ठीक ही पहचाना।

दीदी! आप कहाँ रहती हो? अपने बारे में बताइए न प्लीज दीदी। मुझे आपके बारे में..... मिष्ठी दुगुनी उत्साहित होती हुई बोली। मिष्ठी! तुम मेरे बारे में इतनी बातें जानना चाहती हो, तो चलो, मैं तुम्हें मेरे परी लोक में घुमा लाती हूँ। वहाँ तुम्हें बहुत अच्छा भी लगेगा और तुम्हारे सारे सवालों के जवाब भी आसानी से मिल जाएंगे। जलपरी ने कहा।

'पर दीदी, आप तो इतने गहरे समंदर में रहती हो। मुझे तो कोई तैरना वैरना भी नहीं आता। ऊपर से वहाँ रहने वाले जहरीले जीव-जंतुओं से तो मुझे बहुत ही डर लगता है।' मिष्ठी से डरते हुए कहा। प्यारी मिष्ठी मैं हूँ ना, तुम्हारी दीदी, तुम बिल्कुल मत डरो और मेरी पीठ पर बैठ जाओ, तुम्हें कुछ नहीं होगा। कहते हुए परी ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। यह क्या सचमुच ही जादू हो गया। परी का हाथ लगते ही जैसे मिष्ठी का सारा का सारा डर ही छू मंतर हो गया। मिष्ठी भी अब परी दीदी की पीठ पर सवार होकर, गहरे समंदर में उतर रही थी। पहली बार जलीय दुनिया देखकर वो रोमांचित हो रही थी। रास्ते में जलपरी ने उसे बहुत सारे रंग-बिरंगे, छोटे-बड़े समुद्री जीवों से मिलवाया। समुद्र तल में अनेक प्रकार की वनस्पति और चट्टानों को देखकर उसे अपनी कक्षा में पढ़ा पाठ 'समुद्री दुनिया' याद आने लगा।

अरे दीदी, वो देखो व्हेल ही है न। ओ माई गॉड। यह कितनी बड़ी है...इसी तरह उत्साहित होती हुई वह बहुत सारी जानकारी परी दीदी से प्राप्त करती हुई जलपरी महल पहुँच गई। 'मिष्ठी! यह है हमारा जलमहल। हम सब जलपरियां यहाँ पर ही रहती हैं। मेरे पापा यहाँ के राजा है।' नीलू परी ने कहा।

इसका मतलब आप यहाँ की राजकुमारी है परी दीदी। वाह.... कितना खूबसूरत है आपका महल। मिष्ठी तो महल को देखकर आश्चर्यचकित रह गई। हाँ मिष्ठी! यह पूरी तरह समन्दर में पाए जाने वाले सीप, शंख, कोड़ियों से ही बना है और इस पर यहीं से निकलने वाले हीरे, माणक, मोतियों की सजावट की हुई है। इसी तरह जलपरी ने उसे महल की बनावट, सजावट, वनस्पति सबके बारे में बहुत ही विस्तार से बताया।

परी ने उसे अपनी खूब सारी सहेलियों से भी मिलवाया। सचमुच उसे बड़ा मजा आ रहा था। बहुत घूम लेने के बाद अब उसे प्यास लगने लगी। उसने नीलू परी से कहा-दीदी! मुझे बहुत जोर से प्यास लगी है, पर मुझ तो यहाँ पीने का पानी, कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा। मिष्ठी बोली। प्यारे मिष्ठी हमारे पास अथाह जलराशि है, फिर भी हमारी स्थिति जल में रहकर प्यासी वाली ही है। यहाँ समन्दर का पानी पीने योग्य नहीं है। इस

www.rajsevak.com

कारण यहाँ पानी बहुत अनमोल है। इसको बहुत ही सावधानी से काम में लिया जाता है। यहाँ तो एक बूँद भी पानी बर्बाद करने पर रानी माँ बहुत कठोर दण्ड देती है, इसीलिए तुम्हें पूरे महल में कहीं पीने का पानी नहीं दिखा न, तुम ठहरो मैं अभी लाती हूँ पानी।

हाथ में पानी का गिलास लिए जलपरी आकर जैसे ही मिष्ठी को पकड़ाने लगी तभी रानी जलपरी वहाँ आ गई। 'ठहरो, नीलू! इसे तुम यह पानी का गिलास नहीं दे सकती हो।' रानी परी क्रोध से बोली। पर माँ! यह यह तो बच्ची तो बहुत ही प्यासी है, इसे पानी पिलाना जरूरी है न...। नीलू की बात बीच में ही काटते हुए रानी परी अब पहले से ज्यादा क्रोधित होकर बोली, 'नहीं, बिल्कुल नहीं, रहने दो, इस लड़की को प्यासी ही। इसको तो दुनिया की सबसे बेशकीमती दौलत पानी का जरा सा भी पता नहीं है। इसकी यही सजा है कि इसे यहाँ पीने के लिए एक बूँद भी पानी नहीं मिल सकता। यह तो हमेशा पानी की खूब बर्बादी करती है। घरवालों के समझाने-बुझाने पर उल्टा उनसे ही नाराज हो जाती है।'

रानी परी की बात सुनकर अब मिष्ठी की आँखों से आँसू निकल आए, वह मन ही मन कहने लगी- 'रानी माँ, बिल्कुल सच ही तो कह रही है। मेरे मम्मी-पापा, दादी जी मुझे कितना प्यार करते हैं, सब केवल मुझसे मेरी इसी पानी की बर्बादी वाली आदत के कारण ही तो नाराज होते हैं। उसे अब दादी जी की भी बात याद आने लगी, 'प्यारी लाडो! बाल्टी भरते ही नल बंद कर दिया करो न, रोज-रोज कहना अच्छा नहीं लगता।

तभी पापा की बात याद आ गई-बेटा! तुम्हें कितनी बार समझाया कि-'ब्रश करते समय हाथ धोते समय, नल खुला मत छोड़ा करो।' मम्मी भी तो उसे हमेश यही प्यार से समझाती रहती है कि बेटू! गमलों के पौधों को पानी देते समय, पक्षियों का परिंडा भरते समय, जितनी आवश्यकता हो उतना ही पानी काम में लिया करो, तुम हो कि रोज-रोज ही पाइप चलाकर छोड़ देती हो उससे कितना पानी बेवजह ही बर्बाद कर देती हो...पर मुझे तो, उनकी प्यार भरी बातों से भी कहाँ समझ आया पानी का मोल पर आ... उसकी आँखों से अब तो लगातार प्रायश्चित का पानी बह रहा था।

वह अचानक ही जोर से चीख पड़ी, 'रानी माँ! रानी माँ! प्लीज मुझे माफ कर दो न मैं अब जीवन में कभी भी पानी की बर्बादी नहीं करूँगी...।

मैं बहुत अच्छी तरह से जान गई इस अनमोल का मोल।' 'प्लीज, प्लीज अब मुझे थोड़ा सा पानी पिला दीजिए न, पानी, पानी...।'

अचानक उसकी चीख से दादी जी की भी आँख खुल गई। उन्होंने उसे पानी, पानी बड़बड़ाते सुना तो उसको उठाया और पानी का गिलास पकड़ाया। उसने तो एक ही साँस में सारा का सारा पानी गटागट पी लिया, जैसे वे बरसों से ही प्यासी हो और अभी भी घबराहट में थी। डर के मारे तो पसीने की बूँदें उसके माथे पर चमक रही थी। दादी जी ने पूछा-क्या हुआ, मिष्ठी बेटा! तूने कोई खराब सपना देखा है क्या? इतनी घबरायी हुई क्यों है? दादी जी ने उसकी पीठ सहलाते हुए प्यार से पूछा। मिष्ठी ने अब दादाजी को सपने की पूरी की पूरी घटना सुना दी और कहा-'दादी जी! प्लीज, मुझे माफ कर दो। अब से मैं पानी की बूँद-बूँद बचाऊँगी। आप सच ही कहते हो दादी जी कि 'जल है तो कल है, जल ही हमारा जीवन है।'

दादी जी ने उसे मुस्कुराते हुए अपने आँचल में भर लिया और मन ही मन बोली- थैंक्स जलपरी।

अध्यापिका
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय चारभुजा मंदिर,
केकड़ी, अजमेर (राज.) **मो: 7976367026**

चींटी रानी

❐ **विश्वम्भर दयाल पाण्डेय**

चींटी रानी चींटी रानी
कर्मठता का ना कोई सानी
हर पल चलती रुकती ना जो
सतत प्रयत्न की जिसने ठानी
चींटी रानी चींटी रानी
स्वार्थ जिसको छू ना पाता
उसका सहकार से नाता
जीवन जीने की रीति सुहानी
चींटी रानी चींटी रानी
मिलकर खाती ना उकताती
बीस गुना जो वजन उठाती
करती ना वो कभी मनमानी
चींटी रानी चींटी रानी
संचय करना जिसे सुहाता
लीक से हट चलना ना आता
मीठे की जो रही दीवानी
चींटी रानी चींटी रानी

वरिष्ठ अध्यापक
कर्मचारी कॉलोनी, गंगापुर सिटी,
सवाईमाधोपुर (राज.) 322201

काश अगर हम...

❐ **सत्य भूषण शर्मा**

काश अगर हम पंछी होते,
तो दूर गगन में उड़ जाते।
एक देश से दूर देश तक,
सैर सपाटा कर आते।।

काश अगर हम तितली होते,
तो फूल फूल पर इठलाते।
एक चमन से दूर चमन तक,
मधुर सुवास हम फैलाते।।

काश अगर हम पौधे होते,
तो चहुँओर हरियाली करते,
थके हारे जब आते राही,
तो मनोहारी छाया हम करते।।
काश अगर हम....

प्रवक्ता (भौतिक विज्ञान)
संत ग्रेगोरियस सीनियर
सैकेण्डरी स्कूल
उदयपुर (राज.)-313001
मो: 9414934304

www.rajsevak.com

आओ शिक्षा से देश सजाएँ हम

❒ भँवरलाल कुमावत 'भँवर'

हिन्दू, मुस्लिम, सिख,
ईसाई मिलकर सब करें पढ़ाई
कोई ना छूटे इस बार
सीखना सबका अधिकार।
माता-पिता का नाम जहाँ
बच्चे पढ़-लिख जाएँगे
राष्ट्र हित कर जाएं यहाँ
सद् जीवन जी पाएँगे।
पढ़ी-लिखी नारी होगी
घर-घर खुशहाली होगी
लड़का-लड़की इक समान
लें संकल्प यही महान।
एक भी बच्चा न छूटे
संकल्प अपना न टूटे
बच्चों को सभी पढ़ाएँ
शिक्षा से देश सजाएँ।
पुस्तकें मिले, भोजन भी
संस्कार मिले, जीवन भी
जीने का ढंग मिले हैं
मानवीय रंग खिले हैं।
समय की यही पुकार है
शिक्षा से मिले प्यार है
साक्षर देश बनाना है
आगे देश बढ़ाना है।
घर-घर दीप जलाना है
अज्ञानता मिटाना है
जीवन सफल बनाना है
देश उन्नत बनाना है।
स्कूल नींव है जीवन की
नव पीढ़ी इस वतन की
शिक्षा से उत्थान सदा
शिक्षा से सम्मान सदा।
'भँवर' आगे बढ़ना है
पढ़ाई सबको करना है
अब ना करना ऐसी भूल
बच्चों को भेजना स्कूल।
शिक्षा से राष्ट्रहित सधे
शिक्षा से सुजीवन सजे
आओ सब शिक्षा पाएं
शिक्षा से देश सजाएं।

अध्यापक लेवल-2,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
हिंगलाट, जिला-प्रतापगढ़ (राज.)
मो: 9413200542

हाथी और दरज़ी

❒ रेणूका गांधी

एक था हाथी बड़ा सयाना
शौक था रोज तालाब में नहाना
चलता वो मस्तानी चाल
खूब अनुठी उसकी शान
राह में पड़ती दर्जी की दूकान
दर्जी खिलाता उसको केला
बन गया वो दर्जी का चेला
एक दिन दूकान में बैठा
दर्जी का लड़का
हाथी की चिंघाड सुन
उसका माथा ठनका
ज्यू हाथी ने सूंड उठाई
लड़के ने उसमें सूई चुभाई
हाथी दर्द से उठा कराह
पकडी उसने तालाब की राह
सूंड कीचड़ से भरकर
आया दर्जी के दर पर
फैंका कीचड़ दुकान पर
नये कपडे हो गये बदत्तर
दर्जी का लड़का हुआ परेशान
हाथी ने दिखलायी अपनी शान
खेल खेला उसने ऐसा
कहावत बनी जैसे को तैसा।

महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय धरियाबाद, प्रतापगढ़ (राज.)-313605
मो. 773760065

www.rajsevak.com

बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।
-व. संपादक

पर्यावरण संरक्षण

उठो साथियों, चलो साथियों,
मिल कर हाथ बढ़ाएं,
प्रदूषण मुक्त हो सारी धरती
ऐसा पर्यावरण बनाएं,
उठो साथियों.....

पेड़-पौधों से हमें मिलती ऊर्जा,
और मिलते फल और फूल,
थोड़े से लालच में आकर,
इनको काटने की करते भूल,
उठो साथियों.....

हरियाली धरती का है श्रृंगार,
पेड़ों की श्रृंखला बनती है हार,
स्वार्थ को छोड़ कर मानव,
इनसे उचित करो व्यवहार,
उठो साथियों.....

जल-थल-नभ हैं, सब परेशान,
प्रदूषण बढ़ा रहा, अपनी पहचान,
बदलें हम अपनी आदतों को,
यह समझे हर इंसान,
उठो साथियों.....

स्वच्छता बनें हमारी पहचान,
व्यसन मुक्त हो सारा जहान,
धरती माँ की बनी रहे शान,
युवाशक्ति को देना होगा,
अपने तन-मन का बलिदान,
उठो साथियों.....

नहीं भूलें हम गुरुवर की वाणी,
संभाले प्राकृतिक संपदा पुरानी,
'नवीन' पीढ़ी भी याद करेगी,
अपने पुरखों की निशानी,
उठो साथियों, चलो साथियों,
मिल कर हाथ बढ़ाएं,
प्रदूषण मुक्त हो सारी धरती,
ऐसा पर्यावरण बनाएं।

सुभाष गर्ग, कक्षा-10
राजकीय माध्यमिक विद्यालय, डेडवा, जालोर (राज.)
मो. 9610714084

ठान लिया

ठान लिया कुछ बनना है
ठान लिया कुछ करना है
एक ही मकसद है अब तो
नेक काम कुछ करना है।

प्रथम प्रणाम मात-पिता को
जिन्होंने स्कूल की राह दिखाई
गुरुवार को नमन कोटिशः
जिन्होंने अच्छी बातें सिखाई।

ठान लिया नहीं रुकना है
ठान लिया नहीं झुकना है
अच्छी आदतों को अपनाकर
जीवन सार्थक करना है।

कल्पना, कक्षा-12
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
भैरूपुरा सीलवानी, सूरतगढ़, श्रीगंगानगर-335805

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।
-वरिष्ठ संपादक

www.rajsevak.com

निबन्ध

वृक्षारोपण का मानव जीवन में महत्त्व

प्रस्तावना : भारत की संस्कृति एवं सभ्यता वनों में ही पल्लवित तथा विकसित हुई हैं। यह एक तरह से मानव का जीवन सहचर हैं। वृक्षारोपण से प्रकृति का संतुलन बना रहता है। वृक्ष अगर न हो तो सरोवर ना ही जल से भरे होंगे और ना ही सरिता की कल-कल ध्वनि से प्रभावित होगी। वृक्षों की जड़ों से वर्षा ऋतु का जल धरती के अंग में पहुँचता है, यही जल स्रोतों में गमन करके हमें अपार जल प्रदान करता है। वृक्षारोपण मानव समाज का सांस्कृतिक दायित्व भी है। क्योंकि वृक्षारोपण हमारे जीवन को सुखी, संतुलित बनाए रखता है। वृक्षारोपण हमारे जीवन में राहत प्रदान करता है।

वृक्षारोपण से ही पृथ्वी पर सुखचैन है। इन्हें लगाओ जीवन का महत्वपूर्ण संदेश है।।

संस्कृति और वृक्षारोपण : भारत की सभ्यता वनों की गोद में ही विकासमान हुई। हमारे यहाँ के ऋषि मुनियों ने इस वृक्ष की छाँव में बैठकर ही चिंतन मनन के साथ ही ज्ञान के भंडार को मानव को सौंपा है। वैदिक ज्ञान के वैराग्य में, आरण्यक ग्रंथों का विशेष स्थान है। वनों की ही गोद में गुरुकुल की स्थापना की थी। इन गुरुकुलों में अर्थशास्त्री, दार्शनिक तथा राष्ट्र निर्माण शिक्षा ग्रहण करते थे। इन्ही वनों से आचार्य तथा ऋषि मानव के हितों के लिए अनेक तरह की खोजें करते थे और यह क्रम चला ही आ रहा है। इसलिए वृक्षारोपण हमारी संस्कृति में समाहित है।

वृक्षारोपण उपासना : हमारे देश में जहाँ वृक्षारोपण का कार्य होता है। वहीं इन्हें पूजा भी जाता है। कई ऐसे वृक्ष है जिन्हें हमारे धर्म में ईश्वर का निवास स्थान माना जाता है। जैसे नीम पीपल, आंवला, बरगद आदि को शास्त्रों में प्रकृति के सभी तरह के वृक्ष की हम पूजा करते हैं। वे औषधीय गुणों का भंडार भी होते हैं। जो हमारी सेहत को बरकरार रखने में मददगार सिद्ध होते हैं। गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं-

''मूलतः ब्रह्म रुपाय मध्यतो विष्णुः रूपिनः।
अग्रतः शिव रूपाय अश्रृव्याय नमों नमः।।''

अर्थात् इसके मूल रूप में ब्रह्म, मध्ये में विष्णु और अग्र भाग में शिव का वास होता है इसी कारण अशव्यय नामधारी वृक्ष को नमन किया जाता है।

वनों से लाभ : वनों से हमें भवन निर्माण की सामग्री मिल जाती है। औषधीय जड़ी बुंटिया, गोंद, घास तथा जानवरों का चारा भी वनों से ही प्राप्त होता है। वन तापमान को सामान्य बनाने में सहायक एवं भूमि को बंजर होने से रोकता है। वन दुषित हवा को ग्रहण करके हमें शुद्ध एवं जीवन दायक वायु प्रदान करता है।

वनों के काटने से कई प्रकार की हानियाँ है : आज मानव अपनी भौतिक प्रगति के लिए आतुर हैं। वह अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए बेधड़क वृक्षों की कटाई कर रहा है। एक अनुमान के अनुसार भारत में बड़े क्षेत्र में फैले वनों को काटा जा रहा है।

वृक्षारोपण कार्यक्रम : हमारे देश में वृक्षारोपण के लिए कई संस्थाएँ, राज्य वन विभाग, पंजीकृत संस्था, कई समितियाँ वृक्षारोपण के कार्य करती हैं। कुछ संस्थाएँ तो वृक्ष को गोद लेने की परम्परा कायम कर रही हैं। शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी वृक्षारोपण को स्थान दिया गया है।

आज हमें ए.के. जोन्स की तरह ही वृक्षारोपण का संकल्प लेने की आवश्यकता है।

उपसंहार : आज हमारे देशवासी वनों तथा वृक्षों की महत्ता को एक स्वर से स्वीकार कर रहें हैं। वन महोत्सव हमारे राष्ट्र की अनिवार्य आवश्यकता है, देश की समृद्धि में हमारे वृक्षों का भी महत्वपूर्ण योगदान है इसलिए राष्ट्र के हर नागरिक को अपने लिए और अपने राष्ट्र के लिए वृक्षारोपण करना बहुत जरूरी है।

वृक्षारोपण के नारे :

- पेड़ लगाओ, जीवन में खुशहाली लाओ।
- वृक्षारोपण है प्रकृति का मान,
  आओ पेड़ लगाकर करो इसका सम्मान।
- यह सन्देश सभी तक पहुँचाना हैं,
  स्वच्छ वायु के लिए हमें वृक्ष लगाना हैं।
- जिस दिन मरोगे उस दिन एक पेड़
  लेकर साथ जलोगे,
- प्रकृति का जो कर्ज है,
  वो तो चुका दो यारो
  जीते जी दो पेड़ तो लगा दो यारो।

शारदा जाट, कक्षा-12
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कासोरिया,
भीलवाड़ा (राज.)
मो. 6375776195

www.rajsevak.com

रपट

शिक्षा विभागीय नियमावली 2021 का विमोचन

❒ ओम प्रकाश सारस्वत

शिक्षा विभागीय नियमावली 2021 का विमोचन 18 अगस्त 2021 को माननीय शिक्षा राज्यमंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने एक सादे समारोह में किया। शिक्षामंत्री आवास, जयपुर में आयोजित नियमावली विमोचन समारोह में राजस्थान राज्य शिक्षा नीति समिति के अध्यक्ष भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी श्री ओंकार सिंह ने नियमावली दस्तावेज विमोचन के लिए शिक्षा मंत्री महोदय को प्रस्तुत किया। उन्होंने विमोचित दस्तावेज का अवलोकन कर इसमें सम्मिलित सामग्री एवं प्रस्तुति के लिए शिक्षा नीति समिति की सराहना की। अपने ऑफिशियल ट्विटर पर उन्होंने लिखा, 'वर्ष 1997 के बाद पहली बार स्कूल शिक्षा विभाग से सम्बन्धित नियमों एवं प्रक्रियाओं की स्पष्ट जानकारी से युक्त 'शिक्षा विभागीय नियमावली 2021' का आज विमोचन किया गया। यह नियमावली अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनसे अपेक्षित कार्य को अधिकतम जनहित और न्यूनतम समय के साथ करने में सार्थक सिद्ध होगी।

राजस्थान राज्य शिक्षा समिति ने नियमावली में शामिल विषयों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि 26 जुलाई 2021 के दिन कार्मिक विभाग द्वारा जारी अधिसूचना राजस्थान शिक्षा (राज्य एवं अधीनस्थ) सेवा नियम 2021 को भी नियमावली में सम्मिलित किया गया है। इस पर मंत्री महोदय ने समिति की सराहना की। नियमावली में कुल 18 अध्यायों के अन्तर्गत आवश्यक नियम निर्देशों को प्रस्तुत किया गया है।

विमोचन समारोह में नियमावली निर्माण के कार्यकारी दल के संयोजक एवं राजस्थान शिक्षा नीति समिति के सदस्य श्री ओम प्रकाश सारस्वत, पूर्व संयुक्त निदेशक डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी, विभागाध्यक्ष सीमेट गोनेर (जयपुर), डॉ. रणवीर सिंह विशेषाधिकारी-शिक्षा, शासन सचिवालय, जयपुर, श्री सुभाष माचरा, अनुसंधान अधिकारी, प्रारंभिक शिक्षा (आयोजना) शासन सचिवालय, जयपुर सहित शिक्षाविद् एवं अधिकारी उपस्थित थे। आठ सदस्यीय कार्यदल में इनके अलावा डॉ. संजय सैंगर, प्रोफेसर, आर.एस.सी.ई.आर.टी., उदयपुर, श्री रामचन्द्र पिलानिया, तत्कालीन जिशिअ. (मा.) मुख्यालय, जयपुर (अब सीकर) एवं डॉ. योगेन्द्र सिंह नरूका, सहायक निदेशक, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर सम्मिलित हैं।

समारोह के अन्त में राजस्थान राज्य शिक्षा नीति ओंकार सिंह समिति की ओर से समिति के सदस्य श्री ओम प्रकाश सारस्वत ने आभार प्रकट किया। यह उल्लेखनीय है कि सन् 1957 ई. में शिक्षा संहिता (Education Code) के प्रकाशन उपरान्त इससे पूर्व तीन नियमावलियाँ/संदर्शिकाएं क्रमशः 1976-77, 1988-89 एवं 1996-97 में प्रकाशित हुई। लगभग पच्चीस वर्ष पश्चात प्रकाश्य 'शिक्षा विभागीय नियमावली-2021' विभागीय नियम/निर्देशों पर आधारित पांचवां प्रकाशन है।

पूर्व संयुक्त निदेशक
ए विनायक लोक बाबा रामदेव रोड,
गंगाशहर, बीकानेर (राज.)
मो. 9799879033

भारतीय तीरंदाजी टीम के कोच अनिल जोशी

अनिल जोशी पुत्र श्री राजेन्द्र जोशी 2007 से शिक्षा विभाग, राजस्थान में तृतीय श्रेणी शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं। जोशी की पहली पोस्टिंग जालौर के आहोर ब्लॉक में हुई थी। तत्पश्चात कोलायत के चानी गाँव में 2008 से अब तक कार्यरत हैं। अनिल जोशी शिक्षा विभाग राजस्थान के पहले ऐसे शिक्षक हैं जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय तीरंदाजी टीम के प्रशिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

राष्ट्रीय तीरंदाज : अनेक राज्य स्तरीय तीरंदाजी प्रतियोगिता एवं राष्ट्रीय तीरंदाजी प्रतियोगिता में खिलाड़ी के रूप में राज्य का प्रतिनिधित्व किया है। जोशी 2016 से भारतीय तीरंदाजी टीम के प्रशिक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे है।

साउथ कोरिया : 2016 में भारतीय तीरंदाजी सब जूनियर टीम के साथ सियोल साउथ कोरिया दौरे पर प्रशिक्षक रहे। उस टीम को 5 पदक प्राप्त हुए। अनिल जोशी वर्तमान में टोक्यो पैरा ओलंपिक जाने वाली भारतीय तीरंदाजी टीम को भी प्रशिक्षण दे रहे थे।

राष्ट्रीय प्रशिक्षक : 2016 से 2021 तक लगातार भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा नेशनल कैंप में प्रशिक्षण के रूप में सेवाएँ देते हुए भारतीय तीरंदाजी टीम को प्रशिक्षित करते रहे हैं।

दुबई-2019 : 2019 में पैरा अंतरराष्ट्रीय तीरंदाजी प्रतियागिता दुबई दौरे पर जाने वाली पैरा भारतीय तीरंदाजी टीम के साथ प्रशिक्षक के रूप में रहे। उस टीम ने 2 पदक जीते।

दुबई-2021 : 2021 में पैरा भारतीय तीरंदाजी टीम के साथ दुबई दौरे पर प्रशिक्षण के रूप में भी रहे। टीम ने 6 पदक अपने नाम किए।

चैक रिपब्लिक-2021 : वर्ड रेंकिंग तीरंदाजी प्रतियोगिता चैक रिपब्लिक (3 जुलाई से 11 जुलाई 2021) के घोषित भारतीय टीम में प्रशिक्षक के रूप में अनिल जोशी भारतीय तीरंदाजी टीक के कोच के रूप में चयनित हुए। यूरोप द्वारा वीजा नहीं देने के कारण टीम प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकी।

स्टेट प्रतियोगिता निदेशक : अनिल जोशी अब तक राज्य स्तरीय तीरंदाजी प्रतियोगिता में कई बार प्रतियोगिता निदेशक के रूप में काम कर चुके हैं तथा राष्ट्रीय स्तर पर जाने वाली राजस्थान टीम के मैनेजर व प्रशिक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ देते रहे हैं।

खेलो इंडिया : जोशी ने ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी खेलो इंडिया में भारतीय तीरंदाजी के टेक्निकल ऑफिसर के रूप में अपनी सेवाएँ दी है।

ओलंपिक टीम को प्रशिक्षण : टोक्यो पैरा ओलम्पिक जाने वाले टीम के सदस्य श्याम सुंदर स्वामी को भी वर्तमान में प्रशिक्षण दे रहे हैं।

श्यामसुंदर स्वामी को राजस्थान सरकार द्वारा आउट ऑफ टर्न नौकरी मिली 2020 में शारीरिक शिक्षक ग्रेड थर्ड के पद पर श्यामसुंदर स्वामी का पदस्थापन राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बीएसएफ बीकानेर में है। स्वामी पैरा अंतरराष्ट्रीय तीरंदाज है अब तक चाइना, दुबई, जकार्ता, चेक रिपब्लिक, नीदरलैंड सहित 8 से अधिक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। एशियन गेम्स में भाग लेने वाले श्यामसुंदर स्वामी कई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक प्राप्त कर चुके हैं। 2016 से लेकर 2019 तक लगातार तीन बार नेशनल चैंपियन भी रह चुके हैं। टोक्यो पैरा ओलम्पिक में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

-अनिल जोशी
तपसी भवन, नत्थूसर बास, बीकानेर-334004

www.rajsevak.com

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान 2021

पुरस्कृत शिक्षक दीपक जोशी

मैं एक शिक्षक हूँ और प्रतिबद्ध हूँ, आजीवन शिक्षार्थी बने रहने के लिए। मेरा जन्म 24 दिसम्बर, 1982 को बीकानेर, राजस्थान में हुआ। माननीय शिक्षामंत्री व माननीय निदेशक महोदय का हार्दिक आभार कि उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के लिए राजस्थान के प्रतिनिधित्व के लिए मेरा चयन किया। राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान 2021 मेरे स्वर्णिम स्वप्न की पूर्ति के समान है। यह सम्मान मैं सम्पूर्ण शिक्षक समाज को समर्पित करना चाहूँगा।

मेरा वास्तविक परिचय मेरे विद्यार्थी हैं और मेरे जीवन का एकमात्र लक्ष्य राष्ट्र सेवा है। मेरे 9 वर्षों के सेवाकाल में मेरा सेवाकार्य नामांकन, परीक्षा परिणाम, नवाचार, समाज सेवा, आलेख लेखन और आधुनिक शिक्षण आदि विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट रहा है। जिनके लिए मुझे वर्ष 2017 में जिला प्रशासन द्वारा उत्कृष्ट सेवा सम्मान, जिला स्तरीय शिक्षक सम्मान व संभाग स्तरीय शिक्षक सम्मान तथा वर्ष 2019 में ब्लॉक स्तरीय शिक्षक सम्मान 2020 में बीकानेर नगर निगम द्वारा शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा सम्मान प्रदान किया गया। जो मेरे लिए बहुत ही प्रेरक व गर्व की बात है। मेरे उत्कृष्ट सेवा कार्यों में राजकीय विद्यालयों में नामांकन वृद्धि हेतु मेरे प्रयासों एवं नवाचारों के अत्यंत सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं। मेरे 9 वर्षों के सेवाकाल में मेरे बोर्ड एव गृह परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहे हैं। मेरे द्वारा शिक्षित शिक्षार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन में मात्रात्मक और गुणात्मक दृष्टि में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। सार्थक विज्ञान शिक्षक होने के नाते मेरा उद्देश्य मात्र विज्ञान शिक्षण तक सीमित न रहकर, विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करना तथा उनकी वैज्ञानिक दक्षता को विकसित करना भी है, जिसके लिए मैंने शिक्षा क्षेत्र में निरंतर नवाचार किए हैं। जिनमें विज्ञान शिक्षण में आधुनिक तकनीक का उपयोग, गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम, शिक्षा में ICT का उपयोग, ऑनलाइन वर्चुअल शिक्षण, सामुदायिक हित में विज्ञान प्रोजेक्ट मॉडल का निर्माण, मितव्ययी शैक्षिक सामग्री निर्माण आदि प्रमुख हैं। विद्यार्थियों को डिजिटल व आधुनिक तकनीक से शिक्षण करवाना, विषयवस्तु की सूक्ष्म सारगर्भित शिक्षा व निःशुल्क शैक्षिक नोट्स उपलब्ध करवाना, प्राकृतिक परिवेश में व्यावहारिक शिक्षण अधिगम, गतिविधि आधारित Learning by Doing, अतिरिक्त निदानात्मक शिक्षण आदि मेरे अध्यापन कार्य के अभिन्न अंग है। मैंने अपने प्रिय विद्यार्थियों की सहायता से कई नवाचारी विज्ञान प्रोजेक्ट मॉडल तैयार किए हैं, जिनका उद्देश्य हमारे राष्ट्र के आमजन एवं तकनीकी से वंचित लोगों के जीवन स्तर को सरल सहज और बेहतर बनाना है व विद्यार्थियों को राष्ट्र व समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का आभास करना है।

इन प्रोजेक्ट मॉडल में स्मार्ट बजट प्रोजेक्टर, प्राकृतिक जल शोधक, इको फ्रेंडली चूल्हा, सीमेंट चूल्हा, सीमेंट कैरी बेग जैकेट, डोमेस्टिक ऑटोक्लेव मशीन, सोनामुखी कटिंग मशीन, स्मोग सेफ्टी सिस्टम, बिजली रहित ग्रामीण फ्रीज व एडवांस एग्रीकल्चर सिस्टम आदि प्रमुख हैं। जिनमें से कई प्रोजेक्ट मॉडल राष्ट्रीय Inspire Award अवॉर्ड मानक के लिए तथा कई राज्य स्तरीय विज्ञान मेले के लिए चयनित हुए। समान व श्रेष्ठ शिक्षा सबका अधिकार के अपने स्वप्न की पूर्ति हेतु मैंने पिछले 4 वर्षों से स्वयं व सम्मानित भामाशाहों के सहयोग से बीकानेर जिले की 9 राजकीय विद्यालयों में स्मार्ट डिजिटल शिक्षण के शुभारंभ हेतु स्मार्ट डिजिटल क्लास यूनिट उपलब्ध करवाई है। जिसके अंतर्गत मल्टीमीडिया प्रोजेक्टर, स्पीकर, स्क्रीन व स्टडी कटेंट पेन ड्राइव आदि भेंट करवाई है। साथ ही साथी शिक्षकों को आवश्यक प्रशिक्षण भी प्रदान किया है। लघु स्तर पर समस्त राजकीय विद्यालयों में स्मार्ट डिजिटल क्लास द्वारा शिक्षण अधिगम आरम्भ हो सके, इसके लिए मैंने अपने शिष्यों की सहायता से बहुत ही उपयोगी सह शैक्षिक सामग्री स्मार्ट बजट प्रोजेक्टर तैयार किया है। जिसकी लागत अधिकतम 800 रुपये है।

अपने विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की कमी को दूर कर मैंने स्वयं भामाशाह व भामाशाह प्रेरक की भूमिका का निर्वहन किया है। भामाशाओं और सरकारी अनुदान की सहायता से मैंने अपने विद्यालय में एक नवाचारी विज्ञान लैब तैयार की है, जिसमें Learning by Doing, विज्ञान प्रोजेक्ट मॉडल निर्माण व प्रयोगात्मक तथा प्राकृतिक शिक्षण अधिगम सम्पन्न होते हैं। प्रेरक व नैतिक शिक्षा मेरे शैक्षिक कार्यों में प्राथमिक है। बालिकाओं तथा पिछड़े वर्ग के बच्चों को शिक्षित समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए मैं अनवरत प्रयासरत रहा हूँ। शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार की राज्य स्तरीय मासिक पत्रिका 'शिविरा' में मेरे कई विज्ञान विषयक आलेख प्रकाशित हुए हैं। जिनमें स्मार्ट बजट प्रोजेक्टर, प्राकृतिक जल शोधक, प्रत्येक दिवस हो पृथ्वी दिवस, प्राचीन भारत और विज्ञान, विज्ञान शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु करके सीखो विधि आदि प्रमुख हैं। हमारी भारतीय संस्कृति हमारे राष्ट्र की आत्मा है। अपने विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों को जागृत करने हेतु मैं प्रतिवर्ष राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली 'भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा' के आयोजन में स्वयंसेवक की भूमिका निभाता हूँ। कोरोना महामारी के दौरान भी मेरे विद्यार्थियों की शिक्षा बिना अवरोध जारी रहे, इसके लिए मैंने नवाचार के रूप में V4U BHARAT नाम से यू-ट्यूब चैनल तैयार किया, जिसमें मैंने विभिन्न कक्षाओं के 100 से अधिक शैक्षिक वीडियोस Learning by e-content तैयार कर अपलोड किए, जिसका विभिन्न विद्यार्थियों ने लाभ उठाया। विद्यार्थियों के अतिरिक्त मेरे शिक्षक साथियों को भी मैंने inspire award, स्मार्ट डिजिटल क्लास, learning by doing, e-content निर्माण आदि विषयों पर समय-समय पर प्रशिक्षण प्रदान कर अपने अनुभव साझा किए हैं। मेरे प्रत्येक कार्य एवं प्रयास सिर्फ और सिर्फ मेरे राष्ट्र को समर्पित हैं और मेरे राष्ट्र का हित मेरे विद्यार्थियों के हित में निहित है।

-दीपक जोशी, प्रधानाध्यापक
रा.उ.मा.वि. जेलवैल, बीकानेर-334005
मो. 9660727221

www.rajsevak.com

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान 2021

पुरस्कृत शिक्षक जय सिंह

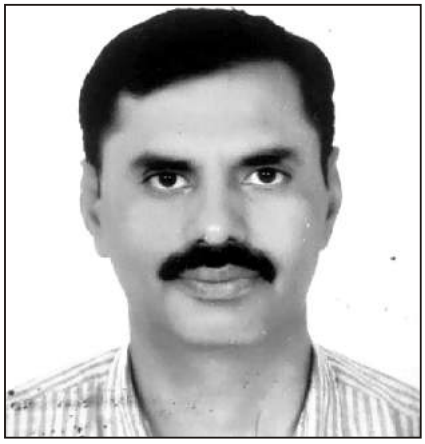

राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक सम्मान प्राप्त होने पर मुझे अनुपम आनन्द की अनुभूति हो रही है। मुझे गर्व है कि मैं एक शिक्षक हूँ। मेरी 23 वर्षों की शिक्षक सेवा में मैंने सदैव अपने आपको आदर्श शारीरिक शिक्षक के रूप में तैयार करने का अथक प्रयास किया और अपने पद के साथ न्याय करने की भरपूर कोशिश की।

मुझे इस मुकाम तक पहुँचाने में मेरे परिवार, शिक्षक साथियों तथा विभागीय अधिकारियों ने प्रोत्साहित करते हुए पूर्ण सहयोग प्रदान किया। बहुत बार परिवारजनों के स्नेह-साथ से वंचित होना पड़ा किन्तु मैदान में प्रातः 5 बजे मेरा इन्तजार करते बच्चों के चेहरे की चमक और प्यार ने हर कमी दूर की। व्यक्ति जितना बड़ा लक्ष्य लेकर चलता है उसके रास्ते में उतनी ही बड़ी-बड़ी बाधाएं आती हैं और प्रयास भी बड़े करने पड़ते है, किन्तु यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव रहा है यदि आज किसी कार्य को पूर्ण ईमानदारी, पूर्ण समर्पणभाव और सकारात्मक सोच के साथ करते हैं तो उसमें सफलता निश्चित रूप से मिलती है। खेल मैदान से निकले मेरे सैकड़ों विद्यार्थी आज विभिन्न पदों पर फौज-पुलिस में कार्य करते हुए देश सेवा कर रहे हैं, उन्हें देख कर अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता हूँ। मैं हर जन्म में शिक्षक के रूप में सेवा करना चाहुँगा।

मेरा शिक्षक साथियों से अनुरोध है कि आप अपने अच्छे कार्यों एवं छात्र-हितैषी गतिविधियों को निरन्तर जारी रखें बिना किसी बाधा से परेशान हुए और नकारात्मक सोच से अप्रभावित हुए। हमें ईश्वर ने एक आदर्श कार्य के लिए चुना है, जिसे हमें तन-मन-धन से पूर्ण करना है। अपनी श्रेष्ठ उपलब्धियों को उचित अवसर और उचित मंच पर प्रदर्शित करें ताकि शेष शिक्षक समुदाय प्रेरित हों तथा उज्ज्वल भविष्य की आशा लगाये बैठे हमारे विद्यार्थियों को उचित दिशा मिल सके। मेरा यह शिक्षक सम्मान प्रत्येक उस शिक्षक को समर्पित है जो अपने विद्यार्थियों को सफल नागरिक बनाने की दिशा में अपना सर्वस्व त्याग देता है।

28 अगस्त 1998 को मैंने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, किशोरपुरा (झुन्झुनूं) में कार्यग्रहण किया। उस विद्यालय में रहते हुए राष्ट्रीय स्तर की 400 मी के ट्रेक, फुटबाल, वॉलीबाल के खेल मैदान तैयार करवाये एवं सभी खेल उपकरण जुटाए। इस विद्यालय से कई राष्ट्रीय खिलाड़ी तैयार किये एवं बहुत से छात्रों में सेना, पुलिस आदि विभागों में नौकरी प्राप्त की। इसके साथ कक्षा 10 एवं 12 की बोर्ड कक्षाओं को अध्ययन करवाया एवं शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम दिया। 2015 में रा.उ.मा.वि. देवरोड में कार्य ग्रहण किया। कार्यकाल के दौरान राष्ट्रीय स्तर के खेल स्टेडियम तैयार करवाए जिसमें एथेलेटिक्स ट्रेक, फुटबॉल, वॉलीबाल के फ्लड लाएट युक्त 4 कोर्ट, हैण्डबॉल, नेटबाल, बास्केटबाल के मैदान निर्माण एवं भारोत्तोलन उपकरण सुविधाएं शामिल हैं। इन निर्माण कार्यों हेतु वित्तीय सुविधाएं सांसद निधि, विधायक निधि, ग्राम पंचायत, नरेगा कार्य एवं भामाशाहों द्वारा प्रदान की गई जिनकी लागत लगभग एक करोड़ रुपये है। ● दो बार राष्ट्रीय स्तरीय वॉलीबाल प्रतियोगिताएं (2018 सब जूनियर नेशनल वॉलीबाल एवं 2019 यूथ नेशनल वॉलीबाल) तथा 2019 में 64वीं राज्यस्तरीय विद्यालयी छात्र एथेलेटिक्स प्रतियोगिता का सफल आयोजन भामाशाहों के सहयोग से करवाया जिसकी लागत लगभग 20 लाख रुपये थी। ● स्वयं द्वारा पिछले तीन वर्षों में 1,16,000 रुपये (अक्षरे एक लाख सोलह हजार रुपये) विद्यालय विकास हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल पर प्रदान किए गए। ● भामाशाहों को प्रेरित कर विद्यालय विकास में पिछले 5 वर्षों में 45 लाख रुपये का सहयोग करवाया गया। ● एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तरीय वॉलीबाल खिलाड़ी (जतिन सिंह) एवं पिछले पांच वर्षों में 50 राष्ट्रीय स्तरीय तथा 160 राज्य स्तरीय खिलाडी तैयार किए। ● विद्यालय की नामांकन वृद्धि में अभूतपूर्व योगदान दिया जिसके अन्तर्गत नामांकन 260 से बढ़कर 500 हुआ। ● सत्र 2018-19 से लगातार कक्षा 10 बोर्ड परीक्षा का शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम अर्जित किया। इस हेतु अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता रहा है। ● तत्कालीन जिला कलक्टर महोदय की महत्वाकांक्षी योजना ''स्कूल विद डिफेंस कोचिंग'' कक्षाओं का आयोजन कर पिछले तीन वर्षों में राज्य एवं केन्द्र सरकार की सेवाओं के लिए छात्र छात्राओं को निःशुल्क कोचिंग प्रदान कर 25 छात्र छात्राओं का चयन करवाया। ● विद्यालय कैम्पस एवं खेल मैदान को हरा भरा बनाने हेतु वृक्षारोपण कार्यक्रम के अन्तर्गत पिछले 5 वर्षों में 800 पेड़ पौधे लगाकर उन्हें जीवित रखा गया है। ● स्वयं द्वारा चार बार रक्त दान किया गया। ● कोविड 19 के अन्तर्गत मुख्यमंत्री सहायता कोष में एक लाख रुपये का सहयोग प्रदान किया। ● प्रतिदिन सुबह 5 बजे एवं सायं 5 बजे से खेल मैदान पर नियमित रूप से चार घण्टे बच्चों को निःशुल्क खेलों का अभ्यास करवाया जाता है। ग्रीष्मावकाश एवं अन्य अवकाशों के दौरान खिलाड़ियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जिसमें विद्यालय के अतिरिक्त आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के खिलाड़ी भी लाभान्वित होते रहे है। ● भामाशाहों को प्रेरित कर विद्यालय में आधुनिक सुविधाओं जैसे सीसीटीवी कैमरे, ओडियो युक्त कक्षा कक्ष, आधुनिक कम्प्यूटर लेब, आरओ, वाटर कूलर की स्थापना व समस्त सुविधाओं युक्त शौचालयों का निर्माण करवाया गया। ● 2014 में राज्य शिक्षक पुरस्कार, 18 फरवरी 2021 को श्रीमान संभागीय आयुक्त द्वारा, 2008 एवं 2013 में जिला कलक्टर झुंझुनूं द्वारा सम्मानित हुए एवं अन्य कई महत्वपूर्ण सम्मान (राज्य स्तरीय जल योद्धा, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य उत्कृष्ट सेवा शिक्षक सम्मान आदि) प्राप्त किये। ● जनप्रतिनिधि एवं ग्रामवासियों को साथ लेकर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में सत्र 2020 में शिक्षा विभाग से विज्ञान संकाय की स्वीकृति प्राप्त की।

खेल मैदान से छात्राओं को जोड़ने के लिए अपनी बेटी को मैदान में ले जाना शुरू किया। आज गांव की बहुत सी बेटियाँ खेल मैदान से जुड़ी है जो राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीत रही हैं।

-जय सिंह, व.शा. शिक्षक,
रा.उ.मा.वि. देवरोड़, झुन्झुनूं, **मो. 9829379710**

www.rajsevak.com

शिक्षक दिवस विशेषांक

विशिष्ट अंक : विशिष्ट मुखावरण

शिविरा सितम्बर, 2021 का अंक 'शिक्षक दिवस विशेषांक' है। यह विशेषांक, विशिष्ट अंक है। राज्य के शिक्षकों साहित्यकारों की श्रेष्ठ रचनाओं का हममें समावेश है। 'शिविरा' के सुधि पाठकों के लिए इस विशेषांक के मुखावरण को बनाने के लिए संपादक मण्डल ने, सम्पूर्ण विश्व में भारत, राजस्थान और बीकानेर का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड धारक के रूप में रोशन करने वाली विश्व की सबसे बडी ड्राइंग बनाने वाली विशिष्ट कलाकार मेघा हर्ष से आग्रह किया। मेघा हर्ष ने शिविरा के आग्रह को विनम्रता के साथ स्वीकार कर विशेषांक का यह विशिष्ट मुखावरण सहजता से बना कर दिया। संपादक मण्डल मेघा हर्ष के प्रति आभार प्रकट करता है और अपने पाठकों को इस विशिष्ट प्रतिभा से रू-ब-रू करवाने में हर्ष की अनुभूति करता है। –वरिष्ठ संपादक

मेघा हर्ष, किसी व्यक्ति द्वारा सबसे बड़ी ड्राइंग का रिकॉर्ड तोड़ने वाली दुनिया की पहली लड़की, इनका जन्म राजस्थान के रंग बिरंगे शहर बीकानेर में हुआ।

प्रौद्योगिकी में स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के तुरंत बाद, उन्होंने अपनी कलात्मक दुनिया में और भी अधिक खोज की, जिसमें कड़ी मेहनत शामिल थी। मेघा जो कला बनाती है वह आत्मा पर अनंत चिह्न स्थापित कर देती है, जिसे आप तस्वीर के साथ नहीं पकड़ सकते।

उसे अपने ब्रश और कैनवास की मदद से हमारी मातृभूमि की वास्तविकता दिखाने में गहरी दिलचस्पी है।

कला के प्रति उनके महान झुकाव के कारण, वह वर्तमान में एक प्रतिष्ठित संगठन में यू.आई. डिज़ाइनर के रूप में काम करती हैं।

मेघा ने पूरे देश में अपने काम का प्रदर्शन किया है जिसने उन्हें विभिन्न पहचान, पदक और पुरस्कार दिए हैं। कुछ प्रतिष्ठित पुरस्कारों में प्रगति मैदान, दिल्ली में एम.एस.एम.ई. उद्यमिता पुरस्कार शामिल (MSME Entrepreneurship ward) हैं, जहां उन्होंने एम.एस.एम.ई. फोरम में योगदान दिया।

2019 में, उन्होंने एक व्यक्ति द्वारा सबसे बड़े ड्राइंग के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड को तोड़ कर अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भारत, राजस्थान और बीकानेर का प्रतिनिधित्व किया।

उन्होंने संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals) के लिए जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया।

जैसा कि भारत सरकार ने पहले ही 2015 में नीति आयोग का गठन करके उन पर अमल करने के प्रयास किए हैं। रिकॉर्ड बनाने के अपने प्रयास में, उन्होंने सतत विकास लक्ष्यों के विषय

पर काम करना चुना। मकसद साफ था- बेहद जरूरी विषय के बारे में जागरूकता फैलाना, ताकि लोगों को इसके बारे में ज्यादा जानकारी हो और सरकार का लक्ष्य हासिल करने में मदद मिल सके।

उसी रिकॉर्ड शीर्षक के लिए पिछले माप 323 मीटर वर्ग और 410 मीटर वर्ग था, और उसने 455.22 मीटर वर्ग, यानी 4899.33 फीट वर्ग (70x70 फीट) कैनवास पर एक चित्र बनाकर रिकॉर्ड हासिल किया।

मेघा ने 2020 को बीकानेर बॉयज स्कूल में शुरुआत की और लगातार 16 दिनों तक, हर दिन औसतन 7 घंटे, धूल, बारिश को झेलते हुए कार्य किया। सबसे बड़े ड्राइंग के लिए विश्व रिकॉर्ड तोड़ने वाली पहली लड़की के रूप में पंजीकृत होने के बाद, उन्होंने पर्यावरणीय समस्याओं और महिलाओं की सुरक्षा पर बनी सबसे बड़ी ड्राइंग और एक व्यक्ति द्वारा सबसे बड़ी ड्राइंग के लिए अद्वितीय विश्व रिकॉर्ड शीर्षक से इंडिया बुक ऑफ़ रिकॉर्ड से रिकॉर्ड भी जीता। गिनीज के बाद, राजस्थान सुजस, लक्ष्य जैसी विभिन्न पत्रिकाओं में भी उनका उल्लेख किया गया था।

अपने डिजिटल प्लेटफार्म Megha's Special के जरिये वो एक समान विचारधारा वाले लोगों का एक समूह बना रही है। वर्तमान में पूरे भारत के 25+ कलाकार इस समुदाय के सक्रिय सदस्य हैं। वह इसे हासिल करने के लिए दुनिया भर के कलाकारों को जोड़ने की इच्छा रखती है। वह पूरे भारत में रुचि रखने वाले बच्चों को पढ़ाकर कला को बढ़ावा देने की दिशा में भी काम कर रही है।

पुरस्कार विवरण : गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड : एक व्यक्ति द्वारा बनाई गई सबसे बड़ी ड्राइंग यह रिकॉर्ड तोड़ने वाली दुनिया की पहली लड़की बनी।● इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स : पर्यावरण व महिला सुरक्षा पर बनाई सबसे बड़ी ड्राइंग। ● लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स : सबसे बड़ी पेंसिल ड्राइंग-व्यक्तिगत (प्रगति में) ● हिसामुद्दीन उस्ता पुरस्कार : यूआईटी जिला पुरस्कार (26 जनवरी 2021) ● जिला पुरस्कार : (15 अगस्त 2021) ● बीकानेर नगर निगम सम्मान प्रमाण पत्र : 26 जनवरी, 2020 ● श्री अभिनंदन, बीकानेर का गौरव : महापौर, सुशीला कंवर जी ● बीकानेर लेडी लीजेंड अवार्ड 2020 ● अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर आभा सम्मान: 2021 ● नारी सम्मान 2021-अंतरराष्ट्रीय ब्राह्मण फेडरेशन ● M.S.M.E-उद्यमिता पुरस्कार 2017 ● स्वर्ण पदक : कला उत्सव (कलानूर), दिल्ली : 2016 ● स्वर्ण पदक : अभिनंदन, चंडीगढ़ : 2016 ● सम्मानित : कलर्ड कैनवास ऑनलाइन प्रदर्शनी : 2015,2016 ● BF (दिल्ली कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स) में चयनित- 2015 ● स्वर्ण पदक - अग्निपथ, दिल्ली :2015 ● रजत पदक-अग्निपथ, दिल्ली: 2016 ● महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन 38वें, वार्षिक सम्मान के लिए मनोनीत

–मेघा हर्ष D/o बिजेन्द्र कुमार हर्ष
ए-21, अन्त्योदय नगर, बीकानेर **मो. 9828112015**

www.rajsevak.com

पुस्तक समीक्षा

मेरी चिताणी

लेखक : रामबक्ष जाट; **प्रकाशक** : अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली; **प्रथम संस्करण** : 2019; **मूल्य** : ₹350; **पृष्ठ संख्या.** : 152

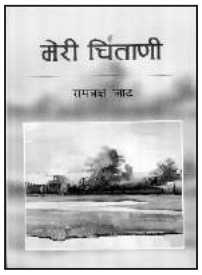

'मेरी चिताणी' पुस्तक जितनी सरल दिखती है, उतनी है नहीं। लेखक बड़े चतुर सुजान हैं। पढ़ते हैं। मजा आने लगता है। इतने में प्रसंग परिवर्तन। कथानक का कोई तारतम्य नहीं। पकड़ते पकड़ते छूट जाता है।

''मेरी जाति के लोग जब अच्छा काम करते हैं तो खुशी होती है, वे जब बुरा काम करते हैं तो दुख होता है। इतना जातिवाद शायद बचा रह गया है।'' यहाँ 'शायद' शब्द लेखक की पाठकों में चिंतन को जगाने की चतुराई बन जाता है। स्यादवाद दर्शन की तरह है। संदेह है या भ्रांति?.... विचारणीय है। एक जगह और ''हमारे जागीरदार भले और समझदार आदमी थे। बाकी शोषण तो नियमानुसार था। ''उक्त कथन में भी विरोधाभासी हास्य व्यंग्य जनित सत्य को आभासित किया है। ''अब माता का सुनहु हवाल।'' आल्हा की तर्ज पर। कहकर लेखक ने भारी-भरकम साहित्यकारों को भी पद्मावत की यात्रा करवा दी। जीवन जीने के क्रम में स्वतः अभिव्यक्त शब्दातीत प्रेम की रोमांटिक तस्वीर का किसानी चित्रण करते हुए लेखक ने अज्ञेय की कविता ''एक छाता एक बरसाती साथ-साथ चलते बतियाती'' का संदर्भ देते हुए आजकल के अधपके प्रेम प्रसंगों और प्रेम व्यापारों की ओर इशारा किया है। कबीर के दोहे ''सुखिया सब संसार है खावै अरू सोवे।'' के माध्यम से साहित्य आलोचकों को भी रसास्वादन करवाने से नहीं चूकते हैं। प्रेमचंद के साहित्य का विकास, साहित्य प्रेमियों का भाव विलास, चित्त का आनंद, तो कभी हास्य व्यंग्य का सात्विक बंध। उदास क्षणों का समाधान, तो कभी पाठकों के गांव का भान करा देती है 'मेरी चिताणी'। गांव की प्रेम मिश्रित ईर्ष्या का प्रकाशन, अकाल का बिंबात्मक कारुणिक चित्रण, कर्मफल और पूर्वजन्मों की मान्यता और अनपढ़ शिक्षित माता-पिता की जीवटता के साथ-साथ पर्यटक और शरणार्थियों के प्रश्न के माध्यम से जीवन की सच्चाई का उद्घाटन साफ नजर आता है।

चेचक की तरह परिवर्तनशील 'सौतिया डाह' नामक मनोविकार का पूरा फिल्मांकन कर चिताणी से चिंतामणि तक यात्रा करवा देते हैं। घर परिवार से कार्यालय और समाज तक की परिस्थितियों में इस महामारी से बचने का संदेश मिल जाता है। चिकित्सा व्यवस्था, नारी का मान, श्रम की शान, पुनर्विवाह, लारवाल प्रथा, दहेज प्रथा, मायरा, पेरावनी का बखान, निरक्षरों के विवेकपूर्ण संसार में समूचे लोकशास्त्र का विहार, किसान का काव्यशास्त्र और हर समस्या का सांकेतिक लेखाशास्त्र कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा 'मेरी चिताणी' को। औद्योगिकीकरण से पूर्व के कृषक समाज में श्रम के साथ विचारों में भागीदार दबंग स्त्री का सुंदर जीवन चरित प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि यौन शुचिता का ब्राह्मणवादी आग्रह जाटों में नहीं मिलता।.... हमारी बिरादरी के पंच कहते हैं कि ईश्वर किसी स्त्री को 20 बार विधवा बना दें तो हम उसे 21 बार सुहागिन बना सकते हैं। उक्त वक्तव्य समाज की प्रगतिशील सोच और स्त्रियों की स्वतंत्रता का बेजोड़ नमूना बन पड़ा है तो दूसरी ओर ''अब आप की बेटियां अशिक्षित या अर्द्धशिक्षित क्यों है?'' कहकर लेखक ने वर्तमान सामाजिक मूल्यों पर प्रश्नवाचक दृष्टि डालते हुए बेमेल विवाह और अंतर्जातीय विवाह जैसे विषयों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। लेखक परिहास के साथ अपनी बिरादरी को विवेक-बोध कराने से भी नहीं चूकते। वे कहते हैं कि ''सावित्रीबाई जब स्कूल जाती, तब भाई लोग उन पर कीचड़ गोबर और विष्टा फेंक देते। अगर हमारी बिरादरी के होते तो वहीं उनसे मारपीट करके खुद भी शहीद हो जाते।'' और यह सच भी है कि अकारण शहादत हमारी बिरादरी की पहचान भी है। ''हमारी स्त्रियां रात को बिना डर-भय के सड़क पर चल सके इस आजादी को हमारी बेटियों को प्राप्त करना है।'' कथन द्वारा लेखक ने वर्तमान भारतीय पुरुषों की असंवेदनशीलता, विकृत मानसिकता व शिक्षा-संस्कार प्रणालियों की अनुपयुक्तता की ओर संकेत किया है। मृत्यु भोज की चर्चा करते हुए लेखन ने सामाजिक गुलामी और 1960 में बने हुए 'मृत्युभोज निषेध'कानून की अवहेलना का संकेत किया है जो कि वर्तमान समय की विमूढ़ता ही कही जा सकती है। नाम की पहचान और पहचान का संकट, 'मेरी चिताणी' में लेखक की अनुभूत जीवन-यात्रा से प्रकट होता हुआ दिखाई देता है। बदलती अस्मिताओं के हवाले से लेखक हमें अपनी अस्मिता से प्यार करने की सलाह देते हैं। 'मेरी चिताणी' भी शायद इसी अस्मिता प्रेम का उत्पाद है। आग्रहपूर्वक किसी को समझाने के पक्षधर नहीं है प्रो. रामबक्ष जाट। इसी संदर्भ में उनका यह वक्तव्य ''मुझे क्या? अपने आप संसार की मार खाकर समझेगा।''

जातीय समरसता का एक बेजोड़ उदाहरण देखिए ''मैंने कभी इस जाट बहुल गाँव में इन कारीगर जातियों के साथ मारपीट नहीं देखी। जाट उनके नखरे उठाते थे। उन्हें उचित मान-सम्मान देते थे। खाती, कुमार, नाई, लोहार सब चाहिए।'' यह उदाहरण वर्तमान समय में फैलते हुए जातीय जहर को कम करने में बड़ा ही प्रासंगिक बन पड़ा है। बाबा हनुताराम लोहार का प्रसंग सामाजिक समरसता का अनुपम उदाहरण है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को शोध का विषय बताते हुए लेखक ने शिक्षा जगत की विकृतियों को उजागर किया है जो कि चिंतनीय है। अहोभाव और कृतज्ञता की बात करें, तो प्रो. रामबक्ष पूरी तरह से उदारमन हैं। अपनी प्राथमिक शिक्षा से लेकर पीएच-डी तक के गुरुजनों का हृदय की अतल गहराइयों से आभार व्यक्त करते हैं। न केवल गुरुजनों बल्कि सर्वजातीय मित्रों और उन अपरिचितों को भी याद किए बगैर नहीं रहते जिनसे कुछ सहयोग और सीख मिली। जहाँ एक ओर गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता (श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्) को सार्थक करती है, वहीं दूसरी ओर दलितों और 'भामण मां' के प्रसंग, लेखक की मानवतावादी सोच की पराकाष्ठा को इंगित करते हैं। पान मेथी के प्रकरण से किसानों के शोषण का उल्लेख करते हुए उनके भोलेपन और अज्ञानता का खुलासा किया है जो कि पर्याप्त परिश्रम के बावजूद उचित भावों से वंचित रह जाते हैं। ''कैसी लगती होगी चिताणी की आँखें जब केपटाउन की तरह चिताणी के इस्तेमाल के लिए प्रतिदिन 50 लीटर पानी दिया जाएगा।''

इस मार्मिक प्रसंग से भावी जल-संकट का संकेत ही नहीं किया बल्कि वर्तमान पीढ़ी की जल संरक्षण के प्रति उदासीनता और प्राकृतिक उपादानों के प्रति संवेदनहीनता को संकेतित किया है।

भूतों के बहाने न केवल हास-परिहास

www.rajsevak.com

किया है अपितु पूरा का पूरा 'भूतशास्त्र' रचकर उसके व्याज से लोकतंत्र की चुनाव प्रणाली में आई विकृतियों की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

'राकउडिया' गाली के प्रसंग में भाषा की बारीकियों का सुंदर चित्रण करते हुए लोक जीवन में बात कहने के अनोखे ढंग से परिचित कराया है। लोकगीतों के माध्यम से लोकजीवन की मर्यादित शृंगारिकता के साथ भाषिक चतुराई और खूबसूरत बिंब-विधान को फिल्माया है जो कि लोकशास्त्र की थाती के रूप में है। ''परंतु सारा गांव अनपढ़ है। यह अन्याय किसने किया? फिर सारा जिला, प्रांत और पवित्र भारत भूमि अनपढ़ है।'' उक्त प्रसंग शिक्षा के प्रति सत्ताओं की उदासीनता का खुलासा करता है। नोखा गांव वाले गुरु जी के घर और अपनी मौसी के घर पर रहने के प्रसंग में लेखक ने घर में रहने की समायोजन विद्या बता दी कि हमें किस तरह से दूसरों के साथ रहना होता है। आज इस विद्या को सीखने की महती आवश्यकता है।

''इधर घंटी बजती और पिताजी गुड़ और घी में चूरी हुई रोटी लेकर हाजिर।'' कथन आज के अभिभावकों को बड़ा संदेश देता है और विडंबनाओं का एक ही वाक्य में बेबाकी से खुलासा किया है-''जाहिर है कि इस खेल का मैं भी हिस्सा रहा।'' शारदा जी के प्रसंग में लेखक ने स्वयं शारदा जी से सीख लेते हुए बड़ी मार्मिक और जीवन-सूत्र के रूप में जो बात कही है, हमें भी विनम्रता और समझदारी का पाठ पढ़ाती है। वे कहते हैं ''वह दिन है और आज का दिन है, उन सब लोगों को उतना ही नमस्कार करता हूँ जितना कुलपति को करता हूँ।'' चार अलग-अलग विश्वविद्यालयों में अध्यापन करने के उपरांत मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि अधिकतर शिक्षक अपने सहकर्मी के पतन की आसन्न प्रतीक्षा में रहते हैं। इस घटियापे का उदाहरण देते हुए लिखते हैं कि ''इस तरह 5 वर्षों तक भाई लोग मुझे छात्रों से दूर रखने में सफल हुए। भाई लोग शब्द का प्रयोग लेखक कि सुदृष्टि और भाषागत मधुरता के साथ मधुर व्यंग्य की नई शैली को जन्म देता है। जोधपुर के मोहन स्वरूप माहेश्वरी द्वारा सपन सारण को प्रदत्त सलाह न केवल नारी जीवन बल्कि मानव जीवन को जीने का नुस्खा है। ''मेहनत और योग्यता तो ठीक है परंतु नौकरी तो किसी के लगाने से लगती है। आपकी मेहनत से नहीं लगती।'' इस कथन से मैं आंशिक रूप से सहमत हूँ। मेहनत को नकारा नहीं जा सकता। सिफारिशों के इस दौर में विवेक के साथ खड़ा रहना, लेखक की मानवीयता और ईमानदारी को दर्शाता है। ''यू.पी.एस.सी.'' अभी थोड़ी बहुत इससे बची हुई है।'' कहकर भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी करने वालों को आशान्वित किया है। जोधपुर का फिल्मी सफर बेजोड़ ढंग से अभिव्यक्त किया गया है जिसमें कई मिथक टूटते हैं। लेखक फिल्म भी देखते हैं और अच्छे अंक प्राप्त करते हैं। मेरा भी सफर इस फिल्मी दुनियाँ से मिलता-जुलता है। इस प्रसंग में फिल्मी दुनियाँ के अर्थशास्त्र को भी अभिव्यंजित किया है। दर्द का दार्शनिक समाधान, 100 वर्षों की जिजीविषा, अपने शिष्यों को सांत्वना देकर आत्मविश्वास बढ़ाना, परीक्षकों की शैली से परिचित कराना, अपने आप में अन्यतम उदाहरण बन पड़े हैं, जो हमें प्रेरित करते हैं। ''मैं किसी को समझा नहीं सकता। जो जीत रहा है, वही हार रहा। जितना जीत रहा है, उतना ही हार रहा है। जो जितना खुश है, रात भर वही रो रहा है कि कल कैसे गुजरेगा? सब आगे बढ़ रहे हैं परंतु कोई कहीं नहीं पहुँच रहा है।''

उक्त दार्शनिक कथनों से उत्तर आधुनिकता की अन्यमनस्कता को रेखांकित किया है। लेखक साहित्य को लेकर चिंतित लगते हैं। वे कहते है कि ''इस लोक साहित्य को बीनने का कोई राष्ट्रीय प्रयत्न होना चाहिए।'' अमेरिका प्रवास के अनुभवों से पाठकों को बहुत कुछ सीखने के लिए मिलता है। प्रशासन की तत्परता, नागरिकों की सुरक्षा, क़ानून का पालन और स्वच्छता जैसी व्यवस्थाओं का वृतांत लिखकर पवित्र भारत भूमि के सभ्य नागरिकों को बड़ा संदेश दिया है। सार रूप में 'मेरी चिताणी' उत्तर आधुनिक कथेतर साहित्य की ऐसी विरल गद्य विधा है जिसने हिंदी साहित्य के रचना संसार में लेखक की अद्यतन शैली को जन्म दिया है। कथानकों का वैविध्य, पात्र, भाषा-शैली, चुहल और पाठक को बांधे रखने की कला से प्रो. रामबक्ष जाट ने लोक और शास्त्र का समन्वय स्थापित किया है। मेरी दृष्टि में लेखक को वर्तमान काल का प्रेमचंद कहें, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। एक बार 'मेरी चिताणी' पुस्तक को पढ़ने की सलाह अवश्य दूँगा क्योंकि इसमें पाठकों के लिए वह सब है, जो वे चाहते हैं।

समीक्षक-**भंवरलाल जाट**
प्रधानाचार्य
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
मूंडवा (नागौर)
मो. 8946880781

धाड़ै सूं धूणै तांई

लेखक : डॉ. भँवर कसाना, **प्रकाशक** : ओळख प्रकाशन, वत्सला, प्रतापनगर, डीडवाना (नागौर), **संस्करण** : 2020, **पृष्ठसंख्या** : 120 **मूल्य** : ₹150

व्यक्ति की जीवन यात्रा कहाँ से और कैसे आरम्भ होती है? यह बात कोई भी व्यक्ति स्वयं नहीं जानता है। बाद में जान भी ले तो बीते हुए समय व स्थितियों को वह नियंत्रित नहीं कर पाता। हाँ, आने वाले समय को तथा वर्तमान को पूर्वानुभवों के आधार पर अवश्य ही संवार सकता है।

यही जीवन की सफलता भी है। महज दोष व बुराइयों को देखने वाले लोग न तो स्वयं सुधरते हैं औ न ही दूसरों को सुधरने का अवसर देते हैं। जबकि मानव समाज का हित कुवृत्तियों का सुवृत्तियों में परिवर्तित होने में है। धर्माध्यात्म के संत, समूहों, मत पंथों की आवश्यकता भी इसीलिए है। वाल्मीकि, कालिदास, तुलसीदास, हरिदास जैसे सदपुरुषों की निर्मिति इस बात के प्रमाण है। सुधरने के अवसर दिए बिना ही किसी को मारना या दण्डित करना ही न्यायोचित नहीं है।

व्यक्ति जब आत्मानुभव से आत्मज्ञान तक पहुँचता है तो वह स्वतः ही परिष्कृत होने लगता है। कदाचार छूटने लगते हैं और सदाचार आने लगते हैं। ऐसी स्थिति में सदाचारों का स्वागत सामाजिक एवं सार्वजनिक रूप से स्वीकार होना ही चाहिए।

राजस्थानी के जाने माने लेखक डॉ. भँवर कसाना ने बाल साहित्य से लेकर खण्डकाव्यों तक की सर्जना की है। राजस्थानी भाषा साहित्य में कथेत्तर साहित्य की कमी सदा से अखरती रही है। डॉ. कसाना जी ने कथेत्तर साहित्य की सफल सर्जना की है। यह कृति-'धाड़ै सूं धूणै तांई' इसी बात का प्रमाण है। अपने पैतृक हक को प्राप्त करने एवं अपना गढ़ और अपनी सेना बनाने का सपना संजोए कुंवर हरिसी साँखला किस तरह अपने ही बांधवों द्वारा तिरस्कृत होकर एक विख्यात धाड़ैती (डकैत) बनने को विवश हो जाता है। यह बात अलग है कि उसके खून में जोश तो है, परन्तु कदाचार नहीं है। हरिसी दस्यु होकर भी गरीबों, स्त्रियों की रक्षा करता है। वह व्यापारियों को लूटता है और सामन्तों बादशाहों को ललकारता है।

www.rajsevak.com

कृति का आरम्भ डॉ. कसाना जी ने साँखला वंश की उत्पत्ति उनकी वंश-बेल और जागीरी के वर्णन से किया है। डॉ. कसाना लिखते हैं-''साँखला जी जुनी जागीर रुण। कोलियो इणी जागीर रो गांव। रुण से जूनो नांव पाटण हो, उण रै सागै कोळियो नांव जुड़ण् सूं जागीर रो नाम कोळियो पारण होयग्यो। बोलण री सोराई मांय ओ 'कोयला पाटण' बोलीजण लाग्यो। कोयला पाटण मतलब कोलिया-पाटण री जागीर सैंकडू बरसां तांईं साँखला कनै रिवी। कैई मानीता साँखला सिरदार इण माथै राज करियो अर धरती माथै नांव कमायो।

डॉ. कसाना के अनुसार साँखला वंश मूल रूप से पंवार वंश से ही निकला है। चाहड़राव पंवार के दो बेटे और एक बेटी थी। एक बेटा सोढ़ाजी अमरकोट पारकर का राजा बना और दूसरा बघोजी किराडू-ओसिया का। बघोजी पंवार धोखे से जयचन्द पडियार ने मरवा दिया। बदले में पंवार बन्धुओं ने जयचन्द का किला तहस नहस कर दिया। सच्चियायी माताजी से आशीर्वाद लिया। माता सच्चियायी ने प्रकट होकर उन्हें शंख भेंट किया। तभी से सोढ़ाजी और बघोजी के वंशज साँखला कहलाने लगे। 'धाड़ै सूं धूणै तांई' यह कृति एक जीवनी होने के साथ ही कई ऐतिहासिक घटनाओं का उदघाटन करती हुई राजाओं और बादशाहों के संघर्षों और कृत्यों की साक्षी बन जाती है। दिल्ली के बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी के अत्याचारों एवं दुराचारों की कहानियां जगजाहिर है। चित्तौड़ की रानी पद्मिनी को भी इसलिए जौहर करना पड़ा था। जालौर के किले पर भी बादशाह ने कहर बरपाया। जालौर किला जीतकर बादशाह अलाउद्दीन खिलजी जब रूण मेड़ता होकर गुजर रहा था तो किसी चुगलखोर ने रूण राजा सिंहड़देव साँखला की सुंदर कन्या के बारे में बादशाह अलाउद्दीन खिलजी को बताया।

अलाउद्दीन खिलजी के साथ रूण राजा सिंहड़देव साँखला का भीषण युद्ध वर्णन भी इसी पुस्तक में है-''खूंखार साँखला भूखा सिंहा री नांय खिलजी री सेना माथै टूट पड़िया। रगतनाळ बैवण लाग्या। रूण रै च्यारू कानी री पांच पांच कोस री जमीन रणभोम बनगी। खेत-खेत बांठ वीरां रा रुंड मुंड बिखरग्या। खुद सिंहड़देव हुंकार रै सागै जुध माय टूट पड़िया। सीस कट्या। पाछै ई उणारो धड़ कैई घड़ियां ताई बेरियां रो संहार करतो रियो।

बिना माथे रै धड़ नै लड़तो देखर सुल्तान री सेना मांय अफरा तफरी माचगी...।

साँखला वंश में हड्बूजी और करमसी जैसे सन्त कवि भी हुए। करमसी साँखला ने 'श्री किशन जी री वेली' ग्रंथ की रचना की। बाद में पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा 'वेलीकृष्ण रुक्मणी' लिखा गया। करमसी के बेटे वेणीदास को रूण कोलिया का राज मिल गया था परन्तु दूसरे बेटे रामजी दास को केवल एक गांव कापड़ोद मिला। रामजीदास मीरा को मेड़ता लाये थे। मीरा उन्हें छोटे भाई की तरह मानती थी। बीरमदेव और रामजीदास में अच्छी मैत्री थी। रामजीदास संत स्वभाव के व्यक्ति थे। मीराबाई के लिए कल्याणराय जी का मन्दिर रामजीदास साँखला की देखरेख में ही बनाया गया था।

यह कृति जिस नायक के जीवन चरित्र को खासकर बखानती है, वह रामजीदास साँखला का पुत्र हरिसी साँखला है। हरिसी साँखला के माता पिता बचपन में ही स्वर्ग सिधार गए। अतः हरिसी साँखला का लालन पालन रामजीदास के परममित्र (धरमभाई, चोखा जेवलिया जाट के घर हुआ। चोखा जाट की पत्नी सुगना का दूध पीकर हरिसी बड़ा हुआ था। इधर रूण कोळिया के बेणीदास ने कापड़ोद को भी अपने राज्य में मिला लिया था। जबकि वह हरिसी को पिता के हिस्से में आया था। हरिसी साँखला किशोरवय में अकेला शिकार करने जंगल में जाता था। एक दिन उसे जंगल में भटके हुए तथा भूख प्यास से छटपटाते हुए दो सिपाही दिखाई दिए। हरिसी ने उनको पानी पिलाया। पता चला कि वो बादशाह अकबर की सेना के सिपाही थे। एक शेर उनके एक सिपाही को उठाकर ले गया था। वे घबराए हुए थे। हरिसी को आश्चर्य हुआ कि बादशाह की सेना में ऐसे भीरू सिपाही भी होते थे। उन्होने ही बताया कि अकबर की सेना वहीं पास से गुजरने वाली थी। हरिसी के मन में सेना देखने की चाह पैदा हो गई थी।

अगले दिन हरिसी साँखला एक घेरघुमेर विशाल बड़ के ऊपर चढ़ कर छुप कर बैठ गया। वह बादशाह की सेना देखना चाहता था। लेखक के अनुसार ''हरिसी रै साम्ही सूं जद घुड़सवारां रा दळ निकलग्या तो पछै हथिन रा दळ सरू होया। हाथी तो आज ई पैली दपै देख्या। अजै तांईं उणां बाबत सुण ई राख्यो हो। ओ जिनावर ई कितो गजब रो है। हरैक हाथी माथै तीन-तीन च्यार-च्यार सिपाही हो। जिका मांय सूं कैई होदा माथै ऊबा कर केई बैठ्या हा। सैकडूं हाथी हा। हाथियां रै आखरी माय अक सजायोड़ा हाथी माथे री पालकी माय छतर अर निसाण सामै बादशाह बैठ्यो हो। दिल्ली रो बादशाह अकबर।''

सेना देख कर हरिसी गांव लौटने ही वाला था कि एक औरत के चीखने-चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। हरिसी आगे बढ़ा। दो सिपाही औरत को घोड़े से बांध कर ले जा रहे थे। हरिसी साँखला ने तलवार से उनका मुकाबला किया और उस औरत को उनके चंगुल से छुड़ाया तथा उसके घर पहुँचाया।

हरिसी को उसकी पैतृक जागीर कापड़ोद नहीं मिली तो उसने रुण कोळिया राज के व्यापारियों को लूटना शुरू कर दिया। इससे राजा बेणीदास की फजीहत होती थी। हरिसी का डर चारों और व्याप्त हो गया। धाड़ैती होकर भी वह एक बेताज बादशाह की तरह विख्यात हो गया। वह डूंगर में एक जोरदार किला बनाना चाहता था।

हरिसी के नाम से छोटे मोटे जागीरदार तो क्या मुगल बादशाह द्वारा स्थापित चौकियों के सिपाही भी थर्राने लगे। चोकियों के सिपाही पूजास्थलों को नुकसान पहुँचाते थे तथा गरीब मजदूरों व बिणजारों पर अत्याचार करते थे।

हरिसी ने मुगल सिपाहियों को ललकार कर कहा-''ओ हरिसी साँखला से स्रोसो है। साफ साफ केय दीज्यो थारां हाकम अर कोतवाल नै कै हरिसी साँखला कैवायो है कै खारडा रा हिन्दू मजुरां अर बाण्यां बिणजारा सागै अनीत नी रुकी तो अठै नित का मनख मरैला अर सागै ई माताजी रा मन्दिर मायं पाछी सेवा सरु नी हुई तो सगळा रो जीणो हराम कर देवूंला।''

मनुष्य मनुष्य पर अपना शासन स्थापित कर लेता है, परन्तु परमेश्वर की एक ऐसी सर्वोपरि सत्ता भी है, जिस पर किसी का वश नहीं चलता है। वह सत्ता हरिसी के जीवन को अंततः किस रूप में परिणित करना चाहती थी? यह तो कोई भी नहीं जानता था।

एक क्षत्रीय राजकुल में जन्म पाकर भी एक किसान जाट के घर पला बढ़ा हरिसी राज्य से वंचित होकर एक धाड़ैती के रूप में विख्यात हो गया।

इसी बीच एक घटना घटित हुई, जिससे हरिसी का मन और जीवन पूर्णतया बदल गया। हरिसी के भाले से एक गर्भिणी हिरणी ने घायल होकर बच्चे को जन्म दे दिया था। परन्तु दोनों ने ही तड़पकर प्राण त्याग दिए। देखकर हरिसी पश्चाताप की आग में जल उठा। उसका अंतर्मन हाहाकार करने लगा। तभी सामने एक शिवरूपी मूर्ति खड़ी थी। उसके मुख से सुनाई दिया 'अलख

www.rajsevak.com

निरंजन' वह गोरखनाथ ही थे।

इसके बाद ही हरिसी माया मोह को छोड़कर वैरागी हो गए। तीखली डूंगरी पर जाकर निरंजन ब्रह्मा की साधना में लीन हो गए। गुरु कृपा से महात्मा हरिदास के नाम से प्रसिद्ध हुए। महात्मा हरिदास निरंजण पीठ के पीठाधीश हुए। बाद में जन कल्याण के अनेक कार्य करते हुए दीन दुखियों के कष्ट मिटाए तथा पुण्य परोपकारों को संचय करते हुए जीवन को मुक्ति की ओर ले जाने में सफल हुए।

धाड़ै सू धूणै तांई पोथी में सामाजिक बदलावों की बात भी उद्घाटित होती है। मुगलकाल में क्रूर अत्याचारी दंभी बादशाहों के सम्मुख नतमस्तक न होने वाले स्वाभिमानी क्षत्रिय कुल के वीर योद्धा युद्ध भूमि में लड़कर वीर गति को पा गए। परन्तु स्त्रियों एवं छोटे बच्चों की रक्षा के लिए पलायन करने वाले परिवार अन्य किसी भी जाति समाज के कार्यों में सहभागी बनकर सामाजिक सेवा करने लगे थे। बाद में वे उन्हीं जातियों के रूप में ही जाने गए।

महात्मा हरिदास निरंजणी की यह राजस्थानी जीवन गाथा न केवल एक व्यक्ति के जीवन को ही विवेचित करती है, वरन मानवमात्र को एक बेहतर जीवन की ओर उन्मुख होने का सन्देश देती है। लेखक डॉ. भँवर कसाना जी की कलम का सामर्थ्य यहाँ स्पष्टत देखा जा सकता है। एक सधी हुई सुसंयोजित मायड़ भाषा में एक शानदान जीवनी ही नहीं, अपितु एक अनुकरणीय जीवन दर्शन पाठकों को सौंपना अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य है। राजस्थानी जीवन गाथा साहित्य में यह कृति एक मील का पत्थर साबित होगी।

समीक्षक-**सी.एल. साँखला**
शब्दवन, टाकरवाड़ा, कोटा (राज.)

आंगळी - सीध

लेखक : डॉ. नीरज दइया ; **प्रकाशक** : सूर्य प्रकाशन मंदिर, दाऊजी रोड, बीकानेर ; **संस्करण** : 2020 ; **पृष्ठ संख्या** : 192 ; **मूल्य** : ₹ 300

डॉ. नीरज दइया राजस्थानी साहित्य के न केवल गंभीर शोध-अध्येता ही हैं, अपितु नीर-क्षीर विवेक-सम्पन्न समर्थ समीक्षक भी हैं। समीक्ष्य कृति से पूर्व डॉ. दइया की दो आलोचना पुस्तकों-'आलोचना रै आंगणै' एवं 'बिना हासलपाई' का प्रकाशन हो चुका है। 'बिना हासलपाई' को वर्ष 2017 में साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत भी किया है। इस कृति में राजस्थानी कहानियों की विषय-वस्तु को सामाजिक सरोकारों के परिप्रेक्ष्य में पूर्वापर परंपरा को दृष्टिगत रखते हुए विवेचित-विश्लेषित किया गया है। आलोचना की अगली कड़ी में डॉ. नीरज दइया ने राजस्थानी उपन्यासों के उद्भव और विकास को पूर्वापर संदर्भों सहित विवेचित-विश्लेषित करते हुए जिस उल्लेखनीय कृति का प्रणयन किया है, उसका शीर्षक है-'आंगळी सीध'।

राजस्थानी उपन्यासों की यात्रा प्रवासी राजस्थानी साहित्यकार शिवचंद्र भरतिया के सन् 1903 में प्रकाशित 'कनक सुंदर' उपन्यास से शुरू होती है, जो आगे चलकर बीकानेर के श्रीलाल नथमल जोशी के आभे पटकी (1956) और अन्नाराम 'सुदामा' के 'मैकती काया : मुळकती धरती' (1966) से परवान चढ़ते हुए नवनीत पांडे, मनोज स्वामी, रामेश्वर गोदारा 'ग्रामीण', रीना मेनारिया, डॉ. अनुश्री राठौड़ एवं संतोष चौधरी के उपन्यासों तक आ पहुँचती है। डॉ. दइया ने उपन्यासों के विकास-क्रम में लोक उपन्यास, उपन्यास एवं कहानी में अंतर, उपन्यासों की भाषा, आलोचना-दृष्टि एवं आधुनिक उपन्यास-लेखन के प्रस्थान-बिंदु से लेकर लगभग छब्बीस महत्त्वपूर्ण उपन्यासकारों की कृतियों का न केवल गंभीर अध्ययन ही किया, बल्कि उनके उपन्यासों का कथानक में व्यवहृत न्यूनताओं को भी पूरी ईमानदारी से रेखांकित किया है। डॉ. दइया ने श्रीलाल नथमल जोशी के चार उपन्यासों के कथ्य में विविधता, राजस्थानी उपन्यासों की विविध धाराओं के समावेश एवं आधुनिक गद्य भाषा के विकास में उनके अवदान को उजागर किया है।

डॉ. दइया ने इक्कीसवीं सदी के वर्ष 2020 तक लगभग साठ उपन्यासों के सृजन की चर्चा करते हुए उन्हें बात-परंपरा से आधुनिक युगबोध के विविध पक्षों के संदर्भ में विवेचित किया है। इनमें घर, परिवार, देश और दुनिया के बदलते परिवेश के विविध दृश्य है। सामंती युग के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था-जन्य विसंगतियों को भी यहां के उपन्यासकारों ने प्रकट किया है। यह संयोग ही कहा जाएगा कि उनके उपन्यासों में नारी-विमर्श को ही केंद्र में रखा गया है। अन्नाराम सुदामा के 'मैकती काया : मुळकती धरती', 'आंधी अर आस्था', 'मेवै रा रूंख?', 'डंकीजता मानवी', 'अचूक इलाज' एवं दो भागों में प्रकाशित 'घर-संसार' में हम देखते हैं कि गाँव के किसान महाजनों के कर्ज-तले दबे हुए हैं और उससे मुक्ति हेतु उपन्यासकार उनमें चिंतन के बीज बोता है और अपने शोषित पात्रों के क्रिया-व्यापार द्वारा जन-जागरण का संदेश देता है। शोषक वर्ग में जमींदार, सेठ-साहूकार एवं राजनेताओं के जाल में फंसे होने पर भी सुदामाजी आदर्श, यथार्थ एवं आधुनिकता-बोध के साथ जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा करते दिखाई देते हैं। इसी क्रम में सीताराम महर्षि 'लालड़ी एकर फेरूं गमगी' तथा 'कुण समझै चंवरी रा कौल' में नर-नारी के रिश्तों में प्रेम को परिभाषित करते हुए टूटे सपनों को संजोते दिखाई देते हैं, वहीं यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' अपने तीनों उपन्यासों-'हूं गोरी किण पीव री', 'जोग-संजोग' एवं 'चाँदा सेठाणी' में नारी-विमर्श का ताना-बाना बुनते हैं। पारस अरोड़ा भी 'खुलती गांठा' में सामाजिक वर्जनाओं के साथ प्रेम-विवाह एवं परिवर्तनशील मूल्यों को मुखरित करते हैं।

करणीदान बारहठ के 'मंत्री री बेटी' तथा 'बड़ी बहनजी' उपन्यास भी नारी व राजनीति को केन्द्र में रखकर रचे गए। जबकि अब्दुल वहीद कमल ने पहली बार मुस्लिम समाज के प्रामाणिक परिवेश के मध्य 'घराणो' व 'रूपाळी' जैसे नारी-प्रधान उपन्यासों का सृजन करके राजस्थानी उपन्यासों के फलक को और विस्तृत करने का उल्लेखनीय कार्य किया है। इन उपन्यासों में सांप्रदायिक सद्भाव एवं मानवीय-मूल्यों का उपस्थापन हुआ है।

डॉ. दइया ने कोटा अंचल के अतुल कनक के 'जूण जातरा' तथा 'छेकड़लो रास' को त्याग-समर्पण एवं कथ्य की दृष्टि से उल्लेखनीय बताया है, वहीं गिरधारी लाल मालव के 'और एक भगीरथ' में लोकजीवन के वैविध्य को रेखांकित किया है।

'सौगन' और 'अैड़ो क्यूं?' की लेखिका बसंती पंवार के रचनाकर्म पर भी डॉ. दइया ने सम्यक टिप्पणी की है, तो नंद भारद्वाज के 'सांम्ही खुलतो मारग' में परंपरा एवं आधुनिकता के युगांतरकारी परिवर्तन को उजागर किया है। नवनीत पांडे के 'माटी जूण' तथा 'दूजो छैड़ो' भी नारी-विमर्श को रेखांकित करते हैं, जहाँ नारी का सबला रूप सामने आता है। देवदास रांकावत के 'जोरावर-पदमा', 'गाँव थारै नांव', 'मुळकती मौत कळपती काया', 'धरती रो सुरग' एवं 'होम

www.rajsevak.com

करता हाथ बळै' आदि उपन्यासों में ग्राम्य-जीवन का बहुत ही रंजक शैली में चित्रण किया गया है।

मधु आचार्य 'आशावादी' के 'गवाड़' को उत्तर आधुनिकता का पहला राजस्थानी उपन्यास बताते हुए समीक्षक ने इसकी खूबियों को रेखांकित किया है। श्री 'आशावादी' ऊर्जस्वी सृजक हैं। उनके 'अवधूत', 'भूत भूत रो गळो मोसै' एवं 'आडा तिरछा लोग' आदि उपन्यासों का भी कथ्य-विश्लेषण किया गया है।

भरत ओला के 'घुळगांठ' तथा 'घुळगांठ माथे घुळगांठ' में वर्णित कथ्य के संबंध में युवापीढ़ी के भटकाव पर चिंता प्रकट की गई है। श्याम जांगिड़ के 'नौरंगजी री अमर कहाणी' में नारी-प्रेम 'स्वामी-भक्त धर्म' से जुड़ा है। यहाँ भी नारी विमर्श है। रामेश्वर गोदारा 'ग्रामीण' के उपन्यास 'टूण्डौ मूण्डी' में खलनायक को नायक बनाने का प्रयास है, तो प्रमोद शर्मा के 'गोटी' में अव्यवस्था का उद्घाटन हुआ है।

अरविंद आशिया के 'सिंझया' तथा जितेंद्र निर्मोही के 'नुगरी' उपन्यास में भी स्त्री-विमर्श के परिवर्तनशील दृष्टिकोण को उजागर किया गया है। डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा के 'क्रांति रा जोरावर', डॉ. मनमोहन सिंह यादव के 'कुदरत सूं कुचमाद' तथा डॉ. गोरधनसिंह शेखावत के उपन्यासों में शहीदों के जीवन की झांकी है। वहीं सरदार अली पड़िहार, मोहन थानवी, भंवरलाल महरिया, माणक तुलसीराम गौड, मनोजकुमार स्वामी, आनंद कौर व्यास, कमला कमलेश, जेबा रशीद, सुखदा कछवाह, रीना मेनारिया, मनीषा आर्य सोनी, संतोष चौधरी एवं सीमा भाटी ने भी इस विधा में सृजन किया है, जिनका डॉ. दइया ने सम्यक दृष्टि से मूल्यांकन करते हुए कतिपय सुझाव भी दिया है।

उपन्यासों के कथ्य-विश्लेषण के साथ ही डॉ. दइया ने भाषाई पक्ष पर भी चिंतन किया है। डॉ. दइया राजस्थानी के आधुनिक मुहावरे पर गहरी पकड़ रखते हैं तथा अपने लेखन में राजस्थान के आधुनिक मानक रूप को ही अपनाते हैं, जबकि कुछ उपन्यासकार मध्यकालीन राजस्थानी के क्रिया-पदों का प्रयोग करते हैं, जबकि भाषा परिवर्तनशील है और अपने समय के साथ बदलती रहती है।

'आंगळी सीध' में डॉ. दइया की युगानुकूल शोधवृत्ति एवं समीक्षा-दृष्टि सराहनीय है और वे विनम्रतापूर्वक असंगत तथ्यों से असहमति तो जताते ही है, अस्वीकार्य बातों को नकारने में भी संकोच नहीं करते। उनकी नीर-क्षीर-विवेकसम्मत आलोचकीय दृष्टि में उत्तरोत्तर निखार आता रहे, यही कामना है।

समीक्षक-**डॉ. मदन सैनी**
कालूबास, श्रीडूँगरगढ़-331803 (बीकानेर)
मो. 7597055150

समेरा हिंदी प्रभा

लेखक : चेनाराम; **प्रकाशक** : वी.सी. प्रकाशन, मेड़ता सिटी; **संस्करण** : 2020; **पृष्ठ संख्या** : 72; **मूल्य** : ₹180

समेरा हिन्दी प्रभा पुस्तक कक्षा एक व दो की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दिशा में बहुत अच्छा प्रयास है। कोविड-19 में सबसे ज्यादा शिक्षा उन बच्चों की प्रभावित हुई है जिनकी आयु पाँच से सात वर्ष है। इन्हीं बच्चों की आयु रुचि और स्तर को दृष्टिगत रखते हुए लेखक ने यह पुस्तक लिखी है।

भाषा के अधिगम हेतु पूर्णतः वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि अपनाते हुए वर्ण अध्यायों की शुरूआत की गई है। स्वर और व्यंजन के प्रारंभिक परिचय में सभी वर्णों के चार-चार शब्द लिखे गए हैं। बारहखड़ी की कविता बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करती है। दो तीन और चार वर्णों के आमतौर पर प्रयुक्त होने वाले शब्द बच्चों को हिंदी के प्रति रुचि जाग्रत करने वाले हैं। मात्रा ज्ञान को सरल तरीके से सीखने हेतु लेखक ने मात्राओं के सरल शब्द और पर्याप्त मात्रा में अभ्यास कार्य दिए हैं जो बच्चों के आकलन के लिए बहुत उपयोगी है। अनुस्वार और अनुनासिक (चंद्र बिन्दु) को समझाने के लिए विभिन्न शब्द और छोटे-छोटे वाक्य लिखे हुए है। विसर्ग, आगत वर्ण और र के विभिन्न रूप (रेफ, पदेन) को बहुत ही रुचिकर ढंग से चार्ट के माध्यम से बताया गया है। इसके साथ-साथ द्वित्व और संयुक्त अक्षर की संरचना को बेहतरीन तरीके से समझाया है। श्र और ळ के विभिन्न शब्द और इनके आधार पर बनाए गए वाक्य बहुत ही रुचिकर है।

पुस्तक का मुख्य पृष्ठ आकर्षक खिलखिलाती हुई बालिका के साथ पक्षियों और पशुओं के चित्र बच्चों के मन को मोह लेते है। मुख्य पृष्ठ के भीतर राष्ट्रगान और राष्ट्र गीत के मध्य लहराता हुआ तिरंगा राष्ट्रीयता की भावना को जाग्रत करता है। प्राक्कथन में लेखक ने अपने उद्देश्यों को स्पष्ट कर भाषा शिक्षण और अधिगम के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और गुड टच बेड टच के माध्यम से लैंगिक अपराधों के प्रति आम लोगों में जागरूकता का संदेश देता है। खेजड़ी, कुरंजा, ऊंट, झोपड़ी और मतीरा (तरबूज) में राजस्थानी संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। अंतिम पृष्ठ के भीतर लेखक के कार्यस्थल राबामावि. इंदावड़ (मेड़ता सिटी) नागौर में किए गए सृजनात्मक कार्यों को ब्लेक बोर्ड पर चित्रित किया है। संविधान की उद्देशिका का प्रकाशन राष्ट्र के नैतिक मूल्यों के साथ प्रस्तुति लेखक की बहुआयामी उद्देश्यों की झलक दिखलाती है।

पुस्तक में सम्मिलित बाल कविताएँ और कहानियां पुस्तक को बाल मनोविज्ञान के अनुकूल बनाती है। परिवेश से जुड़ी बाल कविताएं और संस्कार आदर्श सुलेखों का समावेश पुस्तक को चार चांद लगाती है।

समेरा हिंदी प्रभा पुस्तक लेखक की प्रथम पुस्तक है। पहला प्रयास बहुत ही सराहनीय है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक छोटे बच्चों के लिए बहुत ही उपयोगी होगी।

समीक्षक-**डॉ. रामरतन लटियाल**
आर.पी., सीबीईओ. कार्यालय,
मेड़ता सिटी, नागौर
मो. 9783603087

इबादत

लेखक : नदीम अहमद 'नदीम'; **प्रकाशक** : वत्सल प्रकाशन बीकानेर; **संस्करण**: 2020; **पृष्ठ संख्या**: 160; **मूल्य** : ₹160

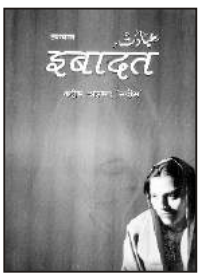

''कहते हैं कि खूबसूरती और व्यावहारिकता का मेल किसी औरत में एक साथ होना दुनिया की दुर्लभ घटनाओं में से एक है। लुबना ऐसी ही बेमिसाल शख्सियत की मालकिन थी। खूबसूरत इतनी कि हर कोई उसे नजर भर देख लेना किसी उपलब्धि से कम नहीं समझता था। लेकिन उससे भी बड़ी बात ये कि बाहरी खूबसूरती से भी लाख गुणा आन्तरिक खूबसूरती

www.rajsevak.com

की ऐसी मिसाल कि जान पहचान वाली उम्रदराज औरतें अपनी बहुओं में लुबना को खोजती थी।''

औरत के आन्तरिक और शारीरिक सौष्ठव को बयान करती इन पंक्तियों के साथ यह उपन्यास पाठकों को शुरू से ही बांध देता है। लेखक नदीम अहमद नदीम वैसे तो सालों से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लगातार लिखते रहे हैं। इनकी 'जुनून' कहानी काफी चर्चित एवं सम्मानित रही है। लघुकथाओं पर इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। 'समय चक्र' लघुकथा संग्रह भी काफी परवान पर चढ़ा पर यह उपन्यास एकदम खास है क्योंकि इस उपन्यास में उन्होंने मुहब्बत को एक नया आयाम दिया है। 'इबादत' इनका पहला उपन्यास है किन्तु कसावट की कसौटी पर एकदम खरा उतरता है। नदीम साहब ने पूरी शिद्दत से उपन्यास के हर पहलू को शब्दों के माध्यम से जीवंत कर दिखाया है। सभी पात्र आसपास ही नजर आते हैं। ऐसा लगता है कि सारी घटनाएँ चारों तरफ बिखरी पड़ी है जिन्हें लेखक ने संवारा है।

इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता है कि इस उपन्यास के नायक नायिका लुबना एवं नवेद के लिए मुहब्बत का अर्थ सिर्फ जिस्मानी मुहब्बत न होकर रूहानी मुहब्बत है। लुबना का विवाह किसी और पुरुष से होने पर भी नायक नवेद की मुहब्बत लुबना के लिए जिन्दा रहती है। प्रेमी-प्रेमिका के बीच हुए सभी सवांद को उसी उम्र के अनुसार दर्शाना लेखक नदीम अहमद नदीम ने यह काम भी बखूबी से किया है।

आज के दौर में इन्सान जो चाहता है उसे वो मिल जाए बहुत कम होता है। इबादत उपन्यास की मुख्य पात्र लुबना भी नवेद को चाहती है लेकिन घर की परेशानियों से मजबूर होकर उसे मुनीर से विवाह करना पड़ता है। हर स्त्री अपने विवाह को लेकर कुछ सपने संजोती है। लुबना ने भी संजोये थे लेकिन चकनाचूर हो गए। मुनीर को तो केवल लुबना का जिस्म ही दिखा उसे उसकी रूह से कोई लेना देना नहीं था। लेखक ने इसे भी लुबना के माध्यम से बहुत ही सलीके से कहलवाया है जैसे ''उसे क्या बताती कि आज की रात के मेरे लिए क्या मायने थे और तुमने इसे सिर्फ मेरे जिस्म से जोड़ दिया है। अरे! जब दिल पर पत्थर रखकर तुम्हारी बीवी बनकर आई हूँ तो अब यह जिस्म तो सौंपना ही है। लेकिन उससे पहले मेरे दिल का हाल भी जान ले। प्यार मुहब्बत की बातें करे लेकिन शायद उसे मेरे दिल मेरी रूह से कोई लेना नहीं था।

इबादत उपन्यास नाम ही के मुताबिक मुहब्बत से लबरेज इबादतों का खज़ाना है। इस उपन्यास का सधा हुआ कथानक सरल स्पष्ट भाषा कैरेक्टर से जुड़ाव इसे बेहद उम्दा उपन्यास बनाते हैं। जिससे पाठक का लगातार जुड़ाव बना रहता है। इबादत उपन्यास का कवर पृष्ठ भी शानदार है और वत्सल प्रकाशन बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं सांखला प्रिन्टर्स बीकानेर द्वारा बहुत ही सुन्दर मुद्रित किया गया है। 160 पृष्ठों में सजा यह उपन्यास अमेजन पर ऑनलाइन भी उपलब्ध है ताकि पाठक घर बैठे ही ऑनलाइन मंगवाकर इस उपन्यास को पढ़ सकता है।

इबादत उपन्यास इसलिए भी खास बन पड़ा है क्योंकि इसमें इश्क मुहब्बत के साथ-साथ मुस्लिम परिवेश एवं शिक्षा के मंदिर कहे जाने वाले विद्यालय का भी चित्रण बखूबी से हुआ है। लेखक नदीम साहब भी पेशे से शिक्षक हैं इसलिए विद्यालयी वातावरण का इतना सटीक एवं स्पष्ट दर्शन हुआ है। इबादत उपन्यास में स्त्री पुरुष के सम्बन्ध रिश्तों की आपसी खींचतान बेमेल रिश्ते सहन करने का हौसला स्त्री पर हावी होता पुरुषत्व के साथ-साथ इन्सानियत और स्त्री की ममतामयी अहसास भी काबिले तारीफ है। इस उपन्यास में लुबना सामाजिक एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों को धैर्य के साथ निभाते-निभाते गलत को गलत कहने का माद्दा रखने वाली भी बनकर उभरी है। स्कूल के ही अन्य शिक्षक दीपक द्वारा जब लुबना का हाथ पकड़ने की कोशिश की तो लुबना ने घायल शेरनी की तरह दीपक को एक जोरदार चांटा रसीद कर दिया। जिसे नदीम साहब ने बहुत ही सच्चाई के साथ उकेरा है। लेखक ने पूरी ईमानदारी से हर घटना का विवरण दिया है। लेखक का पूरा प्रयास रहा है कि हर घटना को उसी तरह रखे जैसे समाज में हो रही है और काफी हद तक यह प्रयास सफल भी रहा है।

लेखक नदीम अहमद नदीम ने इस उपन्यास में एक और नवीन प्रयोग किया है वो है लुबना व नवेद के संवाद को अमृता इमरोज के खतों के जरिये बयान किया है जो बहुत ही सराहनीय है। इस उपन्यास का हर पात्र बहुत ही संजीदगी के साथ उपस्थित होता है और खूबसूरती के साथ बिना बोरियत के अपना किरदार अदा कर विदा भी हो जाता है।

लुबना नवेद को हर बात बताया करती थी चाहे वो स्कूल की हो या घर की या कोई भी। लुबना को नवेद से बात करने पर एक सुकून मिलता था। कुछ समय के लिये वो सबकुछ भूल जाती थी और नवेद भी हमेशा लुबना की बात ध्यान से सुनता था और अपनी राय भी बताता था। इश्क की पराकाष्ठा इसी पंक्ति से स्पष्ट हो जाती है कि इश्क में जिस्मों का मिलना कतई जरूरी नहीं है यहाँ तो रूहानी इश्क सर्वोपरि है। इसका एक उदाहरण ''नवेद भी जानता है कि लुबना का यह अटूट विश्वास उसने कोई दो चार दिन में हासिल नहीं किया है। इस विश्वास को हासिल करने में पैंतीस साल का लम्बा सफर या यूं कहे कि इबादत का ऐसा सफर जो अब तक मुकम्मल नहीं हुआ।''

इस उपन्यास को पढ़ते हुए यह महसूस होता है कि जैसे सबकुछ सामने ही घटित हो रहा हो किसी चलचित्र की भांति। वास्तविकता से अलग होकर न तो उपन्यास की कथावस्तु का निर्माण हो सकता है और न चरित्रों का मार्मिक उद्घाटन। उपन्यास शब्द उप तथा न्यास शब्दों के मेल से बना है जिसका अर्थ है निकट रखी हुई वस्तु। साहित्य के अनुसार उपन्यास वह कृति है जिसे पढ़कर यह लगे कि यह हमारी ही है और इबादत उपन्यास को पढ़कर यही प्रतीत होता है।

एक सामान्य पाठक की तरह गौर से देखने पर साहित्य और समीक्षा किसी अजनबी शब्द की तरह लगते हैं। लिखना एक नदी के प्रवाह की तरह है। लिखने की प्रक्रिया मानो किसी पहाड़ से फूटा झरना है। कुछ लेखक मानते हैं कि कोई है जो उनसे लिखवा लेता है। लेकिन मैं ऐसा नहीं मानता। माहौल परिस्थिति और मनोस्थिति के कारण सृजन खुद ब खुद संभव हो जाता है। हर साहित्यकार की यह दिली तमन्ना है कि लोग उसे सुनें पढ़ें समझें और अपने विचार भी साझा करें। अगर यह हो जाता है तो एक लेखक का लिखना सार्थक है। नदीम साहब को बहुत नज़दीक से जानता हूँ। श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' जी के घर हम दोनों बहुत बार एक साथ ही जाया करते थे। मैंने कई बार श्री यादवेन्द्र जी को नदीम साहब को यह कहते हुए सुना है कि उपन्यास लिखो आप बहुत अच्छा लिख सकते हो। काफी समय बीतता गया नहीं हुआ तो नहीं हुआ। लेकिन आज इबादत उपन्यास पढ़कर लगता है कि चन्द्र जी ने बहुत समय पहले ही भाँप लिया था कि नदीम साहब में बेहतरीन उपन्यासकार बनने के सारे गुण मौजूद है।

इबादत उपन्यास की मुख्य पात्र लुबना ही है उसी के मार्फत ही पूरा उपन्यास चलता है।

www.rajsevak.com

उपन्यास की नायिका लुबना पेशे से शिक्षिका है। जिसका विवाह मुनीर से हो जाता है लेकिन वो बेइंतहा मुहब्बत नवेद से करती है और नवेद भी लुबना से मुहब्बत करता है।इसी का एक उदाहरण देखिए–''मेरी इबादत कुबूल हुई मेरे लिए ठीक वैसा ही है जैसे पुराने वक्त में साधु सन्त, पीर, फकीर, सूफी अपने ईष्ट को खुश करने के लिए रूहानी इबादत करते थे। दीन दुनिया से ऊपर उठकर। रूहानी मुहब्बत को हासिल करना भी मेरे लिए इबादत थी।''

नदीम साहब ने इस मुहब्बत को मुकम्मल बाखूबी दिखाया है।

''नदी समुद्र में मिल चुकी थी। जमीन आसमान एक हो चुके थे। इस रूहानी इबादत के मुकम्मल होने का जश्न सिर्फ खामोशी मना रही थी।''

इबादत उपन्यास बहुत ही काबिले तारीफ उपन्यास है। आज के दौर का मुझे बहुत ही बेहतरीन उपन्यास लगा। उपन्यास की ज्यादा चर्चा न करते हुए मैं यहीं समझता हूँ कि हर पाठक को इसे पढ़ना चाहिए। मेरी पहले की लिखी पंक्तियां इस उपन्यास के नजदीक जान पड़ती है।

प्यार एक प्यारा सा अहसास लगता है।
सब चेहरों में तेरा नूरे नज़र दिखता है।।

इबादत उपन्यास अदबी दुनिया में शोहरत हासिल करें इसी दुआ के साथ नदीम साहब को बहुत–बहुत मुबारकबाद।

समीक्षक–**संजय जनागल**
गली नं. 6, रामपुरा बस्ती, लालगढ़,
बीकानेर–334004
मो. 7597743310

कुछ बचपन ऐसे भी....

लेखक : डॉ. विद्या पालीवाल; **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन, जयपुर; **संस्करण** : नवम्बर 2020; **पृष्ठ संख्या** : 116; **मूल्य** : ₹150

मनुष्य की प्रकृति सृजन की रही है। वह अपने आसपास जो कुछ भी देखता है या महसूस करता है, उसे अपने ही कलात्मक ढंग से संजोए रखना चाहता है। वह अपने चारों ओर के वातावरण से प्रभावित होता है और कई बार उसे सन्तोष या निराशा की अनुभूति होती है। ऐसी ही अनुभूति से जब वह सृजन करता है तो उसकी लेखनी से रचा गया साहित्य आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बन जाता है। बालमन चंचल होता है। उसके मन को हम चाहें तो सकारात्मक दिशा की ओर मोड़ सकते हैं या विध्वंस की तरफ भी ले जा सकते हैं। वह भावुक होता है, कुछ नया करने, सीखने की ललक रखता है। यदि बालक के सामने सकारात्मक सृजन हो तो उसकी ऊर्जा भी सकारात्मक दिशा की ओर प्रवृत होगी। यह तभी संभव हो सकता है जब उसे सकारात्मक सृजन की ओर ले जाया जाए।

आज संचार माध्यमों के नकारात्मक प्रभाव से बालक अपने समाज की परम्पराओं, आचार–विचार, रहन–सहन, बड़े बुजुर्गों के आदर सत्कार आदि नैतिक मूल्यों से दूर हो रहा है। ऐसी स्थिति में सुन्दर संसार का निर्माण का स्वप्न साकार नहीं हो सकता। बाल साहित्य सृजन ऐसा हो, जो बालकों को उद्वेलित करे, उनमें ललक पैदा करे। वे बाल साहित्य की ओर आकर्षित हों। फिर आगे तो बालक अपने आपको पहचान लेंगे और सही मार्ग पर चल पड़ेंगे। ऐसा बाल साहित्य कहानी, नाटक, कविता आदि के रूप में हो सकता है। बाल कथाओं व प्रेरक प्रसंगों का बाल मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। एक अच्छा बालकथाकार भी बालमन से प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकता। ऐसा ही प्रयास डॉ. विद्या पालीवाल ने अपनी बाल साहित्य की कृति 'कुछ बचपन ऐसा भी...' में बखूबी किया है। इस कृति की सभी कहानियाँ व महापुरुषों के जीवन प्रसंग प्रेरणादायी व ज्ञानवर्धक हैं।

डॉ. विद्या पालीवाल बाल साहित्य की एक प्रखर विदुषी हैं। इनकी रचनाएँ बाल मन को गहनता से प्रभावित करती है। 'कुछ बचपन ऐसे भी...' में उन महान व्यक्तियों के बचपन के ऐसे प्रेरणादायी प्रसंग हैं जो अविचलित रूप से बालमन को प्रेरित एवं उद्वेलित करेंगे। प्रत्येक महान पुरुष के बचपन में ऐसी अनेक घटनाएँ हो सकती हैं, जो उनके जीवन की रूपरेखा को ही परिवर्तित कर देती है। महापुरुषों के प्रसंगों का बालकों पर ऐसा प्रभाव होता है, जो कि बालकों की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में ले जाने में सहायक होता है। ऐसे ही अनेक महापुरुषों के प्रसंग रचयिता ने इस कृति में संजोए हैं, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष बाल मन को प्रभावित करते हैं। ऐसा ही एक प्रसंग इस कृति की पहली बाल कथा में दिया है, जब सर्वप्रथम पूज्य श्री गणेश अपने माता–पिता की परिक्रमा को ही इस भूमण्डल की परिक्रमा प्रमाणित करता है। माता–पिता से बढ़कर कौन हो सकता है, जिसकी परिक्रमा की जाए। हमारी सनातन संस्कृति में माता–पिता को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

राष्ट्र प्रेम को प्रदर्शित करने वाली बाल कहानी युगपुरुष चाणक्य की राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य को करने का बोध कराने वाली एक उत्कृष्ट कहानी है। व्यक्तिगत व राष्ट्र कार्यों को अलग–अलग परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है। 'नचिकेता' कहानी चरित्र ज्ञान की एक बेजोड़ कहानी है। ऐसी कहानियाँ बालकों को चरित्रवान बनाने की सीख देती रहेंगी। लोकमान्य तिलक का निःस्वार्थ देश भक्ति प्रेम बालकों को अपने कर्तव्य पथ पर डटे रहने की प्रेरणा देता है। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का जीवन साधारण जीवन जीने का आह्वान करता है। यह प्रेरक प्रसंग मनुष्य को पद या धन का अभिमान नहीं करने का ज्ञान करवाता है। महापुरुषों के जीवन–चरित्र बालकों को बताए जाएं तो ये भी उन जैसे महान बनने की क्षमता विकसित कर सकते हैं।

''हागामुची'' कहानी बालकों को लोगों का जीवन बचाने के लिए अपना जीवन दांव पर लगाने की एक प्रेरक कहानी है। हागामुची ने अनेक लोगों का जीवन बचा कर उदाहरण स्थापित किया है। 'चोर पर दया–हृदय परिवर्तन' बालकथा पवित्र मन व आत्मा की भावनाओं का प्रकटीकरण है। निःस्वार्थ सेवा ही मनुष्य का परमधर्म होना चाहिए। इसी प्रकार एक अन्य बाल कहानी में स्वामी विवेकानंद का प्रसंग छोटे से छोटे जीव या प्राणी की सेवा ही मानव धर्म निभाने की सीख देता है।

महाराजा रणजीत सिंह का दया व करुणा भाव, स्वयं के हत्यारों को क्षमा कर सबसे बड़े मानव धर्म का सन्देश देता है। ऐसी भाव प्रधान कहानियाँ बालकों को पढ़नी ही चाहिए। 'निर्भीक बालक शिवाजी' बाल कथा में राष्ट्र प्रेम व देश के लिए गौरवान्वित अभिमान झलकता है। शिवाजी ने राष्ट्र प्रेम से किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। यह उनके दृढ निश्चय का परिचायक है।

'वीर बालिका–चम्पा' कहानी में महाराणा प्रताप के राष्ट्रप्रेम व देशभक्ति को गौरवान्वित होने की प्रेरणा बालकों को मिलती है। बालकों

www.rajsevak.com

को महापुरुषों के शौर्य व त्याग की कथाएँ सुनाई जाएं या पढ़ने को दी जाएं तो उनमें पैदा होने वाले राष्ट्रप्रेम की तुलना करना असम्भव है। बालिका चम्पा का साहस प्रशंसनीय है। 'वीर बालक हकीकत राय' कहानी हकीकत राय के साहस की एक अभूतपूर्व व श्रेष्ठ कहानी है।

मन की एकाग्रता के बारे में गुरुनानक के विचार बालकों का ध्यान एकाग्र करने की प्रेरणादयी कहानी है। बालक रवीन्द्र नाथ ठाकुर का चरित्र बालकों को प्रतिभाशाली, शीलवान व दृढ़ निश्चयवान बनने की प्रेरणा देता है। इसके अलावा भारतेन्दु हरीश चन्द्र, पं. मदन मोहन मालवीय, गोखले, सुभाष बोस, न्यूटन, श्रीनिवास रामानुजम् आदि से सम्बन्धित प्रेरक प्रसंग प्रेरणादायी, रुचिपूर्ण व पठनीय हैं। बालकों को निसन्देह ऐसे महापुरुषों से सम्बन्धित रचनाएं पढ़ने से लाभ मिलेगा ही।

इस कृति में दो ज्ञानवर्धक बाल नाटिकाएं भी हैं। ये नाटिकाएं बालमन को बखूबी प्रभावित करती हैं। बालक भी विभिन्न अवसरों पर इनका सहजता से मंचन कर सकते हैं। अन्य बालकथाएँ भी भावपूर्ण तथा कथ्य और कथानक की दृष्टि से श्रेष्ठ कही जा सकती है। कुछ रचनाएँ देवी-देवताओं, ईश्वर प्रेम व अध्यात्म से जुड़ी हुई हैं। अच्छा होता कि रचनाकार कुछ और महापुरुषों के प्रेरक प्रसंगों को स्थान दे पाती। इस कृति में कुल 39 कथाएँ व प्रेरक प्रसंग हैं। इनकी भाषा सहज व सरल है। पाठकों को बिना किसी कठिनाई के समझ में आ जाती है। ऐसे प्रसंग बाल-साहित्यकारों द्वारा लिखे ही जाने चाहिए।

बालक ही भविष्य में राष्ट्र के कर्णधार बनेंगे। उनमें बचपन से ही अच्छे गुण विकसित कर संस्कारित किया जाए तो वे भविष्य में राष्ट्र को नई दिशा दे सकते हैं। बालकों को संस्कारवान तथा चरित्रवान बनाया जाना आवश्यक है। इस कृति की रचयिता डॉ. विद्या पालीवाल साधुवाद की पात्र है, जिन्होंने परिश्रम से इस प्रकार के बालोपयोगी प्रसंग एकत्र कर पाठकों के सामने रखे हैं। यह कृति बाल साहित्य की श्रेष्ठ कृति कही जा सकती है। ऐसी सुन्दर पुस्तकों का संग्रह किया जाना चाहिए।

समीक्षक-**रामजीलाल घोड़ेला**
प्रधानाचार्य
राज क्लॉथ स्टोर,
लूनकरनसर-334603 (बीकानेर)
मो. 6350087987

फिरचर पुराण

लेखक : शिवराज छंगाणी; **प्रकाशक** : कलासन प्रकाशन बीकानेर; **संस्करण** : 2021; **पृष्ठ संख्या** : 80; **मूल्य** : ₹ 150

'फिरचर पुराण' के रचयिता रेखाचित्रकार, कवि एवं गीतकार श्री शिवराज छंगाणी हैं। वस्तुतः 'फिरै जिको चरै' की कहावत को लेकर कविवर ने अनुभूतिपरक एवं यथार्थपरक जीवन के चित्र उकेरे हैं। इस संग्रह में गाँव, कस्बे और शहर की परम्परागत संस्कृति को अभिव्यक्त करने का छंगाणी जी ने अनूठा प्रयास किया है। सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ बहुत से रीति-रिवाजों में भी परिवर्तन हुआ है, किन्तु हमारे आदर्श गाँव भी नवीन परिस्थितियों में ढलते हुए राजनीतिक परिवेश में उलझते जा रहे हैं। फिर पुराण वस्तुतः अनुभव पुराण ही प्रतीत होता है। यह पुराण प्राचीन कुण्डलियाँ छंद में लिखा गया है जो अपने आप में काका हाथरसी की तरह स्पष्ट, जीवन संदेश देने वाला प्रभावी पुराण है। कवि-गीतकार छंगाणी जी ने वन, ओरण और ग्रामीण अंचल में उत्पन्न होने वाली विभिन्न जड़ी-बूटियों तथा उनके उपयोगी स्वरूप को भी दर्शाया है। ग्रामीण अंचल की विशेषताओं को भी उजागर किया है-

फिरचर काका कह रया, खेजड़ी का खोखा।
काकड़िया, मतीरा आछा, काचरिया है चोखा।
काचरिया है चोखा, फळी फोफळिया भावै।
मोठ, बाजरा, चणा, साग देसी बण जावै।
कह निधड़क कविराय, मजै रो भोजन कर-कर।
सुखरी लेवै नींद, कह रया काका फिरचर।

फिरचर काका कह रया, गाँव खेत'र ढाणी।
आथूणै रजथान री, सुण घर-घर कहाणी।
सुण घर-घर कहाणी, छाछ राबड़ी सबनै भावै।
खेती खड़ किरसाण, मैंमनी मस्त कहावै।
कह निधड़क कविराय, बात चौपाळा कर-कर।
देय टाबरां सीख, कह रया काका फिरचर।

ग्रामीण, कस्बा और शहरी अनुभवों का यथार्थ परिचय रखते हुए छंगाणी जी ने कुरीतियों, विद्रूपताओं और असंवेदनशील व्यक्तियों और स्वार्थी लोगों पर भी कलम चलाई है ताकि भारतीय एवं राजस्थानी समाज में शुद्ध एवं स्वच्छ वातावरण बने। यह अनुभव पुराण वस्तुतः अनुभूत यथार्थ को प्रकट रखता है।

छंगाणी जी ने संयुक्त परिवार की महत्ता, घर में सुख-सम्पन्न और शान्ति का आधार भी अपने अनुभवों से भलीभाँति समझाया है। परिवार में सभी सदस्यों को बराबर समझने का महत्त्व भी बतलाया है चाहे वह कमाई करने वाला हो अथवा न हो परन्तु वह घर की इकाई का महत्त्वपूर्ण अंग है। एकल परिवार की जगह संयुक्त परिवार में सुख भी है तथा घर के बुजुर्ग के हाथ में सबकी बागडोर रहती है। इस पुराण में अनेक स्थलों के भ्रमण करते हुए सामाजिक व्यवस्था, रहन-सहन का तरीका और सादगीपूर्ण जीवन जीने का महत्त्व भी बतलाया गया है।

छंगाणी जी का यह फिरचर पुराण वस्तुतः कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से सशक्त है तथा सरल भाषा में पाठकों को अपने अनुभव से साझा करवाता हैं। फिरचर पुराण में अनुभव बोलता है, अतः इसे अनुभव पुराण कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। राजस्थानी एवं हिन्दी के लेखक छंगाणी जी निरन्तर निर्लोभपूर्ण रचनाएँ लिखते रहे हैं। इस मौन साधक को अपने लेखन में सदैव संतोष रहा है। इनका सद्व्यवहार सबके लिए प्रेरणास्पद रहा है। उनसे जो मिलते हैं वे उनकी सादगी को देखकर बड़े अचंभित होते हैं। गर्व, घमण्ड, ईर्ष्या से परे हटकर वे सबके प्रति सद्भावी रहे हैं। उनका फिरचर पुराण वस्तुतः चिंतनीय, मननीय एवं पठनीय है। एतदर्थ छंगाणी जी साधुवाद के पात्र हैं। पुस्तक प्रकाशन में श्री कमलनारायण आचार्य और श्रीमती डॉ. कृष्णा आचार्य का अनुपम सहयोग हेतु वे अपने आपको कृतार्थ मानते हैं।

समीक्षक दृष्टिकोण से देखा जाए तो छंगाणी जी अपनी भूल हेतु पाठकों से क्षमा याचना मांगने में भी सरलता दर्शाते हैं। एतदर्थ श्री सोनारामजी विश्नोई, पूर्व अध्यक्ष वेद व्यासजी, श्याम महर्षि एवं राजस्थानी के प्रबुद्ध विद्वान डॉ. भंवरसिंह जी को सदैव कृतज्ञता ज्ञापन करते रहे हैं। कुण्डलियाँ छन्द को पुनर्जीवित करने का उनका प्रयास सराहनीय रहा है।

समीक्षक : **विशन मतवाला**
सुथारों की बड़ी गुवाड़,
बीकानेर (राज.)-334005
मो: 9214953749

www.rajsevak.com

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

भामाशाह सम्मान एवं वृक्षारोपण

झालावाड़। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुढ़ा, ब्लॉक भवानी मंडी में व्याख्याता श्रीमती लक्ष्मीकांता शर्मा द्वारा विद्यालय विकास कोष में 10,100 रुपये की राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर विद्यालय स्टाफ एवं शाला प्रधानाचार्य श्री प्रमोद कुमार बलसोरिया ने श्रीमती शर्मा का आभार प्रकट किया। इसी विद्यालय में सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत वृक्षारोपण किया गया। शाला प्रधानाचार्य श्री प्रमोद कुमार बलसोरिया व सरपंच प्रतिनिधि श्री उल्फत सिंह के नेतृत्व में विद्यालय परिसर एवं गाँव में पौधे लगाए गए तथा उनकी रक्षा का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ अध्यापक श्री जितेन्द्र शर्मा, इको क्लब प्रभारी श्री नईम मोहम्मद, अध्यापक श्री हरिओम शर्मा, कनिष्ठ सहायक श्री सुरेश यादव आदि की उपस्थिति में विद्यालय स्टाफ ने भी विद्यालय परिसर में पौधे लगाएं एवं उनकी रक्षा का संकल्प लिया।

वृक्षारोपण कार्यक्रम मेरा पेड़, मेरी ज़िम्मेदारी

झालावाड़। रा.उ.मा.वि. झालरापाटन में मेरा पेड़ मेरी ज़िम्मेदारी वृक्षारोपण कार्यक्रम का वृक्षारोपण प्रभारी श्री रामप्रसाद कुशवाह के नेतृत्व में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यालय कार्मिकों ने अपने पौधों की देखभाल करने का ज़िम्मा लिया। पेड़ लगाने भर से वृक्षारोपण का महत्त्व नही रहता बल्कि लगाए गए पौधों को पेड़ बनने तक कि ज़िम्मेदारी उठाना ही वृक्षारोपण के पुनीत कार्य को सम्पन्न करना है। सभी पौधों की सुरक्षा के लिए ट्री-गार्ड लगवाए गए। कार्यक्रम को मनोरंजक बनाने के लिए सभी ने अपनी-अपनी स्लोगन तख्तियाँ बनाई और "Selfie With My Tree" के फोटो लेकर कार्यक्रम को रुचिकर रूप दिया। विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती प्रभा सेन ने सभी स्टाफ सदस्यों के साथ वृक्षों की सुरक्षा का संकल्प लेते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

आज़ादी के 75 वें वर्ष के अवसर पर स्कूल में लगाए औषधीय व सजावटी पौधे

जीरावल। संघवी हंसराज कानाजी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जीरावल, में आज भारत की आजादी के 75 वें वर्ष के अवसर पर आयोजित अमृत महोत्सव व राज्य सरकार की 'बा-बापू वन योजना' के तहत औषधीय व सजावटी पौधों का रोपण किया गया। जीरावल ग्राम के भामाशाह श्री कैलाश कुमार पुनमाजी पुरोहित ने पंद्रह हजार व भामाशाह अर्जुनराम छोगाराम जी पुरोहित द्वारा बारह हजार पाँच सौ रुपये मूल्य के पौधे उपलब्ध करवाने पर प्रधानाचार्य श्री कमल कांत शर्मा द्वारा भामाशाह का आभार प्रकट किया गया। राज्य सरकार की योजना घर-घर औषधि योजना अनुसार विद्यालय में तुलसी, कालमेघ, अश्वगंधा, नीम गिलोय व ग्वारपाठे के पौधों का रोपण सेवानिवृत शिक्षक व भामाशाह श्री दानाराम गर्ग व प्रधानाचार्य के कर कमलों द्वारा किया गया। इको क्लब प्रभारी श्री मुकेश पुरोहित ने बताया कि जीरावल गाँव के भामाशाह अर्जुन जी पुरोहित द्वारा वृक्षारोपण हेतु उपलब्ध करवाए। घर-घर औषधि योजना के तहत आज चालीस पौधे लगाए गए। साथ ही वर्षपर्यंत पानी हेतु ड्रीप व्यवस्था की गई है। इस अवसर पर अतिथियों द्वारा पक्षियों हेतु परिंडा भी लगाया गया। भामाशाह के सहयोग से अब तक विद्यालय में 340 पौधे स्टॉफ व स्काउट व छात्र छात्राओं के द्वारा पौधारोपण कर चुके हैं। विद्यालय के वृक्षारोपण अभियान में सर्वश्री मीठालाल मीना, रमेश चंद्र, लक्ष्मी सुथार, भादरनाथ सिद्ध, चेतराम, दिनेश गर्ग, अरविंद कुमार, मनोज देव, जगदीश कुमार, मफतराम जोशी, रमेश महेंद्र कुमार, अनिता, रामराज गुर्जर, रमेश कुमार व छात्र प्रह्लाद कुमार, रवि व सुरेश ने वृक्षारोपण अभियान में सहयोग किया।

भामाशाह मनसुख सिंह बालावत ने बालिका विद्यालय मोकलसर में ग्रीन बोर्ड किया भेंट

मोकलसर। मेराम चंद हूंडिया रा.बा.उ.मा.वि. मोकलसर में मोकलसर के भामाशाह श्री मनसुख सिंह पुत्र श्री उदय सिंह बालावत,

www.rajsevak.com

'अल्का स्टोन' ने विद्यालय में ग्रीन बोर्ड भेंट किया। तथा विद्यालय में सदैव सहयोग देने की बात कही। वरिष्ठ अध्यापक श्री जितेन्द्र की प्रेरणा से यह सराहनीय कार्य किया। विद्यालय के कार्यवाहक प्रधानाचार्य श्री भरत कुमार सोनी ने विद्यालय को सहयोग देने के लिए भामाशाह का आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर व्याख्याता सर्वश्री जगदीश विश्नोई, ओम प्रकाश पटेल, फरसा राम धवल, हीरा राम गर्ग, अध्यापिका सजना कुमारी, रेखा जाट, लिपिक जेठु सिंह, मुकेश कुमार, सागर देवी और समाजसेवी भोमाराम बामणिया सहित विद्यालय के स्टाफ उपस्थित रहे।

विद्यालय में नवनिर्मित प्याऊ का भामाशाह द्वारा उद्घाटन

पाली। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पालड़ी जोड़, पं.स.-सुमेरपुर (जिला-पाली) में 15 अगस्त, 2021 को 75 वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर भामाशाह श्री हीराचंद जैन व श्री पारसमल जैन द्वारा ठन्डे पेयजल हेतु प्याऊ व वाटर कुलर की भेंट दी गयी, जिसकी लागत 1,61,000 रही। इसके लोकार्पण पर प्रधानाचार्य ने भामाशाह का सम्मान करते हुए आभार व्यक्त किया।

महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय अजमेर में क्राफ्टकॉर्नर का शुभारम्भ

वैशाली नगर अजमेर। महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) में आज़ादी का अमृत महोत्सव 75वाँ स्वाधीनता दिवस समारोह मनाया गया। इस कार्यक्रम में स्थानीय विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती विजय लक्ष्मी यादव ने झंडारोहण करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत की। कार्यक्रम के आरम्भ में विद्यालय के संस्कृत शिक्षक डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी द्वारा सरस्वती वन्दना की गई। कार्यक्रम में विद्यालय के स्टाफ सदस्यों तथा बी.एड. इंटर्नशिप कर रहे विद्यार्थियों द्वारा देशभक्ति गीत

प्रस्तुत किए गए। आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए विद्यालय में क्राफ्ट कॉर्नर का भी शुभारंभ किया गया। क्राफ्ट कॉर्नर में कोरोना काल में हुई ऑनलाइन प्रतियोगिता में श्रेष्ठ प्रविष्टियों को स्थान दिया गया। क्राफ्टकॉर्नर में आज़ादी के अमृत महोत्सव से सम्बंधित रचनाओं की प्रदर्शनी भी विद्यालय में लगाई गयी। इसमें लगायी गयी सभी रचनाओं को एस.डी.एम.सी. एवं एस.एम.सी. के सदस्यों ने भी सराहा। कार्यक्रम के अन्त में विद्यालय प्रधानाचार्या श्रीमती विजय लक्ष्मी यादव ने सभी का आभार जताया।

स्कूल पुस्तकालय में पुस्तकें भेंट

बीकानेर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पलाना, बीकानेर में कला शिक्षक श्री भूरमल सोनी द्वारा स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर पुस्तकालय में पुस्तकें भेंट की गई। आध्यात्मिक, नैतिक कहानियाँ, साहित्य, श्रीमद्भागवत गीता, रामायण, पर्यावरण संरक्षण, स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनी, जैन-धर्म, राजस्थानी कविताएँ, कहानियाँ, सोरठा, बाल साहित्य, बालकों के अधिकार कर्त्तव्य, यातायात नियमों एवं जनरल नालेज से सम्बन्धित साठ उपयोगी पुस्तकें विद्यार्थियों के लिए भेंट की। इस पर संख्या प्रधान के आभार व्यक्त किया।

बालिका विद्यालय मोकलसर में नेशनल रूरल आईटी क्विज 2021 का आयोजन

बाड़मेर- मेराम चंद हूंडिया रा. बा. उ. मा. वि. मोकलसर (बाड़मेर) में मंगलवार को नेशनल रूरल आईटी क्विज 2021 के प्रथम चरण का विद्यालय स्तर पर आयोजन किया गया। क्विज में कक्षा आठवीं से बारहवीं तक की पंद्रह बालिकाओं ने भाग लिया। क्विज संचालन श्री कुमार जितेन्द्र वरिष्ठ अध्यापक गणित द्वारा किया गया। जिसमें लिखित क्विज मूल्यांकन

www.rajsevak.com

के आधार पर प्रथम आरुषि कक्षा 10 वीं, द्वितीय दीक्षिता कक्षा 9 वीं, तृतीय भूमिका कक्षा 10 और चतुर्थ स्थान पर साक्षी सोनी कक्षा 12 वीं रही। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सुरेश कुमार ने सभी बालिकाओं का हौंसला अफजाई करते हुए बधाई दी गई। इस अवसर व्याख्याता सर्व श्री भरत कुमार सोनी, फरसा राम मेघवाल, वरिष्ठ अध्यापक माँग सिंह, अध्यापक हीराराम गर्ग, लिपिक जेठु सिंह, मुकेश कुमार, सहायक कर्मचारी तुलसी बाई सहित क्रिज में भाग लेने वाली छात्राएँ उपस्थित रही।

स्वतंत्रता दिवस पर झंडारोहरण किया गया

जालौर। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लालपोल, जालोर में 75 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानाध्यापक सुरेंद्र सिंह परमार ने ध्वजारोहण किया। सामूहिक राष्ट्रगान हुआ। इस अवसर शारीरिक शिक्षक सर्वश्री दलपत सिंह आर्य, अध्यापक श्यामसिंह, राजेश बालोत, स्वीटी सिसोदिया, पवनी देवी, पंखु देवी तथा छात्र अध्यापक उपस्थित थे। अंत में मिष्ठान वितरित किया गया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया

कोटा। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कैथून जिला कोटा में स्वतंत्रता दिवस समारोह के मुख्य अतिथि श्री रवि कत्याल, डायरेक्टर,, (स्कूल शिक्षा विभाग) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली थे, विशिष्ट अतिथि डॉ धर्मवीर सिंह, सहायक निदेशक, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, जयपुर, श्री पुरषोत्तम गर्ग एवम श्री संजय कुमार मीणा, सहायक परियोजना समन्वयक समसा कोटा रहे। अध्यक्षता प्रधानाचार्य श्री अशोक गुप्ता ने की। समारोह में एसडीएमसी सदस्य श्री शंभू दयाल तंवर एवम श्री हरिओम पुरी वाइस चेयरमैन नगर पालिका कैथून भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में महात्मा गांधी एवम चंद्र शेखर आजाद की प्रतिमा पर अतिथियों ने माल्यार्पण किया। कार्यक्रम का संचालन श्री विपिन कुमार शर्मा ने किया। सभी अतिथियों ने शाला परिसर में सघन पौधारोपण अभियान के तहत पौधारोपण भी किया।

मॉडल स्कूल सूरतगढ़ में खेजड़ी उत्सव आयोजित

श्रीगंगानगर। गुरु पूर्णिमा पर स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल सूरतगढ़ में खेजड़ी उत्सव का आयोजन कर 20 पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारियों को 3500 खेजड़ी के पौधे निःशुल्क वितरित किए गए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि यूएनओ के लैंड फॉर लाइफ अवॉर्ड से सम्मानित प्रोफेसर श्री श्याम सुन्दर ज्याणी ने संबोधित करते हुए कहा कि पारिवारिक वानिकी के तहत पौधों को अपने परिवार का अभिन्न अंग मानकर वृक्ष बनने तक उसकी देखभाल करने से ही जलवायु परिवर्तन की विकराल समस्या से बचा जा सकता है व ऑक्सीजन की किल्लत को दूर किया जा सकता है। श्री अमृतपाल एसीबीईओ द्वितीय ने अपने उद्बोधन में कहा कि पारिवारिक वानिकी की इस मुहिम को हम आगे बढ़ाते हुए प्रत्येक घर तक लेकर जाना है व शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास होना चाहिए न कि आजीविका तक सीमित रहे। इस उत्सव में विशिष्ट अतिथि निदेशक केन्द्रीय फॉर्म श्री आर.के. दाधीच क्षेत्रीय वन अधिकारी श्री श्याम दीन भुट्टो, एसीबीईओ श्री अमृतपाल, शिक्षाविद् श्री प्रवीण भाटिया, डीएसपी श्री शिवरतन गोदारा रहे। प्रधानाचार्य श्री बजरंग लाल भादू ने उत्सव में पधारे तमाम अतिथियों का आभार प्रकट किया।

वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया

अलवर। स्थानीय विद्यालय थानागाजी में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन प्रधानाचार्य डॉ. परमानंद शर्मा की अध्यक्षता में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व प्रधान व वर्तमान सरपंच प्रतिनिधि श्री मातादीन गुर्जर उपस्थित रहे। वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत विद्यालय में कार्यरत समस्त स्टाफ सदस्यों द्वारा स्वयं के खर्चे पर एक गुरुजी-एक वृक्ष की अवधारणा के आधार पर कुल 21 वृक्ष लगाकर उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी ली गई। मुख्य अतिथि द्वारा वृक्षारोपण के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा अधिकाधिक वृक्षारोपण के लिए लोगों को प्रेरित किया। अध्यक्ष महोदय द्वारा उपस्थित सभी व्यक्तियों का अभिनंदन व आभार प्रकट करते हुए सभी से आग्रह किया गया कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा जन्मोत्सव, विवाहोत्सव के आयोजन पर एक वृक्ष लगाकर उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी ली जावे। ताकि पर्यावरणीय समस्याओं से निजात पाया जा सके। इस मौके पर श्री रोहिताश कुमार (व्या. इतिहास) श्री बलराम रैगर (व्याख्याता) श्रीमती नयना मीणा (व्याख्याता) श्री हजारी लाल सैनी (व.अ.) श्री कन्हैयालाल कुलदीप (व.अ.) श्री सुरेश चन्द यादव (व.अ.) श्री शेरसिंह सोलंकी (व.अ.) श्री कन्हैयालाल कुलदीप (व.अ.), श्री नंदलाल (अध्यापक), श्री मनोज कुमार रैगर (अध्यापक), श्रीमती ममता जोशी (अध्यापिका), श्री नेताराम सोनी (व. सहायक) उपस्थित रहे।

भामाशाह द्वारा प्रिंटर भेंट किया गया

बीकानेर– ब्लॉक विद्यालय रा.उ.मा.वि. सींथल के सेवानिवृत्त शिक्षक श्रीमान श्री अशोक कुमार तनेजा द्वारा विद्यालय को प्रिंटर भेंट किया गया। प्रधानाचार्य श्रीमती रेणुबाला स्वामी ने बताया कि विद्यालय में कोविड-19 के कारण बच्चों को गृहकार्य प्रिंट करके देने हेतु विद्यालय को प्रिंटर की बहुत अधिक आवश्यकता थी। चूंकि पुराना प्रिंटर खराब हो चुका था इसलिए प्रिंटर की बहुत अधिक आवश्यकता थी। इसके समाधान हेतु श्रीमान अशोक जी ने अपनी सेवानिवृत्ति के अवसर पर 20,500/- रुपये का प्रिंटर खरीद कर विद्यालय को भेंट किया। विद्यालय परिवार उनका हार्दिक आभार व्यक्त किया। विद्यालय परिवार द्वारा अशोक जी को भामाशाह सम्मान पत्र व शॉल ओढ़ा कर धन्यवाद ज्ञापित किया।

संकलन : प्रकाशन सहायक

www.rajsevak.com

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

सिंधु का कमाल

टोक्यो– टोक्यो ओलंपिक से खुशखबर! भारत की महिला बैडमिंटन स्टार पीवी सिंधु ने रविवार को चीन की जियाओ हे बिग को हराकर टोक्यो ओलंपिक में महिला एकल का कांस्य पदक जीत लिया। रियो ओलंपिक में रजत पदक जीतने वाली सिंधु ने बिंग को 52 मिनट में 21-13, 21-15 से हराया। उन्होंने कहा, टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीतना रियो के रजत पदक से बहुत ज्यादा मुश्किल था। वे लगातार दो ओलंपिक पदक जीतने वाली भारत की पहली महिला खिलाड़ी बन गई है। इससे पहले पहलवान सुशील कुमार ने 2008 के बीजिंग ओलंपिक और 2012 के लंदन ओलंपिक में पदक जीता था।

वैज्ञानिकों का एक और कारनामा, पानी से बनाया सोना

प्राग– प्राचीनकाल से धातुओं और रसायन के मिश्रण से सोना बनाने के काफी प्रयास हुए है। इस विधा को एल्कमी या रस विद्या कहा जाता है। वैज्ञानिकों ने कुछ हद तक एल्कमी की पहेली सुलझा ली है। शोधकर्ताओं ने पानी से ही सोना बना डाला। चेक गणराज्य में प्राग की चेक एकेडमी ऑफ साइंसेज में यह कारनामा भौतिक रसायनविदों ने क्षारीय धातु की मदद से कर दिखाया। उन्होंने पानी को सुनहरी चमकीली धातु में बदल दिया। आम तौर पर किसी चीज पर बहुत ज्यादा दबाव डालने से वह धातु में तब्दील हो सकती है। क्षारीय धातु सोडियम-पोटैशियम जैसे प्रतिक्रियाशील तत्वों का समूह होती है। चुनौती यह है कि पानी के संपर्क में आने पर यह विस्फोट में तब्दील हो जाती है। इसके लिए ऐसा प्रयोग तैयार किया गया, जिससे प्रतिक्रिया धीमी हो जाए और विस्फोट न हो। एक सिरिंज को पोटैशियम और सोडियम से भरा गया, जो सामान्य तापमान पर तरल होता है। इसे निर्वात चेंबर में रख दिया गया।

भारतीय मूल की नताशा पेरी सबसे होनहार

वॉशिंगटन– अमरीकी विश्वविद्यालय ने भारतीय मूल की 11 वर्षीय नताशा पेरी को दुनिया की सबसे प्रतिभाशाली छात्रा घोषित किया है। वह न्यू जर्सी के थेल्मा एल सैंडमीयर एलीमेंट्री स्कूल में पढ़ती है। उसने स्कूली मूल्यांकन परीक्षा (सैट) व अमरीकी कॉलेज परीक्षा (एसीटी) में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया। अमरीका का युवा प्रतिभा केन्द्र दुनियाभर के मेधावी छात्रों की पहचान व उनकी वास्तविक शैक्षणिक क्षमताओं की स्पष्ट तस्वीर के लिए खोज परीक्षा आयोजित करता है। इस बार परीक्षा देने वाले 84 देशों के करीब 19 हजार विद्यार्थियों में नताशा शामिल थी। उसने पाँचवी कक्षा में रहते यह परीक्षा दी थी। वह परीक्षा का उच्च सम्मान हासिल करने में सफल रही। मौखिक वर्ग में उसे 90 प्रतिशत अंक मिले।

भारत ने लद्दाख में बनाई दुनिया की सबसे ऊँची सड़क

नई दिल्ली– सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) ने पूर्वी लद्दाख में 19,300 फीट की ऊँचाई पर दुनिया की सबसे ऊँची सड़क का निर्माण कर रेकॉर्ड बनाया है। रक्षा मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि सड़क का निर्माण माउंट एवरेस्ट बेस कैम्प से अधिक ऊँचाई पर किया है। नेपाल में साउथ बेस कैम्प 17,598 फीट की ऊँचाई पर है, जबकि तिब्बत में नॉर्थ बेस कैम्प 16,900 फीट पर है। अधिकांश बड़े वाणिज्यिक विमान 30,000 फीट और उससे अधिक ऊँचाई पर उड़ान भरते है। इससे इस सड़क की ऊँचाई का अंदाजा लगाया जा सकता है। उमलिंग ला दर्रे पर बनी सड़क से बोलीविया में 18,953 फीट की सड़क का रेकॉर्ड टूट गया है। लद्दाख में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ऊँची सड़क से जुड़ गया है।

दूरदराज के आदिवासी इलाकों को रोशन करेगी पोर्टेबल बैटरी

बेंगलूरु की प्रेरणा वाडिकर को हाल में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, यूके के वाइस चांसलर्स सोशल इंपेक्ट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह अवॉर्ड पावर बैंक की तरह दिखने वाली डिवाइस के आविष्कार के लिए मिला है। यह एक लिथियम आयन पोर्टेबल बैटरी है। वर्ष 2010 में ऑक्सफोर्ड के पूर्व कुलपति प्रो. एंड्रयू हैमिल्टन की ओर से सोशल इंपेक्ट अवॉर्ड शुरू किया गया था, जो हर साल यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स को सामाजिक क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए दिया जाता है। प्रेरणा एक ग्लोबल कंपनी की उद्यमी हैं और उन्होंने सौर ऊर्जा पर आधारित ऐसी पोर्टेबल बैटरी ईजाद की है, जो छोटे और मध्यम उद्योग में रोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। आइआइएम, बेंगलूरु से पब्लिक पॉलिसी में मास्टर्स डिग्री करने वाली प्रेरणा ने कहा कि यह डिवाइस अन्य बैटरी की तुलना में पाँच गुना तेजी से चार्ज हो सकती है और इससे एक साथ तीन डिवाइस को चलाया जा सकता है।

दमका देश का लाल

टोक्यो– नीरज चौपड़ा ने ओलंपिक में अपने भाले की नोंक से ओलंपिक में इतिहास रच दिया। आधुनिक ओलंपिक के पिछले 125 वर्ष के इतिहास में पहली बार भारत को एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक दिलवाया। नीरज की इस उपलब्धि से देश का भाल (मस्तक) दुनिया भर में और ऊँचा हुआ। भारतीय सेना के सूबेदार नीरज चौपड़ा की ओलम्पिक में स्वर्णिम विजय का जश्न यों तो पूरा देश मना रहा है लेकिन राजस्थान की खुशी और भी अधिक है। नीरज सेना की जिस 4 राजपूताना रायफल्स से ताल्लूक रखते हैं, वह फिलहाल उदयपुर में तैनात है। नीरज की जीत के बाद से ही यूनिट के अधिकारी और अन्य सैन्यकर्मियों में जश्न का माहौल है। नीरज 2016 में स्पोर्ट्स कोटे से सीधे हवलदार पर सेना में भर्ती हुए थे। इसके बाद 5 वर्षों से अपनी यूनिट से अलग जर्मनी में प्रशिक्षण ले रहे थे। कठिन परिश्रम और सेना के उच्च मानदण्डों के दम पर आखिर उन्होंने अपने सपनों को मुकाम दिया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

www.rajsevak.com

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, टपूकड़ा, ब्लॉक-तिजारा, अलवर

❒ नीलम यादव

शिक्षा हर मनुष्य के लिए अत्यन्त अनिवार्य घटक है। बिना शिक्षा के मनुष्य को पशु की श्रेणी में रखा जाता है। लेकिन बात जब बालिका शिक्षा की हो तो यह और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। बालिकाओं पर किसी भी देश का भविष्य निर्भर करता है क्योंकि यह परिवार की केन्द्रीय इकाई होती है। प्राचीन काल में भी बालिका शिक्षा का विशेष प्रबंध होता था।

टपूकड़ा औद्योगिक क्षेत्र जिसकी पहचान पूरे भारतवर्ष में ही नहीं अपितु पूरे विश्व भर में है, यहाँ स्थित एकमात्र बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय संसाधनों के अभाव व पर्याप्त भवन की कमी से जूझ रहा था। आमजन की उदासीनता, अध्ययन-अध्यापन के लिए पर्याप्त स्थान न होना, पाठ्य सहगामी गतिविधियों के लिए स्थान नहीं होना जैसे कई कारणों से बालिकाओं के सपने उड़ान नहीं भर पा रहे थे लेकिन कहते हैं भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं।

रहेगी जब तलक दुनिया
ये अफसाना बयां होगा ।
यहाँ शिक्षित होगी बालिका
तो बदला-बदला जहाँ होगा।।

संस्थाप्रधान व विद्यालय स्टॉफ की प्रेरणा से भामाशाह श्री हरिओम गुप्ता जी व शिव मंदिर कमेटी द्वारा नए विद्यालय परिसर हेतु भूमि दान की गई जिस पर होंडा कॉर्स इंडिया लिमिटेड खुशखेडा ने नए विद्यालय भवन का निर्माण करवाया।

चिड़ी चौंच भर ले गई नदी न घटियो नीर।
परमार्थ के कारणे साधुन धरा शरीर।।

इसी क्रम में साधु स्वरूप श्री हरिओम गुप्ता के द्वारा कन्या महाविद्यालय के लिए भी भूमि दान करने का संकल्प लिया गया है।

दौलत के संग पाई है दिलदारी भरपूर।
आपके जैसा दूसरा दानी नहीं हुजूर।।

होंडा कॉर्स लिमिटेड द्वारा सीएसआर गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा, चिकित्सा, पर्यावरण क्षेत्र में सहयोग प्रदान किया जाता रहा है। इसी क्रम में कंपनी द्वारा विद्यालय में ज्ञान

संकल्प पोर्टल के विकल्प Create your Own Projects में जनवरी 2019 में स्वीकृति हेतु सबमिट किया गया। निर्माण स्वीकृति पश्चात कंपनी द्वारा फरवरी 2019 में कार्य शुरू किया गया था जो लगभग एक वर्ष उपरांत मार्च 2020 में कुल 08.33 करोड़ की लागत से विद्यालय का नवीन भवन बनकर तैयार हुआ।

श्रीमती अनू मेहता DGM एवं CSR हेड होण्डा कॉर्स लिमिटेड ने बताया की विद्यालय भवन को पूर्णतया: आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया गया है जिसमें कंपनी द्वारा निम्न कार्य करवाए है-

- 20 कक्षा कक्ष मय फर्नीचर
- पुस्तकालय कक्ष (50 विद्यार्थियों की बैठक क्षमता)
- जीव, रसायन, भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला मय उपकरण।
- आई.सी.टी . लैब एवं डिजिटल टेब लैब
- रसोईघर एवं मिड डे मील कक्ष (120 विद्यार्थी बैठक क्षमता)
- जलघर (आरओ मय वाटर कूलर)
- चारदीवारी मय मुख्य प्रवेश द्वार
- 02 बैडमिंटन कोर्ट (खेल कक्ष एवं खेल उपकरण)
- भवन की बिजली व्यवस्था हेतु सोलर सिस्टम 20 किलोवाट

इसके साथ ही विद्यालय संचालन मंच एवं प्रवेश द्वार से मुख्य भवन तक चारदीवारी के साथ वृक्षारोपण कर विद्यालय को आकर्षक बनाया गया है। प्रधानाचार्या एवं विद्यालय स्टाफ पर्यावरण के प्रति विशेष रुचि रखते हैं उन्होनें स्वयं वृक्षारोपण व किचन गार्डन तैयार करवाया है। कंपनी द्वारा पूरे भवन में प्लास्टिक पेंट रंग रोगन के कार्य व दीवारों व बरामदों में ज्ञानवर्धक चित्र प्रेरणदायक व उपदेशात्मक स्लोगन व मानचित्र बनवाए गए हैं।

वर्तमान में बालिकाओं के लिए सहशैक्षिक गतिविधियाँ Online चलाई जा रही है। ग्रीष्मावकाश में भी बालिकाओं ने ऑनलाइन प्रतियोगिताओं में भाग लेकर राष्ट्रीय स्तर पर टपूकड़ा की पहचान बनाई है। भविष्य में भी इसी प्रकार से कस्बें का नाम रोशन करने का इरादा रखती है।

जीत के खातिर बस जुनून चाहिए।
जिसमे उबाल हो ऐसा खून चाहिए।।
ये आसमां भी आ जाएगा जमीं पर।
बस इरादों मे जीत की गूंज चाहिए।।

इन्हीं जुनूनी इरादों को लेकर सम्पूर्ण विद्यालय परिवार होण्डा कॉर्स इंडिया लिमिटेड के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते हुए अनन्त ऊँचाइयों को छूना चाहता है। प्रत्येक बालिका के हृदय से भामाशाहों व होण्डा कॉर्स के लिए सदा-सदा के लिए दुआएँ निकलती रहेगी जिन्होंने इनके सपनों को साकार करने के लिए खुला आसमान दिया।

प्रधानाचार्या ,
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय टपूकड़ा,
तिजारा, अलवर (राज.)

www.rajsevak.com

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से
राजकीय विद्यालयों को माह–जुलाई 2021 में 50 हजार एवं अधिक दान देने वाले दानदाता

S. No.	Donar Name	School Name	District	Amount
1	VINOD KUMAR RAHAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	350000
2	PURAN MAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	250000
3	KANARAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BOYAL PALI (221167)	PALI	200000
4	SATYVEER PAYAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	150000
5	SUNIL TRANSPORT COMPANY	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	132000
6	SHANKAR LAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SADASAR (215291)	CHURU	125000
7	GANPATI BUILDERS	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GANESHGARH (211993)	GANGA NAGAR	100100
8	KULDEEP RAHAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	100000
9	DHANNA RAM JAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GENANA (213466)	NAGAUR	100000
10	RAMKARAN GODARA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	100000
11	RATAN LAL KASWAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	100000
12	BHART SINGH RAHAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	100000
13	VIJAY KUMAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	100000
14	UPENDRA SHARMA	SHAHEED NEMICHAND GOVT. GIRLS SECONDARY SCHOOL KHUDI BADI (213213)	SIKAR	100000
15	SUNITA KUMARI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	100000
16	MAHAVEER PRASAD DHINDHWAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	100000
17	RAMCHANDAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	100000
18	OM PRAKASH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	86600
19	HARVINDER SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL 8 SDS (211977)	GANGA NAGAR	82000
20	RAJPAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KALANA TAL (215249)	CHURU	80000
21	PAWAN KUMAR AGARWAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SAHAWA (211542)	CHURU	79800
22	RAMNIWAS JANGID	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NUWA (219802)	NAGAUR	78000
23	JASWANT SINGH POONIA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	71000
24	GHARSI RAM SUTHAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	70000
25	RANVEER SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	70000
26	JAYPRAKASH SIHAG	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	67100
27	MAN SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KALANA TAL (215249)	CHURU	64000
28	SUBHASH CHANDRA MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHARLA (215474)	CHURU	60000
29	ASHOK KUMAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	53000
30	RAVINDRA SINGH RAO	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NAYI AABADI PARSOLI BEGUN (224080)	CHITTAUR GARH	51000
31	SURENDRA SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NALWA (224773)	PRATAP GARH	51000
32	JAGDISH KUMAR	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL BRAHAMNO KA BAS (426543)	CHURU	50000
33	SATYAVEER SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	50000
34	KARMVEER SINGH	SENA MEDAL SHAHEED SUBEDAR HARNAND RAY GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SHEKHSAR (211571)	JHUNJHUNU	50000
35	SUSHILA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	50000
36	KASI RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	50000
37	RAMDEV SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NABIPURA (213141)	SIKAR	50000
38	HANS RAJ GAHLOT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	50000
39	KAILASH PRASAD	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	50000
40	SOHAN RAM REWAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DEENDARPURA (219773)	NAGAUR	50000

www.rajsevak.com

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–जुलाई 2021 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	109	3423061
2	NAGAUR	158	422499
3	SIKAR	128	309260
4	CHITTAURGARH	55	305751
5	PALI	36	287700
6	GANGANAGAR	23	224553
7	RAJSAMAND	665	203465
8	JHUNJHUNU	43	180080
9	KOTA	128	140789
10	BANSWARA	211	138662
11	JAISALMER	69	105421
12	DHAULPUR	16	92100
13	BUNDI	28	67480
14	PRATAPGARH	17	67010
15	BHILWARA	80	65492
16	DUNGARPUR	30	61271
17	AJMER	227	60303
18	JAIPUR	70	54463
19	UDAIPUR	107	53829
20	TONK	9	46100
21	BARAN	7	44500
22	ALWAR	25	34357
23	BIKANER	22	33483
24	JODHPUR	15	30400
25	BARMER	20	29852
26	BHARATPUR	6	19750
27	KARAULI	14	15400
28	SIROHI	10	8360
29	JALOR	6	6810
30	JHALAWAR	4	6300
31	SAWAIMADHOPUR	7	2680
32	HANUMANGARH	11	2270
33	DAUSA	0	0
	Total	**2356**	**6543451**

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृति प्रोजेक्ट :–

विभिन्न औद्योगिक घरानों/संस्थाओं/व्यक्तिगत दानदाताओं द्वारा राजकीय विद्यालयों में सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से स्वीकृति हेतु ज्ञान संकल पोर्टल के विकल्प Create your own Projects में Project Submit किए गए। 01 अप्रैल 2021 से जुलाई 2021 तक 489.26 लाख की लागत के कुल 19 Projects स्वीकृत किए गए है, उक्त अनुमोदित/स्वीकृत किए गए Project में से 01 लाख से अधिक की लागत वाले Project निम्नानुसार है :–

क्र.सं.	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	प्रोजेक्ट संख्या	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत/व्यय
01	टाइगर फॉर सिक्योरिटी एण्ड फेसिलिटाइस इण्डिया प्रा. लिमिटेड	810	उदयपुर जिले के राउमावि पुरिया खेड़ी के नवीन भवन का निर्माण	221 लाख
02	श्रीराम पिस्टन	811, 805, 804, 796, 795	अलवर जिले के राबाउमावि तिजारा में 05 कक्षा–कक्ष, चारदीवारी, 03 रूम में फर्श, रसोईघर, एवं विद्यार्थियों को यूनिफार्म, छात्रवृति इत्यादि सुविधा, उप्रावि बाहदरी व चौपंकी विद्यालय में आर.ओ. व वाटर कूलर, मावि बीरमपुर में ट्यूबवैल एवं जलघर, मरम्मत इत्यादि कार्य	100.25 लाख
03	एच.जी इन्फ्रा इन्जीनियरिंग लिमिटेड	792	उदयपुर के उप्रावि मूलवास व प्रावि राया एवं राजसमंद के मावि घोदच व मावि देलवाड़ा विद्यालयों में शौचालय, चारदीवारी, जलघर मय आर.ओ., कक्षा–कक्ष मरम्मत के कार्य	55.98 लाख
04	श्री विजय शांति सूरी सेवार्थ ट्रस्ट,	803	श्री धर्मतीर्थ शान्तिदेव राउमावि माण्डोलीनगर, जालौर में 05 कक्षा कक्षों का निर्माण कार्य	50 लाख
05	द ड्रीम वेलयफेयर सोसायटी	808	जयपुर संभाग के 100 राजकीय विद्यालयों में इन्सीनेटर मशीन	35 लाख
06	कम्प्यूकॉम सॉटवेयर लिमिटेड	798	दौसा (02), भरतपुर(01), सवाई माधोपुर(01), जयपुर(01), सीकर(01), नागौर (01) एवं बाड़मेर(01) कुल–08 विद्यालय में सेटेलाइट एज्यूकेशन लैब की स्थापना	15.67 लाख
07	श्री प्रेम गिरी	809	नागौर जिले के राउप्रावि शिवनगरी, डीडवाना में 01 कक्षा–कक्ष मय बरामदा	5.42 लाख
08	ए.यू स्माल फाइनेस लिमिटेड	799, 800 801	जयपुर जिले के 03 राजकीय विद्यालयों में कम्प्यूटर, प्रिन्टर, प्रोजेक्टर फ्लोर मेट। भरतपुर जिले के बहनेरा विद्यालय में वाटर कूलर एवं अलवर जिले के बानसूर विद्यालय में विद्यार्थियों हेतु जूतों का वितरण	1.64 लाख
09	श्री अरविन्द कुमार अग्रवाल	797	महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय प्रागपुरा, जयपुर में आर.ओ. प्लान्ट (500 लीटर)	1.5 लाख
10	इडीजस्टिस फाउडेशन	802	रा.मा.वि. छतरपुरा, जयपुर में ज्ञान दान प्रोजेक्ट के माध्यम से 02 डिजीटल क्लासरूम	1.25 लाख

शिविरा पत्रिका (मासिक) : सितम्बर, 2021 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर–302 004 फोन : 0141–2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः अरुण कुमार शर्मा, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्रवीथिका : सितम्बर, 2021

शिक्षा विभागीय नियमावली 2021 का विमोचन माननीय शिक्षा राज्यमंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने 18 अगस्त, 2021 को जयपुर में किया। (बाएं) शिक्षा नीति समिति के अध्यक्ष श्री ओंकार सिंह, पूर्व आइएएस नियमावली दस्तावेज प्रस्तुत करते हुए। साथ में हैं सर्व श्री ओमप्रकाश सारस्वत, महेन्द्र कुमार चौधरी, रणवीर सिंह, सुभाष माचरा एवं सांवरमल। (दाएं) पुस्तक 'स्वतंत्रता संग्राम एवं राजस्थान 'मंत्री महोदय को भेंट करते हुए लेखक ओम प्रकाश सारस्वत, पूर्व संयुक्त निदेशक एवं सदस्य, राज्य शिक्षा नीति समिति।

श्री सौरभ स्वामी, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान द्वारा रा.उ.मा. विद्यालय नेवटा जयपुर की मासिक पत्रिका 'रुनझुन 'का विमोचन।

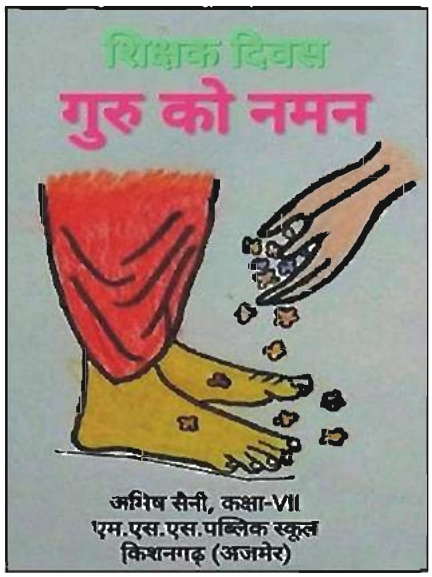

अभिषेक सैनी, कक्षा-VII
एम.एस.एस.पब्लिक स्कूल
किशनगढ़ (अजमेर)

बाल शिविरा सितम्बर, 2021

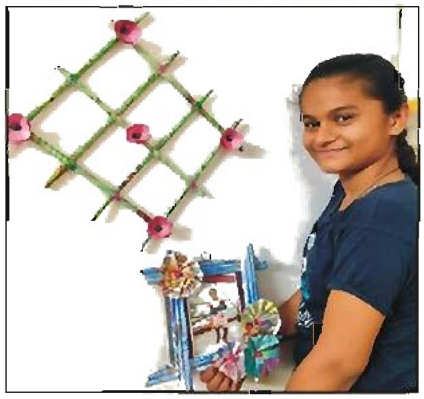

दृष्टि जैन, कक्षा-7
राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय कोटड़ी, तह. पिड़ावा (झालावाड़)

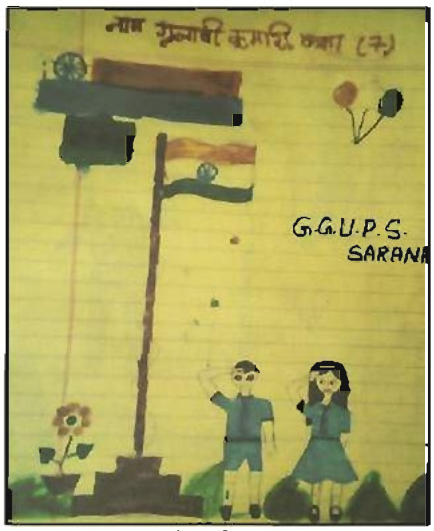

गुलाबी कुमारी, कक्षा-7
राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय सराणा, जालोर

महीप पूनिया, कक्षा-4 केम्ब्रिज कोर्ट वर्ल्ड स्कूल, जयपुर

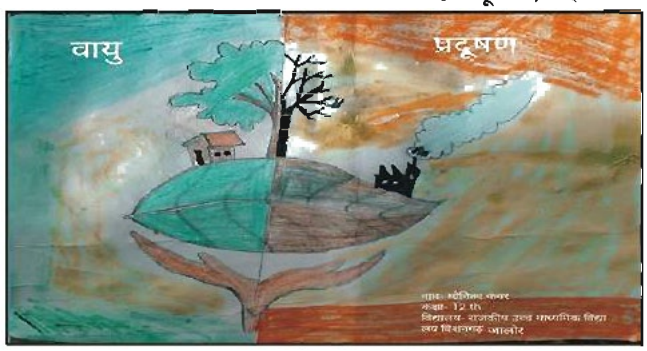

मोनिका कंवर एवं खुशबू कंवर, कक्षा-12 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिशनगढ़, जालोर

www.rajsevak.com

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) • सितम्बर, 2021 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 सितम्बर, 2021 पृष्ठ 132 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

75 वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह-2021

माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय परिसर, बीकानेर

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011